बांगरू लोकसाहित्य

[काशी विद्यापीठ की पी-एच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत]

शोध-प्रबन्ध

(हिन्दी)

दिसम्बर

१९८२

DATABASE

3300

159

शोध निर्देशक –

डा० रामजी शर्मा

एम ए पी एच डी

दैवज्ञवाचस्पति, साहित्य

न०व्याकरणाचार्य, साहित्यायुर्वेदरत्न,

प्राध्यापक-हिन्दी विभाग

काशी विद्या पीठ-वाराणसी

शोधकर्ता –

कैलाश चन्द शर्मा

नव कला मंदिर

बिचला बाजार भिवानी

(हरियाणा)

।। विद्याऽमृतमश्नुते ।।

डॉ० रामजी शर्मा
एम ए. (हिन्दी), पी एच डी
साहित्य – व्याकरणाचार्य साहित्यरत्न
प्राध्यापक – हिन्दी विभाग

मानविकी संकाय
काशी विद्यापीठ, वाराणसी
आवास–डी० ७/११-१२ सुखरमन गली
वाराणसी–२२१००१ (उ० प्र०)

पत्रांक ________

दिनांक ८ – १२ - १९८२

श्री कैलाश चन्द शर्मा ने मेरे निर्देशन में काशी विद्यापीठ, वाराणसी की पी-एच॰ डी॰ उपाधि के लिए दि॰ १३-१२-७८ को "आंचल लोक-साहित्य" शोध विषय पर पंजीकृत होकर मौलिक तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध नियमानुसार पूर्ण किया है। यह प्रबन्ध पूर्णतः मौलिक एवम् गवेषणात्मक है।

मैं इनके शोध प्रबन्ध को पी-एच॰डी॰ उपाधि के लिए परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

रामजी शर्मा
निर्देशक एवं प्राध्यापक
८-१२-१९८२

प्राक्कथन

सांस्कृतिक और भाषाई एकता को आधार मानकर हरियाणा प्रान्त बन जाने पर यहां की भाषा को हरियाणवी कहा जाने लगा । हरियाणवी से तात्पर्य बांगरू बोली है जो यहां कि लोक भाषा है । ग्रियर्सन ने इसे पश्चिमी हिन्दी की एक सशक्त उपभाषा की संज्ञा दी है :-

The best General Name for ite is Bangru".[1]

बांगरू नाम देने का श्रेय ग्रियर्सन को जाता है जिन्होंने इस प्रदेश की भाषा को "बांगरू" या "बांगडू की संज्ञा प्रदान की ।आधुनिक भाषा शास्त्री अब भी इसे साहित्यिक अध्ययन और अध्यापन में बांगरू शब्द का ही व्यवहार करते हैं । इस प्रकार प्राचीन हरियाणा के खादर, बांगर, और हरियाणा ये तीनों भूखण्ड विस्तार की दृष्टि से बांगरू बोली के अन्तर्गत आते हैं परन्तु मानक बांगरू की दृष्टि से (जो कि प्राय: ग्रामीण क्षेत्र में । ये भूखण्ड बांगरू का क्षेत्र समझा जाता है । मैं हरियाणवी को एक बांगरू बोली ही मानकर चला हूं जिसकी उच्चारण शैली विशिष्ट है इसमें द्वित्व व्यंजन प्रधान तथा णकार, ड़े, उड़े, कड़े, बी,सैआदि विशिष्टता लिए हुए है ।

हरियाणा भौगोलिक दृष्टि से दक्षिण की ओर इसकी सीमाएं इन्द्रप्रस्थ अथवा वर्तमान दिल्ली से नीचे तक उत्तर में वर्तमान जगाधरी से ऊपर तक तथा पश्चिम में मरु प्रदेश तक जाती है । उत्तर पश्चिम में सरस्वती

---

1. Ling Survey of India By George Griesson Vol. IX part-I Page. 67.

के दूसरी ओर तक इसका विस्तार है। यह भारतवर्ष का वह भूभाग है जो प्राचीन रूप से ही अपने आप में एक पूर्ण भौगोलिक तथा ऐतिहासिक इकाई माना जाता रहा है। दूसरे शब्दों में इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति को इस प्रकार देख सकते हैं :- "हरियाणा प्रदेश पंजाब में 28-30' और 30 (उत्तर) तथा 75-45' और 76-30' (पूर्व) के दरमियान एक छोटा भाग है।"[1]

यहाँ की प्राचीन अर्वाचीन और गौरवपूर्ण साहित्य परम्परा होने के बाद भी यहाँ के लोक जीवन से हिन्दी जगत का अपरिचित सा होना इसके अलिखित साहित्य की उपलब्धि न होना ही है। अत: मुझे इस बात का अनुभव होता रहा है कि बांगरू लोक जीवन को बांगरू लोक साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाये क्योंकि यहाँ के जन जीवन पर प्राचीन वैदिक युग की संस्कृति की अंतिम छाप है। और उसी वैदिक युग की संस्कृति की दो धाराएं (शिष्ट साहित्य और लोक संस्कृति) प्रवाहित रही है। लोक संस्कृति ही जन मानस का प्रतिबिम्ब है। और "शिष्ट संस्कृति भी लोक संस्कृति से अनुप्राणित होती रहती है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिष्ट साहित्य सामान्य जन जीवन को आच्छादित करने वाले लोक साहित्य से सदैव प्रेरणा ग्रहण करता रहता है। ऐसा न करने पर वह चिरकाल तक नहीं रह सकता व्यास ने ऐसा कहा है कि "प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी

1- देखिये हरियाणवी शब्दावली पृष्ठ 1 और आगे इम्पीरियल गजेटियर आफ इण्डिया (खण्ड 13) पृष्ठ 53

भवेन्नरः ।"[1] अतः यदि बांगर लोक जीवन को समझना हो तो वहां के लोक साहित्य को देखना होगा ।

ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक एवम् सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ साथ यहां उपलब्ध लोकसाहित्य जिसके आधार पर बांगर व्यक्तित्व की रूप-रेखा निर्धारित की जा सकती है। क्योंकि यहां का लोक साहित्य काफी समृद्ध है । यहां के लोक साहित्य के समृद्ध होने के उपरान्त भी इस प्रदेश में साहित्य का व्यवस्थित रूप से अनुशीलन नहीं हुआ है ।

<u>सामग्री संकलन</u> :- सामग्री संकलन का महत्वपूर्ण कार्य प्रदेश के भिन्न भिन्न भागों में घूमकर स्वंयकिया है । टेपरिकार्डर की सहायता का भी प्रयोग किया गया है । विशेषरूप से मूल सामग्री जिसमें लोकगीत, लोक-कथाएं आदि का संकलन तैयार करने में विद्यालयों की दसवीं और ग्यारवीं कक्षा की छात्राओं की भूमिका सराहनीय रही है । मेरी धर्मपत्नी ने भी काफी संख्यामें भिन्न भिन्न प्रकार के मूल रूप से लोकगीतों को लिखाने में पूरा सहयोग दिया है । कुछ सामग्री कतिपय पुस्तकों के उदरणों से भी संचय की गई है । अधिकांश सामग्री स्वंय घूम घूम कर सभी विधाओं की संचय की है ।

- -

1- छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन लेखक दया शंकर शुक्ल 1969, भूमि पृष्ठ से पृष्ठ 8

सीमाएं :- पूरे हरियाणा में बांगरू बोली जाती है केवल "बारह कोस पर बोली और पानी बदल जाता है" का ही अन्तर गौण रूप में रहता है वह भी स्थानीयता के कारण होता है। सभी आयु के स्त्री एवम् पुरुषों से सम्पर्क किया गया है, बालक और बालिकाओं से भी सम्पर्क किया गया है, उनके वार्तालाप उनके गीत कथाएं, लोक गाथाएं, मुहावरे, कहावतें, सूक्तियां, पहेलियां आदि सुनकर संग्रहित की गई हैं। जिन क्षेत्रों को सामग्री संकलित का आधार माना गया है उनमें ठेठ देहाती, पूर्ण रूपेण शहरी और शहर के इर्द गिर्द के स्थानों को शामिल किया गया है। कुंगड़ {उत्तरी पूर्वोत्तर भिवानी का भाग}, आहमदा वास {बुलाणा} कैथल, बेलरखां {नरवाना} नरवाना, सांघी {रोहतक} कान्ही {सोनीपत} बल्लभगढ़ {फरीदाबाद} आदि क्षेत्रों को आधार मानकर सामग्री संचय की है।

लेखन प्रक्रिया :- इस ग्रन्थ में बांगरू लोक साहित्य के विविध अंगों का सुव्यवस्थित एवम् वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कियागया है। लेखन प्रक्रिया की दृष्टि से इस प्रबन्ध को नौ अध्यायों में विभक्त किया गया है :-

प्रथम अध्याय "विषय प्रस्तुति" में भारतीय एवम् पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अभी तक अपनाई गई लोक साहित्य सम्बन्धी पद्धति का परीक्षण करके नई सन्तुलित प्रणाली प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसके दूसरे भाग में इलावा लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं का वर्गीकरण और प्रत्येक वर्ग का सैद्धान्तिक विविवेचन भी है। इस अध्याय के दूसरे भाग में बांगरू लोक गीतों का सामान्य

- -

परिचय और वर्गीकरण किया गया है। इसके तीसरे भाग में अद्यावधि बांगड़ लोक साहित्य का समीक्षात्मक विवरण और उसका संक्षिप्त विवेचन के साथ साथ मैंने अपने अध्ययन पक्ष का संक्षिप्त विवेचन देकर वर्तमान विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये है।

द्वितीय अध्याय में बांगड़ का नामाकरण, ऐतिहासिक क्रम विकास, बांगड़ की विभिन्न बोलियां तथा समीपवर्ती बोलियों के पार्थक्य (समता और भिन्नता) का अध्ययन, साथ में इन समीपवर्ती बोलियों के नमूने में जिससे समता भिन्नता का सम्यक परिशीलन हुआ है। बांगड़ बोली का लोक साहित्य में नियोजन तथा अध्याय के अन्त में बांगड़ के लोक साहित्य में प्रयुक्त होने वाले कतिपय विशिष्ट शब्दों को दिया गया है। तृतीय अध्याय में लोक गीतों की परिभाषायें और विभिन्न संस्कारों का उदाहरण सहित निदर्शन किया गया है। संस्कार गीतों में वहां के विभिन्न जन्म, विवाह एवम् मृत्यु आदि संस्कारों की रीति रिवाजों की व्याख्या के साथ उल्लेख कियागयाहै। कृषि, ऋतु, देवी देवताओं एवम् त्योहार, बालगीत, क्रियागीत राजनीतिक सम्बन्धी एवम् विविध गीतों की व्याख्या की गई है। अध्याय के अन्त में प्रचलित बांगड़ लोकगीतों का वर्गीकरण के आधार पर विवेचन कियागया है।

चतुर्थ अध्याय में कथात्मक गीतों की टिप्पणी सहित की टिप्पणी सहित वर्गीकरण एवम् व्याख्या की गई है । इस अध्याय के दूसरे भाग में लोक नाट्य एवम् लोकमंच के विकास के साथ साथ बांगड़ सांगों का उद्भव एवम् विकास का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है और बांगड़ सांगों में प्रेमतत्त्व, गुरुभक्ति, जीवनदर्शन, सूफी प्रभाव आदि का विवेचन प्रस्तुत है और साथ में बांगड़ सांगों के स्वरूप और उनका हिन्दी नाटकों के साथ अन्तर भी दर्शाया गयाहै । अध्याय के अन्त में प्रमुख सांगियों के सांगों की रागनियों का विवेचन भी है ।

पंचम अध्याय में प्रमुख बांगड़ कथात्मक गीतों का रूपान्तरित वर्णन एवम् तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया गया है । षष्टम अध्याय में बांगड़ लोक कथाओं का साहित्यक अध्ययन और अध्याय के अन्त में उपलब्ध लोक कथाओंका विवेचन अपेक्षित है ।

सप्तम अध्याय में प्रकीर्ण साहित्य में यहां की लोकोक्तियां (कहावतें) चुटकले, मुहावरे, पहेलियां, सूक्तियां आदि का उल्लेख है और प्रत्येक प्रकीर्ण साहित्य के अंग की समाप्ति पर यहां उपलब्ध कहावतें, चुटकले, मुहावरे, पहेलियां और सूक्तियों की सूची और उनका विवेचन दिया गया है ।

अष्टम अध्याय में बांगड़ संस्कृति का वर्णन किया गया है जिसमें यहां प्रचलित ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों का सांस्कृतिक महत्व- विभिन्न परम्परायें, शैव, नाथ, सन्त, प्रशासन, सैन्य, आदि के साथ साथ यहां के सामान्य जीवन और लोक विश्वासों का अध्ययन किया गया है । इसी अध्याय में यहां की

नदियाँ, कृषि, वनस्पति एवम् खनिज, उद्योग धन्धे, पुरातात्विक वैभव का भी अध्ययन प्रस्तुत है। नवम् अध्याय में लोक साहित्य का काव्य शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत है जिसमें रस परिपाक, अलंकार विधान, छन्द तुक और लय के साथ साथ बांगरू गीतों में स्वाभाविक एवम् मार्मिक चित्रण दार्शनिक चिन्तन, क्षणभंगुरता, नारी चित्रण, प्रकृति चित्रण, राष्ट्रीय भावना आदि का वर्णन है और अध्याय के अन्त में उपलब्ध बांगरू लोक गीतों का विवेचन भी दृष्टव्य है।

इसके पश्चात उपसंहार लिखा गया है और शोध प्रबन्ध के अन्त में विभिन्न भाषाओं के अन्तर्गत सहायक ग्रन्थों, पत्र एवम्पत्रिकाओं, लेख आदि की सूची दी गई है।

बांगरू लोक साहित्य अभी तक अनुसंधान की उपेक्षा रखता है यद्यपि इस ओर कतिपय विद्वानों तथा शोधार्थियों का कुछ कुछ ध्यान गया है। फिर भी इस क्षेत्र के लोक साहित्य का संकलन एवम् संग्रह करने का प्रयास कम हुआ है।

मै अपनी शोध साधना की इस पूर्ति पर अपने निर्देशक डा० रामजी शर्मा {प्राध्यापक हिन्दी} काशी विद्यापीठ वाराणसी, जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवम् सहयोग से अपने निर्दिष्ट पथ पर हो सका हूँ, को नतमस्तक करता हूँ।

श्री देवी शंकर प्रभाकर इसलिये आभारी हूं कि उनकी संकलित एवम् संग्रहित सामग्री विशेषकर [लोकगाथा की निहालदे] का काफी सबल एवम् मूल रूप वैज्ञानिक आधार देनेमें सहायक सिद्ध हुआ। डा० शंकर लाल यादव का हरियाणाप्रदेश का लोक साहित्य भी मेरा पथ प्रदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सहायक सिद्ध हुआ ।

मूल गीतों के संचय में मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमति सन्तोष देवी, प्रदेश के विभिन्न स्थानोंके का निर्देशन देने में श्रीसुरेन्द्र सिंह,श्रीराजेन्द्र सिंह [हरियाणा राज्य परिवहन] के परिचालक तथा अन्य महानुभावों एवम् शुभ चिन्तकों, अपने विशिष्ट मित्र श्री टी०डी० चोपड़ा तथा श्री शिवशंकर प्राध्यापक का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने समय समय पर मुझे यह शोध प्रबन्ध पूर्ण करने में विशेष उमंग भरनेका प्रयास किया ।

अन्त में उन लेखों और विद्वानों जिनके उद्धरण इस ग्रन्थ में उपयोगी सिद्ध हुए है, उन सबका यथा स्थान उल्लेख हुआ है, उनके प्रति मै हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं ।

कैलाश-चन्द्र शर्मा

शोध छात्र:-
कैलाश चन्द शर्मा,
नवकला मन्दिर,
बिचला बाजार,
भिवानी [हरियाणा]

डी-7/32, सकर कन्द गली,
वाराणसी ।

बी बी

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय — पृष्ठ संख्या

(भाग-क) विषय प्रस्तुति — २२-६२

1- "लोक" शब्द की व्युत्पत्ति और व्याख्या

2- "फोक लोर" और "लोकवार्ता" की व्यापकता

3- लोक साहित्य

4- लोक साहित्य और साहित्य

5- लोक साहित्य की विशेषताएं:-

(1) लोक साहित्य श्रुति परम्परा पर आधारित है।

(2) लोक साहित्य में प्रामाणिक मूलपाठ का अभाव रहता है।

(3) अज्ञात रचयिता तथा रचना में उसके व्यक्तित्व का अभाव।

(4) अलंकृत शैली का अभाव।

(5) कोरे उपदेशों का अभाव।

(6) लोक साहित्य लोक संस्कृति को प्रतिबिम्बित करता है।

6- लोक साहित्य का महत्व :-

(1) ऐतिहासिक महत्व

(2) भौगोलिक महत्व

(3) सामाजिक महत्व

पृष्ठ संख्या
========

§4§ धार्मिक महत्व

§5§ शिक्षा विषयक महत्व

§6§ आर्थिक महत्व

§7§ व्यावहारिक महत्व

§8§ नैतिक महत्व

§9§ साहित्यिक महत्व

§10§ सांस्कृतिक महत्व

§11§ भाषा शास्त्रीय महत्व

7- लोक साहित्य का वर्गीकरण :

§भाग-ख§ बांगरू लोक साहित्य का सामान्य परिचय एवम् वर्गीकरण

1- बांगरू लोक साहित्य का सामान्य परिचय

2- बांगरू लोक साहित्य का वर्गीकरण :-

§1§ लोक गीत

§2§ कथात्मक गीत §लोक गाथाएं§

§3§ लोक कथाएं

§4§ लोक नाट्य

§5§ प्रकीर्ण साहित्य

§भाग-ग§ 1- अद्यावधि बांगरू लोक साहित्य का समीक्षात्मक विवरण

2- शोधार्थी के अध्ययन पक्ष का संक्षिप्त विवेचन और वर्तमान विषय पर शोधार्थी की दृष्टि

- -

द्वितीय अध्याय — पृष्ठ संख्या

बांगड़ बोली का ऐतिहासिक एवम् भाषा वैज्ञानिक अध्ययन — 158-222

1- बांगड़ बोली का इतिहास, नामकरण एवम् सीमा क्षेत्र

2- बांगड़ का ऐतिहासिक विकासक्रम

3- बांगड़ का समीपवर्ती बोलियों से पार्थक्य [समता और भिन्नता]

4- I- I- बांगड़ और कौरवी

II- बांगड़ और पंजाबी

III- बांगड़ और राजस्थानी

IV- बांगड़ और ब्रज

V- बांगड़ और केन्द्रीय हरियाणवी

4- बांगड़ और समीपवर्ती बोलियों के नमूनें

5- बांगड़ बोली का लोक साहित्य में विनियोजन

6- लोक साहित्य में प्रयुक्त बांगड़ बोली के कुछ कतिपय विशिष्ट शब्द

तृतीय अध्याय — 222-250

I- बांगड़ लोकगीतों में समाज

1- मानव, मानसिकता एवम् समाज

2- लोक मानस और लोक चेतना

3- लोक गीत

4- बांगड़ लोक गीतों का वर्गीकरण:-

(1) संस्कारगीत :-

I- जन्म- ओजणा, प्रसव पीड़ा,
पुत्र जन्म, न्हाण्वार,
स्यावड़ के गीत, छठी,
रतजगा, जलवा पूजन
बाढ़द डालना, बच्चा का
भोजन, छूछक, पलणा,
मुण्डन आदि ।

II- विवाह :- लग्न, भात न्योंदणा,
हलदात-बान-तेल, रतजगा,
तेल चढ़ाना, आरता, बनवाड़ा
भात भरना, माढ़ा, घुड़-
चढ़ी, बारात का प्रस्थान
छोड़ा, छोड़ी, कामाव,
बारात का स्वागत, जीमणा
कन्यादान, सालीकहावणा,
सीटणे, दान, दहेज एवम्
विदाई, कांगणे जुए का
खेल आदि ।

III- मृत्यु :- शवयात्रा, शवदाह
आदि, फूल ठाणा
शोकगीत, तेहरामी,
बरसोधी आदि ।

(2) कृषिगीत - भूमि का महत्व, खाद का महत्व, खेती, बादल, बीज की किस्में, फसल बोने का समय, फसल काटने का समय, ईख की नलाई, बाजरा, कोल्हू आदि के गीत ।

पृष्ठ संख्या

(3) देवी देवताओं - व्रत त्योहारों की गीत:-
शीतला माता, देवी, निर्जला ग्यास, तीज, जन्माष्टमी, गूगा, सांझी, करवाचौथ, अहोई, होली आदि 12 महीनों में आने वाले व्रत एवम् त्यौहार ।

(4) ऋतु गीत :- सावन के झूले, बारह मासिया, मल्हार, आसोज के सांझी और पथवारी, कार्तिक स्नान और फागुन के गीत ।

(5) क्रियागीत:- नृत्य, अनुभूति, तर्क एवम् संवाद प्रधान गीत ।

(6) बाल गीत:- बालकों की विभिन्न अवस्थाओं के गीत ।

(7) राजनीति सम्बन्धी गीत:- उधम सिंह का शहीदी गीत, गांधी की मृत्यु, इन्दिरा गांधी का जीवन वृत, संजय की मृत्यु का गीत आदि ।

(8) अन्य गीत :- साकेण, केवट प्रेम, शराबी की पत्नी, हास्य-विनोद, बरखा आदि के गीत ।

9- प्रचलित बांगरू लोक गीत एवम् उनका विवेचन ।

चतुर्थ अध्याय

२५१-३२५

बांगरू लोक साहित्य में कथात्मक एवम् सांग परक गीत

(भाग-क) कथात्मक गीत

1- लोकगाथाओं की विशेषताएँ :-

(1) अज्ञात रचनाकार

- -

पृष्ठ संख्या

§2§ प्रमाणिक मूलपाठ की कमी

§3§ संगीत और नृत्य का साहचर्य और सहयोग

§4§ स्थानीयता की गंध

§5§ मौखिक परम्परा

§6§ अलंकृत शैली का अभाव

§7§ उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव

§8§ रचनाकार के व्यक्तित्व का अभाव

§9§ दीर्घ कथानक की विशालता

§10§ टेक पदों की पुनरावृत्ति

§11§ इतिहास की संदिग्धता।

2- लोक गाथा और गीत कथा :

3- लोक गीत और लोक गाथाओं में भेद

4- बागड़ लोक गाथाओं §कथात्मक गीतों§ का वर्गीकरण:-

§1§ प्रेम कथात्मक गाथाएं :- निहालदे का व्याख्यात्मक कथन।

§2§ वीर कथात्मक गाथाएं:- आल्हा, भूरा बादल, का व्याख्यात्मक कथन।

§3§ अद्भुत §आश्चर्यजनक§ कथात्मक गाथाएं :- गुगावीर का व्याख्यात्मक कथन।

§4§ लोक कथाएं :- सत्यवादी हरिश्चन्द्र का व्याख्यात्मक कथन।

- -

पृष्ठ संख्या

{भ ग} सांग परक गीत :-

1- लोक नाट्य परम्परा और लोक मंच
2- बांगरु सांगों का उद्भव एवम् विकास
3- बांगरु सांग की रचना एवं उसका स्वरूप
4- बांगरु सांग और हिन्दी नाटक में अन्तर
5- बांगरु सांगों में प्रेम तत्व
6- बांगरु सांगों में गुरु भक्ति
7- बांगरु सांगीत में सूफी प्रभाव
8- बांगरु सांगों में जीवन दर्शन
9- बांगरु सांगों पर फिल्मी प्रभाव
10- कुछ प्रमुख बांगरु सांगों की रागनियां एवम् उनका विवेचन ।

पंचम अध्याय 329-342

प्रमुख बांगरु कथात्मक गीतों का तात्त्विक विवेचन

1- "निहालदे"
{अ} "निहालदे" : तात्त्विक विवेचन
{आ} "साके" और {पैड़ों} का अन्तर
{इ} "निहालदे" और राजा ढोल" और ढोलामारु
2- {जैमल फत्ता":
{अ} जैमल फत्ता तात्त्विक विवेचन
3- गूगा" {गुगापीर, गुगावीर}
{अ} गूगा : तात्त्विक विवेचन
4- "हरफूल जाट जुलाणी का"
{अ} "हरफूल जाट जुलाणी का" तात्त्विक विवेचन

- -

क्रम अध्याय	पृष्ठ संख्या
बांगरू लोक कथा साहित्य का अध्ययन	362-402

1- (1) लोक कथा का स्वरूप और महत्व

(ii) लोक कथा की परिभाषा

2- लोक कथाओं की परम्परा

3- बांगरू लोक कथाओं का वर्गीकरण :-

(1) व्रत तथा त्योहारों सम्बन्धी लोक कथाएं

(2) देव विषयक कथाएं

(3) पौराणिक लोक कथाएं

(4) साहस तथा शौर्य की लोक कथाएं

(5) चतुराई पूर्ण लोक कथाएं

(6) उपदेशात्मक लोक कथाएं

(7) पशु पक्षि सम्बन्धी लोक कथाएं

(8) बुझावल

(9) मनोरंजन प्रधान लोक कथाएं :- हास परिहास, मूर्खों की, जाति स्वभाव की, ठगों आदि की कथाएं ।

(10) अलौकिक तत्व से युक्त कथाएं :- परियों, दानवों, भूतप्रेत, चुड़ैलों जादू, इतिहासाश्रित महापुरुषों अथवा साधु सन्तों की कथाएं ।

(11) मिथकीय कथाएं

पृष्ठ संख्या

4- बांगड़ लोक कथाओं की विशेषताएं

5- बांगड़ लोक कथाओं के मूल अभिप्राय :

6- बांगड़ लोक कथा मानक रूप

7- बांगड़ लोक कथाओं के तत्व

8- बांगड़ लोक कथाओं के वर्ण्य विषय

9- बांगड़ लोक कथाओं में मुहावरे एवम् लोकोक्तियों का प्रयोग

10- बांगड़ लोक कथाओं की सामान्य प्रवृत्तियां

11- लोक कथा तथा आधुनिक कथा में अन्तर

12- उपलब्ध बांगड़ लोक कथाएं एवम् उनका विवेचन

सप्तम् अध्याय ४०३-४४५

प्रकीर्ण साहित्य

1- कहावतें {लोकोक्तियां}

{क} बांगड़ लोकोक्तियों का वर्गीकरण :-

{1} अन्ध विश्वास सम्बन्धी

{2} खानपान तथा पहनावा सम्बन्धी

{3} आस्तिकता सम्बन्धी

{4} आर्थिक अवस्था सम्बन्धी

{5} कृषि एवम् पशु पालन सम्बन्धी

- -

पृष्ठ संख्या

{6} तीज, त्योहार एवम धर्म सम्बन्धी

{7} परम्परा वादिता सम्बन्धी

{8} नीति सम्बन्धी

{9} जीवन दर्शन सम्बन्धी

{10} विविध लोकोक्तियां :- जातिपरक, ऋतु सम्बन्धी, विवाह संस्कार, दाहसंस्कार, आदि ।

{ख} उपलब्ध बांगरू लोकोक्तियों की सूचि एवम् उनका विवेचन ।

2- चुटकुले

{क} प्रमुख बांगरू चुटकुले

3- मुहावरे

{क} मुहावरों और कहावतों में अन्तर

{ख} जन जीवन का चित्रण

{ग} बांगरू मुहावरों का वर्गीकरण :-

{1} जाति विषयक {2} नीति सम्बन्धी

{3} संस्कार एवम् प्रथा सम्बन्धी {4} सामान्य व्यवहार सम्बन्धी

{5} कृषि सम्बन्धी {6} शकुन विचार सम्बन्धी ।

{घ} उपलब्ध बांगरू मुहावरों की सूची एवम् उनका विवेचन

4- पहेलियां {क} बांगरू पहेलियों का वर्गीकरण :-

{1} खेती सम्बन्धी {2} भोजन सम्बन्धी

{3} घरेलु वस्तु सम्बन्धी {4} प्राणि सम्बन्धी

{5} प्रकृति सम्बन्धी {6} अंग प्रत्यंग सम्बन्धी

{7} पौराणिक कथा सम्बन्धी {8} अन्य उल्टी एवम् वैचित्र्य प्रधान ।

{ख} उपलब्ध बांगरू पहेलियां एवम् उनका विवेचन ।

5- सूक्तियां :-

{क} उपलब्ध बांगरू सूक्तियों की सूची एवम् उनका विवेचन ।

- -

पृष्ठ संख्या
=======
४४१-४८८

अष्टम अध्याय
==========

बांगड़ लोक साहित्य में मानव संस्कृति

1- भू-भाग

2- नदियां

3- कृषि, वनस्पति एवम् खनिज

4- उद्योग धन्धे

5- पुरातात्त्विक वैभव

6- ऐतिहासिक एवम् धार्मिक स्थानों का सांस्कृति महत्त्व :-

§1§ कुरुक्षेत्र §2§ पृथूदक §3§ थानेसर §4§ करनाल §5§ कैथल
§6§ आदि फल्गु §7§ पानीपत §8§ जीन्द §9§ रामरा
§10§ कलायत §11§ सर्पदमन §12§ सोनीपत §13§ रोहतक §14
§14§ अन्य- नागणा, आण्डा, लदाणा, ऊगा भोरी,
धमताण साहब, नरवाणा, बेलरखां आदि का संक्षिप्त वर्णन ।

7- प्रमुख परम्परायें :-

§1§ शैव परम्परा §2§ नाथ परम्परा- सिद्ध नाथों की योग चेतना
§3§ सन्त परम्परा सन्तों का ज्ञान रहस्य §4§ प्रशासन परम्परा
§5§ सैन्य परम्परा ।

8- सामान्य जीवन:-

§1§ गांव एवम् गांव का स्वरूप §2§ पनघट §3§ घर गृहस्थी §4§ चौपाल
§5§ भोजन §6§ वेश भूषा §7§ आभूषण §8§ शृंगार प्रसाधन
§9§ मनोरंजन §10§ सामाजिक मेल मिलाप §11§ अभिवादन और आर्शि-
वाद §12§ अतिथि सत्कार

9- लोक विश्वास :-

§1§ देवता- उपदेवता §2§ चांद और सूरज §3§ धरती माता
§4§ गंगा जमना §5§ राम और कृष्ण §6§ भैरव §7§ गूगा पीर
§8§ देवी की पूजा §9§ पंच पीर और सन्त महात्मा §10§ पीपल,
तुलसी, कुआ, जोहड़ आदि §11§ जन जागरण §12§ गुग्गा §13§ भूत प्रेत
§14§ शुभ चिन्ह §15§ जन्त्र, मन्त्र, तन्त्र और जादू टोने टोटके §16§ शुभाशुभ
स्वप्न §17§ शकुन विचार ।

- -

नवम् अध्याय

पृष्ठ संख्या

बांगरू लोक साहित्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन ४८६-५३८

1- रस परिपाक :-

(1) वात्सल्य रस

(2) शृंगार रस :-

1- संयोग शृंगार - नख शिखछटा, रूप सौन्दर्य, प्रेम क्रीड़ा आदि ।

2- वियोग शृंगार -पूर्व राग, मान, प्रवास, करुण विप्रलम्भ आदि ।

(3) करुण रस
(4) वीर रस
(5) हास्य रस
(6) रौद्र रस
(7) भयानक रस
(8) वीभत्स रस
(9) अद्भुत रस
(10) शान्त रस
(11) भक्ति रस

2- (12) बांगरू लोक गीतों में अलंकार विधान
3- बांगरू लोकगीतों में छन्द ।
4- बांगरू लोक गीतों में तुक एवम् लय ।
5- बांगरू लोकगीतों में स्वाभाविकता और मार्मिकता ।
6- बांगरू लोकगीतों में दार्शनिक चिन्तन ।
7- बांगरू लोकगीतों में अर्थ गंभीरता
8- बांगरू लोकगीतों में नारी चित्रण
9- बांगरू लोक गीतों में प्रकृति चित्रण ।
10- बांगरू लोकगीतों राष्ट्रीय भावना ।
11- उपलब्ध बांगरू लोकगीत एवम् उनका विवेचन ।

-0-0-0-0-0-0-0-

	पृष्ठ संख्या
उपसंहार	५३६-५४२
सहायक ग्रन्थ सूची	५४३-५५५

0==================0

"प्रथम अध्याय"

भाग क :- विषय प्रस्तुति

1- "लोक" शब्द की व्युत्पत्ति और व्याख्या :-

2- "फोक"लोर" और "लोकवार्ता" की व्यापकता

3- लोक साहित्य

4- लोक साहित्य और साहित्य

5- लोक साहित्य की विशेषताएं :-

(1) लोक साहित्य श्रुति परम्परा पर आधारित है

(2) लोक साहित्य में प्रमाणिक मूलपाठ का अभाव रहता है

(3) अज्ञात रचियता तथा रचना में उसके व्यक्तित्व का अभाव

(4) अलंकृत शैली का अभाव (5) कोरे उपदेशों का अभाव

(6) लोक साहित्य लोक संस्कृति को प्रतिबिम्बित करता है।

6- लोक साहित्य का महत्व :-

(1) ऐतिहासिक महत्व (2) भौगोलिक महत्व

(3) सामाजिक महत्व (4) धार्मिक महत्व

(5) शिक्षा विषयक महत्व (6) आर्थिक महत्व

(7) व्यावहारिक महत्व (8) नैतिक महत्व

(9) साहित्यिक महत्व (10) सांस्कृतिक महत्व

(11) भाषा शास्त्रीय महत्व

7- लोक साहित्य का वर्गीकरण

भाग ख :- बांगरू लोक साहित्य का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण

1- बांगरू लोक साहित्य का सामन्य परिचय

2- बांगरू लोक साहित्य का वर्गीकरण :-

(1) लोकगीत

(2) कथात्मक गीत (लोक गाथाएं)

(3) लोक कथाएं

(4) लोक नाट्य

(5) प्रकीर्ण साहित्य

भाग ग:-

1- अद्यावधि बांगरू लोक साहित्य का समीक्षात्मक विवरण:-

2- शोधार्थी के अध्ययन पक्ष का संक्षिप्त विवेचन और वर्तमान विषय पर शोधार्थी की दृष्टि

0- - - -0-----0

"प्रथम अध्याय"

विषय- प्रस्तुति

लोक साहित्य "पर विचार करने से पहले "लोक" तथा "साहित्य" पर विचार करना आवश्यक जान पड़ता है। वैसे तो " लोक" शब्द मानव मात्र का वाचक है। परन्तु यह शब्द सामान्यत: ऐसे व्यक्तियों के लिये प्रयुक्त किया जाता है जो निरक्षर तथा कम पढ़े लिखे हों।

1- "लोक" शब्द की व्युपति व्युत्पत्ति और व्याख्या :-

लोक भावना का उद्गम स्रोत वेद है। वेदों में विशेषत: ऋग्वेद में इस शब्द और भाव की उपलब्धि दृष्टव्य है। ऋग्वेद में "लोक" शब्द का प्रयोग स्थान और भुवन के अर्थ में प्राप्त है। :-

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन्।"[1]

ऐतरेयोपनिषद् में परमेश्वर द्वारा समस्त लोकों के सृजन का उल्लेख है यहां भी "लोक" शब्द का प्रयोग भुवन के अर्थ में हुआ है। परमेश्वर ने अम्भ, मारीची मर और जल- इन लोकों की रचना की :-

स इमांल्लोकान सृजत। अम्भो मरीचिर्मरमापो दो अदः परेण दिवं द्यौ प्रतिष्ठान्तरिक्षं मरीचयः पृथ्वी मरो या अधस्तातापः।"[2]

आर्यों के आगमन पर आर्येतर जातियों से उनकी मुठभेड़ दो भिन्न सांस्कृतियों के संघर्ष के रूप में हुई। फलत: "वैद" और "वैदेतर" स्थिति

- -

1- ऋग्वेद 10/90/14

2- ऐतरेयोपनिषद्-1/1/2

प्रकट हुई । इसके एक अन्य अर्थ की उद्भावना सहज ही हो गई, जिसके अनुसार "लोक" का दूसरा अर्थ वेद विरोधी (वेदेतर) हुआ ।"[1] परन्तु लोक शब्द ने तत्पश्चात अपना स्वतंत्र्य गीतानुसार धारण किया:-

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।

अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ।।"[2]

क्योंकि मै नाशवान जड़ वर्ग क्षेत्र से सर्वथा अतीत हूं और लोक अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम हूं इसलिये लोक में और वेद में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूं । इस प्रकार गीता में "लोक" शब्द की व्याख्या भिन्न भिन्न स्थानों पर भिन्न भिन्न रूपों में प्राप्त है । यहां इसका महत्व लोक शास्त्र और लौकिक नियमाचारों में स्थापित हो गया । " लोक का साधारण जनता के लिये प्रयोग अशोक के शिला लेखों में भी हुआ है :-

कतव्य मतेहि मे सर्व लोक हितं ।"[3]

बौद्ध धर्म ने इसे मानवीय उत्कृष्टताओं का बोधक बनाया । प्राकृत और अपभ्रंश मे प्रयुक्त लोक जता (लोकयात्रा) एवम् लोकप्प वाय (लोकप्रवाद) शब्द भी लौकिक व्यवहारों का महत्व प्रकट करते हैं । यजुर्वेद में "लोक" (समाज) की एक विराट कल्पना की गई है । वह पुरुष रूप ईश्वर है । उसके सहस्रों

- -

1- भारतीय लोक साहित्य लेखक- श्याम परमार पृष्ठ- ।

2- गीता अध्याय 15, श्लोक 18

3- अशोक की धर्मलिपियां (प्रधान शिलाभिलेख) पहला खण्ड 62

मुख, सहस्त्रों नेत्र और सहस्त्रों पैर है :-

सहस्त्र शीर्षा पुरुष: सहस्त्राक्ष सहस्त्रपात् ।

"यह "लोक" अनेक रूपों में परिव्यापत है :-

"बहु व्याहितो वा अयं बहुतो लोक: ।

क एतद् अस्य पुनरीहतो अयार्त् ।।"[1]

तुलसी दास ने लोक और वेद की भेदात्मक स्थिति इस प्रकार स्पष्ट की है :-

।- लोक कि वेद बड़ेरो ।"[2]

।।- सो जानव सतसंग प्रभाऊ ।

लोकहू वेद न आन उपाऊ ।"[3]

वेदों में लोक का अन्यार्थ पृथ्वी, मानव, और जीवन का कल्याणात्म रूप है ।"[4] कतिपय विद्वानों के मतानुसार लोक शब्द के "लोकदर्शने" धातु में "धञ्ज" प्रत्यय लगाने से निष्पन्न हुआ है इस धातु का अर्थ है - देखना। लट् लकार के अन्य पुरुष एक वचन में इसका रूप होता है -" लोकते" । अत: लोक का अर्थ हुआ - देखने वाला । वहसमस्त जन-समुदाय जो इस क्रिया को करता है,"लोक" के अन्तर्गत समाविष्ठ है ।"[5]

- -

1- जैमनीय उपनिषद ब्राह्मण 3/28

2- विनय पत्रिका- गोस्वामी तुलसीदास पद 172 {गीता प्रेस}

3- राम चरित्रमानस, बालकाण्ड ।

4- सम्मेलन पत्रिका {लोक संस्कृति विशेषांक} में डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का" लोक का प्रत्यक्ष-दर्शन" शीर्षक निबन्ध पृष्ठ 65

5- लोक गीतों की सांस्कृति पृष्ठ भूमि लेखिका- विद्या चौहान 1972 पृष्ठ 41

विश्वशान्ति निकेतन के उड़िया विभाग के अध्यक्ष डा० कुंज बिहारी दास ने लोकगीतों की परिभाषा बतलाते हुए "लोक" शब्द की भी सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की है उनका कथन है - "लोकगीत उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य प्रभावों से बाहर रह कर कम या अधिक रूप से आदिम अवस्था में निवास करते हैं।"[1] इससे यह स्पष्ट है कि जो लोग संस्कृति तथा परिष्कृत लोगों के प्रभाव से बाहर रहते हुए अपनी पुरातन स्थिति में वर्तमान है, उन्हें "लोक" की संज्ञा प्राप्त है। "[2]

अंग्रेजी में इसके ~~प्रक्~~ पर्याय शब्द की व्याख्या ब्रिटानिया विश्व कोश में इस प्रकार दी गई है :-

" In a primitive community the whole body of persons composing it, is the folk and in the widest sense of the word it might equally be applied to the whole population of a civilized state. In its common application of the western type (in such compounds as folk lore, folk music, etc.). It is narrowed down to include only those who are mainly outside the currents of urban culture, systematic education the unlettered, a little lettered inhabitants of the village, a country side."[3]

- -

1- हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास राहुल संकृत्यायन सोलहवा भाग प्रस्तावना में उद्धृत

2- - वही- ।

3- Encyclopedia Britania (1951 edu) VolX IX p. 444

अर्थात आदि कालीन जातियों के समस्त व्यक्तियों को ही "लोक" की संज्ञा दी जाती है तथा इसके व्यापक अर्थ में किसी भी सभ्य देश के समस्त निवासियों के लिये इस्‌ प्रयुक्त किया जा सकता है । पाश्चात्य देशों में इसका प्रयोग [उदाहरणार्थ लोक-गीत, लोक नृत्य आदि समासों में] साधारणत: संकुचित अर्थों में किया जाता है जो कि नागरिक सभ्यता का प्रभाव ग्रहण न कर सके हों, सुशिक्षित न हों, अथवा निरक्षर या कम पढ़े लिखे देहाती लोग हों ।

इस प्रकार लोक का अर्थ- सरल स्वाभाविक मानव समाज है जिसकी भावनाओं, विचारों परम्पराओं क्रियाओं एवम्‌ मान्यताओं में वास्तविक कल्याण के तत्व विद्यमान रहते हैं । इसी को हम लोक संस्कृति भी कह सकते हैं ।

बाहर का संसार हमारे मन के भीतर प्रवेश करके एक दूसरा ही संसार हो उठता है उसमें केवल बाहरी संसार का रंग आकृति, ध्वनि हो ऐसा नहीं होता, उसके साथ हमारे अच्छे लगने वाले,काम बुरे लगने वाले काम, हमारे भय-विस्मय हमारे सुख दुख जुड़े रहते हैं - वह हमारी हृदय वृत्ति के विविध रस से अनेक भावों में अभिषिक्त हो साहित्य है ।"[1]

साहित्य की परिभाषा के विषय में हम इतना कहना ही पर्याप्त समझेंगे कि "सत्यं" तथा "सुन्दरं" की सुदृढ़ भित्ति पर सुस्थित "शिवं" ही साहित्य है दूसरे शब्दों में ऐसा "शिव" जिसके आधारभूत "सत्यं" तथा सुन्दरं" की शिलाएं समय की बाढ़ में गोते खाती हुई विलुप्त न हो जायं । "शिवं" वही है जो मानव को मानव के निकट लाने में सहायता प्रदान करें । उसे बर्बर न बनने दे ।[2]

1- साहित्य लेखक - श्री रविन्द्र नाथ टैगोर पृष्ठ 5

2- लोक मानस विशेषांक 1965 पृष्ठ 87- 88 पर "लोक साहित्य" शीर्षक लेखक नानक चन्द शर्मा ।

2- फोक लोर और लोकवार्ता की व्यापकता :-

"लोक" और "वार्ता" अत्यन्त प्राचीन शब्द होते हुए भी इनका शास्त्रीय अर्थ अत्याधुनिक है । डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोकवार्ता"[1] डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने "लोकयान" की संज्ञाएं प्रदान की ।[2] लोकवार्ता अंग्रेजी के Folk Lore शब्द का पर्यायवाची है ।"[3] डा० कृष्ण देव ने अंग्रेजी के FolkLore शब्द के मूल अर्थ को ध्यान में रखकर "लोक संस्कृति" को लोक साहित्य के समानार्थक मानने का सुझाव दिया है ।"[4] और फोक (Folk) शब्द की उत्पत्ति एंग्लो शब्द Fore से हुई जर्मन में वह Volk के रूप में प्रचलित है और Fokk के संकुचित और व्यापक दोनों अर्थ मिलते हैं । संकुचित अर्थ में असंस्कृत और मूढ़ समाज का और व्यापक अर्थ में सुसंस्कृत राष्ट्र के सभी लोगों के लिये होता है । जबकि लोर शब्द की उत्पत्ति एंग्लो सैक्सन शब्द Lare से हुई जिसका अर्थ है - वह जो सीखा जाए अतः Folk Lore का अर्थ हुआ सुसंस्कृत लोगों का ज्ञान । पाश्चात्य विद्वानों ने सामाजिक वर्गीकरण की कल्पना उच्च एवम् निम्न दो वर्गों में करके निम्न वर्ग के व्यक्तियों से सम्बन्धित समस्त विचारों एवम् व्यापारों को Folk Lore शब्द के भाव में आबद्ध किया है ।"[5]

- -

1- लोक साहित्य विज्ञान लेखक डा० सत्येन्द्र पृष्ठ 4
2- राजस्थानी कहावतें भाग प्रथम लेखक नरोत्तम स्वामी पृष्ठ 11 सम्वत् 2006
3- लोक साहित्य की भूमिका लेखक - श्री सत्यव्रत अवस्थी पृष्ठ 8
4- हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास राहुल सांकृत्यायन प्रस्तावना पृ० 11
5- लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि लेखिका विद्या चौहान पृष्ठ 42 से ली गई

डा० हजारी प्रसाद ने "लोक संस्कृति"[1] तथा सत्येन्द्र ने "लोकाभिव्यक्ति और "लोकतत्व" शब्द दिये।"[2] " यद्यपि फोक के लिए लोक शब्द ग्रहण करने के समान Lore के प्रर्याय वाची हिन्दी शब्द के ग्रहण के लिए विद्वानों में मतैक्य नहीं है और नित्य नवीन शब्दों की उद्भावना की जा रही है। तथापि भाषा शास्त्र की दृष्टि से रूढ़ प्रयोगों द्वारा विशिष्ट अर्थ एवं महत्व प्राप्त कर लेने के कारण "लोकवार्ता" को "फोकलोर" की समानार्थक महत्ता प्राप्त हो गई। तथा हिन्दी में उसका प्रयोग स्वीकृत हो गयाहै। अतः फोक लोर के अभीष्ट अर्थ की व्यंजना के लिए " लोकवार्ता" शब्द का प्रयोग ही उपयुक्त है।"[3]

कुछ पाश्चात्य विद्वानों की फोक और सम्बन्धित परिभाषायेंइस प्रकार हैं:-

Folk Lore is not something for away and long ago, but real and living among us."[4]

Folk Lore is material about the hopes and yearning of the people."[5]

लोक जीवन की छाया में लोकवार्ता { } शास्त्र के तत्व संगठित होते हैं सामान्य जन समाज में व्याप्त समस्त विचार, आदर्श

- -

2- सम्मलेन पत्रिका लोक संस्कृति अंक सम्वत् 2010 पृष्ठ 436 लेखक डा० भोला नाथ तिवारी।
1- हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास राहुल सांस्कृत्यायन प्रस्तावना पृष्ठ 11 { सोलहवां भाग}

3- भारतीय लोक साहित्य लेखक डा० श्याम परमार पृष्ठ 14
4- Introduction of American Folk Lore Page 15
5- लोक साहित्य की भूमिका लेखक सत्यव्रत अवस्थी पृष्ठ 10

मनोभाव, विश्वास, परम्परायें, राग-द्वेष, रहन-सहन, रीति रिवाज, अनुष्ठान, क्रियाओं आदि का समन्वित अध्ययन लोक वार्ता शास्त्र का अध्ययन है। लोक जीवन की सतत प्रवाह मान सरिता की लहर लहर में लोक वार्ता के तत्व अदभूत होते हैं। अनादि काल से अनवरुद्ध गति में लोक जीवन की यह विराट स्वरूपनि तरंगनी अनन्त की ओर प्रवाहित होती। अपनी सर्वकालीन, सार्वदेशीय और सर्व सम्मत प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती आ रही है। युग-व्यापी परिवर्तन, विवर्तन, हर्ष-विषाद, उत्थान, पतन और जीवन मरण के इतिहास को समेटे प्रवीनता में नवीनता का सृजन करता हुआ लोकवार्ता का प्रत्येक चरण अपने वैतन्य अस्तित्व का आभास देता है।"[1]

लोकवार्ता के अन्तर्गत साहित्य, मौखिक, आधार, सौन्दर्यात्मकता अनुर्वइतिहास अनुभव अन्य सांस्कृति परम्परा तथा अति जीवन को अन्तर्भूत किया है व्यापक क्षेत्र से सम्बद्ध होने के कारण लोकवार्ता की सीमाओं का स्पष्ट निरूपण तथा उसमें अन्तर्निहीत विषय वस्तुओं का समुचित उल्लेख कठिन प्राय है। यद्यपि लोकवार्ता का विषय क्षेत्र विशाल एवं व्यापक है तथापि विद्वानों ने सुविधानुसार वर्गीकृत किया है। सोफिया बर्न द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण का अनुवाद डा० सत्येन्द्र ने इस प्रकार किया है[2]:-

---

1- लोक गीतों की सांस्कृति पृष्ठ भूमि लेखिका विद्या चौहान 1972 पृष्ठ 43

2- ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन डा० सत्येन्द्र पृष्ठ 4

(1) वे विश्वास और आचरण-अभ्यास जो सम्बन्धित है -

पृथ्वी और आकाश से,

वनस्पत जगत से

पशु जगत से,

मानव से

मानव निर्मित वस्तुओं से

आत्मा तथा दूसरे जीवन से

शकुनों अपशकुनों, भविष्यवाणियों, आकाशवाणियों से

जादू टोना से

रोगों तथा स्थानों की कला से

(2) रीति रिवाज -

सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थायें

व्यक्तिगत जीवन के अधिकार, व्यवसाय, धन्धे तथा उद्योग

तिथियां, व्रत तथा त्यौहार

(3) कहानियां, गीत तथा कहावतें

कहानियां (अ) जो सच्ची मान कर कही जाती है,

(आ) जो मनोरंजन के लिये होती है।

गीत सभी प्रकार के

कहावते तथा पहेलियां

पद्यबद्ध कहावते तथा स्थानीय कहावतें।

उपर्युक्त तीनों वर्गों में समाहित विषय-वस्तु तक ही लोकवार्ता का विस्तार नहीहै। लोकवार्ता की व्यापक सामग्री का अधिक विस्तृत वर्गीकरण हो सकता है और एक एक विभाग के अनेकानेक उपविभाग किये

- -

###

जा सकते हैं ।"[1]

3- लोक साहित्य :-

लोक साहित्य लोक वार्ता का एक अंग है साधियां बर्न द्वारा प्रस्तुत लोक सामग्री के उपर्युक्त तीन वर्गों में से तीसरे वर्ग की सामग्री लोक साहित्य है । इस प्रकार लोक साहित्य और लोक वार्ता में अंग और अंगी का सम्बन्ध है । लोक साहित्य का अध्ययन करने वालों में डा० सत्येन्द्र का स्थान प्रमुख है । उनके अनुसार लोक साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें :-

(अ) आदिम मानस के अवशेष उपलब्ध हों ।

(आ) परम्परागत मौखिक क्रम से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुति ही माना जाता हो, और जो लोक मानस की प्रवृति में समाई हुई हो ।

(इ) कृतित्व हो किन्तु वह लोक-मानस के सामान्य तत्वोंसे युक्त हो कि उसके किसी व्यक्तित्व के साथ सम्बन्ध रहते हैं भी लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति # स्वीकार करें ।"[2]

इस परिभाषा से यह स्पष्टहोता है कि लोक साहित्य में आदि मानस के अवशेष का अधिक महत्व है आदि मानस को ही लोकमानस कहा जाता है । जंग ह्रीवर की परिभाषा आदिमानस के विषय में दी है।"[3]

- -

1-

2- लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि लेखिका - विद्या चौहान 1972 पृष्ठ 46 से उदधृत ।

3- लोक ####

लोकवार्ता और लोक साहित्य का अंग और अंगी का सम्बन्ध है । लोकवार्ता को लोकसंस्कृति की संज्ञा से अभिहित करते हुए डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकसाहित्य का उससे सम्बन्ध इस प्रकार दर्शाया है - "लोकसाहित्य लोक संस्कृति का एक अंग है । यदि लोक संस्कृति की उपमा किसी विशाल वटवृक्ष से दी जाये तो लोक साहित्य उसका एक अवयव है । लोक संस्कृति का तो विस्तार अत्यन्त व्यापक, परन्तु लोक साहित्य का विस्तार संकुचित है । लोक संस्कृति की व्यापकता जीवन के समस्त व्यापारों में उपलब्ध होती है । परन्तु लोक साहित्य जनता के गीतों, कथाओं, मुहावरे और कहावतों तक ही सीमित है । एक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है दूसरे का सीमित है तथा संकुचित । लोक साहित्य अंग है तो लोक संस्कृति अंगी है । लोक संस्कृति में लोक साहित्य का अन्तर्भाव होता है परन्तु लोक साहित्य लोक संस्कृति का समावेश होना सम्भव नहीं है ।"[1]

संक्षेप में लोक साहित्य लोक वार्ता का व्यवस्थित सुसूत्र रूप

4- <u>लोक साहित्य और साहित्य :-</u>

इन दोनों के मौलिक भेद की विविधता का उल्लेख इस प्रक करना अधिक उपयुक्त होगा-" लोक साहित्य और साहित्य दोनों में मानव मन की अनुभूतियाँ एवम भावनाओं का प्रकाशन होता है भावाभिव्यंजना की दृष्टि से दोनों में मौलिक साम्य है । साहित्य का प्रत्येक चरण लोक सापेक्ष होता है । लोक जीवन की सांस्कृतिक चेतना उसमें अनुप्राणित होत है । लोक साहित्य और साहित्य में आंतरिक साम्य होते हुए भी वैषम्य है । साहित्य अपने अस्तित्व को उस धरातल से ऊपर उठकर संवारता है उसके पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं । जबकि लोक साहित्य सम्पूर्ण तल्लीनता उस धरातल पर छाया रहता है । साहित्य में व्यक्तिवादी स्वर मुखर होता है जबकि लोक साहित्य में समूह की प्रधानता रहती है ।"[2]

1- हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास प्रस्तावना पृष्ठ 14

2- लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि प्रस्तावना-ब

5- लोक साहित्य की विशेषताएं:-

लोक साहित्य में साहित्य के तत्व तो विद्यमान है ही इसके अतिरिक्त इनमें कुछ और विशेषताएं है इनका वर्णन निम्नलिखित है:-

§1§ लोक साहित्य श्रुति परम्परापर आधारित है ।- लोक साहित्य आदिकाल से ही सुनी सुनाई परम्परा चला आ रहा है । इसे लोक सभ्यता का वेद §श्रुति§ भी कहा जाता है । क्योंकि वेद भी आरम्भ में श्रुति कहलाते थे । और सुन सुन कर यादकिये जाते थे । वेदने तो कालान्तर में लिपि का सहारा ले लिया परन्तु लोक साहित्य आज भी श्रुति ही है लोक साहित्य का सहज सौन्दर्य उसके मौखिक रूप में ही है । उसका प्रवाह लिपि के शिकन्जे में नहीजकड़ा जा सकता । लोक वार्त्ताकार लोकसाहित्य की मौखिक परम्परा को बनाये रखने में विश्वास रखते हैं ।

§2§ लोक साहित्य में प्रामाणिक मूलपाठ का अभाव रहता है :- लोक-साहित्य की सम्पत्ति पीढ़ी दर पीढ़ी वितरित होती है । स्मरण में जहां कोई व्यक्ति कम हुआ, व गायक उसमें अपनी ओर बढ़ता जाता है लोक की भाषा के विकास के साथ साथ ही लोक साहित्य की भाषा भी परिवर्तित होती जाती है और एक ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि आदि प्रणेता उसके वर्तमान स्वरूप एवं स्वर को सुने तो वह निश्चय ही अपनी रचना नही पहचान सकेगा । परिणाम यह होता है । कि लोक साहित्य का मूलपाठ मिलता ही नहीं है लोक साहित्य की इसीप्रकृति के कारण यह कहा जाता है कि वह अत्याधिक दूर और कोई प्राचीन वस्तु नही है, वह तो हमारे मध्य यथार्थ होकर जीवित है ।"[1]

1- बी.ए.बॉटकिन- अमेरिकन फोकलोर §पाकेट बुक§ पृ० 15

(3) अज्ञात रचयिता तथ्य रचना में उसके व्यक्तित्व का अभाव:-

लोक साहित्य की विपुल राशि हमारे समक्ष मौजूद है परन्तु उसके निर्माता के विषय में बतलाना बड़ा मुश्किल है वैसे कुछ लोक गीतों में कबीर, तुलसी आदि की छाप रहती है परन्तु ऐसा माना गया है कि रचना की प्रतिष्ठा बढ़ाने के उद्देश्य से यह काम बाद में किया है। यों तो सभी रचनाएं किसी न किसी व्यक्ति सहज प्रतिभा का रूप है। परन्तु रचना में उसके नाम का अभाव रहता है इसके लिए अनेक कारण हो सकते हैं। नाम के अलावा रचयिता का व्यक्तित्व के विषय में भी रचनाओं की कोई जानकारी उपलब्ध नहीं होती प्रतिनिष्ठ साहित्य की यह सबसे बड़ी विशेषता मानी जाती है कि कलाकार का उसमें व्यक्तित्व झलकता हो पर लोक साहित्य में तो रचना की विशेषता रचयिता के व्यक्तित्व में नही वरन् उसके व्यक्तित्व के नितान्त अभाव में है।"[1] लोक साहित्य की कसौटी यही है कि कृतित्व हो किन्तु लोक मानस के ऐसे सामान्य तत्वों से युक्त हो कि व्यक्तित्व के साथ सम्बद्ध करते हुए भी लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करें।"[2] जैसे "आल्हा" जगनिक की रचना स्वीकार की गई परन्तु उसका वर्तमान रूप विभिन्न बोलियों का हो गया है। इसी प्रकार कहावतों में भी घाघ-भड्डरी के नाम लिये जाते हैं परन्तु इनका रूप ही बदल गया है। और नामरह ही नहीं गये। वैसे कुछ लोक साहित्य कारों को साहित्य कार की कोटी में रखने का प्रयास किया गया परन्तु यह प्रयोग भी असफल रहा।

1- "दी बैलेड, मार्टिन केकर"- फ्रैंक सिजविक- (लन्दन) पृष्ठ 11

2- मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोक तात्विक अध्ययन लेखक डा० सत्येन्द्र पृष्ठ 5।

§4§ अलंकृत शैली का अभाव :- परिनिष्ठत साहित्य में जहां अंलकारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है वहां लोक साहित्य में इनका अभाव ही दृष्टिगोचर होता है। यह तो उस बन कुसुम की भान्ति है जो बिना सजाएं सवारे ही अपने प्राकृति सौंदर्य से देदीप्यमान रहता है। ग्रामगीत और महाकवियों की कविता में अन्तर है। ग्रामगीतों में रस है। महाकाव्यों में अलंकार। ग्रामगीत हृदय का धन है महाकाव्य मस्तिष्क का ग्रामगीत प्रकृति केउद्गार है इनमें अलंकार नहीं केवल रस है।"1

§5§ कोरे उपदेशों का अभाव:- लोक साहित्य में लोक जीवन के क्रिया कलापों के होने से उनमें लोक जीवन के गुण अवगुण पाना स्वाभाविक है क्योंकि लोक साहित्य का आधार लोक आदर्श होते हैं परन्तु उनमें न तो कोरी आदर्श वादिता की झलक मिलती है और न ही कोरी उपदेशात्मकता। लोकोक्तियों में अधिकांश मिलने वाले उपदेशों को हम केवल उपदेशात्मकता नहीं कह सकते इनमें यथार्थकता एवम् चमत्कार अभिव्यंजित होता है।

§6§ लोक साहित्य लोक संस्कृति को प्रतिबिम्बित करता है :- लोगो का रहन सहन, खान-पान, आचार, व्यवहार, प्रेम, वात्सलय, करूणा, घृणा विश्वास सबका स्वभाविक आकलन लोक साहित्य मे मिलता वर्णित होता है जो लोक का वास्तविक रूप दर्शाता है। लोक साहित्य की इसी विशेषता के कारण शायद समाज शास्त्री, नृविज्ञानवेता और इतिहासकार असको अपने अध्ययन का प्रमाणित स्त्रोत मानने लगे है शिष्ट साहित्य में तो उनकी निराशा कारण है वास्तविकता कम और आदर्शवादिता अधिक।

उपर्युक्त लोक-साहित्य की सार्वदेशिक विशेषताएं है :- वे लोक साहित्य में उपलब्ध होती है परन्तु किसी विशिष्ट देश या जाति के

1- कविता कौमुदी §भाग 3§ द्वितीय संस्करण लेखक प० राम नरेश त्रिपाठी पृष्ठ 69

6- लोक साहित्य का महत्व :-
§6§

युविधानुसार लोक साहित्य के महत्व को निम्नलिखित रूप से बांटा जा सकता है :-

§1§ ऐतिहासिक महत्व :- लोक साहित्य में इस प्रकार की सामग्री का समावेश रहता है जो युग, समाज और व्यक्ति के इतिहास की कड़ियां अपने गीतों में, अपनी कथाओं से जोड़े रखती है। विस्मृत घटनाएं और बहुत सी इतिहास के पन्नों द्वारा विलुप्त एवम् अस्तित्वहीन घटनाएं लोक मस्तिष्क द्वारा लोक साहित्य में स्थान पा जाती है। अत: इतिहास के मर्मज्ञों को भी कभी कभी अनेक कड़ियां जोड़ने के लिए लोक साहित्य की शरण लेनी पड़ती है।

§2§ भौगोलिक महत्व:- लोक साहित्य के माध्यम से भूमि, नदियां, पर्वत, सागर, टीलों आदि भौगोलिक स्थानों की वर्णित उपलब्धि भी होती है। देशकाल की ऋतुओं, जलवायु, संचारएवम् परिवहन के साधन, व्यापारिक सम्बन्ध एवं साधनों, वहां का वातावरण आदि का वर्णन लोक साहित्य में दर्शनीय होता है।

§3§ सामाजिक महत्व :- समाज के सभी पहलुओंएवम् क्रीड़ाओं तथा क्रिया कलापों का "सुख-दु:ख" राग विराग, आशा-निराशा, ईर्ष्या-द्वेष आदि मनोभिव्यक्ति का रीति रिवाजों, आचार विचार,

- -

रहन सहन विश्वास एवम् परम्पराओं का चित्रण प्राप्त होता है। समाज में व्यापत समस्त सम्बन्धों का भावानात्मक निरूपण तथा विभिन्न जातियों का पारस्परिक अनुबन्ध इसमें प्राप्त होता है।" ।

किसी समाल का सर्वाधिक सच्चा और स्पष्ट देखना हो तो उसके लोक साहित्य का स्तर एवमं समृद्धि की जानकारी किजिए। जो उसका वास्तविक प्रतिबिम्ब दर्शायेगा ।

§4§ <u>धार्मिक</u> महत्व :- जिस प्रकार लोक साहित्य का समाज से सम्बन्ध है उसी प्रकार समाज के साथ साथ उसकी धर्मिक भावनओं का रिश्ता जुड़ा होता है देवी देवताओं चान्द, सूरज, धरती, वृक्ष नदियों व्रत यज्ञ, दान पुण्य आदि सामान्य जीवन में किये जाने वाले आस्तिक विचारों की क्रियाएँ लोक साहित्य में वर्णित होती है। किसी विशिष्ट समाज की धार्मिक विचारधारा की महानता एवम् सभ्यता का आभास लोक सहित्य को हो जाता है।

§5§ <u>शिक्षा विषयक महत्व :-</u> लोक साहित्य द्वारा

ग्रामीण एवं अनपढ़ जनता भी शिक्षा ग्रहण करती है यदि वे पद लिख न सकते हो तो श्रवण विधि उनके लिए उपयोगी सिद्ध होती है। और यह मौखिक एवम् सुनने का माध्यम उन्हे लोक साहित्य से अवगत कराता रहता है। चौपाल आदि में उनके गीतों भजनों, एवम् सांगो का कार्यक्रम चलता रहता है। फिर वृद्ध एवम् वृद्धाएँ संचित ज्ञान को बच्चों को कथाएँ आदि सुनाकर उनको

1- लोक गीतों की संस्कृति पृष्ठ भूमि लेखिका विधा चौहान 1972 पृ0 66

शिक्षा प्रदान करती है । बच्चा अनुकरण बड़ी शीघ्रता से करता है ।

(6) <u>आर्थिक महत्व</u> :- पुरानी कहावते चली आ रही है कि "धन बनियाँ का बर सौभ्या गाम की और भूखे भजन न होय गोपाला । चान्दी की जूती सोने के थाल आदि । इनमें हमें प्रत्येक युग के सामान्य जीवन के विषय में उनकी गरीबी अमीरी का बोध हो जाता है कि अमुक युग में आर्थिक स्तर किस प्रकार का था और साथ में गरीब जनता का भी

(7) <u>आचारिक महत्व</u> :- लोकाचार स्पष्ट करता है कि लोगों का आचार । यदि हम अपनी दृष्टि लोक साहित्य पर दौरायें तो यह बात और भी साफ हो जाती है कि इनमें लोकोत्तर नैतिक एवमं आचरण सम्बन्धि अवस्थाओं का उल्लेख सुन्दर तरीके से वर्णित होता है । जहाँ लोक साहित्य में ब्रह्मा- विष्णु, महेश के अवतारों की चारित्रिक झाकियाँ से मनोरम शब्द रूपी दृश्य हो वहाँ आदर्श और मर्यादा के आचरण को कैसे झुठलाया जा सकता है ।सीता का पति व्रत धर्म हमारे समाज के समक्ष अमिट तथा अटल उदाहरण न रखें ।

(8) <u>नैतिक महत्व</u> :- जन मानस की भावनाओं की आस्थाओं से नैतिक रूप जिनमें मातृत्व, पितृत्व, भातृत्व, आदि का रूप, पिता का त्याग, आदर्शसती नारी कि दिव्यता, मिलन एवम् विछोह की नैतिक भावनाओं का समावेश मिलता है । समाज के नैतिक स्तर का सजीवता पूर्ण वर्णन प्राप्त होता है ।

---

(9) साहित्यिक महत्व :- साहित्य मानव हृदय की भावना अभिव्यक्ति ही तो है। फिर लोक साहित्य भी तो यही है। परन्तु दोनों में अन्तर विचारणीय है वह है कि अलंकारिक एवम् छन्द दृष्टि से मुक्त करके यदि लोकसाहित्य को रसात्मक वाक्य का अन्त छवि को लोक साहित्य में साहित्य से किसी प्रकार भी कम नहीं माना जा सकता है।

(10) सांस्कृतिक महत्व:- " संस्कृतियों के पुनीत इतिहास की तरफ अधिकांश में लोक साहित्य से सम्भव है सच पूछा जाये तो लोक साहित्य ही संस्कृति की अमूल्य निधि है। "महात्मा गांधी ने भी तो कहा है कि लोक गीत समूची संस्कृति के पहरेदार हैं। अतः यदि हम यह कहें कि लोक साहित्य जन संस्कृति का दर्पण है तो अत्युक्ति न होगी।"[1]

(11) भाषा शास्त्रीय महत्व :- भाषा विकास के क्रम में बोली का असाधारण योग है। शब्दों के प्रमाणित निरुक्त ज्ञान के हेतु भी हम बोलियों का अध्ययन करते है लोक बोलियों के प्राकृतिक शब्द रूप लोक साहित्य में ही प्राप्त होते हैं। लोक भाषा में वर्णित होने के कारण लोकसाहित्य का भाषा वैज्ञानिक महत्व भी है। डा० शंकर लाल यादव के अनुसार तो "यही वह धरातल है जहां पर भाषा तत्ववेता भाषा के परतों को उखाड़ कर देखते हैं और ब गम्भीर से गम्भीर ब स्तरों में प्रवेश पाते हैं।"[2]

आगे की पंक्तियों में हम लोक साहित्य के भेदों के विषय में विचार करेंगे।

1- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक - शंकर लाल यादव पृ० 48
2- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक - शंकर लाल यादव पृ. 36

7- लोक साहित्य का वर्गीकरण :-

लोक साहित्य लोक जीवन की सहज भावाभिव्यक्ति है। अत: उसमें लोक-हर्षोल्लास, हास-परिहास, विषाद, पीड़ा, सुख:दुख, जय-पराजय, ज्ञान-विज्ञान, चिन्तन-मनन आदि सभी अभि व्यक्त हुआ है। इन सभी स्थितियों और मनो दशाओं को वाणी रूप प्रदान करने के लिये जिन विधाओं को अपनाया गया है, उन्हें लोक साहित्य के भेद या प्रकार कहते हैं। मोटे तौर पर हम इस साहित्य को कथा, गीत और कहावतें आदि के रूप में प्राप्त करते हैं। लोक कथाओं की विभेदता भी तीन रूपों में मानी जाती है - धर्मगाथा, लोकगाथा, तथा लोक कहानी। धर्म गाथा अध्ययन का विषय है शेष रह जाती है- लोक गाथा और लोक कहानी।

लोक साहित्य को श्री रामनरेश त्रिपाठी ने 28 वर्गों में बांटा है :- (1) संस्कारों के गीत 2- व्रतों और त्योहारों के गीत 3- ग्राम गाथाएं, 4- ग्राम कथाएं, 5- मन्दिरों में गाये जानेवाले पद, 6- राग के गीत, 7- खेत के गीत 8- भिखमंगों के गीत, 9- कोल्हू के गीत 10- भिन्न जातियों के गीत, 11- चक्की के गीत, 12- ऋतुओं के गीत 13- बच्चों के गीत, 14- गुड़ियों के गीत, 15- गांव में मनोरंजन के साधन मेले और तमाशे 16- गांव के खेल 17- ग्राम संगीत (नाच और गीत) 18- नाच और उसके तरीके, 19- बाजे और उनके उपयोग, 20- नीति की कहावतें 21- स्वास्थ्य की कहावतें 22- खेती की कहावतें, 23- अन्धविश्वास और ढकोसले, 24- बारहमासे, 25- नये नये शब्द और मुहावरे, 26- मनुष्य और पशुओं के रोगों के नुस्खे 27- पेशेवर शब्द और 28- जड़ी बुटियों की पहचान और उनके उपयोग।[1]

- -

1. ग्राम साहित्य - पहला भाग पृष्ठ 38-39

उपर्युक्त विभाजन से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह विभाजन वैज्ञानिक नहीं है । डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने वैज्ञानिक ढंग से लोक साहित्य को इन पांच प्रधान भागों में बांटा है ।:-

1- लोकगीत 2- लोकगाथा 3- लोक कथा 4- लोकनाट्य
5- लोक सुभाषित । लोक सुभाषित को उन्होंने प्रकीर्ण साहित्य की संज्ञा भी दी है ।"[1]

(1) लोक गीत :- लोकभाषा के माध्यम से स्वर और लय के संगीतात्मक आवरण में लिपटी हुई सामान्य जन-समुदाय के हार्दिक रागाराग से पूर्ण भावानुभूतियाँ लोकगीत कहलाती है । जगत की विभिन्न चेष्टाओं एवं स्थितियों का प्रभावपूर्ण चित्र इन गीतों में निबद्ध रहता है ।"[2]

लोक गीत लोक साहित्य का सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवम् प्रभावशाली अंग लोक के पास जिन्दगी में अत्याधिक प्रेरणा देने का साधन लोकगीत ही है । सभी प्रकार के अवसरों पर गेय तथा सभी भावों से युक्त पद्यमयी अभिव्यक्ति इसी के अन्तर्गत आती है ।

(2) लोक गाथा:- लोक साहित्य के विपुल भंडार में कुछ ऐसे भी गीत पाये जाते हैं जिनमें कथात्मक की प्रधानता होती है तथा वे बड़े लम्बे होते हैं । इन्हे अंग्रेजी में "बैलेड"[3] कहते हैं । और हिन्दी में इनका पर्यायवाची शब्द " लोक गाथा" भी स्वीकार किया गया है ।"[4]

1- हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास, सोलहवां भाग, प्रस्तावना ।
2- लोकगीतों का विशद विवेचन ।
3- ओल्ड बैलेड -बार्ड फ्रेंक शिजविक पेज ।
4- भोजपुरी लोक गाथा लेखक - श्री सत्यव्रत सिन्हा पृष्ठ 2

§3§ लोक कथा :- लोक कथा लोक साहित्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है अपनी प्रचुरता एवम् लोकप्रियता दोनों ही कारणों से लोक साहित्य में लोक कथाओं विशेष महत्व प्राप्त है। मनोरंजन, शिक्षा, व्रतों के अनुष्ठान, जातियों के स्वभाव तथा पशु पक्षियों, भूतप्रेतों तथा परियों से सम्बद्ध सभी प्रकार की गद्यमयी अभिव्यक्ति लोक कथाओं के अन्तर्गत आती है।

§4§ लोक नाट्य - गीत, नृत्य और संगीत से युक्त लोकानुरंजक कथावस्तु का लोक भाषा में अभिनीत होना लोक नाट्य है। नाट्य साहित्य रूप का स्वांग आदि जो गद्य, पद्य एवं नाट्य का मिश्रण है,। इसी में आता है।

§5§ प्रकीर्ण साहित्य :- प्रकीर्ण साहित्य में उन सभी लोक अभिव्यक्तियों का समावेश होता है जिनका उल्लेख लोक गीत, लोकगाथा, और लोक कथा में नही आये हैं। वे हैं कहावतें, चुटकलें, मुहावरे, पहेलियां, सूक्तियां आदि।

कहावतों में प्रदेश की अपनी सांस्कृतिक चेतना और अपना जीवन दर्शन होता है। सामान्य जन का जीवन दर्शन, उनकी गतिविधियां आदि विभिन्न रूपों में प्रकट होते रहते हैं इनमें सांसारिक व्यवहार पटुता, सामान्य बुद्धि का बहुत सुन्दर वर्णन मिलता है।

चुटकले कथा का गतिमय रूप होता है।

मुहावरों में ज्ञान और अनुभव का विशेष भंडार सुरक्षित है जिन तथ्यों के विषय में इतिहास उदासीन रहा है उन्हे भी इनके द्वारा जन मानस सदियों से सुरक्षित रखता चला आ रहा है।

घाघ आ भड्डरी की सूक्तियों में ऋतु विज्ञान सम्बन्धि बहुमूल्य तथ्य उपलब्ध होते है। इनमें खेती और वर्षा की अनुभूति भी प्राप्त होती है। पहेलियों के माध्यम से बुद्धि विलास होता है।

- -

भाग ब

बांगरू लोक साहित्य का सामान्य परिचय एवम् वर्गीकरण

1- बांगरू लोक साहित्य का सामान्य परिचय:-
साहित्यकारों द्वारा उपेक्षित रहने की वजह से बांगरू -ब्रज, अवधी, खड़ी बोली की तरह बोली से भाषा पद पर सुशोभित नहीं हो पाई। एक समय में ब्रज ने और आज खड़ी बोली ने राष्ट्र भाषा का रूप धारण कर लिया है परन्तु बांगरू विशुद्ध लोक भाषा ही रही है। अतः साहित्य के नाम पर जो कुछ बांगरू बोली के माध्यम से प्राप्त होता है वही वह लोक साहित्य ही है।

लोक साहित्य के तत्व पर हम विचार करने से यह पाते हैं कि लोक साहित्य लोक मानस की आधारशिला पर ही निर्मित होता है। इस प्रश्न पर ध्यान देने के लिए लोक साहित्य के आधारभूत तत्वों पर ध्यानआकर्षित करना आवश्यक होगा :-

§1§ निसर्ग सिद्ध अभिव्यक्ति §2§ भाव जगत की सुकारता एवं स्वाभाविकता §3§ भाषा अनगढ़ प्रयोग §4§ लोक काव्य में प्रयुक्त छंदों के निर्वाह में शैथिल्य; §5§ तर्जों या धुनों का सौन्दर्य §6§ अप्रस्तुत विधान में सादृश्य का अनूठापन
§7§ नैतिकता एवं धार्मिकता का संरक्षण §8§ मस्ती के वातावरण की संसृष्टि §9§ रूढ़ियों एवं परम्पराओं का निर्वाह
§10§ लोक-संस्कृति के अभिव्यक्ति।

उपर्युक्त तत्वों पर विचार करने पर हमें लोक साहित्य के अन्तर्गत निम्नलिखितविशेषताएं दिखाई पड़ती हैं।" लोक साहित्य लोकमानस की सहज

- -

कर्म और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है । यह बहुधा अलिखित ही रहता है और अपनी मौखिक परम्परा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता रहता है । इस साहित्य के रचयिता का नाम प्रायः अज्ञात रहता है । लोक कुछ प्राणी जो कुछ कहता सुनता है, उसे समूह की वाणी बनकर और समूह की वाणी में घुलमिलकर कहता है । संभवतः लोक साहित्य संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिम्ब भी होता है । अभिजात, परिष्कृत या लिखित साहित्य के प्रतिकूल ब लोक साहित्य परिमार्जित भाषा, शास्त्रीय रचना पद्धति और व्याकरणिक नियमों से मुक्त रहता है । लोक भाषा के माध्यम से लोक-चिन्ता की अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है ।"[1]

बांगड़ लोक साहित्य का क्षेत्र बड़ा बड़ विशाल एवं विस्तृत है उसके रूप विविध एवं अनेक प्रकार के है । बांगड़ बोली में लोक साहित्य की विपुल राशि उसकी विविध विधाओं में सरसता, मृदुता, एवम् गंभीरता की दृष्टि से समृद्ध है ।

इन बातों के गम्भीर विवेचन से पता लगता है लोक साहित्य बड़ा उपयोगी है बांगड़ लोक साहित्य की जो सामग्री प्राप्त हो सकी है । उसी आधार पर उसका आगे वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा रहा है । डा० शंकर लाल यादव के साहित्यक तत्व इस प्रकार हैं :-

1- लोक साहित्य संतति परम्परा से चलता रहता है अर्थात औलाद दर औलाद
2- लोक साहित्य मनोरंजन शिक्षा या ज्ञान वृद्धि का सरल मार्ग है ।
3- लोक साहित्य लोक के संस्कार, व्रत पूजादि से संबन्धित है ।
4- लोक साहित्य ग्रामीण खेलों एवं वाक प्रचार से सम्बन्धित है ।
5- लोक साहित्य में लोक जन सुलभ विश्वास श्रद्धा आदि के लिये स्थान है।[2]

- -

1- लोक साहित्य लेखक - ब जगदम्बा प्रसाद पाण्डे पृष्ठ 14
2- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य डा० शंकर लाल यादव 1960 पृष्ठ 64

2- बांगड़ लोक साहित्य का वर्गीकरण :-

साहित्य के वर्गीकरण की कई पद्धतियां होती हैं। कहीं तो उसका विभाजन आस्वाद की दृष्टि से कियाजाता है जैसे दृश्य एवं श्राव्य। कहीं रचना के आधार पर कियाजाता है- गद्य एवं पद्य। कहीं आश्रय के आधार पर किया जाता है कि जैसे बाल साहित्य, युवक साहित्य और वृद्ध साहित्य और कहीं उसका विभाजन लिंग के भेद के अनुसार किया जाता है जैसे स्त्री साहित्य और पुरुष साहित्य। इन्हीं कतिपय पद्धतियों अनुसार बांगड़ लोक साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया जायेगा।

आस्वाद की पद्धति से बांगड़ लोक साहित्य का निम्नवर्गीकरण हो सकता है :-

- बांगड़ लोक साहित्य
  - दृश्य- लोक नाट्य- सांगीत, नौटंकी, सोरठ, भात, रामलीला आदि।
  - श्रव्य
    - गद्य
      - लोक कहानी
      - आंचलिक कहानी
      - चुटकले
      - लघु छन्द कहानी
    - पद्य
      - लोकगीत
        - मुक्तक
          - संस्कार सम्बन्धी
            - विवाह मृत्यु
          - ऋतुसम्बन्धी व्रत, पर्व, त्योहार, देवी, माता, मल्हार आदि।
          - कृषि सम्बन्धी
          - राजनीति
          - अन्य पनघट युवकी के हास्य रस के गीत
        - कथात्मक (प्रबन्धगीत)
          - रागकिस्सा गाथा, व अवदान
          - पंवारा
          - देवी की बात
      - प्रकीर्ण
        - पहेली
        - मुहावरा
        - सूक्तियां
        - लोकोक्तियां (कहावतें)
        - बोलों में वाणी विलास

- -

दृश्य काव्य में लोक नाट्य (अभिनयात्मक) लोक साहित्य के अन्तर्गत सांग, भगत, नौटंकी, सोरठा, आदि ग्रामीण लोगों की रुचि का कार्यक्रम आता है। इनमें खुले मैदान में सांग मण्डली अपने साजिन्दों के साथ तख्त या तख्त पर बैठ कर अपना सांग दिखाती है। दादा लखमी चन्द और उनके शिष्य मांगे राम के सांगों को लोग बड़े चाव एवम् उत्साह से देखते थे। अन्य सांगों में राम किशन व्यास, चन्द्रवादी, धनपत निदाणा, कर्मवीर, बलबीर, श्याम आदि आते हैं।

श्रव्य काव्य में गद्य एवं पद्य दोनों ही लोक साहित्य में आते हैं इनमें लोक कहानियां, चुटकले, कहावत, लघुकथा कहानियां आदि सम्मिलित हैं। पद्य भाग में (लघुएवम् प्रबन्ध) दोनों प्रकार के गीत पहेलियां, सूक्तियां आदि गेय वस्तुएं आती हैं। विभिन्न व्रत उत्सवों, त्योहारों, जन्म और विवाह आदि के अवसरों पर काजा बनड़ी आदि, देवी (शीतलामाता) मल्हार, सांझी, कार्तिक स्नान आदि गीत छोटे छोटे गीतों की गिनती में आते हैं। और वाणी विलास के अन्तर्गत बालकों की खेल क्रिड़ायें आदि का पुट रहता है। इनमें कहीं कहीं गद्य का भी अंश सम्मिलित होता है।

बड़े या प्रबन्ध गीतों में गद्य एवं पद्य दोनों का समावेश होता है जबकि गद्य का अंश कम और पद्य का भाग ज्यादा होता है परन्तु इन्हें गीत में कहकर कथात्मक गीत कहा जाता है। बहुत से गीत तो कई मास में

- -

समाप्त होते हैं जैसे आल्हा उदल । ढ़ोलामारू, शीलादे, निहालदे, आदि इसी प्रकार की व्याख्यायें है । लोक गाथाओं के अन्तर्गत आल्हा, साके पंवारे आदि लोक प्रबन्ध का वर्णन मिलेगा इनमें ऐतिहासिक या पौराणिक चरित्र को आधार बनाकर उसके इर्द गिर्द कथाओं का जाल बुना जाता है । इन्हें अवदान की संज्ञा भी प्राप्त है ।

प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत सर्वप्रथम लोकोक्तियाँ कहावतें आती है इनमें गागर में सागर के समान नीती, शिक्षा, कृषि, राष्ट्र समाज एवं जाति के व्यापक नियम, सिद्धान्त एवं आचार विचारों का समावेश मिलता है ।

लक्षण एवं व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य ही मुहावरा होता है ।

पहेलियाँ द्वारा बुद्धि का व्यायाम होता है पहेलियों को बुझौवल भी कहा गया है । इन्ही पहेलियों को यहां "फाली" या "फाल"आड़ना" कहते है । फाली का सिधा सादा अर्थ हैकि प्रश्न कर्ता के प्रश्न का शीघ्रता से उतर देना । बुद्धि परिक्षा के अनुपम साधन के रूप में ये व्यवहृत होती हैं । भावनाओं से इनका सम्बन्ध नही। मस्तिष्क के कौशल से उत्पन्न होकर ये मस्तिष्क पर ही प्रभाव डालती है ।

चुटकुले कहानी का रोचक गतिमय खण्ड होता है ।

- -

सुक्तियों में ज्ञान मार्ग दर्शन की बातें भरी रहती है। इन्हें इसीलिये तो अच्छी उक्तियां कहा गया है। " सुक्तियों में ग्रामीण वासियों का शताब्दियों के अनुभव का निचोड़ एवम् सार भरा होता है। ये खेत ब्यार के मामले में तथा पशु पक्षी सम्बन्धी यथोचित मार्ग दर्शन कराती है। और गुरू मन्त्र का काम देती है।"[1]

यदि रचना की दृष्टि से बांगरू लोक साहित्य का वर्गीकरण किया जावे तो इसके निम्न दो वर्ग बनते हैं :-

1- गद्य:- इसके अन्तर्गत सभी कहानियां और चुटकले आ जाते है।

2- पद्य:- इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के गीत, पंवारे, कथात्मक गीत वो लोकोक्तियां आ जाती है।

3- तीसरा वर्ग भी बनाया जा सकता है जिसमें पद्य एवं गद्य मिश्रित कहानियां, सांग, नौटंकी आ सकते हैं।

आश्रय के आधार पर बांगरू लोक साहित्य के तीन वर्ग बनाये जा सकते हैं :-

I- बाल साहित्य

II- युवक साहित्य

III - वृद्ध साहित्य

प्रथम वर्ग में खेल कूद से सम्बन्धित लोरियां, झांकी, आदि खेलों के गीत नाना-दादी द्वारा कही जाने वाली कहानियां आदि है।

द्वितीय वर्ग में वह समस्त साहित्य आयेगा जो यौवन की उदाम भावनाओं से लबालब है। संयोग, वियोग एवम् सरल आंकियाँ इस वर्ग में अधिकप्रिय होती है। आल्हा, शाके, पवाँरे, सांग, नौटंकी, ये सब युवक युवतियों के कण्ठाहार होते हैं। नवयुवकों और युवतियों के कण्ठ में जवानी की उमंग बढ़ाने वाले प्रेम और श्रृंगार के रस गीत पूर्वजों के सच्चे अनुभवों को बताने वाली कहावतें, चुटकलें, खेती की कहावतें, ज्ञानवर्धक पाठ इसमें आते हैं।

तृतीय वर्ग में भजन, हरजस, गोपी चन्द भरथरी आदि गीत और गाथायें आते हैं। संसार केसुख भोगने के बाद शान्ति एवं पवित्रता की पिपासा- भिव्यक्ति, नीतिएवम् उपदेशात्मक कहानियाँ, कहावतें, {लोकोक्तियाँ} का खजाना वृद्ध एवम् वृद्धाओं द्वारा सभी को निरन्तर रूप से लुटाया जाता है।

लिंग भेद के अनुसार यदि लोक साहित्य का वर्गीकरण कियाजाये तो उसके दो वर्ग बनते है:-

I- पुरुषों का साहित्य {बालकों का साहित्य भी इसमें आ जाएगा}

II- स्त्रियों का साहित्य {बालिकाओं का साहित्य भी इसमें आ जाएगा}

पुरुषों के साहित्य में लघुगीतों का प्रायः अभाव रहता है। फिर भी अपवाद रूप में होता है पुरुषों का साहित्य लोक गाथाओं, बारहमासा होली, {फाग} आदि तक सीमित रहता है। वृद्धावस्था में भजन, हरजस, पहेलियां, कहावते आदि बालकों के भिन्न भिन्न आयु के खेल आदि के

--- --- -

मनोरंजक गीत होते हैं ।

स्त्रियों के साहित्य में गीतों की विविधता मिलती है । जो जिन्दगी के प्रत्येक पहेलु का स्पर्श करती है । उनमें श्रृंगार एवं करुण रस व अधिकता होती है और बहुत ही अपवाद वीर रस स्त्रियों के साहित्य में विशेषकर गीतों में करुणामयी सागर उमड़ता है । बालिकाएं खेलों एवम् सावन के गीतों से अपना मन बहलाती है ।

ऊपर बांगड़ लोक साहित्य के विविध दृष्टिकोणों से वर्ग बनाएं जा चुके हैं । अब इस साहित्य की संक्षेप में ऐसी रूपरेखा देने का प्रयास किया जा रहा है । जिससे कि पाठक इस पर दृष्टि डालकर बांगड़ लोक साहित्य के स्वरूप का कुछ आकलन कर सकें ।

बांगड़ लोक साहित्य का वर्गीकरण अध्ययन की सुविधा की के लिए निम्नलिखित चार वर्गों में कियाजा सकता है ।

1- लोक गीत 2- लोकगाथा 3- लोक कथा 4- प्रकीर्ण

बांगड़ लोक साहित्य का वर्गीकरण

लोकगीत	लोक कथा (गाथा) (कथात्मक गीत)	लोक कहानियां	प्रकीर्णसाहित्य
* संस्कार गीत 1- जन्म 2-विवाह 3-मृत्यु *-कृषि गीत * देवी देवता व्रत त्योहार के गीत * ऋतु गीत * क्रिया गीत नृत्य, अनुभूति, तर्क, एवम् संवाद प्रधान गीत * बालगीत * राजनीति सम्बन्धि * अन्य	* प्रबन्धात्मक (कथात्मक गीत) * स्वांग गीत भात या नौटंकी गीत		* कहावतें (लोकोक्तियां) *-चुटकुले, * मुहावरें * पहेलियां * सूक्तियां

1- बांगरू लोकगीत :- लोक गीतों में विभिन्न अवसरों, ऋतु, श्रृंगार, देवी देवताओं, हास्य आदि प्रकार के गीतों के गीतों का समावेश है। कहीं कहीं तो इन गीतों में उच्च कोटी का कलात्मक परिष्कार शब्द चयन, संगीत की मधुरता और शैली का निखार पाया जाता है। लोक गीतों में सहजता, मिठास भोलापन, निःसंकोच अभिव्यक्ति, सांकेतिकता, नाटकीय, चमत्कार और सरसता के तत्व गायक की अनुभूति के साथ उसकी सृजनशीलता रूपी भट्ठी की तेज आंच और अनथक तपन के द्वारा स्वतः उभरते हैं। लोकगीतों में समरसता, समानता और अनुभूति के उत्कर्ष से सर्जित अभिव्यक्ति की सहजता के चिन्ह पहचाने जाते है।"[1] अनुभूति के भीतर से उगती हुई कला ही वस्तुतः सच्ची गीति कलां है। जो लोकगीतों में प्रसिद्ध है। :- देखिए:-

मेरी मेहंदी के औडे चौडे पात रे बीरा वारी वारी जां
मैं तै पीसूंगी चकले के पाट रे बीरा वारी वारी जां
मैं तै धालूंगी हिरणी के दूध रे बीरा वारी वारी जां
मैं तै ल्याऊंगी-2---के हाथ रे बीरा वारी वारी जां[2]

यह रहा उदाहरण अतः गीति का प्राण अनुभूति ही तो है। इसी प्रकार एक से एक निराली सूझबूझ आपको बांगरू लोकगीतों में दृष्टिगोचर होगी।

बांगरू लोकगीतों को हम प्राप्त सामग्री के तथ्यों की जानकारी जान के निम्नलिखित ढंग से बांट सकते हैं। वैसे तो इनका क्षेत्र व्यापक है।

1- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह 1981 पृष्ठ 9

2- कोई नाम

1- संस्कार सम्बन्धी गीत :-

{क} पुत्र जन्म के सम्बन्ध में गाये जाने वाले अनेक गीत ।

{ख} विवाह के विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीत ।

{ग} मृत्यु समय गाये जाने वाले गीत ।

2- कृषि गीत:-

धरती, फसल, गाय, खेती, {धान, कपास, बाजरा आदि} से सम्बन्धित गीत ।

3- देवी देवता व्रत त्योहार के गीत :-

देवी देवता,जामाता, तीर्थ-व्रत त्योहार, पर्व आदि अवसरों के गीत ।

4- ऋतु गीत :-

सावन, बारहमासा, मल्हार, आश्विन,{आसौज} कार्तिक, स्नान फागुन, आदि में गाये जाने वाले गीत।

5- क्रिया गीत :-

{ नृत्य, अनुभूति, तर्क और संवाद प्रधान गीत ।

6- राजनीति सम्बन्धी गीत :-

राजनीति प्रभाव के गीत

8- अन्य गीत :-

बचे हुवे गीत ।

उपरोक्त श्रेणियों की पूरी व्याख्या निम्नलिखित है :-

1- <u>संस्कार सम्बन्धी गीत</u> :-

{क} <u>पुत्र जन्म के गीत</u> :- इनमें दम्पति की रति क्रीडा, गर्भिणी, स्त्री

- -

की स्थिति ननद भाभी की शर्त, गर्भिणी की इच्छा, प्रसव पीड़ा, दाई बिदाई ,[बेमाता] छठी, जच्चा, पीला, आदि अनेक प्रकार के गीत गाये जाते है ।

[ख] विवाह के गीत :- इनमें गीतों की भरमार रहती है ।विवाह के भिन्न भिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों में श्रृंगार तथा हास्य रस के गीत सम्मिलित होते है । लगन, भात, बाता , रतजगा, हलदी तेल, बनड़ा, बनड़ी, ढुकाव, फेरे, सीठ्ने, लड़की विदाई आदि के गीत आते हैं ।

[ग] मृत्यु संस्कार के गीत:- यहां शोक पूर्ण गीतों का ही वर्णन होता है ।

2- कृषि गीत:- इसमें भूमि के महत्व, खाद की महत्ता, बीजों की किस्म, फसले बोने का समय, फसले कांटने का समय, धरती माता, गाय, बैल, ईख, कपास, बाजरा आदि फसलों के सुख दु:खके गीत ।

3- देवी देवताओं, व्रत एवं त्योहारों के गीत :- वर्ष के बारह महीनों के दौरान मनाये जाने वाले बागड़ के सभी तीज त्योहारों, पर्वों, व्रत आदि के गीतों कावर्णन वर्णित है - सेढल माता[शीतला माता] देवी, हनुमान, गुगा, कृष्णावतार, दूबड़ी, तुलसा, गंगा स्नान आदि के गीत गाये जाते हैं ।

4- ऋतु गीत:- सावन के गीतों में झूला, तीज, एवम् बारह मासा, मल्हार एवं अन्य श्रृंगारिक प्रेममयी गीतों की बहार रहती है । फागुण में होली फाग, आदि मस्ती भरे गीतों की अधिकता रहती है । इनके इलावा इसमें आश्विन के सांझी के गीतऔर कार्तिक में पथवारी और कार्तिक स्नान के

- -

भजन और गीतों का भी उल्लेख है ।

5- क्रिया गीत:- इनमें नृत्य, अनुभूति, तर्क, और संवाद प्रधान गीतों को रखा गया है ।

6- बालगीत:- बालक एवम् बालिकाओं के खेल क्रिडाओं के गीतों का वर्णन इसमें किया गया है । लोरियां, पलणा, खेलने और खिलाने के गीत ।

7- राजनीति प्रभाव के गीत :- इसमें देश प्रेम के गीत, गान्धी जी के के विषय में, इन्दिरा गांधी का जीवन वृत, उधम सिंह का बलिदान, और संजय की मृत्यु के गीत है ।

8- अन्य गीत :- सभी बच्चे खुचे गीतों का इनमें वर्णन होता है । जैसे सौकण, बरखे सम्बन्धी, शराबी की पत्नि का दुःख, हास्य व्यंग्य आदि का वर्णन है ।

2- लोक गाथा :- यहां लोक गाथा जिन्हे प्रबन्धगीत या कथात्मक गीत भी कहा जाता है की संख्या भी अत्याधिक प्राप्त होती है । यह आकार में बड़े और इनमें इतिवृतात्मक तत्व प्रधान होता है इनका आधार पौराणिक और इतिहासिक प्रायः होता है । इनमें कल्पना और चमत्कारिक अंश की भी कहीं कही परिलक्षित होता है । आल्हाउदल जैसी लोक गाथाएं तो बहुत दूर दूर तक चर्चित हो चुकी है । काल्पनिक लोक गाथाओं में ज्यानी चोर जैसें किस्से है । जो ग्रामीण जनता में अति लोकप्रिय है । बनजारा, गोपीचन्द, पूर्ण मल, गूगा, शालादे, निहालदे, हरफूल जाट जुलाणी का कुछ एक प्रसिद्ध लोक गाथाएं है । भूरा बादल के शाखे और जयमल पत्ता के पंवारे भी इसी के अन्तर्गत आते है ।

बांगेड़ सांगों को भी हमने लोकगाथाओं के दूसरे भाग में वर्णित किया है। यह सांग, नौटंकी सोरठ का बहुत प्रचार रहा है। और अब भी सांगों की प्रति दिलचस्पी पाई जाती है। इसकी समृद्धि को बनाने का काम हरियाणा में काफी हुआ है। यहां के सांगों में अपनी अलग ही विशेषता है उनकी रागनियों के माध्यम से कही गई उपमा एवं उक्ति बड़ी ही अवसरानुकूल होती है। जिन्हें यहां "बखत के बोल" भी कह देते हैं। पं० दीपचन्द, पं० लखमीचन्द, पं० मांगेराम, राम किशन व्यास, धनपत निदाणा, चन्द्रबादी के सांगों में मनोरंजक प्रधान तत्वों की प्रधानता मिलती है परन्तु इसके उपरान्त जो इनकी रागनियों में अश्लीलता का समावेश होने लगा है 2 वह शिक्षाप्रद की बजाये हानिप्रद ही है।

आज भी यहां के सांगियों को सांग करने के लिये दूर दूर तक बुलाया जाता है देखिए एक उदाहरण :-

मोर पपीहे, कोयल कैसी,
मीठी वाणी बोल्ले।
चितक का वाकू मारे दूर ते
बैरे जिगर ने छोल्ले ।।

3- लोक कथा :- लोक साहित्य के अन्तर्गत लोककथाओं का विशेष महत्व है। यह लोक कथाएं लोक जीवन से व्याप्त है। वृद्ध- वृद्धाएं बच्चों को रात्रि में कथाएं सुनाकर उनके मन को बहलाते है। "कल्पित कथा के अन्तर्गत पशुपक्षियों द्वारा नैतिक उपदेश का निरूपण किया जाता है। परियों की कथा में परि, अप्सराओं एवम् लौकिक व्यक्तियों की कथा रहती है। दंत कथाओं में ऐतिहासिक आधार पर आधारित कथाएं आती है जो कि मौखिक परम्परा के क्रम में अनेक नवीन तथ्यों से युक्त हो जाती है। पौराणिक कथा

- -

के अन्तर्गत देवी देवताओं सम्बन्धित कथाओं का समावेश होता है।"[1]

इन लोक कथाओं में निम्नलिखित तत्व पाये जा सकते हैं:-[2]

i- प्रेम का अभिन्न पुट ii- अश्लील श्रृंगार का अभाव

iii - मानव की मूल प्रवृत्तियों से निरन्तर सम्पर्क

iv- सुखान्तता v- मंगल कामना की भावनाएं

vi- रहस्य, रोमान्च एवम् अलौकिकता की प्रधानता

vii- उत्सुकता की भावना और viii- वर्णन की स्वाभाविकता।

अत: उपरोक्त विवेचन से हमें बागड़ की निम्नलिखित प्रकार की कहानियां मिलती हैं:-

(क) व्रत एवं त्यौहारों सम्बन्धी लोक कथाएं :- ये वे कहानियां हैं जो व्रत एवं त्यौहारों के मूल एवं मूल्य पर प्रकाश डालती हुई व्रत एवं त्यौहारों का अंग बन गई हैं।- करवा चौथ, प्यास की कथा, सोमवार आदि के व्रतों की कथाएं।

(ख) पौराणिक लोक कथाएं :- धार्मिक देवता के करतब, शिव-पार्वती की उदारता एवं संकट से मुक्ति दिलाके अन्तर्ध्यान होने की असंख्य कहानियां हैं।

(ग) साहस तथा शौर्य की लोक कथाएं :- इसमें भूत, राक्षस, (दाने) आदि से मुकाबला करने की साहस एव शौर्य की कथाऐं मिलती हैं।

(घ) चतुराई पूर्ण लोक कथाएं :- यह बड़ी रोचक, मनोरंजक एवम् ज्ञान वर्धक कहानियां होती हैं।

(ङ) उपदेशात्मक लोक कथाएं :- पशु पक्षियों आदि के द्वारा उपदेश दर्शाया जाता है।

1- लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि लेखिका विद्या चौहान 1972 पृष्ठ 53

2- लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि लेखिका विद्या चौहान 1972 पृष्ठ 54

(ख) मनोरंजन प्रधान एवम् कौतूहल पूर्ण लोक कथाएं :- उपदेश और मनोरंजन तत्वों का इन कहानियों में कम या अधिक समावेश अवश्य पाया जाता है परन्तु मनोरंजन प्रधान कहानियां भी उपलब्ध होती है जिनमें कौतूहल पूर्ण बातें रहती है। इसमें परियों, दानें, आदि की कहानियां आती है।

4- प्रकीर्ण साहित्य :- लोकोक्तियां (कहावतें) चुटकुले, मुहावरे, पहेलियां सूक्तियां आदि को प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत रखा गया है।

कहावतों में यहां की जन जाति की अवस्था, सभ्यता, आचार विचार और जीवन दर्शन का कथन किया गया है। बालक, स्त्रियां और पुरुष इन सब की बातचीत में इनका प्रयोग स्वाभाविक रूप से मिलता है। इन लोकोक्तियों में यहां के लोगों का वर्षों का चिरसंचित अनुभव है।

चुटकुले कहानी के अतिलघु खण्ड होते हैं जिनमें मनोरंजन का समावेश होता है।

मुहावरे :- उस वाक्य खण्ड को कहते है जिसकी उपस्थिति से कथन की रोचकता और सफलता में वृद्धि मिलती है जिस प्रकार "भात भरणा" आदि।

पहेलियों को यहां "फली" या "फल" कहा जाता है। लड़कों के मनोरंजन के हितार्थ इसका अधिक प्रयोग होता है, बुद्धि परीक्षा, बुद्धि कौशल, होने के कारण "कौतूहल" की नींव की पहेली की आधारशिला है। चमत्कृति इनका प्रधान गुण है। पूर्वपक्ष बताकर उत्तर पक्ष की आकांक्षा रहती है।

यथा :- एक जगह में बांस - बलोली एक जगह में कुंआं।
एक जगह में आग लागी एक जगह में धुम्मां।।
पाठक विषमता में पड़ जाता है।

यहां घाघ, भड्डरी, रुपारूदेवा तथा अन्य प्रकार की सूक्तियां प्राप्त हैं।

- -

"भाग ग"

1- आधुनिक बांगरू लोक साहित्य का समीक्षात्मक विवरण :-

आधुनिक बांगरू लोक साहित्य का समीक्षात्मक विवरण यहां उपलब्ध लोक साहित्य सम्बन्धि सामग्री के आधार पर प्रस्तुत है। सर्वप्रथम "हरियाणा का इतिहास पुस्तक की समीक्षा करने से यह स्पष्ट होता है कि इसमें हरियाणा की ऐतिहासिकई वर्णन में इतिहास की पृष्ठ भूमि की बजाय राजनीतिक उल्लेख एवम् राजनैतिक आंकड़ोंकी व्याख्या अधिक की गई है। साहित्य की दृष्टि से इस पुस्तक का कोई विशेष महत्व दृष्टि-गोचर नहीं होता ।

यहां उपलब्ध कुछ भाषा सम्बन्धि पुस्तकों में सर्वप्रथम "बांगरू का संरचनात्मक अध्ययन है जो अंग्रेजी माध्यम की पुस्तक है और अमेरिकन पद्धति पर लिखी गई है इसमें विशेष रूप से बांगरू का अध्ययन रखते हुए भी पश्चिमी हिन्दी का मूल ढांचा स्वीकारा गया है। और यह भाषा शास्त्र के आधुनिक नियमों पर लिखी गई है। हिन्दी में अभी तक इस विषय पर कोई पुस्तक नहीं है । प्रस्तुत प्रयास में डा० जगदेव सिंह का उक्त व्याकरण तथा कामता प्रसाद के व्याकरण को मानदण्ड बनाया गया है। मुहावरे एवम् लोकोक्तियां सांगों से उद्धृत की गई है।

" हरियाणवीका उद्गम एवम् विकास " में हरियाणा का नामकरण व्युत्पत्ति और उसकी सीमाओं के साथसाथ यहां की अन्य बोलियों की शब्दावली का अध्ययन तथा व्याकरण सम्बन्धी अन्य समस्याओं की पूर्ण

1- बांगरू का संरचनात्मक अध्ययन लेखक डा० जगदेव सिंह 1970

रूप से व्याख्या की गई परन्तु लोक साहित्य की दृष्टि से केवल हरियाणा की व्युत्पत्ति और व्याकरण सम्बन्धी सामग्री भी सहायक सिद्ध हो सकती है बांगरू के संरचनात्मक अध्ययन के पश्चात जो पुस्तक बांगरू के भाषा सम्बन्धी प्रकाश में आई वह " बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन" है ।"[1] इसमें बांगरू बोली का ध्वनीय, पदीय, और वाक्यीय संरचना पर अध्ययन उपलब्ध है और साथ ही बांगरू के प्रत्यय, उपसर्ग, समास तथा शब्द समूह पर भी अपेक्षित विस्तार से चर्चा की गई है । यह पुस्तक डा० नानक चन्द शर्मा की "हरियाणवी का उद्गम एवम् विकास"[2] का ही विकसित एवम् आधुनिक रूप है । क्योंकि इसमें शर्मा जी ने पहले खण्ड में हरियाणवी की ध्वनियों पर विचार किया गया और दूसरे में रूप तत्व - संज्ञा सर्वनाम, लिंग, वचन उपसर्ग, प्रत्यय आदि पर अध्ययन किया गया है । इसमें मुहावरे लोकोक्तियां का भी कुछ संकलन है । भाषा सम्बन्धी पुस्तकों में भाषा विभाग हरियाणा द्वारा प्रकाशित "हरियाणा की उपभाषाएं"[3] पुस्तक में भिन्न भिन्न लेखकों द्वारा बांगरू एवम् जहां की अन्य बोलियों- अहीरवाटी, मेवाती, बागड़ी और शेखावटी, तथा कौरवी की सामान्य जानकारी, सीमाक्षेत्र, बोलने वालों की संख्या तथा संस्कृति पर भाषा के नमूने शब्दावली, लोकगीत के नमूने आदि पर सामग्री प्राप्त है जिसमें संक्षिप्त वर्णात्मक सामग्री उपलब्ध है । कौरवी तो यहां की सीमावर्ती भाषा है बाकी हरियाणा में बोलने वाली उप भाषाएं है ।

1- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक डा० शिव कुमार खण्डेलवाल 1980

2- हरियाणवी का उद्गम एवं विकास लेखक डा० नानक चन्द शर्मा 1968

3- हरियाणा की उपभाषाएं सम्पादित डा० साधु राम शारदा प्रकाशित भाषा विभाग हरियाणा ।

लोकगीत विषयक उपलब्ध सामग्री में पांच पुस्तके हैं जिनमें तीन पुस्तकों का शीर्षक तो " हरियाणा के लोकगीत" नाम से अभिहित है[1]। और इन दो पुस्तकों में अपने अपने समयानुसार गीतों का संकलन मात्र है। एक पुस्तक को"हरियाणा के लोक गीतो का संग्रह"नाम[2] दिया है। जो कि संकलित है अन्य दो पुस्तकों से एक हरियाणा लोकगीतों की धरती सांस्कृति मूल्यांकन"[3] है जिसमें यहां के सामाजिक पर्वोत्सव, पारिवारिक संस्कारों एवम् ऋतुओं के गीतों को यहां के लोक जीवन, संस्कृति, समाजशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान कला, दर्शन इत्यादि के विविध माध्यमों से जांचने का प्रयास किया गया है। अन्य पुस्तक"हरियाणा लोकगीतों की धरती"[4] में बांगरी जन्म, विवाह आदि गीतों के साथ साथ बागड़ी गीतों का संक्षिप्त व्याख्या सहित संकलन मिलता है कुछ एक फागण, सावण, कार्तिक, आश्विन मासों के गीतों के साथ रसात्मक गीतों का भी संकलन है ।

लोकगाथाओं सम्बन्धि"हरियाणा लोकगाथाएं"[5] नामक पुस्तक उपलब्ध है जिसमेंहरियाणवी गीतात्मक आख्यानों का जिसमें वीरगाथाएं, जन आख्यान एवं पीरगाथा आदि का व्याख्यात्मक वर्णन किया गया है ।

लोक नाट्य सम्बन्धी उपलब्ध सामग्री में " हरियाणा लोक नाट्य कथा

1- हरियाणा के लोकगीत - एम.एस. रंधावा और देवी शंकर प्रभाकर 1953

2- हरियाणा के लोकगीत - संकलित डा० नानक चन्द शर्मा और सोमदत्त बंसल भाषा विभाग हरियाणा ।

3- हरियाणा लोकगीतो का संग्रह लेखक मादान हरियाणवी

4- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृति मूल्यांकन लेखक डा० भीमसिंह 1981

5- हरियाणा लोकगीतों की धरती लेखक देवी शंकर प्रभाक 1974

रंगमंच कथा[1] " इसमें इसके नाम से अनुरूप भी कथा सम्बन्धी अध्ययन दृष्टिगोचर होता है। एक अन्य सांग सम्बन्धी पुस्तक " हरियाणा के सूर्य कवि लक्ष्मीचन्द[2] " में केवल लक्ष्मीचन्द के सांगों में प्रेम तत्व, गुरु भक्ति आदि तत्वों की व्याख्या की गई है। जो बाकि बाकी सांगियों के सांगो के अध्ययन के प्रति पक्षपात का रवैया प्रस्तुत करता है।

लोक कथाओं सम्बन्धी " हरियाणा लोक कथाएं तथा कहावतें[3] " में यहां की लोककथाओं का संक्षिप्त परिचय एवं उनकी विशेषताओं का विवेचन करने का प्रयास किया गया है परन्तु तात्विक पक्ष कमजोर है ऐसा प्रतीत होता है कि संकलन पर करना अधिक ध्यान रहा है।

प्रकीर्ण साहित्य सम्बन्धी सामग्री में "हरियाणवी लोकोक्तियां शास्त्रीय विश्लेषण[4]" में बागड़ लोकोक्तियों का सांस्कृतिक, भाषा वैज्ञानिक एवम् काव्य शास्त्री विवेचन और विश्लेषण किया गया है। इसमें लोकोक्तियों का सांस्कृतिक एवम् ऐतिहासिक विश्लेषण इस प्रस्तुती द्वारा यहां की संस्कृति को ऋग्वैदिक तथा सिन्धु घाटी की परम्परा का ही विकसीत सांस्कृति रूप दर्शाने का प्रयास किया है।"हरियाणा की लोक कथाएं एवम् कहावतें[3]" में यहां की कहावतों का संकलन मिलता है। वह भी संक्षिप्त रूप में।

"हरियाणवी"सांगों का वस्तुपरख विश्लेषण" पुस्तक में यहां के सांगों

- -

1- हरियाणा लोक नाट्य तथा रंग मंच कथा लेखक देवी शंकर प्रभाकर 1974
2- हरियाणा के सूर्य कवि लक्ष्मीचन्द लेखक कृष्णचन्द्र शर्मा 1981
3- हरियाणा की लोक कथा तथा कहावतें भाषा विभाग हरियाणा
4- हरियाणवी लोकोक्तियां शास्त्री विश्लेषण प्रो० जय नारायण वर्मा 1972

9-

है वस्तुपरक विश्लेषण का अध्ययन किया गया है । इस पुस्तक" हरियाणवी सांगों का वस्तुपरक विश्लेषण"[1] में कई तथ्य अछूते रह गये हैं और कुछ एक तथ्यों का मूल्यांकन संक्षिप्त रूप में दर्शाया गया है । क्योंकि बागड़ सांग साहित्य को बहुत व्यापक एवं विस्तृत है ।

यहां उपलब्ध साहित्य सम्बन्धी कुछ अन्य पुस्तकें भी प्राप्त होतीहैं जिनमें" हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन" नामक दो पुस्तकें हैं[2]। इनमें से एक में हरियाणवी सांस्कृतिक एवम् ऐतिहासिक स्थानों का इतिवृत्त जुटाने का प्रयास किया गया है । और दूसरी में इस प्रदेश की भौगोलिक एवम् ऐतिहासिक परिस्थितियों के विवेचन के साथ साथ पुरा तात्विक तथा कुछ एक पुरातिहासिक स्थलों का संक्षिप्त जिक्र किया गया है । इस प्रकाशन में विभिन्न लेखकों ने हरियाणा की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर लेखों का संचित संकलन मिलता है । कुछ सूफी साधकों और हरियाणवी कापरम्पराओं के बारे कुछ लेख उपलब्ध हैं । " हरियाणा के पथ पर्वतक सन्त"[3] पुस्तक में सन्तों का संचित एवम् आकर्षक विवरण और उनका विवेचन सराहनीय दृष्टिगोचर होता है परन्तु लोक साहित्य की दृष्टि से यह अध्ययन पूर्ण नहीं माना जा सकता ।" हरियाणवी गीता"[4] पुस्तक में तो केवल लेखक ने अपनी बुद्धि अनुसार गीता के श्लोकों के भावों को हरियाणवी में रूपान्तिरत करने का प्रयत्न किया है परन्तु यह पुस्तक न तो गाथाओं में रखी जा सकती और न ही साहित्य की दृष्टि से महत्व ही रखती है ।

1- हरियाणवी सांगों का वस्तुपरक विश्लेषण भाषा विभाग हरियाणा द्वारा प्रकाशित

2- हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन लेखक -देवी शंकर प्रभाकर 1974

2- हरियाणा एक सांस्कृति अध्ययन भाषा विभाग हरियाणा द्वारा

3- हरियाणा के पथ पर्वतक सन्त भाषा विभाग हरियाणा द्वारा ।

4- हरियाणवी गीता लेखक मानक चन्द शर्मा

2- शोधार्थी के अध्ययन पक्ष का संक्षिप्त विवेचन और वर्तमान विषय पर शोधार्थी की दृष्टि :-

उपर्युक्त अवधि बांगड़ लोक साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने पर इस तथ्य कीपुष्टि हो जाती है कि उपलब्ध सामग्री बांगड़ के समूचे एवं व्यवस्थित लोक साहित्य का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत नहीं कर सकता ।

बांगड़ में उपलब्ध लोक साहित्य सम्बन्धी सामग्री की समीक्षा करने से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि अभी तक विद्वान एवम् कार्यकर्ताओं का संचयन ही एक मात्र लक्ष्य रहा है । लोक गीतों सम्बन्धी संग्रह तो यहां काफी संख्या में प्राप्त होते हैं और उनमें भी एक रूपता [सामान सामग्री] का बाहुल्य है । विविध सामग्री का अभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । लोकगाथाओं एवम् लोक कथाओं सम्बन्धी लिखित संचयका अभाव भी पूरी तरह खटकता है । इसके साथ साथ विवेचनात्मक अध्ययन का अभाव भी लक्षित होता है ।

प्रकीर्ण साहित्य सम्बन्धी कहावतों के अध्ययन को छोड़ कर पहेलियां चुटकले, मुहावरे एवम् सूक्तियों का संचय नाम मात्र है। डा० शंकर लाल यादव के इस प्रदेश सम्बन्धी लोक साहित्य के अध्ययन के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता । इस पुस्तक का नाम" हरियाणा" प्रदेश का लोक साहित्य" है । इस अध्ययन का अपना एक विशेष स्थान है जितना कार्य उन्होंने इस क्षेत्र में कि किया है उसमें लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं पर कई वर्ष पूर्वप्रकाश डालागया है ।

- -

समय के बड़ी तेजी से बदलता जा रहा है। इसके साथ मनुष्य प्राचीन परम्पराओं कीजटिलताको पीछे छोड़ता जाता है और आस्थाएं कायम रखने के लिये उनका वर्तमान एवम् व्यवहारिक स्वरूप अपनाता जाता है। जो सरल नजर आये। डा० शंकर लाल यादव का शोध प्रबन्ध 23 साल पुराना हो चुका है।

तत्पश्चात तो समाज नये युग में पदार्पण कर चुका है। जिसेपूर्ण रूपेण वैज्ञानिक युग कहा जाता है। तो यह आवश्यक हो जाता है कि इस परिवर्तन शील समाज की परिवर्तित और जागृत भावनाओं के अनुरूप समय के साथ समन्वय की गई नवीनता में प्राचीनता का स्वरूप दर्शाने वाली सामाजिक, धार्मिक ऐतिहासिक परम्पराओं का शुद्ध एवम् सांस्कृतिक और वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए।

मेरा उद्देश्य बांगड़ लोक साहित्य के विविध आयामों का वर्तमान रूप में वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना है। क्योंकि बांगड़ लोकजीवन में समाविष्ट सम्पूर्ण भावात्मक एवम् सजृनात्मक सामग्री जिसमें विश्वास, मान्यताएं, परम्पराएं, प्रथाएं और रीति रिवाज आती है। यहां के मानव के अथाह गहराइयों में निष्पन्न बहुमूल्य भाव रत्नों का जिनमें उसके जीवन सम्पूर्ण आंै एवम् सुख दुख पूर्ण मन स्थितियों का अत्यन्त स्वाभाविक निरूपण हुआ है। येह भावनाएं ही लोक साहित्य कहलाती हैं और इन्हीं के भिन्न भिन्न आयामों लोकगीत, लोक गाथा, लोककथा, लोकनाट्य (सांग) प्रकीर्ण साहित्य जिनमें कहावतें चुटकले मुहावरे, पहेलियां, सूक्तियां आदि सम्मिलित हैं का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत है ताकि भविष्य में बांगड़ लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं पर कुछ वैज्ञानिक अध्ययन के लिये रुचि पैदा हो सके और इस नई दिशा में और अधिक अनुसंधानात्मक कार्य उपलब्ध हो। ताकि बांगड़ लोक साहित्य सशक्त एवं समृद्धिशाली बन कर हिन्दी साहित्य को नई दिशा प्रदान कर सकें।

- -

(==========)

द्वितीय अध्याय

बांगरू बोली का ऐतिहासिक एवम् भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

1- बांगरू बोली का इतिहास, नामकरण एवम् सीमा क्षेत्र

2- बांगरू का ऐतिहासिक विकासक्रम

3- बांगरू का समीपवर्ती बोलियों से पार्थक्य (समता और भिन्नता)

I- बांग और कौरवी

II- बांगरू और पंजाबी

III- बांगरू और राजस्थानी

IV- बांगरू और ब्रज

V- बांगरू और केन्द्रीय हरियाणवी

4- बांगरू और समीपवर्ती बोलियों के नमूने

5- बांगरू बोली का लोक साहित्य में विनियोजन

6- लोक साहित्य में प्रयुक्त बांगरू बोली के कुछ कतिपय विशिष्ट शब्द

0----0---- 0

"द्वितीय अध्याय"

बांगड़ बोली का ऐतिहासिक एवम् भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

प्रथम अध्याय में विषय प्रस्तुति के साथ साथ बांगड़ लोक साहित्य के वर्गीकरण एवम् उसकी विभिन्न विधाओं की रूपरेखा खींची है। परन्तु, इसका लोक साहित्य का सर्वांगीण अध्ययन तभी सम्भव हो सकता है जब इस क्षेत्र के इतिहास का नामकरण तथा सीमाक्षेत्र का सिंहावलोकन किया जाये। इसी उद्देश्य की पूर्ति तथा बांगड़ लोक साहित्य को सुव्यवस्थित तरीके से उल्लेखित करने के लिए भी इस क्षेत्र के ऐतिहासिक एवम् भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है। अतः यहां हम इन प्रश्नों पर संक्षिप्त परन्तु गंभीरता से विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

1- बांगड़ बोली का इतिहास, नामकरण एवम् सीमाक्षेत्र :-

संसार के इतिहास काल से पूर्व इस भूमण्डल पर लाखों वर्ष बीत चुके हैं। वर्तमान काल से लगभग पचास हजार वर्ष पूर्व पृथ्वी का मान चित्र नितान्त भिन्न था। उत्तरी भारत हिमाच्छादित था। नीचे दल-दल तथा झीलों का जाल था। वर्तमान में जो भूभाग राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बंगाल, बिहार के नाम से प्रख्यात है वह समुन्द्र तल में था। कुछ काल पश्चात समुन्द्रतल इन स्थानों से उतर गया और पृथ्वी पर उभर आया। कहीं कहीं पृथ्वी समुन्द्रतल में समा गई। इस तरह बीस-तीस सहस्र वर्ष बीत गये तथा दक्षिणी भारत जो किसी कालखण्ड में द्वीप था -उत्तरी भारत का अंग बन गया।[1]

1- हरियाणा का इतिहास लेखक श्री राम शर्मा तृतीय संस्करण 1974 पृष्ठ 5

हरियाणा का इतिहास नामक पुस्तक में आगे इस प्रकार वर्णन मिलता है कि पाश्चात्य विद्वानों का अनुमान है। कि संसार की प्राचीनतम सभ्यता पांच सहस्त्र वर्ष की है। परन्तु लोक मान्य गंगा धर तिलक ने सूर्य सिद्धान्त के आधार पर यह प्रमाणित कर दिया कि ऋग्वेद में दस सहस्त्र वर्ष पूर्व के कथानक प्राप्त हैं। यह सर्वमान्य प्राप्त हो चुका है अत: इस विषय में सन्देह का कोई स्थान नहीं है।*[1] अत: इस प्रकार हरियाणा (बांगर) के भू भाग का सूर्य सिद्धान्तानुसार अस्तित्व हुआ। इसके सरोवर-गहन वन भी इस बात को सिद्ध करने में सहायक सिद्ध होते हैं। वैदिक काल से रामायण काल तक हरियाणा का यह प्रदेश ब्रह्मावर्त कहलाया। वेदों में सरस्वती और दृषवती नदियों का जिक्र आया है।

सरस्वती दृष्द् वत्यो र्देवनद्योर्य दन्तरम।
तं देव निर्मित देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते।।*[2]

अर्थात सरस्वती और दृषवती नदियों के निर्मित देश ब्रह्मावर्त कहलाया और यह प्रदेश कुरुक्षेत्र, पंचाल आदि देशों से अलग और ब्रह्मर्षि देश के साथ का देश है:-

कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पंचाला: शूरसेनका:।
एषा ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मवर्तादनन्तर: ।।*[3]

1- हरियाणा का इतिहास लेखक श्रीराम शर्मा तृतीय संस्करण 1974 पृष्ठ 6
2- मनुस्मृति 2·17
3- मनुस्मृति 2·19

यह प्रदेश हरियाणा कहलाया जिसका वर्णन इस प्रकार भी मिलता है :-

सतगुरी हमकूं पाया संतों सतगुरु हम कूं पाया ।
दिल्ली मंडल देस बखाणे हरियाना कहलावे ।
बागड़ जमना मधि बिचाले सुखदाई मन भावे ।।
ब्रज और लाहौर मध्य हरियाना समझ बिचारो भाई । [1]

हरियाणा नाम की व्याख्या कई प्रकार से की गई है । हरियाणा का सम्बन्ध शिव, भगवान कृष्ण, इन्द्र महाराज, राजा हरिश्चन्द्र से भी जोड़ा जाता है । ऋग्वेद में इस विषय का एक मन्त्र उपलब्ध है :-

ऋज्रमुक्षण्याने रजतं हरियाणे ।
रथं युक्त मसनाम सुषामणि ।।"[2]

"हरियाणा" का अर्थ निरुक्तकार यास्क ने "हरमाणयान" किया है - "नित्यकालमेवाभि प्रस्थितयानः" अर्थात जिस प्रदेश में रथ आदि यान आसानी से हर समय चल सकते हैं ।"[3]

इस प्रदेश का नाम "हरियाणक" विक्रम सम्वत् 1337 के बोहर (पालम वाला) शिलालेख में, [4] हरितानक " विक्रम सम्वत् 1373

- -

1- हरियाणे की महिमा नामक गीत लेखक -सन्त जैत राम- सम्वाद पत्रिका विशेषांक 1980 पृष्ठ 33 ।

2- ऋक संहिता 6·2·25·2

3- निरुक्त -नैगम काण्ड अध्याय 5 खण्ड 15 पृष्ठ 529 दुर्गाचार्य की टीका ।

4- जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल खण्ड 43 पृष्ठ 108

के लाडनू (जोधपुर) शिलालेख में.[1] "हरियाणा" विक्रम सम्वत् 1384 के सरहनशिलालेख तथा राजा लखनपाल के तेहरवीं शताब्दी के बदाउ शिलालेख में मिलता है :-

देशोऽस्ति हरियानाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निभः ।
ढिल्लिकाख्या पुरी तत्र तोमरै रस्ति निर्मिता ।"

हरियाना नाम का एक देश है जो मानों भूलोक पर स्वर्ग उतर आया है । इस देश में तोमरो की बनाई हुई ढिल्लिका नाम की नगरी है ।"[2] ईस्वीसन् 1863 में हिसार जिला सैन्टलमैन्ट की रिपोर्ट के अनुसार हरियालबन जो बिगड़ कर हरियाणा बन गया 1- (हरिबाणक के रूप में मिलता है :-

अभोजितो मरेरादो वोहरास्तदनंतरम् ।
हरिबाणक भूरेषा शकेन्द्रैः शास्यतेऽधुना ।।"[3]

1863 की रिपोर्ट के लेखक श्री मुन्शी अमीन चन्द ने "हरिया बन की सम्भावना इस प्रकार की है :-

That prior to the formation of the villages and Town in this wild country, these used to grow a kind of wild wood called Harriban,[4] from which the name Haryana has derived its origin."

- -

1- लाडनू (जोधपुर) शिलालेख से

2- ऐपीग्राफिया इंडिका खण्ड -1 पृष्ठ 93- 95

3- हिसार जिला की बन्दोबस्त रिपोर्ट रिपोर्ट में यह निर्देश है कि यह श्लोक पं० धरमीधर हांसी वाले अपनी पुस्तक " खण्ड प्रकाश" में लिखा ।

4. Settlement Report Hissar District 1863-64 Page 15.

डा० वासुदेव सरण अग्रवाल ने "अभिरायश" आहारों का वर से हरियाणा की उत्पति मानता है।[1] इसकी उत्पति "हरियाणा का उद्गम स्थान "आर्यायण से भी मानते हैं।[2] ओम प्रकाश भारद्वाज हरियाणा की उत्पति "शर्याणा" शब्द से मानते हुए हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन के प्रबन्ध में प्राक्कथन में लिखते हैं कि ऋग्वेद में कुरुक्षेत्र प्रदेश के निम्न भाग को शर्याणा नाम दिया गया है। एक शर्याणा नामक झील का वर्णन भी आता जिसे टीकाकार महापंडित सायण कुरुक्षेत्र के निम्न भाग में स्थित मानते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि कुछ समय पहले तक हरियाणा नाम हिसार, जीन्द, भिवानी, रोहतक और पटियाला जिले के कुछ भाग को दिया जाता। यह प्रदेश भी निश्चित रूप से कुरुक्षेत्र का निम्न भाग बनता है जिससे शर्याणा और हरियाणा की भौगोलिक समता स्पष्ट होती है। भाषा की विकास के साथ साथ "श" का "ह" बनना भाषा विज्ञान के अनुसार स्वाभाविक है। सिन्धु का हिन्द तथा तोशायना का टोहाना में विकास इसी प्रकार के उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। ऋग्वेद का शर्याणा पाणिनि के समय में भी जीवित था। राजनैतिक स्थिति के कारण संस्कृत का इस प्रदेश में ह्रास हुआ तब शर्याणा का अपभ्रंश रूप हरियाणा, हरियाणक नाम

- -

1- हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृष्ठ 59

2- हरियाणवली शब्दावली पृष्ठ । और आगे इम्पीरियल गजटियर आफ इण्डिया खण्ड 13 पृष्ठ 53 ।

एक बार फिर प्रधानता ग्रहण कर गया तथा परिस्थितवश 1966 में सारे कुरुक्षेत्र प्रदेश के लिए प्रयोग में आया ।"[1] कुरुक्षेत्र का भौगोलिक परिचय सर्वप्रथम तैत्तिरीय आरण्यक में मिलता है :-

तेषाम कुरुक्षेत्रं वेदिरासित । तस्यै खाण्डवो दक्षिणार्ध आसीत् तूर्घ्नमुत्तरार्द्ध । परीणाज्जघनार्द्ध । मर व उत्कर ।।[2]

अर्थात दक्षिण की ओर कुरुक्षेत्र की सीमा इन्द्रप्रस्थ अथवा वर्तमान दिल्ली से नीचे तक उत्तर में वर्तमान जगाधारी से उपर तक तथा पश्चिम में राजस्थान मरु प्रदेश तक जाती थी । उत्तरपश्चिम में सरस्वती के दूसरी ओर तक इसका विस्तार सर्वविदित है । कुरुक्षेत्र की ये सीमाएं वर्तमान हरियाणा से पूर्ण-रूपेण मेल खाती है जिससे स्पष्ट होता है कि भारतवर्ष का यह भूभाग प्राचीन समय से ही अपने आपमें एक पूर्ण भौगोलिक तथा ऐतिहासिक इकाई माना जाता रहा है ।"[3] इसकी सीमाओं का जिक्र सन्त जैतराम द्वारा किया हुआ है । जिसका वर्णन पिछली पंक्तियों में कर चुके है । ‌{ब्रज और बागरि मध्य हरियाना समझ विचारो भाई" आदि मेल खाता है । विषम षंढाकार की आकृति तथा इसकी धूरा उत्तर पश्चिम और दक्षिण पूर्व मे स्थित है उत्तरपश्चिम में ये अन्तिम सीमाएं इस प्रकार है दक्षिण पश्चिम में बागड और ढूंढोती का रेतीला क्षेत्र है जो बीकानेर तक है पूर्व में खादर दक्षिण में अहीरवाटी, {गुडगांवा} दक्षिण पश्चिम

- -

1- हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन के प्राक्कथन {लेखक ओम प्रकाश भारद्वाज} {x।/।} से

2- तैत्तरीय आरण्यक ।/·।·।।

3- हरियाणा एक सांस्कृति अध्ययन के प्राक्कथन {x।/।।} लेखक ओम प्रकाश भारद्वाज

में शेखावटी, पश्चिम उत्तर में पढ़ाधा और उत्तर तथा पूर्व में बांगर ।[1] यमुना नदी पहले सरस्वती नदी में मिलती थी प्रागैतिहासिक काल में सरस्वती के सूख जाने में यमुना गंगा में मिली ।[2] मथुरा नगरी यमुना के तट पर बसी हुई है और उसका अर्ध चन्द्राकार रूप था- अर्धचन्द्रप्रतीक्षा यमुना तीर शोभिता ।[3] मथुरामण्डल {ब्रजप्रदेश} के वनों में खादर वन का भी वर्णन आता है ।[4] हरियाणा का एक भाग खादर कहलाता है । इसकी सीमाएं मथुरा मण्डल के खादर वन की सीमाओं से स्पर्श करती है । जो खाण्डव वन के साथ लगता है और अर्धचन्द्राकार मथुरा की परिधि हरियाणा को अपने घेरे में स्पर्श करती है । महाभारत काल से ही पूर्व ही यमुना के दोनों ओर हल स्तत: बस्तियां बस गई थी । यमुना के दोनो कगार गहरे वन से आच्छादित थे । इसका का नाम खाण्डव वन था कौरवों का राज्य यमुना पर हस्तिनापुर था । हरियाणा के उतर में शिवालिक पर्वत माला {शाल्वकागिरी} जगाधरी के उतरी भागों युगन्धर तथा उशीनरगिरी, वर्तमान मोरनी का पहाड़ {मयूर गिरी} तथा कसेलाश्रंखला {विशालकागिरी} कहलाते थे ।

1- हरियाणवी का उद्गम एवम् विकास लेखक डा० नानक चन्द शर्मा 1968 पृष्ठ 7

2- जर्नल आफ रायल सोसाइटी 1893 पृष्ठ 49

3- हरिवंश पुराण 1/54/60

4- वराहपुराणोक्तमथुरा मण्डल के प्रमुखतीर्थ वराहपुराण पृष्ठ 429

महाभारत तथा वामन पुरान में कुरुक्षेत्र के सात वनों काम्यक वन, व्यासावन, फलकीवन, मधुवन, शीतवन, (सीवन) सूर्यवन आदि का जिक्र भी आता है[1]। इनके अलावा साहित्य में द्वैत वन, शरवन, खाण्डव वन, रोहित्यकारण्य, वैतरथ, पृथ्वन, शाल्वन, भवानी वन, भाहण्ड, उत्पलारण्य आदि वनों का उल्लेख भी मिलता है[2]। इससे साफ जाहिर है कि यह प्रदेश सदैव गहरे वनों से घिरा रहा है और इसके मध्य सरस्वती दृषद्वती तथा आपगा आदि नदियां बहती रही हैं। "आज भी हरियाणाकी पश्चिमी सीमा पर सरस्वती तथा दृषद्वती (घग्गर) नदी बहती है।"[3]

आधुनिक हरियाणा कुरुवन प्रदेश का वह भाग है जो कौरवों ने पांडवों को दिया था पाण्डवों ने अपनी राजधानी इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में बनाई जहां बांगर नाम का क्षेत्र अब भी है। तथा सुवर्ण प्रस्थ (सोनीपत) प्राणिप्रस्थ (पानीपत), व्याघ्रप्रस्थ (बागपत), तलप्रस्थ (तिलपत) आदि बस्तियाँ बसाई यह सब आज भी विद्यमान है। इनमें अधिकांश भाग आज बांगरू साहित्य के अन्तरगत है। अत: सभी उपरोक्त ऐतिहासिक भौगोलिक परिस्थितियां आदि के परिणाम स्वरूप हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हरियाणा की उत्पत्ति "शर्याणा" से हुई जो बहुत सार्थक तथा युक्ति संगत नजर आती है तथा ऋग्वेद के शर्याणा से हरियाणा शब्द का उद्भव हुआ जो सांस्कृतिक भी है। उपरोक्त भौगोलिक सीमाओं के प्रमाण भी सार्थक हैं।

- -

1-वामन पुराण अध्याय 34 श्लोक 4 से 7

2-हरियाणा एक सांस्कृति अध्ययन प्राक्कथन (I/II) से लेखक ओम प्रकाश भारद्वाज।

3- वामन पुरान अध्याय 39 श्लोक 6-8

हरियाणाप्रदेश जो दिल्ली से घग्गर नदी के काठे तक चला गया है। तीन उपभागों में बंटा हुआ है जिन्हें खादर, बांगड़, बागड़ कहा गया है। और एक अन्य भाग हरियाणा भूखण्ड कहलाया।[1] यह प्रदेश सदैव ही खुशहाल एवम् समृद्धिशाली रहा है जिनके कई प्रमाण मिलते हैं।[2] यौधेय की मुद्राओं में भी इसका वर्णन आता है। रोहतक इनकी राजधानी रहा है। नकुल की पश्चिमी दिग्विजय में भी इस प्रदेश के भागों का वर्णन आता है।[3]

खादर वर्तमान हरियाणा का यमुना के पश्चिमीतट से सटा हुआ जिला करनाल एवम् सोनीपत तहसील तक ही सीमित है। बांगर का अर्थ है- ऊर्ध्व भूमि यानि ऐसी भूमि जो उभरी हुई हो। कदाचित यमना के खादरों मुकाबले में इसे बांगर की संज्ञा मिली। यह भाग अरब सागर की ओर बहने वालीतथा बंगाल की खाड़ी की ओर बहने वाली नदियों के बीच जल विभाजक का काम देती है। तीसरा भूभाग मूल हरियाणा जिसमें वर्तमान हिसार के जिले पूर्व दक्षिण भाग में घग्गर नदीं के पूर्व में फैला हुआ है जिसके अन्तर्गत हिसार तहसील का पूर्वार्द, फतेहाबाद का कुछ भाग तथा हांसी तहसील आती है इन तीनों भूखण्डों को आजभी हरियाणा कहते हैं।[4]

यह प्रदेश का मध्य एवम् धुरी भाग बांगर रहा जो सबसे बड़ा है। बांगर शब्द से ऐसे भूभाग का चित्र हमारे सामने आता है जो रुखा सूखा धन-जन विहीन तथा संस्कृति एवम् सभ्यता से एकदम विपरित रहा हो।

1- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेख डा० शंकर लाल यादव, पृष्ठ 55
2- "काव्य धारा" राहुल सांस्कृत्यायन पृ. 190
3- महाभारत सभापर्व अध्याय 35
4- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृष्ठ 55

कुछ काल तक इस इलाके की ऐसी स्थिति रही भी है परन्तु आज कल बागर धन-धान्य से परिपूर्ण उर्वर भूमिखण्ड के रूप में नहरों से सिंचित प्रदेश है। अतः कहा जा सकता है कि जिस प्रदेश में नदियां कम और नहरों से सिंचाई होती है वह प्रदेश बांगर है। बांगर नामकरण के इतिहास में जो प्रमाण मिले हैं वह सबल प्रमाण तो नहीं है परन्तु जो किंवदन्तियां प्रचलित हैं उसी को आधार माना जा सकता है। उनमें से कुछ निष्कर्ष इस प्रकार हैं :-

प्रथम :- यहां अन्तर नदी क्षेत्र[1] में अतिनूतन युग की पुरानी तलछटी पाई जाती है जिसे भांगर कहते हैं।[2] यह भांगर ही अपभ्रंश होकर बांगर बना। दूसरे भांग का अर्थ - मादक वस्तु जो English की Bhang से मिलता है जिसका अर्थ भी यही है। यहां भांग उगती रही है तभी तो भांग का जंगल कहलाया है। और भगवान शंकर का यह क्षेत्र है जैसा कि हम ऊपर प्रमाण दे चुके हैं। यहां उन्होंने भांग पीकर नृत्य किया बताते हैं। उन्हें भांग अतिप्रिय रही "भांग रगड़ के पियाा ब्रिज कहं में ------।" इस पर पूर्णतया चरितार्थ होती है।

द्वितीय :- यह प्रदेश बांगड़ा, बांगड़ू या बांगड़ क्षेत्र के भी नाम से जाना जाता है यही बांगड़ा -बांगड़- बांगर बना। बांगर का मतलब ऊंचे टेढ़े मेढ़े वनों का जंगल से लिया गया है। जिस प्रकार हरियाणा को हरि+अरण्य से बना हुआ माना गया है।(जिसका अर्थ है)- हरि+जंगल

1- नदियों के मध्य का क्षेत्र अन्तर नदी क्षेत्र कहलाया।

2- हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन डा० भीम सिंह दाहिया के लेख से पृष्ठ 2

अर्थात हरि का हरियाला जंगल}[1] ठीक उसी प्रकार बांगर- बाम्+अर: = बांगर और फिर बांग+अर: {सन्धि नियमों द्वारा} जिसका अर्थ बांग या बांगा {अर का अरण्य यानि जंगल} इस प्रकार बांगर का अर्थ टेढ़े मेढ़े वेनों वाला जंगल लिया गया । यह महाभारत काल में मथुरा तक भारी जंगल था वर्तमान मथुरा {प्राचीन ब्रज प्रदेश} के उत्तर में गुड़गांवा और अलिगढ़ के भाग है । जो बांगड़ के जंगलो को स्पर्श करते हैं प्रमाण इस प्रकार है ।

इत वरहदां उत सोनहद उत सूरसेन को गाम ।
ब्रज चौरासी कोस में मथुरा मण्डल धाम ।।[2]

तृतीय :- कुछ विद्वानों का मत है कि यह इलाका जंगलों से परिपूर्ण था इसलिये यहां डाकू रहते थे जिसे English के Bang शब्द का Prov.Bangster जिसका अर्थ a voilent person से निकला हुआ बताते हैं क्योंकि Bang भिन्न भिन्न अर्थ इस बात को स्पर्श करते हैं :-

1. a sudden loud noise {अचानक तेज शोर}
2. Banger (n) slang a sainsage {बांगर}

अर्थात प्रतिष्ठित व्यक्तियों की {वैसे} अस्पष्ट भाषा । यहां इसके समानान्तर बांगर का डांगर और बागर मारना आदिशब्द भी यही स्पष्ट करते हैं । इनकी बोलचाल से यही झलकता है मानो यह किसी को धमका रहे हो । या गाली गलौच दे रहे हों । उनकी बोलचाल में शोर शराबा अर्थात भारीपन या अक्खड़ पन था । जो धीरे धीरे खत्म हो रहा है और सभ्य रूप धारण कर रहा है।

1- हरियाणा के लोकगीत लेखक - एम.एस. रंधावा और देवी शंकर प्रभाकर पृष्ठ 4

2- गुड़गांवा जिले सोने नदी के किनारे का प्रदेश - ब्रज का इतिहास पृष्ठ संख्या 2- 4 ।

चतुर्थ:= बांगड़ का ढांगर," बांगड़ मारणा, "बांगड़" शब्द इस क्षेत्र की प्राचीनता की ओर इंगित करता है और बांगर का बोट" बांगर की छोरी" बांगर" शब्द क्षेत्र की सुन्दरता और आधुनिकता का संकेत देता है इन शब्दों से बांगड़ फिर बांगर का प्रचलन से स्पष्ट हो जाता है कि बांगड़ ही अपभ्रंश होकर बांगर बना ।

तृतीय मत में जो हमने इस बात का जिकर कियाहै कि यह अंग्रेजी शब्द बांग से बांगर बना क्योंकि यहां प्राचीनकाल में गहरे व जंगल होने के कारण लोगों की भाषा असभ्य और अक्खड़ पन लिये हुये थी जो निसन्देह उस समय इस प्रदेश का नाम बांगड़ा प्रचलितरहा होगा और इसके साथ साथ इसे बांगड़ या बांगड़ भी उचरित करते होंगे । यहां बागड़ी {बांगड़ी} जाती के जाट रहते थे जिनका मूल स्थान प्राचीन फिरोजपुर का इलाका बताते है जो सर पर लम्बे लम्बे बाल रखते थे और उन बालों को गांठ बांधा कर रखते थे । उनका स्वभाव कठोर एवं निर्दयता पूर्ण था । उस समय सिंचाई के इस इलाके में साधन न होने के कारण वे धीरे धीरे बांगड़ी जाट इस क्षेत्र को छोड़कर अपने मूल निवास फिरोजपुर में चले गये और अपने पीछे बांगड़, बांगड़ा, बांगड़ी, बांगड़ आदि शब्द छोड़ गये जो इस प्रदेश के नाम से मिल गये । यही बांगड़ नूतन युग में बांगर वेश में प्रचलित हो गया क्योंकि अब यहां के लोग सभ्य और सुशिक्षित है । और यहां की भूमि भी खुशहाल है । बांगड़ ही बांगर बना ।

- -

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात और विशेषकर 1961 की नई जनगणना के उपरान्त एक नई चेतना ने जन्म लिया इस चेतना के परिणाम स्वरूप भाषाई चेतना जागी। इसी चेतना के फलस्वरूप 1966 में भाषाई आधार पर हरियाणा का जन्म हुआ। इसकी सीमाएं निश्चित की गई। विद्वानों ने इस प्रदेश की भाषा को विभिन्न नामों से अभिहित किया है। इस प्रदेश की बोली का नाम सबसे पहले डा० गिर्यसन ने "लिंग्विस्टिक सर्वे" में दिया बांगरू दिया। "The best general name for it is Bangru

डा० गिर्यसन ने साथ में हरियानी, देसड़ी, जाटू और चमरवा (चमार) आदि नामों का भी उल्लेख किया है।[1] इस प्रदेश की बोली के अनेक नामों का आधार इस प्रदेश में रहने वाली भिन्न भिन्न जातियां एवं क्षेत्र हैं। देसी जाटों की भाषा देसड़ी जो रोहतक में जाटू और दिल्ली के पास चमरवा कहलाई। हरीदेव बाहरी ने इसे अहीरों की भाषा भी माना है। क्योंकि इस प्रदेश में अहीरों और जाटों की संख्या अधिक है।"[2]

डा० मानक चन्द शर्मा ने अपनी पुस्तक में इस प्रकार लिखा है कि डा० सुनिती कुमार चटर्जी ने इस प्रदेश की भाषा को बांगड़ू और हरियानी कहा है।"[3]

डा० धीरेन्द्र वर्मा ने बांगरू के साथ जाटू, हरियानी और सरहदी नाम भी दिए हैं।"[4]

1- Ling Survey of India Vol. IX Part I By George Grieson Page 67.

2- पंजाबी ते हन्दी लेख, लेखक हरि देव बाहरी भाषा विवाद पंजाब की लेखक गोष्ठी में पढ़ा गया निबन्ध 1958- 1959

3- हरियाणवी का उद्गम एवं विकास लेखक - डा० मानक चन्द शर्मा 1968 पृष्ठ 9

4- ग्रामीण हिन्दी लेखक डा० धीरेन्द्र वर्मा 1950 का परिचय भाग पृष्ठ 19

अयोध्यासिंह उपाध्याय ने बांगड़ (हरियाणा) की भाषा को बांगड़ू नाम दिया[1]। डा० जगदेव सिंह ने बांगरु[2] परन्तु स्थाणुदत्त शर्मा ने इसे हरियाणई[3], डा० नानक चन्द शर्मा ने हरियाणवी, डा० शंकर लाल यादव ने हरियानी माना है।[5]

इनमें से बांगरू, बांगड़ू, हरियानी, हरियाणवी और हरियाणई आदि देशपरक नाम हैं। देसड़ी, चमरवा, जाटू, आदि जाति परक नाम है। इसीलिये प्रान्त की भाषा को जाति परक नाम देना उचित नहीं है। इन नामों की कोई तर्क मूलक सार्थकता नहीं है। ये जातिगत आधार पर केवल किसी भाषा के आंशिक स्वरुप के द्योतक हो सकते है। ऊंचे और शुष्क प्रदेश की भाषा बांगरू कहलाई। हरियानी, हरियाणई और हरियाणवी आदि का स्पष्ट संकेत हरियाणा की भाषा से है "हरियाणी का दूसरा नाम बांगरू भी है। इस भूखण्ड की विशेषता के कारण यहां की बोली का नाम बांगरू दिया गया है। बांगर का अर्थ है शुष्क और ऊंची भूमि" [6] " हरियानी या बांगर हरियाणा राज्य की बोली है।"[7]

- -

1- हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास लेखक पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, सम्वत् 1997 पृष्ठ 55

2- "बांगरू की ध्वनात्मक संरचना" लेख डा० जगदेव सिंह भाषा विवाद पंजाब की लेखक गोष्ठी में पढ़ा गया निबन्ध, 1962-63

3- "हरियाणी की भाषा" लेख स्थाणुदत्त शर्मा भाषा विवाद पंजाब की लेखक गोष्ठी में पढ़ा गया लेख, 1958

4- हरियाणवी का उद्गम एवं विकास लेखक डा० नानक चन्द शर्मा, 1968 पृष्ठ 10।

5- हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य डा० शंकर लाल यादव 1967 पृष्ठ 85

6- हिन्दी और उसकी विविध बोलियां लेखक प्रो० दीपचन्द जैन, डा० कैलाश तिवारी, 1972 पृष्ठ 87-88।

7- हिन्दी और उसकी विविध बोलिया लेखक प्रो० दीपचन्द जैन, डा० कैलाश तिवारी, 1972 पृष्ठ 51।

हरियाणा राज्य में बोली जाने वाली प्रमुख उपभाषाएं इस प्रकार हैं :- 1- बांगरू 2- मेवाती 3- अहीर वाटी 4- बागड़ी 5- शेखावटी और 6- ब्रज ।

बांगरू का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है ।

इसके पश्चिम में राजस्थानी की उप भाषा बागड़ी है ।"हिसार जिले की उस सीमा पर जहां बिकानेर का आरम्भ होता है विशुद्ध बागड़ी सुनने को मिलेगी परन्तु ज्यों ज्यों वहां से हिसार की ओर आते हैं । बागड़ी बांगरू से प्रभावित होती है ।"[1]

मेवाती का प्रयोग मुख्य रूप से गुड़गांवाजिले की नूंह, फिरोजपुर झिरका तहसील और रिवाड़ी के दक्षिणी भाग में होता है । यह भी राजस्थानी की एक उपभाषा है । "दक्षिणी सीमा पर मेवाती का बांगरू के साथ मिश्रित रूप पाया जाता है ।"[2]

अहीरवाटी का क्षेत्र महेन्द्रगढ़ जिला, गुड़गांवा जिले की गुड़गांवा तहसील, रोहतक जिले की झज्जर तहसील का दक्षिणी भूभाग, महेन्द्रगढ़ जिला सम्मिलित है । "इस पर मेवाती की बजाय हरियाणवी का प्रभाव अधिक है । यह राजस्थानी और बांगरू के बीच की सन्धि भाषा है ।"[3]

भिवानी जिले की पश्चिमी सीमा पर रहने वाले शेखावटी का प्रयोग करते हैं जो राजस्थानी की एक उपभाषा है । यह बागड़ी नहीं कहलाई जा सकती । हां शेखावटी बागड़ी के निकट अवश्य है ।

1- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक - शिव कुमार खण्डेलवाल 1980 पृष्ठ 22

2- हरियाणा की उप भाषाएं - के "भूमिका" के लेख से ।

3- - वही-

ब्रज फरीदाबाद जिले की पलवल तहसील तथा हसनपुर और होडल के आस पास बोली जाती है । "सर्वे के मानचित्र में फरीदाबाद और बल्लभगढ़ को भी बांगरू की सीमाओं में सम्मिलित किया गया है ।"[1]

इसी अध्याय के बांगरू का समीपवर्ती बोलियों से पार्थक्य में ब्रज और बांगरू की भिन्नता का उल्लेख कियागया है । जो कि इस बात की पुष्टि करता है ।

स्थाणुदत्त ने खादरी और जाटू को भी हरियाणा की उपभाषाएं माना है इसीप्रकार नानक चन्द ने केन्द्रीय हरियाणवी को भी स्थान दिया है । परन्तु जल सिंचन की भौगोलिक परिस्थितियों को आधार मान कर हरियाणा के बांगर, बागड़ और खादर तीन भाग किये जाते है । ये तीनों आधार भूमि को स्थूल आधार मान करचले हैं किन्तु इन तीनों भूखण्डों के अतिरिक्त एक अन्य खण्ड भी है जिसे हरियाणा खण्ड कहते है । बांगरू भाषा (बोली) कीदृष्टि से खादर, बांगर, और हरियाणा, भूखण्ड ही विशेष महत्व रखते हैं । क्योंकि इन्ही तीन खण्डों की भाषा का व्यापक और प्रचलित नाम बांगरू है ।"[2] इस प्रकार प्राचीन हरियाणा के खादर, बांगर, और हरियाणा ये तीनों भूखण्ड विस्तार की दृष्टि से बांगरू बोली के अन्तर्गत आते हैं ।

"हरियाणाकी समस्त उपभाषाओं का शुद्ध रूप हिन्दी होने के कारण हिन्दी ही इस प्रदेश की राज काज की भाषा निर्धारित की गई है ।"[3] परन्तु हिन्दी प्रदेश के इस विशाल भूभाग में बोली जाने वालीसभी बोलियां

1- हरियाणवी का उद्गम एवं विकास लेखक डा० नानक चन्द शर्मा 1968 पृष्ठ 11
2- हरियाणा की उप भाषाएं पृष्ठ 4
3- हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन के स्थाणु दत्त शर्मा के "हरियाणा की भाषा - उपभाषाएं" के लेख से पृष्ठ 165

हिन्दी के अन्तर्गत आती है ।[1] इनमें से परिनिश्चित हिन्दी को जन्म देने का श्रेय पश्चिम हिन्दी क्षेत्र को है और इस पश्चिमी क्षेत्र का बोलियों में भी इस दृष्टि से सर्वाधिक महत्व दिल्ली की बोली को है । स्वतन्त्रता से पूर्व तक दिल्ली बांगरू भाषीप्रदेश था आज भी नगर को छोड़ कर दिल्ली के ग्रामों में बांगरू ही बोली जाती है ।[2] क्योंकि रोहतन बांगरू नामक क्षेत्र आज भी दिल्ली में है जो इस तथ्य की पुष्टि करता है । इस भाषा का नाम गियर्सन महोदय ने बांगरू दिया और यह पश्चिम हिन्दी की एक शाखा है । "हिन्दी की यह बांगरू बोली है-[कोई भी उंची एवं सूखी भूमि बांगर के नाम से भूगोल शास्त्र में पुकारी जाती है इस प्रकार बांगर खण्ड कई हो सकते है और इन सब खण्डों की बोली बांगरू कहलायेगी जो सम्भवत: समान नहीं हो सकती । इस प्रकार बांगरू नाम अति व्याप्त हो जायेगा ।"[3]

जिस प्रकार बंगाल की बंगाली, गुजरात की गुजराती, पंजाब की पंजाबी बोली कही जाती है उसी प्रकार हरियाणा की हरियाणवी कहलाती है । प्रान्तीयता की वजह से ही हरियाणवी नाम दिया गया है । क्योंकि हरियाणवी ही बांगरू का सभ्य,साहित्यिक एवं सांस्कृति रूप है । क्योंकि बांगरू में इस प्रदेश की सभी उपभाषाओं का कहीं प्रचुर मात्रा में और कहीं आंशिक रूप में समावेश अवश्य है । जिसके प्रभाव एवं प्रमाण हम उपर्युक्त वर्णन में कर चुके हैं । वास्तव में बांगरू, उपभाषा, ही इस प्रदेश की भाषा की आत्मा है + जान है । इसको यहां के 70% लोग बोलते हैं ।

1- ग्रामीण हिन्दी बोलियां लेखक डा० हरदेव बाहरी ,1961 पृष्ठ 27

2- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक शिव कुमार खण्डेलवाल 1980 पृष्ठ 17

3- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव 1967 पृष्ठ 84-85

बांगड़ (बांगर) प्रदेश की भाषा को बांगड़ कहा गया। जिससे यह बांगड़ से बांगरू बनी। यहां इस प्रदेश में उपलब्ध एक प्राचीन कहावत भी "बांगरू डांगरू श्रेव।
अड़े, कड़े, उड़े, सें", वैस तत्परम श्रेव।। " भी इस प्रदेश की भाषा बांगरू होने की पुष्टि करती है। जिससे स्पष्ट हो जाता है कि बांगरू में अड़े, उड़े, कड़े आदि शब्दों का प्रयोग होता था जो अब भी प्रचलित है और इस बोली का आधार प्रतीक है। डा० शिवकुमार खण्डेलवाल ने अपने शोध ग्रन्थ बांगरू बोली का भाषा शास्त्री में बांगरू की उत्पत्ति बांगर के साथ सम्बन्ध वाची " ऊ" प्रत्यय लगा कर की है। बांगर उस भूमि को कहा गया है जो प्रायः समतल शुष्क और रेतीली होती है।

सीमाक्षेत्र विस्तार की दृष्टि से बांगरू, सोनीपत, कुरुक्षेत्र, जिले का दक्षिणी भाग, करनाल, जीन्द, रोहतक (झज्जर तहसील को छोड़कर), हिसार के पूर्वी भाग, भिवानी जिले के पूर्वोत्तर भाग, फरीदाबाद एवं बल्लभगढ़ तहसील के कुछ भाग आते हैं।

उपरोक्त वर्णित सम्पूर्ण क्षेत्र में बोली जाने वाली बोलियों में भी केवल स्थानीय एवं सीमावर्ती प्रभावों को छोड़कर एक रूपता है। इसकी सम्पूर्ण बोली को बांगरू कहा गया है। केवल उच्चारण भेद दिखाई पड़ता है। फिर भी व्याकरण और शब्दावली सारे क्षेत्र में समान है। उपर्युक्त सारे क्षेत्र की भाषा को बांगरू कहना ही अधिक उपयुक्त है।

1- हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास लेखक पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय, हरिऔध सम्वत् 1997 पृष्ठ 59

2- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक शिव कुमार खण्डेलवाल 1980 पृष्ठ 27

2· बांगरू का ऐतिहासिक विकास क्रम :-

भारतीय आर्य भाषा भारत की ही नहीं, संसार भर की भाषाओं में सबसे अधिक सशक्त और समृद्ध भाषा है। मातृ भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से ही इसका महत्व नहीं है अपितु साहित्य (विशेष रूप से प्राचीन साहित्य) की दृष्टि से भी इसका महत्व है। अन्य आधुनिक आर्य भाषाओं की भांति इसके ऐतिहासिक क्रम से साथ बांगरू के इतिहास का सम्बन्ध भी जुड़ा हुआ है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा को ऐतिहासिक विकासक्रम की दृष्टि से इसका समय 1500 ई० पू० से 500 ई० पू० माना गया है। इस समय की साहित्यिक भाषा वैदिक संस्कृति है। इसी भाषा की प्राचीनतम रचना ऋग्वेद रही जिसका रचना काल 1200 ई० पू० से 900 ई० पू० माना (अनुमानित) गया है। उस समय निश्चित रूप से कोई न कोई लोक भाषा अवश्य रही। वैदिक साहित्यिक भाषा से संस्कृत का विकास हुआ। संस्कृत वैदिक भाषा की अपेक्षा अधिक सरल एवं स्पष्ट थी। "पंजाब की भूमि का उन दिनों विशेष महत्व था। वास्तव में यह भूमि संस्कृति और सभ्यता की केन्द्र थी। विशेषकर बांगरू बोली के क्षेत्र हरियाणा में प्रवाहित होने वाली सरस्वती के किनारे पर स्थित कुरुक्षेत्र का अपेक्षाकृत अधिक महत्व था। संस्कृत के आदि ग्रन्थों की रचना ऋषिमुनियों ने इसी पवित्र नदी के किनारे बैठ कर की थी। अतः स्वाभाविक ही वर्तमान बांगरू क्षेत्र की भाषा विशुद्ध संस्कृत रही होगी।"[1]

1- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन - लेखक शिव कुमार खण्डेलवाल 1980, पृष्ठ 23·

ईसा की पांचवी -छटी शताब्दी के पूर्व पाणिनी से संस्कृत के आदर्श रूप का गठन किया और इस प्रकार पाणिनि की अष्टाध्यायी ने संस्कृत को स्थिरता प्रदान की । उसके साथ और दूसरी जन{लोक} भाषाएं भी प्रचलित थी । संस्कृत के नियम बद्ध करने पर यह भाषा {संस्कृत} भी जन साधारण से व्यावहारिक दृष्टिकोण से कठिन होती गई ।

<u>प्राकृत काल</u> :- जिस प्रकार छान्दस भाषा में अपने समय की देशी भाषाओं के सम्पर्क में आकर संस्कृत का रूप धारण किया उसी प्रकार संस्कृत भी आगे चल कर अपने समय की देशी भाषाओं के सहयोग से प्राकृत के रूप में ढली ।

अर्थात संस्कृत के उपरान्त भाषा के विकास में जो परिवर्तन दिखाई दिया जाने लगा उसे प्राकृत नाम दिया गया । प्राकृत का उद्भव संस्कृत से ही है । यह तब से जनता का स्वाभाविक वचन व्यापार है अत: जिसमें व्याकरण आदि नियमों का बन्धन नहीं होता । प्राकृत को भाषा के अध्ययन की दृष्टि से तीन कालों में विभाजित किया गया है:-

I- प्रथम प्राकृत - 500ई० पू० से 100ई० तक ।

II- द्वितीय प्राकृत - 100 ई० से 500 ई० तक ।

III- तृतीय प्राकृत - 500 ई० से 1000 ई० तक ।

प्रथम प्राकृत में अध्ययन सामग्री के रूप में पालि साहित्य और अशोक के अभिलेख मिलते हैं । पालि वस्तुत: बौद्ध धर्म मत की प्रचार भाषा थी इसका अन्य नाम मागधी प्राकृत या देशभाषा मिलता है । अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों को इसी भाषा में अभिलेखित किया है । पालि के क्षेत्र विस्तार के सम्बन्ध में मतभेद है । बौद्ध इसे मगध की भाषा मानते हैं ।[1]

1- हिन्दी और उसकी विविध बोलियां - लेखक प्रो० दीपचन्द जैन, डा० कैलाश तिवारी, 1972 पृष्ठ 18 ।

"उनका तर्क है कि क्योंकि बुद्ध की अपनी भाषा मागधी थी अत: पालिका उस पर आधारित होना स्वाभाविक है।" [1]

वास्तव में इस प्रकार की भिन्न स्थापनाएं यह सूचित करती है कि पालि का प्रसार उप-बोलियों के रूप में इन सभी (विन्ध्यप्रदेश, उज्जयिनी कलिंग और कोसल प्रदेश) प्रदेशों में था। पालि का अधिकांश साहित्य भगवान बुद्ध से सम्बद्ध है। इसमें कविता, कथा तथा अन्य साहित्य विधाएं विकसित हुई फुट कर रूप में छन्द शास्त्र और व्याकरण की भी पुस्तकें मिलती हैं।" [2]

किन्तु विभिन्न प्रकार प्राकृतों के रूपों की पालि के रूपों से तुलना करने पर यह सिद्ध हो जाता है कि वह किसी पूर्वी प्रदेश की भाषा या बोली पर आधारित नहीं है।" [3] "इस विषय में डा० चटर्जी का कहना है कि इस पालि भाषा को गलती से मगध या दक्षिण बिहार की भाषा मान लिया जाता है। वस्तुत: यह उज्जैन से मथुरा तक के भूभाग की भाषा है पर आधारित साहित्यिक भाषा थी।" [4] "वैसे पालि मध्य देश की भाषा थी। यह शौरसेनी प्राकृत (पश्चिमी हिन्दी) का पूर्वरूप है।" [5] मध्य देश की भाषा के रूप में पालि भाषा का आधुनिक हिन्दी या हिन्दुस्तानी की भान्ति केन्द्र की- आर्यावर्त (ब्रह्मर्षि) देश के हृदय की भाषा थी। अतएव

1- पालि साहित्य का इतिहास लेखक - भरत सिंह उपाध्याय पृष्ठ 26 संवत् 2008

2- हिन्दी और उसकी विविध बोलिया लेखक - प्रो० दीप चन्द जैन, डा० कैलाश तिवारी, 1972- पृष्ठ 18

3- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक शिवकुमार खण्डेलवाल, 1980 पृष्ठ 24

4- = वही -

5- = वही -

आसपास के पूर्व-पश्चिम, पश्चिमोतर, दक्षिण- पश्चिम आदि के लोग इसे सरलता से समझ लेते थे ।"[1] जिस प्रकार वैदिक तथा संस्कृत भाषाएं मुख्य रूप से पूर्व की न होकर पश्चिम की ही थी । ठीक उसी प्रकार यह भी पश्चिम की ही भाषा थी ।

बांगर {बांगड़} क्षेत्र की पश्चिम हिन्दी के क्षेत्र में आता है इसलिए स्वाभाविक है इस प्रदेश की प्रमुख भाषा पालि रही होगी । हां अन्य स्थानों के समान यहां की लोक बोली में अपना स्थानीय प्रभाव अवश्य रहा होगा ।"[2] बांगड़ का लिखित साहित्य न होने के कारण उस वक्त भी स्थानीय बोली के बारे में ठीक से कहना मुश्किल सा लगता है । परन्तु जिस प्रकार वैदिक के बाद संस्कृत यहां की बोली रही ठीक उसी प्रकार प्राकृत में इस क्षेत्र में पालि का आधिपत्य रहा होगा ।

द्वितीय प्राकृत में प्रचलित भाषा रूपों को प्राकृत कहा जाता है । जिस प्रकार प्राचीन भारतीय आर्य भाषा को सामान्यत: संस्कृत के नाम से सम्बोधित किया जाता रहा है । ठीक उसी प्रकार मध्य भारतीय आर्य भाषाओं के सभी रूप प्राकृत कहलाये । यद्यपि इन प्राकृतों की संख्या को लेकर अनेक मतभेद है । फिर भी प्रमुख प्राकृतें यह है :-

I- शौरसैनी प्राकृत	II- मागधी प्राकृत
$$I- महाराष्ट्री प्राकृत	II/= अर्धमागधी प्राकृत
I/- पैशाची प्राकृत	

1- बांगड़ बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक - शिव कुमार खण्डेलवाल 1980 पृष्ठ 24

2- हिन्दी और ह उसकी विविध बोलियां लेखक - प्रो० दीपचन्द जैन, डा० कैलाश तिवारी, 1972 पृष्ठ 18

साहित्य की दृष्टि से शौरसेनी {शूरसेन जनपद} प्राकृत मथुरा के आस पास की भाषा थी । इसमें गद्य साहित्य की रचना मिलती है । संस्कृत नाटकों में इसका प्रयोग मध्यम श्रेणी के पात्रों में और महिलाओं के संवादों में किया गया । इसका प्राचीनतम रूप हमें अश्वघोष के नाटकों और दिगम्बर जैन मत के सिद्धान्त ग्रन्थों में भी इसका प्रयोग मिलता है । पश्चिमीहिन्दी का विकास इसी से हुआ है । क्योंकि शौरसेनी से ही ब्रजभाषा एवम् खड़ी बोली का विकास हुआ है । सच तो यह है कि पुरातन काल से ही मध्य देश की भाषा ही भारत का सर्वाधिक गौरव पूर्ण स्थान की अधिकारणी बन कर अन्य भारतीय भाषाओं को प्रभावित करती रही है । यहाँ की भाषा को युग युग से राष्ट्र भाषा होने का गौरव मिलता रहा है ।"[2]

जिस प्रकार पालि मध्य देश की भाषा रही उसी प्रकार उसके बाद शौर सेनी प्राकृत भीइसी प्रदेश की मुख्य भाषा रही । अतः वैदिक भाषा, संस्कृत और पालि की परम्परा को आगे बढ़ाने में शौरसेनी प्राकृत आती है । इसका स्थान मध्यकाल में ब्रज भाषा और आधुनिक युग में खड़ी बोली को प्राप्त हुआ हमारी बांगरू का सम्बन्ध इसी शौरसेनी से है जिसका महत्व स्वतः सिद्ध है ।"[3]

1- हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि ।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ।। मनुस्मृति 2/21·

2- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन - लेखक - शिव कुमार खण्डेलवाल 1980 पृष्ठ 25 ।

3- -वही-

इसके पश्चात् महाराष्ट्री प्राकृत है जिसका मूलस्थान महाराष्ट्र रहा और इसका प्रयोग पद साहित्य में रहा। साहित्य की दृष्टि से यह अत्यन्त समृद्ध और प्रभावशाली प्राकृत रही। शौरसेनी की भांति। मराठी का विकास इसी से माना जाता है। अर्धमागधी का क्षेत्र मागधी और शौरसेनी के मध्य का पड़ता है। पैशाची भारत के उत्तर पश्चिमी प्रदेशों की बोली रही है। इसमें साहित्य नहीं मिलता है मागधी मगध की भाषा रही। इसका प्रयोग संस्कृत नाटकों में नीची श्रेणी के पात्र करते थे। साहित्य में इसका प्रयोग बहुत ही कम है।

अतः इन प्राकृतों के ऐतिहासिक विकास क्रम का अध्ययन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मध्य देश की भाषा सदैव उत्तर भारत की भाषा पर आधिपत्य जमाय रहा।

तृतीय प्राकृत, जब जब भी व्याकरणों ने भाषा को अपने कठोर नियमों में बांधा। तब तब भाषा का नया रूप सामने आता गया। जब पाणिनि ने संस्कृत को कठोर नियमों में जकड़ा उसका विकास रुक गया। प्राकृत को व्याकरण के नियमों में बांधा तो उसका विकास ठप्प पड़ गया - वह भी विद्वानों की भाषा बन कर रह गई। क्योंकि साधारण जनता बोल चाल की भाषा में वैयाकरण के इन नियमों की गुलाम बन कर नहीं रह सकी। जब जन साधारण ने अपनी भाषा अपनाई तो उसे अशुद्ध कहा गया। अर्थात् प्राकृत और आधुनिक आर्य भाषाओं के मध्य जन्मने वाली जन भाषा का नाम अप भ्रंश दिया गया। अप भ्रंश का अर्थ है - अशुद्ध। इसी अपभ्रंश के आधार पर यह काल अपभ्रंश कहलाया।

- -

अपभ्रंश के वर्गीकरण की चेष्टा की गई। वैयाकरणों में इसके अनेक भेदों की चर्चा की है - नामिसाधु और मार्कण्डेय ने अपभ्रंश को तीन वर्गों में रखा। नामि साधु के अनुसार अपभ्रंश के तीन भेद भेद हैं। - उपनागर, आभीर और ग्राम्य। मार्कण्डेय की संख्या तो तीन ही है परन्तु उसने नाम नाम बदल दिए- नागर, उपनागर तथा व्राचड़। डा० याकोबी ने अपभ्रंश को स्थान-गत आधार पर उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी वर्गों में रखा। डा० बजारे ने चार के स्थान पर तीन वर्ग - पूर्वी, दक्षिणी, और पश्चिमी रखा। डा० नामवर सिंह ने इसके दो भेद माने हैं।- पूर्वी और पश्चिमी। डा० उदय नारायण तिवारी उपर्युक्त किन्ही भेदों को स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है कि- अपभ्रंश में जो साहित्य मिलता है उसमें भाषागत भेद बहुत कम है। आधुनिक विद्वानों ने इसीलिये प्रत्येक प्राकृत के आधार पर अपभ्रंश की कल्पना की है। प्रत्येक प्राकृत का एक अपभ्रंश रूप होगा। जैसे :-

शौरसेनी प्राकृत का शौरसेनी अपभ्रंश,
मागधी प्राकृत की मागधी अपभ्रंश
महाराष्ट्री प्राकृत की महाराष्ट्री अपभ्रंश इत्यादि।"[1]

डा० भोला नाथ तिवारी के अनुसार अपभ्रंश को इस प्रकार बांटा गया है

i- शौरसेनी

ii- पैशाची

iii- व्राचड़

iv- महाराष्ट्री

v- अर्धमागधी   vi मागधी।

- -

1- हिन्दी और उसकी विविध बोलियां लेखक- प्रो० दीप चन्द जैन, डा० कैलाश तिवारी, 1972 पृष्ठ 24

अपभ्रंश के विकिसत रूपों का विकास आधुनिक आर्य भाषाओं के रूप में प्राप्त होता है । इसमें पश्चिमी हिन्दी की जननी शौरसेनी अपभ्रंश को माना गया है । इसी पश्चिमी हिन्दीएक शाखा बांगरू है । अपभ्रंश तो उकार बहुला है परन्तु बांगरू का रूप आकारान्त है । इसके लिए चटर्जी का विचार महत्वपूर्ण है - उनका कहना है, यह तो आकारान्त पश्चिमी हिन्दी की बोलियों से विकसित तथा प्रथम भारतीय मुसलमानों की पंजाबी भाषा से प्रमाणित एक अद्भुट रूप से निर्मित हुई भाषा थी । क्योंकि अपभ्रंश का प्रसार पंजाब, गुजरात, राजस्थान में निश्चित रूप से हुआ था । " दिल्ली के बाजारों में इसका स्वभावत: ही व्यवहार होता था क्योंकि दिल्ली आकारान्त बोली वाले बांगरू क्षेत्र में है । इसका नाम सर्वप्रथम हिन्दी या हिन्दवी जिसका अर्थ हिन्द या भारत की अथवा हिन्दुओं की भाषा थी।"[1]

उपर्युक्त तथ्यों से प्रथम भारतीय मुसलमानों की पंजाबी भाषा के प्रभाव से आकारान्त हो जाना और बांगरू को सर्वप्रथम " हिन्दी" का नाम प्राप्त करने का गौरव हासिल करना स्पष्ट हो जाता है । हां बांगरू का राष्ट्र भाषा होने से वंचित रह जाने का का मुख्य कारण यह दृष्टिगोचर होता है कि इसका लिखित साहित्य का न होना या यूं कहिए कि यदि इसे साहित्यिक रूप में ढाला जाता तो यह हमारे देश की राष्ट्र भाषा होती । क्योंकि आज x हिन्दी के रूप और स्वरूप को संवारने में बांगरू का अप्रत्याशित एवम् महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।

इसप्रान्त {हरियाणा} के बनने के बाद निरन्तर बांगरू के रूप और स्वरूप में विकास हो रहा है । बल्कि इसका साहित्य भी निरन्तर वृद्धि कर रहा है । अब इसकारूप मौखिक नहीं रहा - बांगरू का लिखित रूप भी उत्तरोत्तर वृद्धि की ओर अग्रसर है और पड़ोसी राज्यों की भाषाओं की भांतिअब इसका भी साहित्यिक सुमन विकसित होकर अपनी खुशबू जन मानस में फैलायेगा ।

1- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक - शिव कुमार खंडेलवाल 1980 पृष्ठ 26

3- बांगरू का समीपवर्ती बोलियों से पार्थक्य [समता और भिन्नता]:-

आसपास की भाषा बोलियों में आपस में व्यावहारिक लेन देन चलना स्वाभाविक सा है। और इससे परस्पर बोलियों में शब्द भण्डार की वृद्धि होती है। यदि आसपास की बोलियों का उद्गम एक ही हो तो भी जलवायु खानपान, पहनावा, रहन सहन तथा उच्चारण सम्बन्धी फर्क आ जाना व्यावहारि है। कभी आपस की काफी समानता औरकभी कभी काफी असमानता परिलक्षित होती है। इतना पार्थक्य हो जाता है कि मानों एक दूसरे का परस्पर कोई सम्बन्ध ही न हो। बांगरू का इसकी समीपवर्ती बोलियों से पार्थक्य [समता एवम् भिन्नता] का कथन प्रस्तुत है :-

i- बांगरू और कौरवी :- कौरवी, बांगरू सीमा से मिलने वाली कौरवी का क्षेत्र पूर्व दिशा में यमुना नदी, पश्चिम में अम्बाला, कुरुक्षेत्र-दिल्ली रेलवे लाईन या ग्रांड ट्रंक रोड उत्तर में अम्बाला- सहारनपुर रेलवे लाईन और दक्षिण में पानीपत का पूर्वी भाग की ओर यमुना पार है।

i - कौरवी में दो स्वर मध्यवर्ती "ह" "ह" ध्वनि का प्रायः लोप हो जा है परन्तु बांगरू में हकार की बाहुलता प्राप्त होती है यहाँ सहर [शहर] में आने वाली "ह" ध्वनि का लोप हो गयाहै। इसी प्रकार कौरवी में महाप्राण ध्वनियां बहुधा अल्प प्राण होती है मगर बांगरू में आ, ई, ऊ, ए, ओ प्रत्येक स्वर के ह्रस्व और दीर्घ प्राप्त होते हैं :-

बांगरू	कौरवी
बाह्मण	बाम्मण
सहर	सैर
सहमी	सामने

व्यंजना के द्वित्वी करण की प्रवृति दोनों में अधिक है। जैसे :- उज्जड़, कुंडडा, गाड्डा आदि ।

- -

ii - कौरवी में संज्ञा का बहुवचन "न" जोड़ने से अथवा खड़ी बोली की तरह "ओं" लगाने से बनता है। जैसे :- बांगरू कौरवी

बांगरू	कौरवी
बुल्दां की जोड़ी	बैलन (बैलों) की जोड़ी
लोगां का काम	लोगन का काम

iii - ईकरान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहु वचन केवल "ईकार" को अनुनासिक करने से बनते हैं। यह प्रवृति अकर्मक धातुओं के कर्ता के रूप में विशेष प्राप्त होती है। - कितनी छोड़ी है? सकर्मक धातुओं के कर्मरूप में आने वा ले शब्दों में "न" बढ़ाने से बहुवचन बनता है :-

छोड़ियां ने पाणी पिलादो (बांगरू)

छोड़ीन कूं पानी पिलादो (कौरवी)

iv- कौरवी में "ना" की वृद्धि से तथा बांगरू में "ण" या "णा" लगाने से बनता है जैसे:-

बांगरू	कौरवी
खाणा	खाना
जाणा	जाना

v- सर्वनाम शब्दों के रूपों में प्रायः एकता है जैसे :- उत्तम और मध्यपुरुष के एक वचन के रूपों में कहीं कहीं कुछ फर्क है :-

	बांगरू	कौरवी
उत्तम पुरुष (पुरुष तथा स्त्रीलिंग)	मन्नै, मनै	मुझे, मुज को, मुझे
मध्यम पुरुष (पुरुष तथा स्त्रीलिंग)	तैं तन्नै, तनै	तुझे, तुझको, तुजे
अन्य पुरुष (बहुवचन)	उन्होंने	उनन

किन्तु, कौरवी के कुछ सर्वनामों के बहुवचन रूपों पर बांगरू का स्पष्ट प्रभाव झलकता है - थारा, म्हारा आदि।

- -

1/i - सहायक क्रिया के रूप में जो अन्तर लक्षित है - देखिए:-

बांगरू	कौरवी
जां सूं	जाऊं हूं

1/ii - कौरवी के स्थान वाचक क्रिया के विशेषण में बठे, उठे, किंदे का प्रयोग होता है ।

1/iii - कौरवी में "ही" का स्थान बहुधा "ई" ले लेती है परन्तु बांगरू में "ए" "ही" के स्थान में प्रयोग होती है जैसे :- आप्पे आप [बांगरू], आपी आप [कौरवी] ।

12- <u>बांगरू और पंजाबी :-</u> हरियाणा और पंजाब दोनों ही पंजाब के विभक्त प्रदेश हैं । इसी लिए वहां से आये लोगों की भाषा का भी यहां की भाषा पर काफी प्रभाव पड़ा है । माहौल में एक दूसरे की बोली काफी समता भी आई दोनों भाषाओं में समानता और असमानता देखिए :-

i- दोनों में ध्वनि स्वराघात एवं ध्वनि परिवर्तन में साम्य और "ह" की प्रधानता है परन्तु उच्चारण में भिन्नता है -उदाहरणार्थ :- दोनों में घ, झ, ढ, ध, भ आदि ध्वनिग्राम है परन्तु पंजाबी में इनकी ध्वनि कम निकलती है - यहां "ह" की ध्वनि का उच्चारण बहुत हल्के होता है - घर-कहर, हजार, हझार । हिन्दी की "ढ़" ध्वनि पंजाबी और बांगरू में "ढ" हो जाती है और यही "ड़" की हालत है - पढ़ना-पढना, पड़ना- पडना परन्तु पंजाबी में [ड़" के दोनों रूप मिलते हैं - जैसे :- जेड़ा, उड़ा आदि

ii - पंजाबी में संयुक्त व्यंजन के स्थान पर द्वित्व हो जाता है । जब संस्कृत

शब्द में ह्रस्वस्वर के बाद कोई संयुक्त व्यंजन होता है परन्तु बांगरू में पूर्व वर्ती स्वर दीर्घ हो जाता है :-

संस्कृत	बांगरू	पंजाबी
कर्म	काम	कम्म
मस्तक	माथा	मात्था
शुष्क	सूका	सुक्का

iii- "ण" का प्रयोग दोनों में मिलता है जैसे :- बाणा {बांगरू} हण {पंजाबी}

iv- स्वर से शुरू होने वाले शब्दों के आरम्भ में इन दोनों में कई बार हकार का आगम होता है :-

संस्कृत	प्राकृत	बांगरू और पंजाबी
अस्थि	अस्ठि	हड्डी
ओष्ठ	ओट्ठ	होंठ होंट

v- कारकों का प्रयोग दोनों में निम्नलिखीत ढंग से होता है :-

	बांगरू	पंजाबी
कर्ता	राम ने मारा	राम ने मारा
सम्प्रदान	राम ने मारा	राम नूं मारा
सम्बन्ध	राम का लड़का	राम दा मुण्डा

vi- संस्कृत के "त क्त" प्रत्यय का रूप जो बांगरू में लुप्त और पंजाबी में विकल्प होता है :-

संस्कृत	बांगरू	पंजाबी
सुप्त	सोया	सुत्ता
कृत	किया {कर्‌या}	कीता

- -

बांगरू में अपभ्रंश " ब" का "ब" परन्तु पंजाबी में " ब" का "व" होता है :-

	बांगरू	पंजाबी
	बेचणा	वेच वेचणा
	बिरला	विरला
	बर्णा	वर्णा

1/ii- दोनों में प्रायः पुलिंग चिन्ह "आ" और स्त्रीलिंग "ई" - दोनों के भूतकालिक कृदन्त शब्दों में भी यह प्रवृति पाई जाती है जैसे :-

बांगरू	पंजाबी
काला छोरा	काला छोहा
छोरा भाज्या	मुंडा दोड्या

दोनों के विशेषणों में प्रयोग :-

	बांगरू	पंजाबी	
एक वचन	लड़का	लड़का	
बहु वचन	लड़के	लड़के	ऋजु रूप
एकवचन	माणसां का	माणसा दा	
बहु वचन	मणसां का	माणसां दा	तिर्यक रूप

व्यक्ति वाचक सर्वनामों के उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुषों के रूपों में बड़ा अन्तर है - तुम, तम और हम हैं (बांगरू) तुसीं, (तुमां) है (पंजाबी)
इसी प्रकार सर्वनामों के सम्बन्ध कारको रूप में बांगरू में म्हारा, थारा और पंजाबी में साड्डा, त्वाड्डा है ।

1/iii - कहीं कहीं क्रिया के तिङन्त रूपों का प्रयोग दोनों में दिखाई देता है परन्तु बांगरू में तिङन्त क्रिया - सामान्य वर्तमान और पंजाबी में भूतकाल वाची क्रिया तिङन्त रूप धारण करती है । जैसे :- उसने तम ते के कहया {बांगरू} :- उन्होंने त्वानूं की आख्या {पंजाबी} ।

पंजाबी में द्वित्व के अत्याधिक प्रभाव के फलस्वरूप "म कहीं कहीं कृदन्त रूपों में कुछ अन्तर पाया जाता है । जैसे :- काट्या, पीट्या {बांगरू} -कट्टेया, पिट्टेया {पंजाबी}

पटियाला के समीप वर्ती बांगरू पंजाबी से स्पष्ट प्रभावित है । वहां "से" का रूप कहीं कहीं पंजाबी की सहायक क्रिया "ऐ"मेंमिलता है उदाहरणार्थ :- उडे छोरे छोरे जावें ऐ । इसी प्रभाव के फलस्वरूप वहां बान्दा, जान्दा, आन्दा आदि रूप भी प्राप्त हैं ।

3+|- <u>बांगरू और राजस्थानी</u> :- बांगरू और राजस्थानी में उच्चारण ध्वनि परिवर्तन, लिंग और वचन के दृष्टिकोण से काफी समानता है क्योंकि इसका काफी भाग राजस्थानी सीमा से मिलता है दोनों में सांस्कृतिक दृष्टिकोणों में भी काफी साम्य है । क्रिया, क्रिया विशेषण, सर्वनाम, तथा कई अन्य व्याकरणीक असमानताओं के कारण ये भिन्न वर्गीय भाषाएं हैं । दोनों का तुलनात्मक {समता और विषमता} का कथन देखिए :-

1:- दोनों में "ळ" का उच्चारण दन्त और मूर्धन्य दोनों प्रकार का मिलता है और "ल" ध्वनिग्राम है :-

शब्द	अर्थ
पाल	बान्ध
पाळ	बिछाने का कपड़ा
खाल	परनाला
खाळ	चमड़ा

- -

आजकल प्राय: मूर्धन्य { "ल" का दन्त "ल" की आदत छट रही है । जिन शब्दों के आदि में या मध्य में मूर्धन्य "ल" आता है । अधिकतर उस "ल" को दन्त्य कर देने से अर्थ में विशेष अन्तर नहीं आता । उदाहरणार्थ :- पीला, काला, लेकिन बहुत से लकारान्त शब्द ऐसे है जिनके दन्त लकारान्त कर देने से अर्थ भि भिन्न हो जाता है जैसा कि उपर लिखाया गया है ।

ii - बीकानेरी के प्रभाव से कहीं कहीं "स"- "श" बोला जाता है जबकि राजस्थानी में "श" को "स" परन्तु "ष" प्राय: "ख" हो जाता है । बांगड़ में श, ष स बोले जाते हैं ।

बांगड़	राजस्थानी
बरसा	बरखा
वेश	वेस
सेसै	सेस

संस्कृत का क्षीण तो बांगड़ में छीन हो जाता है परन्तु राजस्थानी में खीण हो जाता है ।

iii- कहीं कहीं "व" "म" परिवर्तित हो जाता है :-

रावण- रामण {बांगड़} रामण {राजस्थानी

श्रावण- साम्मण {बांगड़} सामण { राजस्थानी}

परन्तु राजस्थानी में अनेक शब्दों के उदासीन आदिस्वर का लोप बांगड़ के समीप वर्ती स्थानों के कारण होता है उदाहरणार्थ अहीर- हीर उठा -ठा आदि ।

--------------------o--------------------

ii/ - दोनों में "य" का "ज" और "या" दोनों ही तरह मिलते है ।

जब यह " किसी शब्द के आरम्भ में हो तो "ज" लिखा जाता है परन्तु जब "य" शब्द के पहले ही अक्षर के बाद आता है । तब वह विकृत नहीं होता ।

उदारणार्थ :-	आदि यकार	मध्यन्तर या अन्तय मकार
	युद्ध - जुद्ध	काया
	यात्रा- जात्रा	माया

बहुवचन बनाने के लिए दोनों के व्यंजनान्त शब्दों में { आगम और प्रत्यय} आं का प्रयोग होता है । उदारणार्थ रात- रातां आदि । राजस्थानी के आकारान्त, ईकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के बहुवचन बांगरू से प्राय: नहीं मिलते । उदारर्णार्थ :-

	बांगरू	राजस्थानी
एक वचन	बहुवचन	बहुवचन
घोड़ा	घोड़ें	घोड़ां
बहू	बहुआं	बहूवां

बांगरू में "ऋ" के स्थान पर "रि" जो राजस्थानी में भी मिलता है दोनो बोलियों में " णकार बहुला प्रवृति पाई जाती है ।

उदारणार्थ :-	शब्द	बांगरू और राजस्थानी
	ऋतु	रितु
	जाना	जाणा

i/- राजस्थानी में रेफ का स्थानान्तिरित रूप भी प्रयो में होता है जबकि बांगरू में इनका प्रयो नहीं होता है वह रकार में बदलता है ।

- -

उदाहरणार्थ :-

संस्कृत	बांगड़ और राजस्थानी	राजस्थानी में स्थान्तरित रूप
दुर्लभ	दुरलभ	-
धर्म	धरम	धम
कर्म	करम	कम

। बांगड़ और राजस्थानी के सर्वनामों में काफी समानता है ।

बांगड़	राजस्थानी
मैं, हम	मैं, हम,
मेरा, मने, मन्ने, म्हारा	मैं, मुज, मेरे, हमारा
तं, तू, तम, थम	तू, थम, तुम
तने, तेरा, थारा	तैं, तू तुज, तेरे, थारे
वो, वोह, ओह, वा, वे	वो, वोह, वा, वे, वेह
उस, उण, विण	वो, वैं, उन

क्रिया विशेषण में काफी भिन्नता है । जैसे :-
ईब, इब, इब्बे, का राजस्थानी में अबे, को, होता है । जद, जिब, जब का राजस्थानी में जद, जदीं जिद होता है । बाड़ै,- उड़ै, इत, उत्त का राजस्थानी में अठी, अठे, इठे, उठे होता है, जित, जड़ै, कित, कड़ै का राजस्थानी में जठी, जठे, कठी, कठे, होता है । परन्तु परस्पर सम्पर्क के कारण कहीं कही यह रूप समानता भी रखते हैं ।

।/ii - कहीं कही सुखोच्चारण के लिये शब्द के आरम्भ में कभी कभी कोई स्व

स्वर जुड़ जाते हैं जो स्वरागम कहलाते हैं उदाहरणार्थ :-

बांगड़	राजस्थानी
स्वार, अस्वार	रवा, अरवा
रथ, अरथ	थारा, आथारा

दोनों में छुटपन लाने के लिये अथवा प्रेम प्रदर्शन के लिये अपभ्रंश की तरह संज्ञाओं के अन्त में ड़ा, ड़ी ड़, जोड़ दिया जाता है। उदाहरणार्थ :- गोरी ﴾सुन्दरी﴿ का गोरड़ी ﴾अत्याधिक खूबसूरत﴿ ।

11/ - <u>बांगड़ और ब्रज</u> :- बांगड़ की दक्षिणवर्ती सीमाएं ब्रज क्षेत्र के केवल थोड़े से भाग को स्पर्श करती है दोनों की ध्वनि क्रिया में समानता और असमानता दोनों ही उपलब्ध हैं ।

i- मूर्धन्य ध्वनियों में "ण" का अभाव है उसके स्थान पर ब्रज में "न" उच्चरित होता है । इसी प्रकार ल, ड़, के स्थान पर "र" का प्रयोग होता है उदाहरणार्थ :-

बांगड़	ब्रज
कंगण	कंगन
पाणी	पानी
झगड़ो	झगरो
बीड़ा	बीरा
दूबले	दूबरे

ii- बांगड़ और ब्रज में ऊष्म ध्वनियां श,ष, स में केवल स मिलती है ।

- -

उदाहरणार्थ :- विशेष - विसेस आदि ।

।।।- संज्ञा, विशेषण और क्रिया पद प्रायः ओकरान्त मिलती है जबकि बांगरू में आकारान्त की बहुलता है । । उदाहरणार्थ :-

बांगरू	ब्रज
बसेरा	बसेरो
जीत्या	जीत्यो
छोरा	छोरो

।।/- दोनों में शब्द के मध्य आने वाला "ह" प्रायः लोप हो जाता है ।

हिन्दी	बांगरू	ब्रज
ठहरता	ठैरता	ठैरतो
साहूकार	सांकार	साऊकार
बारह	बारा	बारा

।/- संज्ञा का बहुवचन बांगरू में " आं" लाने से बनता है जबकि ब्रज में "न" से बनता है । उदाहरणार्थ :-

बांगरू		ब्रज	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
घोड़ा	घोडां	घोड़ो	घोड़न

।/।- सामान्य वर्तमान परिवर्तन बांगरू में "ता" लाने से तथा ब्रज में "त" लाने से बनता है । उदाहरणार्थ :- करता, जाता, खाता, पीता आदि {बांगरू} करत, जात, खात, पीत आदि {ब्रज} में ।

- -

1/ii- क्रियार्थक संज्ञा निमार्ण के लिये नो, इनो, तथा विकारी रूप में ने, इबे मूल धातु मे जोड़ा जाता है- चालिबो, खाइबो आदि जबकि बांगरू में ये चालणा, खाणा है ।

1/iii- कुछ असमानताएं देखिए :-

	बांगरू	ब्रज
भूतकाल	मन्ने कन्ने मारूया	मोकू कौन ने मारो
भविष्यत्	करांगा	करांगो
	तूं कडे गया था ?	तूं कहा गयो हो ?

इस प्रकार स्पष्ट हो हाता है कि बांगरू और ब्रज में समानता के साथ भिन्नता भी है ।

1/- बांगरू और केन्द्रीय हरियाणवी[1]:- बांगरू और केन्द्रीय हरियाणवीं में मुख्यत: ध्वनात्मक अन्तर पाया जाता है । ध्वनियों में स्थूल रूप से तीन बाते है । जो कि निम्नलिखित है :-

i- हकार का उच्चरण विशेष झटके के साथ होता है जिससे वह केन्द्रीय हरियाणवी के हकार के समान न न पूरी तरह घोष है और न पूरी तरह अघोष । इतना ही नहीं प्रत्युत हकार ध्वनि युक्त व्यंजना का उच्चारण भी उसी प्रकार के झटके के साथ होता है ।

ii- बांगरू में औ स्वर अधिक पाया जाता है । इसे विवृत पश्च स्वर कहा जाता है । यह भी "ऐ" की भांति मूल स्वर है सन्धि स्वर नहीं ।

iii- बांगरू में "ल" तथा "ण" ध्वनिग्राम पाए अवश्य जाते है परन्तु इनका प्रयोग इतना अधिक नहीं पायाजाता ।

1- हरियाणवी भाषा का उद्गम एवं विकास लेखक - डा० नानक चन्द शर्मा 1968, पृष्ठ 33- 34 ।

R394

11/- बांगरू में हरियाणवी की सी तालवी की प्रवृति का अभाव है ।

रूपात्मक दृष्टि से दोनों बोलियां में विशेष अन्त र नहीं है यहां केन्द्रीय हरियाणवी के रूप ही पाये जाते हैं । परन्तु कुछ एक प्रयोगों पर अधिक बल रहता है ।

दोनों के रूपामें सामान्य अन्तर इस प्रकार है :-

	केन्द्रीय हरियाणवी	बांगरू
अधिकरण कारक परसर्गों		
के अतिरिक्त	घरें	घरों
अन्य पुरुष:-		
एक वचन	वोहू, वो	ओहू, हो,
बहु वचन	वे, वेहू	ओं, हों,
गणना वाचक विशेषण:-	नो, ग्यारा, बारा	नौं, ग्यारां, बारां,
	क्यावन, बावन, पचपन	क्यौन्, बोन्, पचौन्
क्रियाओं के रूप :-	गाय, मिठाई	गै, मिठई

जबकि बांगरू और केन्द्रीय हरियणावी में सामान्य साअन्तर है तो यह बांगरू ही है । क्योंकि हरियाणा के प्रत्येक भाग में इसका समावेश हर जगह है । कहीं आंशि रूप में तो कहीं प्रचुरता में ।

" इस प्रकार हरियाणावीं की लगभग वही सीमाएं समझनी चाहिए जो

- -

"सर्वे" में बांगरू की दिखाई गई है।"[1] वास्तव में बांगरू मिश्रित खड़ी बोली को केन्द्रीय हरियाणवीं नाम दिया गया है जिसमें स्थानीय शब्दों का पुट निहित है। स्थानीय भेद के कारण ही उच्चारण में अन्तर प्रतीत होता है क्योंकि प्रत्येक बारह कोस पर पानी और बोली में अन्तर आ जाता है। यह इसी का परिणाम है बांगरू का सभ्य और सांस्कृतिक विकसित रूप प्रान्तीयता के आधार पर ही हरियाणवीं बन गया है। बांगरू या हरियाणी हरियाणा राज्य की बोली है यह हम इसी अध्याय के प्रथम शिर्षक के अन्तर्गत बांगरू के नाम करण में सिद्ध कर चुके हैं।

यह ठीक है कि बोली और पानी प्रत्येक बारह कोस पर बदल जाते है तथापि यह अन्तर इतना गौण रहता है कि उसके आधार पर हम बोली को मूल अथवा आदर्श प्रादेशिक भाषा से अलग नहीं कर सकते। आदर्श हरियाणवीं की मूल प्रवृतियां समूचे हरियाणा में नहीं मिलेगीं यथा हरियाणावी की तालवीकरण की मूल प्रवृति जुलाना और इसके आस पास के देहातों में नहीं मिलती। जबकी जुलाना हरियाणा के केन्द्र महम से केवल 9 कोस दूर है। उत्तर की ओर। ठीक इसी प्रकार बांगरू की भी यही प्रवृति है इस तथ्य पर हम यह कह सकते हैं कि कहीं किसी का और कहीं किसी का आंशिक एवम् बाहुल्य रूप रहता है परन्तु हरियाणा में बांगरू का अधिकांश प्रभाव है। इसी लिए यह निश्चित है कि परस्पर संयोग (मेल) होना अनिवार्य है।

उपरोक्त उदाहरण यह स्पष्ट करता है कि इन बोलिया को परस्पर अलग नही कियाजा सकता है। केन्द्रीय हरियाणवी बांगरू का ही सुधरा हुआ रूप है। जैसा कि हम आगे कह आये हैं।

1- हरियाणावी भाषा का उद्गम एवं विकास लेखक डा० नानक चन्द शर्मा 1968- पृष्ठ 11।

4- बांगरू और इसकी समीपवर्ती बोलियों के नमूने :-

हमने अभ ी बांगरू से भिन्न भिन्न भाषाओं की समता-विषमता अध्ययन किया अब इन्ही बोलियों के नमूने पेश किए जाते हैं। जिने उनका अन्तर भली भान्ति स्पष्ट हो जाए। भिन्न भिन्न समीपवर्ती बोलियों के नमूने देने का हमारा उद्देश्य भाषा अन्तर स्पष्ट करना ही है।

बांगरू

उमर बडेरी[1] सिर में धाले आगे कमजोरी में मेरी हाले से नाड़।
इसी तकलीफ नहीं जा ओटी, सहम की रांड़[2] अंगावै मोटी।
बीर दूसरी हो छोटी घर में मतनां सूं धाले मेरे गल में झाड़।।
सदस समय इकसार रहे ना बन्द कदे तकरार रहे ना।
मेरा तेरा प्यार रहे ना आपस की लाली देगी वो पाड़[3]।।
होज्या तेरे करम की हाणी मतणा डूबे होके स्याणी[4]।
हाथ पकड़ के तेरा वा राणी देगी वो घर ते बाहे लिकाड़।।

कौरवी :-

ससुर वहां से चल दिया, छकड़ों भर लिए दाम।
बऊं छुड़ाऊ चन्द्रावती जिसके लम्बे खेस।
जा रे ससुर घर आपणे, राखूं पंचों की लाज।
देवर वहां से चल पड़ा, छकड़ो भर लिए दाम।।
भाभी छुड़ाऊ चन्द्रावती, जिसके लम्बे लम्बे खेस।
जा देवर घर आपणे, राखूं दुपिया की लाज।

1- अधिक।

2- कलह।

3- प्यार खत्म करना।

4- समझदार।

पंजाबी

कन्त हरामी हंस पाया, नवीं बिहाउणे[1] दा वा ।
बाबे सिपाहिया वे जालमां, रखां तेरी सेजा दी लाज
पाणी न पिआं मुगल दा भावें भुक्खी[2] मर जां ।
रखां चीरे दी लाज, सेजां न जावां मुगल दी ।
मैं ज्युंदी जल जा, रक्खा सेजा दी लाज ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

तेरी बाहां वेलणा बोलियां, तेरे मखमल वरगे हत्थ ।
तेरी चुन्नी कोल शराब दा, तेरे बोतलां वरगे पट्ट ।।
तेरी ठोड्डी शो कशमीर दा, तेरी धार खण्डे दी नक्क ।
तेरी दन्दनी दाने अनार दे, तेरे बुल पिपली दे पत्त ।
तेरी गर्दन कूंज पहाड़ दी, तेरी काले मिरग दी अक्ख ।।

राजस्थानी

मुगल देखते रह गयो हुई वन्दा की राख ।
ये धोखा मन मे रहा, क्यों मैं लायो जी साथ ।।
खारी ए तूमण की बेलड़ी[3] फल लाग्या ए ना फूल ।
तोड़ी ही चाखी नहीं, धोखा मनई रे मनड़ें रैमाय ।।

ब्रज

माखन मांग्यो कुवर कन्हाई कुदित मातु तुरतहिं ले आई ।
लगी खवावन हिय हरषानी[4] श्याम कह्यों खेहों निज पानी ।
दिया हाथ धरि भरि के दोन चले खात खेलन हरि लोना ।
सखन संग खेलत बनमाली यमुना जाति लख ग्वाली ।
आप चले ताके घरमाही पूछत बात कौन है काहीं ।

1- विवाह
2- भूखी
3- बेल
4- प्रसन्न

1/
5- बांगरू बोली का लोक साहित्य में विनियोजन :-

परिस्थितियां सदैव एक समान नहीं रहती वे निरन्तर परिवर्तीत होती जाती हैं समय के साथ साथ, चाहे वे सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक कैसी भी क्यों न हो। इनके साथ साथ मनुष्य की विचारधारा भी बदलतीहै और पूरानी मान्यतायें नये रूप में अपना अस्थितत्व जमा लेती है। ठीक वहीं दशा बोलीया भाषा की भी होती है परिस्थितियों और समय के साथ साथ इनमें नवीनता आ जाती है परन्तु प्राचीन शब्दों का प्रयोग भी किसी न किसी रूप में उनमें समावेश किए हूए रहता है। हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का भी समय के साथ साथ विस्तार होता गया। और आजकवेल उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल, और दिल्ली ही नहींबल्कि इसका विस्तार इस प्रकार है। - "पश्चिम में अम्बाला बीकानेर और जेसल में, दक्षिण में ताप्ती नदीं, बालाघाट दूर्ग, पूर्व में रायगढ़, धनवाद और भागलपुर, एवम् उत्तर में नेपाल की सीमा को छूते हूए गंगोत्री जमनोत्री, तक चले जाइये:- यह 1050 मील लम्बा 600 मील चोड़ा भूभाग हिन्दी प्रदेश है।"[1] इस हिन्दी प्रदेश को पांच भागों में विभाजि किया गया है। - 1-पश्चिमी हिन्दी,

- -

1- ग्रामीण हिन्दी बोलियां लेखक डा० हरदेव बाहरी 1966 पृष्ठ 69 27

2- पूर्वी हिन्दी 3- राजस्थानी 4- बिहारी 5- मध्य पहाड़ी।"[1] या यूं कहिए कि उपरिलिखित विशाल भूभाग में हिन्दी का बोल बाला है। जहां तक परिनिष्ठत हिन्दीकी जन्मदात्री का प्रश्न है यह श्रेय पश्चिम हिन्दी को जाता है - और इसमें भी सर्वाधीक दिल्ली के ईद गिर्द की बोली का बांगरु और कौरवी ये दो प्रमुख बोलियां -जिनमें एक बांगरु जो यमुना के पश्चिम की ओर व्यवहृत होती है जो दूसरी कौरवी जो यमुना के पूर्व की ओर जाती है।"[1] हमारी राष्ट्र भाषा इन्ही बोलियों का विकसित, परिष्कृत और साहित्यिक रूप है जिस पर यहां की सभ्यता और संस्कृति की पूर्ण छाप रहती है।

मुसलमानो का दक्षिण भारत पर अपना कब्जा करके वहां पर बसने का सबसे अधिक प्रभाव यह पड़ा कि उनकी भाषा का भी वहां प्रसार और प्रचार होने लगा। वास्तव में उनकी भाषा दिल्ली के आसपास की भाषा थी। उत्तरी भारत में हिन्दी का प्रसार नहीं रह सकता क्योंकि यहां उस समय दरबारों में फारसी का प्रभुत्व इसमें रूकावट डाल रहा था। दिल्ली के आस पास की भाषा कौरवी और बांगरू होने के कारण दक्षिणी हिन्दी पर बांगरू कीछाप पड़े बिना कैसे रह सकती थी ? कवियों द्वारा दिल्ली की लोक भाषा में उस समय में कविता करना भी इसकी पुष्ठि करता है भाषा वैज्ञानिक की दृष्टि से देखा जाये तो बांगरू की दक्खनी हिन्दी पर

1- हिन्दी: उद्भव, विकास और रूप लेखक- डा० हरदेव बाहरी पृष्ठ 68

स्पष्ट झलकती है। उदाहरणार्थ बांगरू की प्रायः सभी स्वर और व्यंजन ध्वनियां दक्खिनी में है। बांगरू के समान उसमें भी कुछ शब्दों के दीर्घ स्वरों का ह्रस्वीकरण हो जाता है। यथा -अस्मान ⁅आसमान⁆, बहार ⁅बाहर⁆ सुन्ना ⁅सोना⁆। अल्पप्राणी करण की प्रवृति भी बांगरू जैसी है, यथा-हात ⁅हाथ, में दूद ⁅दूध⁆, बी ⁅भी⁆, सीदा आदि। "ह" के प्रभाव से अल्पप्राण व्यंजन का क ⁅"ह" का लोपकर⁆ महाप्राण व्यंजन के रूप में उच्चारण करने की प्रवृति पर भी बांगरू का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है, जैसे-भोत ⁅बहुत⁆ भार ⁅बाहर⁆, भ्या ⁅ब्याह⁆ बांगरू की विशिष्ट प्रवृति द्वित्वीकरण दक्खिनी में भी मिलती है जैसे - हाती ⁅हाथी⁆ मिट्ठा ⁅मीठा⁆ ऊपर ⁅ऊपर⁆ कीच्चड़ ⁅कीचड़⁆ आदि दक्खिनी में "ड़" की अपेक्षा "ड़" का प्रयोग अधिक है। व्याकरण की दृष्टि से भी दक्खिनी बांगरू से बहुत अधिक प्रभावित दिखाई देती है कुछ उदाहरण -

⁅क⁆ बहुवचन की रचना में आं प्रत्यय का योग -

बांगरू	दक्खिनी
औरतां	औरतां
वोरां	वोरां
हिन्दुआं	हिन्दुआं
जानवरां	जानवरां

⁅ख⁆ कुछ समान कारक चिन्ह

ने	-	कर्ता तथा कर्म में
सेती	-	कारण में
तई, खातर		सांप्रदान में

- -

मेंं मुंह, पे   अधिकरण में

§ग§ कुछ समान सर्वनाम

तू, तैं, ओ, वो, यो आदि

§घ§ सामान्य वर्तमान में डिन्त क्रिया का प्रयोग-

आवे, जावे, करे, खावे आदि ।

§ङ§ भूतकालिक क्रिया रूप-

देख्या, बोलया, कर्‌या, लग्या, कह्‌या § आदि ।

इसी प्रकार बांगीरू की और भी बहुत सी विशेषताएं दक्खिनी हिन्दी में मिलती है । ऐसा प्रतीत होता है कि साहित्य में खड़ी बोली का प्रचलन सबसे पहले दक्षिण मेंहुआ और बाद में यही परिष्कृत और परिमार्जित होकर परिनिष्ठीत हिन्दी बनी । अतएव यह स्वीकार करना होगा कि आधुनिक परिनिष्ठित हिन्दी के विकास में बांगरू का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[1]

इसके पश्चात अरबी फारसी का प्रभाव कम होता गया और दिल्ली की लोकभाषा उर्दू होने के कारण उसका प्रभाव बढ़ने लगा धीरे धीरे वह भी समृद्ध भाषा होने लगी ऐसे में बांगरू का भी प्रभाव उर्दू पर बढ़ने लगा " वस्तुत: खड़ी बोलीया आधुनिक परिनिष्ठत हिन्दी की तरह ही उर्दू भी मूलत: दिल्ली के आस पास की खड़ी बोली पर आधारित हैं जिसमें कुछ रूप § मूल या विकसित रूप में § पूर्वी पंजाबी, बांगरू तथा ब्रज की भी है ।[2] " जो आज हिन्दी का रूप स्वीकृत है उसे काफी समय पश्चात स्वीकृति प्राप्त हूई । इससे काफी पूर्व तो बांगरू को हिन्दीके रूप में हि पहचाना गया ।

1- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक शिवकुमार खण्डेलवाल पृष्ठ 18-19 , 1980

2- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन लेखक शिव कुमार खण्डेलवाल पृष्ठ 19, 1980

इसे देहलवी, हिन्दवी और दक्षिण में दक्खनी कहा गया । इस अवधि तक तो अरबी फारसी तुर्की आदि शब्दों का इसमें काफी समावेश हो चुका था या यह भी कह सकते हैं कि बांगरू में इन भाषाओं के शब्दों का नियोजन हो चुका था । इसके साथ संस्कृत के तत्सम, अतत्सम और तद्भव शब्दों शब्दों का समावेश भी हो चुका था । अंग्रेजी के शासन काल में काफी संख्या में अंग्रेजी शब्दों ने भी इसमें प्रवेश किया । निसन्देह वर्तमान परिनिष्ठित हिन्दी का विकास बांगरू के महत्वपूर्ण योगदान का ही परिणाम है आज जो राष्ट्रभाषा की उच्चसता पर हिन्दी का अधिपत्य है वह बांगरू और कौरवी की शब्द सम्पदा से ही है । बांगरू में भी अंग्रेजी, फारसी, अरबी, तुर्की, तत्सम, तद्भव, आदि शब्दों का नियोजन मिलता है जिसका उसके लोक साहित्य पर प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।

"शब्द समूह की दृष्टि से प्रत्येक भाषा एक प्रकार से खिचड़ी होती है । किसी भी भाषा के सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता है कि वह अपने विशुद्ध रूप में आज तक चली आती है ।"[1] इसी लिये इसी भाषा के शब्द समूह का अध्ययन, उसके विभिन्न स्त्रोतो को विभिन्न श्रेणियों में बांटने से ही सरल रहता है ।

1- हिन्दी भाषा का इतिहास लेख डा० धीरेन्द्र वर्मा 1949, पृष्ठ 68

बांगरू लोकसाहित्य में नियोजित होने वाले बांगरू शब्दों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

I- तत्सम और अर्द्धतत्सम शब्द

II- तद्भव शब्द

III- देशी

IV- विदेशी

I- तत्सम और अर्द्धतत्सम शब्द :-

i- तत्सम शब्द :- अन्न, वित्त, वर, कर्ण, ज्ञान, जल, ताप, पूजा, नदी, कुण्डल, गणेश, गुड़, गौरी, घाट, देव, दुःख, नगर, नर, नट, पंच, बीज, भूत, भरणी, बिना, सदा, आदि

ii- अर्द्ध तत्सम :- करम्, दरसन्, किरस्न्, परेम्, लछमण आदि ।

II- तद्भव शब्द :-

संस्कृत	बांगरू	संस्कृत	बांगरू
आकाश	आकास	जाति	जात्य
अन्न	अन	स्थान	थाण
अवसर	औसर	तृष्णा	तिस
काक	काग	देश	देस
कार्तिक	काततक	नाम	नां
कृपा	किरपा	स्नान	न्हाण
ग्रहण	गहण	परमेश्वर	परमेस्सर
गौ	गाय	वेद	बेद
ग्राम	गाम	वधू	बहू

- -

संस्कृत	बांगरू	संस्कृत	बांगरू
शंख	संख	समुद्र	समन्दर
श्रावण	सामण	स्वर्ग	सुरग
स्वप्न	सुपना	हस्त	हात्थ
अग्नि	आग्ग	अन्धा	आंधा
सांझ	सन्ध्या	महिषा	भैंस
भाग्य	भाग	चूर्ण	चून

III-देशी:- यहां देशी शब्दों से हमारा तात्पर्य दो प्रकार के शब्दों से है एक तो भारतीय भाषाओं से और दूसरा बांगरू की अपनी क्षेत्रीयता से एक तो भारतीय भाषाओं के भिन्न भिन्न शब्दों का प्रयोग जिस जिस रूप में बांगरू में होता है। उनका वर्णन दूसरा इन भाषाओं के कुछ शब्द ऐसे है जो यूं के यूं बांगरू में भी बोले जाते है। इनका अध्ययन हम इसी अध्याय में कर चुके हैं फिर भी कुछ उदाहरण इस प्रकार है:-

किवाड़, चांदणा, चून, जनावर, आठे, धावर, लत्ता, (आदि (खड़ी बोली- कौरवी), अनक, आठे, आलकस, ऊत, एकला, ओटना, कमेरा, खाती आदि (ब्रज, बासौज, उक्कल, ऊत, कड़ बस्सी, आदि) राजस्थानी) कीड़ी, झोटा, जोहड़, रौला, नेड़े आदि (पंजाबी)

दूसरी बांगरू क्षेत्रीयता के शब्द जिसमें इसका अपना [illegible] विशेष महत्त्व है उनकी सूची हमने इसी अध्याय के पिछले शीर्षक नं० 6 में दे दी है।

- -

11/- विदेशी शब्द :-

अरबी, फारसी, तुर्की-तत्सम रूप में

फारसी:- पोशाक, कागद, जैदाद, दरख्वास्त, ग़ैर, दवाई, बाजार, मुरदा, राह आदि

अरबी:- पतवार, इख्त्यार, जरूरत, जिक्र, जुल्म, वक्त, अल्लाह, आदमी, ईमान, कसाई, कायदे, किस्मत, कुदरत, खबर, कसम, गुलाम, दीवान, मुकदमा, आदि।

तुर्की:- कुल्ता, दरोगा, बीबी, कैंची, बेगम आदि।

पुर्तगाली:- अल्मारी, गुदाम, तमाखु, पिस्तौल, बोतल, कमीज, पीपा, आदि।

अंग्रेजी:- टेशन, किताब, बस, रेल, कम्पोडर, डाक्टर, रंगरूप, पिलस्तर आदि।

अरबी:-फारसी, तुर्की, के शब्द जो तद्भव रूप में प्रयुक्त होते हैं :-

अरबी/फारसी/तुर्की शब्द	बांगरू
अक्ल	अक्यल
वाला	आला
वाली	आली
आसान	उसारा
तुर्की काकी	काकी
चाकू	चक्कू
जहान	जिहान
जुबान	जुबान
नीयत नीयत	नीत
नसीहत	नैसयत

- -

1-बांगरू लोकगीतों में :-

कच्चा धागा नकली मणिया झूठी राम सुमरणी,
किसी की निन्दा किसी की चुगली कैंची जेब कतरणी,
ओ अभिमानी तेरे जुलम ते कांपण लागी धरती,
जैसी करनी वैसी भरणी फेर भगवान के करे ।।
वायदा करके भूल गया तू अटल वचन पे रहा नहीं,
सदा कुसंग के साथ फिरा करे सत्संग के मांह गया नहीं,।
ए नर बेईमान तेरा भी कतई ठिया ठिकाणा नहीं,
जिस दिल के भीतर दया नहीं तो दान के करे ।।
फिरे मरता रुदा भूखा मान बड़ाई ओर का
ए मूरख जन दया धरम बिन यो तन खाणा ढोरका,
ए सच्चे शाह ने भूल गया मन साथी बणा चोरका,
तू अपना खोवे ओर का नुकसान के करे ।।

- -

भरती हो ले रे प्यारे बाहर खड़े रंगरूट
या यहां रहते मड्डयम बाणा मिलता फ्टा पुराणा
वाँ मिलते है फुल बूंट ---

कैंची {तुर्की} जुलम {अरबी} भरणी, नार {तत्सम} धरम {तद्भव} मूरख {तद्भव}
फुल,बूंट {अंग्रेजी} आदि शब्दों का नियोजन हुआ है ।

- -

11- लोकगाथाओं में :-

हाथ जोड़ के बोल्ली, कुछ की मारवता
सुण भाई मेरा साफ जवाब
बिछाह पड़ी थी लछमण राम मैं
जिन नै सहा हो बनवास
बिछाह पड़ी कौतंके पांचवा
गये दिसोटे पांडू पांव
बिछाह पड़ी थी राज हरी चन्द
बिक गया बेटा रोहतास
बिछाह पड़ी थी नल महाराज मैं
सारा सुणा दयूं बिछाह का हाल
माया के बोल्ले हूये
धन्न बी हो गयी राख
सासू दमन्ति नै न्हाण सिंजो दिया
खूटी निंगल गयी नौलखा हार
बैठ रथ मैं दोन्नो चल पड़े
पहुंचे बिछम उजाड़
टक्कर ला ग्यीमनब की
भुन्ने तीतर उड गये
राजा रोवे जोर बिगार
राजा रानी चल पड़े
आ गये पुंगलाद बस्सकन ।

--- ---- -------------------

यहां जवाब, दरम्यान,{परसी} गजब{अरबी} लछमण {अर्द्धतत्सम}

अन्न {तत्सम} न्हाण, अरथ,{तदभव} रूपों में शब्दों का प्रयोग हुआ है।

।।।- लोक कथा में :-

तब तीसरे दिन राजा भोज फिर उस सिंहासन पर बैठणे लाग्या। तब तीसरी पुतली बोली - हे राजा भोज, तूं इस सिंहासन पर मत बैठ इस सिंहासन पर सो बैठे जो राजा वीर विक्रमादित्य जीत सरीखा दाता होय तब राजा भोज ने पूछा - हेपुतली राजा, एक समै राजा वीर विक्रमाजीत ने जग्ग करी, सो उस जग्ग में अच्छे अच्छे दूर दूर के पढ़े हुए वेद के बोल्ने वाले ब्राह्मण बुलाए। अवर उन ब्राह्मणों को बहत सा दरब दिया। अवर ब्राह्मणा ते यह कही अब जिस दिन मेरी जग्ग सम्पूर्ण हो जायगी उस दिन में तुम्हारे ते और बहुत सा दरब दे के रूकसद[1] करूंगा।[2]

सिंहासन{तत्सम} समै, जग्ग, अवर, दरब {तदभव} रूकसद {अरबी} शब्दों का नियोजन हुआ है।

।।/- बांगरू सांग में :-

सा कुंभर संसाहरो, करो कंठ में बासा
सरन पड़ा आगे खड़ा कारज हो समरास ।।

रेखांकित शब्द बांगरू के तदभव रूप में और सरन,पड़ा, आगे, खड़ा, शुद्ध साहित्य

1- विदा करना।

2- सिंहसन-बतीसी- हरियाणवी मद्य में रूपान्तर। 975

व हिन्दा के रूप में हुआ है ।

तले म्हारे महल के देता कौन आवाज

छड़े गली के बीच में गढ़ चितोड़ के राज

छैले मेरी तले पियारी

इसमें बांगरू या इसके निकटवर्ती शब्दों का नियोजन हुआ है ।

।/- <u>प्रकीर्ण साहित्य में</u> :- प्रकीर्ण साहित्य के कहावतें, चुटकले, मुहावरे पहेलियां, और सूक्तियां, आदि में बांगरू शब्दों का नियोजन मिलता है परन्तु सबसे अधिक लोकोक्तियों में :-

।-एक कन्या सहंसर <u>वर</u>, दाम <u>वित</u> समान,

।।- <u>बांदड़्यां</u> की <u>माखी</u> राम उड़ावै ।

।।। -<u>गाम</u> ते बस्या कोन्या मांहुडे पहलुयम डांड्यो ।

।।।।- <u>पीसा</u> ते हात्था का मैल हो से

।।/- खरी <u>मजूरी</u> चोखे दाम ।

वर, वित {तत्सम} बादड़्या, माखी, गाम{तद्भव} मजूरी, पीसा{अरबी} का नियोजन हुआ है ।

निष्कर्षतः-रूप मेंबांगरू लोक साहित्य में उपर्युक्त चार प्रकार के वर्गों के शब्दों का प्रयोग मिलता है जिनमें तत्सम शब्दों का नियोजन कम मिलता है परन्तु "बांगरू बोली का उद्भव लौकिक संस्कृत से हुआ है जो प्राकृत और अपभ्रंश के मार्ग से विकसित हुई है ।"[1] तद्भव एवम् देशिय शब्दावली {बांगरू} का भण्डार प्रचुर मात्रा में मिलता है । विदेशी भाषाओं में अरबी, फारसी, तुर्की पुर्तगाली, एवम् इनके विकसित शब्द भी उपलब्ध होते हैं। मुख्य रूप से विदेशी शब्दों को बांगरू में अपने रूप में ढाल लिया है ।

- -

1- हरियाणवी लोकोक्तियाँ शास्त्रीय विश्लेषण प्रो० जय नारायण वर्मा पृष्ठ 69

6- लोक साहित्य में प्रयुक्त बागड़ बोली के कुछ कतिपय विशिष्ट शब्द :-

i- बर्तन तथा साज सामान :-

ऊखळ	ओखली	देगची	पीतल या कांसे का छोटा बर्तन
कढ़ावणी	दूध गर्म करने की हांडी	बेल्ला	कांसे का भारी सा गोलपा
कमोई	छोटी हांडी	कड़छी	चम्मच
कोलड़ी	पत्थर या लकड़ी का रोलर	डोई	लकड़ी का बना बड़ा सा चम्मच
घड़ौंची	घड़ा रखने के लिए बनी तिपाई	कूण्डी	पत्थर का बना गोल और गहरा पात्र
दूंगा	छोटा घड़ा	खुरचणा	खुरचने का लोहे का चपटा पात्र
हारा	आग रखने का सामान	कढ़ावणी	दूध गर्म करने की मिट्टी की हांडी
चुकड़ा	मिट्टी का छोटा सा दीया	बरोल्ला	शब्जी आदि बनाने का मिट्टी का पात्र

ii- कपड़े लत्ते :-

कन्ध	पक्केलाल रंग का ओढ़ना	छिमाव	रेशमी ओढ़ना
पोतड़ा	छोटे बच्चे के नीचे रखने वाला चद्दर का छोटा टुकड़ा	दोलड़ा	मोटा बड़ा कपड़ा
दुतई	दोहरी चादर	लत्ता	कपड़ा
गुदड़ा	चिथड़ों का बना नीचे बिछाने का वस्त्र	तील	नारियों के बढ़िया वस्त्रों का जोड़ा

- -

iii - आभूषण :-

रमझोल ः	पांव का बाजणे वाला आभूषण
बांजण चूड़ी	बाजने वाली चूड़ियां
टाड़	बाजू का आभूषण
हंसली	गले का आभूषण
नाड़ा	चांदी का छब्बेदार जेवर
बांकड़ा	पांव का आभूषण
सिंगार पट्टो	सोने का सिर पर बान्धा जाने वाला आभूषण
बोरला	माथे के बीच में सजाया जाता है ।
पुरली	सोने की नाक में पहनी जाती है ।

ii/- कृषि सम्बन्धी :-

बल	पौधों का रोग	कसोल्ला	नलाई के काम आने वा औजार
ऊंटणा	बैलगाड़ी टेकने का डंडा	छैल	पशुओं के पानी पीने व हौज
ओरणा	खेत में बीज डालने का उपकरण	खोर	नांद
गाड़ा	गाड़ी	जैली	भूसा आदि उलटने व औजार
पाली	चरवाहा	चुलकणा	दूध निकालना
डांगर	पशु	न्यार	पशुओं का चारा
दूधार	दूध देने वाली गाय	न्याणा	दूध निकालते समय गाय के पैरा में बांधने की रस्सी
लागड़	दूधारु	सांटा	चाबुक
याइली	हल्का एकभाग	हाली	हलवाहक

- -

1/- रिश्ते नाते सम्बन्धी :-

दादस	पति की दादी	बेब्बे	बहिन
पीतस	पति की चाची	भणोईयां	बहनोई
मौलस	पति की मामी	मौलसरा	पति का मामा
फूफस	पति की बुआ	सालेत	साले की पत्नी

1/1- अन्य :-

आड़ू	मूर्ख	चाण चक्क	अचानक
आल्हणा	घोंसला	चुप चपात	खामोश
अड़ंगा	कूड़ा कर्कट	छाण	झोंपड़ी या छप्पर
उघाड़ा	नंगा	छोह	गुस्सा
कैन्या	समीप	छुपौर	पूलियों का ढेर
करड़	साहस	जेवड़ी	रस्सी
कड़	पीठ	जोट	जोड़ी
कुल्लक	डण्डा	जनेत	बारात
कौलम कौला	आलिंगन पाश में आबद्ध	झकल्ला	बालों वाला
खवैड़ू	मूर्ख	झेद	पेट
खड़ाहू	गढ़ा	डांगर	पशु
खोसली	छीनना	डाभ	कुशा
खौंस	जूता	ढुक्क	ढूंसा
गमीणा	यात्रा	ढाला	तरह
गितवाड़ा	लकड़ी या पूली आदि रखने का स्थान	टींट या टींड	विशेष फल
गोहसा	उपला	टूम	गहना

- -

गरेहर	मार्ग	हगा	अधिक
खागड़	सांड	ठाडू	जोर से
गरेज्जी	जेब	ढांडलसाला	बारात ठहराने का स्थान
घरकणी	क्रोध में देखना	ढीखर	पुराने झाड और लकड़ी
घाट	कम	ढेट	मूर्ख
घाला	दुर्भाग्य पूर्ण घटना	तावली	जल्दी
चौख्खा	ठीक	त्यौर	दृष्टि
तकाज्जा	शीघ्रता	परे	दूर
तिसाया	प्यासा	पुट जमना	निश्चय होना
थम्ब	स्तम्भ	पौड़ी	सीढ़ी
ध्यासे	शान्ति	पौली	दहलीज
ठाढ़ा	ताकतवर	पील	जाल वृक्ष पर लगने वाला फल
थावर	शनिवार	फुंडी	फपून्दी
दरड़	कुचलना	बिरकना	बहकना
धिंगताणा	जबरदस्ती	बिंझ	जाना
निग्गर	ठोस	बी	भी
नेबर	छूंछ	भूंडा	असुन्दर
न्यूं	इस प्रकार	बालू	हवा
नाड़	गर्दन	मोक्खड़	मोटा
फैटना	मिलना	बरभोंा	भिगोना
मटोड़	मिट्टी का ढेर	माड़ा	थोड़ा या खराब
मुल्खी	उल्टी	रुंख	वृक्ष
रंडापा	वैधव्य	सीर	सोता
रा	रास्ता	सहज	शनैः
रुक्का	जोर की आवाज	हांण	देर

" तृतीय अध्याय "

बागिक लोक गीतों में समाज

1- मानव, मानसिकता एवम् समाज

2- लोक मानस और लोक चेतना

3- लोक गीत

4- बागिक लोक गीतों का वर्गीकरण :-

[1] संस्कारगीत :-

I- जन्म:- जच्चा, प्रसव पीड़ा, पुत्र जन्म, नहावनहार, स्याऊ के गीत, छठी, रतजगा, जलवा पूजन आचक आलना, जच्चा का भोजन, कुआँ, पलना, मुन्डन आदि ।

II- विवाह :- लग्न, भात न्योतना, बन्दरवार-बान-तेल, रतजगा, तेल चढ़ाना, आरता, बनड़ा, भात भरना, सेहरा, कुकड़ी, बारात का प्रस्थान, घोड़ा घोड़ी [घोड़ियां], बधावा, बारात का स्वागत, जोड़ा, कन्या दान, साखी कहावना, सीठने, दान दहेज एवम् विदाई, कांगने जुए का खेल आदि ।

III- मृत्यु :- स्यापा, मकान, श्राद्ध, कुआ पूजना, शोकगीत, तेरहवीं, बरसोदी आदि ।

[2] कृषिगीत :- भूमि का महत्व, खाद का महत्व, धरती, बादल, बीज की किस्में फसल बोने का समय, फसल काटने का समय, पेड़ की मलाई, बाजरा, कोल्हू आदि के गीत ।

[3] देवी देवताओं - व्रत त्योहारों के गीत :- शीतला माता, देवी, निर्जला ग्यास, तीज, जन्माष्टमी, गूगा, साँझी, करवा चौथ, अहोई, होली आदि 12 महीनों में आने वाले व्रत एवं त्योहार ।

[4] ऋतु गीत :- सावन के झूले, बारह मासिया, मल्हार, आसोज के साँझी औरड़ पथवारी, कार्तिक स्नान और फागुन के गीत ।

[5] क्रियागीत :- नृत्य, अनुभूति, तर्क एवं संवाद प्रधान गीत ।

[6] बाल गीत :- बालकों की विभिन्न अवस्थाओं के गीत ।

[7] राजनीति सम्बन्धी गीत :- उधम सिंह का शहीदी गीत, गाँधी की मृत्यु, इन्दिरा गाँधी का जीवन वृत्त, संजय की मृत्यु का गीत आदि ।

[8] अन्य गीत :- सौकन, कैवट प्रेम, शराबी की पत्नी, हास्यविनोद, पशुता आदि के गीत ।

5- प्रचलित बाँगरु लोक गीत एवं उनका विवेचन ।

0-----00

"तृतीय अध्याय"

बघेली लोकगीतों में समाज

लोक साहित्य का क्षेत्र उतना ही व्यापक है जितना लोक का जीवन। शिष्ट या अशिष्ट सभी मानों लोक के अंग होते हैं।

1- मानव, मानसिकता एवं समाज :- एक सुनिश्चित सीमा में बन्धे हुए मानव के लिए समाज की संज्ञा दी जाती है। सामाजिक प्राणी से जिन सैकड़ों के कारण पृथकता रखता है, उसी पृथकता का आधार लोक साहित्य और सामाजिक शास्त्रों का होता है।

लोक साहित्य तो सम्पूर्ण लोक द्वारा निर्मित, सम्पूर्ण लोक के लिए एवं सम्पूर्ण लोक की थाती है। मानव के अपार्थिव शरीर के ललाट में माँ बाप द्वारा अर्जित सगुण, दुर्गुण ही मात्र शुभ होते हैं। मानव संस्कृति के विषय में इतना जान लेना ही था पर्याप्त होगा की सामाजिक सभी विधि विधान, नियम, परम्परा आदि का योग, मानव को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने में होता है। और मानव का गहरा व अटूट सम्बन्ध लोक साहित्य के साथ जुड़ा होता है। लोक साहित्य का विस्तृत वर्णन ही मानव और लोक-साहित्य के अविभाज्य सम्बन्ध का आधार है।

मानव की उद्भाषित भावनाएँ जो उसे वातावरण और परम्परागत द्वारा मिलती हैं और जिनका सम्बन्ध उसका रहने वाले समाज के साथ होता है वही उसकी मानसिकता कहलाती है। वह अपनी भावना अनुभूतियों का प्रतीकरण अपने से भिन्न लोगों पर करता है। वह उसका समाज कहलाता है। लोक भावना ही मानव जीवन की आधारशीला है।

2- लोक मानस और लोक चेतना :- लोक मानस वस्तुतः मूल सृष्टिकालीन मनुष्य में विद्यमान सबसे प्रथम अपने जन्म की सहज प्रतिक्रियाओं का प्रतिरूप है। इस आधार पर आदिमानव में जन्म से रति और भय सहज भाव जन्म से माने जाते हैं जिसके आधार पर आदि मानव सबसे पहले अभेद लोलक बुद्धिपरक था। लोक मानस में "निज" और "परभाव" के स्वरूप को अलग 2 नहीं देखा जा सकता क्योंकि उसके लिए सम्पूर्ण सृष्टि समान सत्ताधारी के रूप में विद्यमान है। इसके अन्तर्गत अतीत की भावना निहित होती है। यहाँ लोक मानस के मानसिक स्थिती में स्वप्न भी उतने यथार्थ प्रतीत होते हैं जितने की जागृत अवस्था में कृत्य। लोक मानस में इस यथार्थ की सत्ता को स्वीकार भी किया गया है। उदाहरणस्वरूप राजा हरिश्चन्द्र ने स्वप्न में ऋषियों विश्वामित्र को पृथ्वी दान में दे दी और जाग कर भी इस स्वप्न का पालन किया।

लोक मानस का सम्बन्ध मानव प्रकृति से है क्योंकि प्रकृति मानव की चेतना शक्ति की वास्तविकता को समझते हुए लोक-मानस को आदीम अबोध के तत्वों को विशेष महत्ता प्रदान करने में सक्षम है। उपर्युक्त आधार पर वह सत्य और स्वप्न में भेद नहीं कर पाता और मृतक को भी भय तथा कुछ अंशों के लिए सोया हुआ मान बैठता है इसी कारण वह भूत-प्रेत टोना टोटका आदि में विश्वास कर बैठता है जो कि लोक मानस की आदिम प्रकृति के रूप में पाया जाता है।

लोक मानस की आधारशिला पर लोक साहित्य का निर्माण होता है। क्योंकि लोक साहित्य पूर्णतया लोक मानस की ही अभिव्यक्ति है।

बांगरू लोक मानस प्राचीनकाल से धर्म भावना पूर्ण रहा है । यहाँ के वातावरण में वैदिक एवं ऋचाओं की ध्वनि गुंजित होती रही है । जो यहाँ के जनमानस को जागृत करती रही है । इन लोक गीतों में जन जागृति और लोक चेतना की बात नई नहीं है । काल और परिस्थिति के अनुसार लोक साहित्य का कपाट खुला रहा और लोक चेतना को उद्बुद्ध रहा । इन गीतों में जन जागरण और लोक चेतना का जो चित्र मिलता है वह आदर्श न होकर अधिक यथार्थ चित्र होता है । आर्थिक विषमता, अनमेल विवाह, बाल विवाह, जन क्रान्ति आदि की अनेक सामाजिक एवं आर्थिक अवस्थाओं के सर्वस्पर्शी गीत उपलब्ध होते हैं क्योंकि लोक कवि की चेतना समस्त लोक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है ।

घर बाट्याँ घरवासा[1] बाट्या साथै रह गई भौरी
मैं भी क्यों न बांटी राड़ के रातों हो गई चोरी
छोट्टे 2 कैं ना जाणो बालम याणे के ना जाणो
देस बिराणे के ना जाणो ।
--मैं लौट विवाऊ ऐ मेरी जां मैं बैठ के रातें ही
पति रौवे मत नाहकेरै लाड करयो
दो मान्या कौन्या ए मेरे मारया रकपटा छैल के
याणे की ब्याह दी ।
—— काला बलम[2] बैठ्या मैं ढला[3] नी ने उतरीया
क्योंकर लोऊँ काले के ब्याह दईयाँ

प्रथम दो गीतों में बच्चे के बाल विवाह और तीसरे पद में अनमेल विवाह का दृश्य प्रस्तुत होता है और पुनर्विवाह "मैं तेरी मैं यो मर गया तो और करेंगे" को ओर संकेत करता है ।

1- घर बार ।

2- बलमी ।

3- नीचे सरक आना ।

3- लोक गीत :-

लोक साहित्य में लोक गीतों का स्थान अति महत्वपूर्ण है । सारा जनमानस एकाकार होकर उत्सव आदि प्रसंगों पर सहज सरल, भावपूर्ण रीति से सम्बोद्गार के रूप में गीतों द्वारा फूट पड़ता है उसे लोक गीत कहा जाता है । "जीवन की सहज क्रियाएं और व्यापारों में लीन जन-समुदाय के निश्छल, सरल और स्वाभाविक भाव गीतों के बोल बनकर उनके कण्ठ स्वर में तैरने लगते हैं । खेत, नदी, पहाड़, मैदान, घर, सभी इनके निर्माण स्थल हैं । हल चलाते हुए, पशु चराते हुए, पानी भरते हुए, चक्की पीसते हुए, बर्तन मांजते हुए, झरने की स्वच्छन्द क्रीडा-किलोलित, नदी का प्रवाह वर्षा की सजलता, बसन्त का सौरभ आदि सामान्य कार्य व्यापार के समय इन गीतों का उदय हुआहै ।" 1

जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं ऐसा दृष्टिकोण नहीं, ऐसा स्पन्दन नहीं जो लोकगीतों की सीमा का संस्पर्श न करता हो ।"2 जन जीवन की ये प्रत्येक अवस्थाएं हर स्तर पर हर अवसर का भावोद्घाटन उनमें होने के कारण वे पुराने होते हुए भी नित्य नूतन ही प्रतीत होते हैं । लोक गायक ही लोकगीत का प्रणेता एवं स्रष्टा होने के कारण लोक गीत में प्रक्षेप अथवा परिवर्धन की सम्भावनाएं प्रायः अधिक होती हैं । "वास्तव में लोक गीत उतना ही प्राचीन है जितना कि आदिम मानव ।"3

लोक गीतों और लोकगाथाओं की रचना का श्रेय कोई विद्वान तो समस्त लोक[4] [फोक] को, कोई समुदाय[5] को, कोई जाति[6] [रेस] और कोई व्यक्ति[7] को देता है । इन सभी वादों को दो प्रमुख मतों के रूप में

1- लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि लेखिका डा० विद्या चौहान पृ० 74
3-लोक साहित्य और पाँवरी भाषा लेखक डा० चौधरी पृ० 96
4- लोकनिर्मितवाद 5- ग्राम समुदायवाद [कम्युनल ओरिजिन] । 6-जातिवाद
7- इसके अन्तर्गत दो वाद-व्यक्तित्वहीन, व्यक्तित्ववाद, चारणवाद ।
2- कन्नौजी लोक साहित्य लेखक डा० सन्तराम अनिल 1975, पृ० 43

स्वीकार किया जाए तो प्रथम में समष्टि के विविध रूपों - फोक, कम्युनिटी और जाति द्वारा लोकगीत की रचना मानी जाती है । जैकब ग्रिम एफ बी गुमेर तथा स्टैंथल और कुछ हेर्डर के साथ द्वितीय मत जिसमें किसी व्यक्ति को रचयिता माना जाता है, परन्तु इस मत में भी व्यक्ति की व्यक्तित्वहीनता और लोकगीत एवम् लोकगाथा पर सम्पूर्ण समाज का अधिकार स्वीकार किया जाता है जैसे एफ जे चाइल्ड, विशप पर्सी और ए डब्ल्यू श्लैगल आते हैं ।

ग्रिम के अनुसार किसी देश के समस्त निवासी (फोक) लोक-गीतों की सामूहिक रचना करते हैं ।[1] उनका आशय है कि सामूहिक आनन्द के उत्सवों में किसी आनन्द दायी विषय घटना या विषय इत्यादि का वर्णन प्रस्फुटित हो उठता है । धीरे धीरे यह लोक गीत (बैलेड) के रूप में निर्मित हो जाता है । ग्रिम के आलोचक उनके मत के विरोधी [illegible] यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि जब समूह एकत्र हुआ तो उसमें प्रथम पंक्ति का आरम्भ किसने किया? इस भावना का उद्भव किस प्रकार हुआ ? इन प्रश्नों का ग्रिम के पास कोई उत्तर नहीं है । कालान्तर में ग्रिम के इस मत को अनेक विद्वानों ने हास्यास्पद बतलाया है ।[2]

एफ बी गुमेर का समुदायवाद ग्रिम के मत से मिलता जुलता है । अन्तर केवल इतना ही है कि गुमेर को लोक बहुत बड़ा प्रतीत हुआ ।[3] उन्होंने लोक के स्थान पर एकविशिष्ट समुदाय को रचयिता बतलाया । इनके सिद्धान्त को भी विद्वानों द्वारा मान्यता न मिल सकी ।

स्टैंथल का मत है कि समस्त जाति (रेस) ही लोकगीतों की रचना करती है । उनका कहना है कि व्यक्ति का कुछ भी मूल्य नहीं था क्योंकि उन्होंने "व्यक्ति" को उन्नत संस्कृति एवं सभ्यता की एक कमाई

1- दी इंगलिश ऐन्ड स्काटिश पोपुलर बैलेड्स लेखक एफ जी चाइल्ड पृ 18

2- जी एल किटरेज -दी इंगलिश ऐन्ड स्काटिश पोपुलर बैलेड्स (इन्ट्रोडक्शन) पृ 18

3- "" ------- वही ---- पृ 98 ।

है पर आदिम अवस्था में व्यक्ति का कुछ भी मूल्य नहीं था – समस्त जाति ही एक इकाई थी । अतः लोक गीत की उत्पत्ति एक जाति के सामूहिक प्रयास का ही परिणाम है । स्टेंथल का मत भी औक्सारलिकारी को तथ्यपूर्ण नहीं प्रतीत हुआ ।

इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध गीत-संग्रह कर्ता बिशप पर्सी का मत है कि प्राचीन काल में चारण लोग ढोल या सारंगी बजाकर गीतों की रचना करते हुए गाते जाते थे । छोटे छोटे गीतों की सृष्टि उन्हीं द्वारा हुई है ।[1] पर्सी का मत कुछ लोक गीतों और लोक गाथाओं पर तो लागू होता है पर सब पर नहीं ।

लोक कविता की उत्पत्ति के सम्बन्ध में श्लेगल के मत को व्यक्तिवाद के नाम से अभिहित किया गया है । उनके मतानुसार जिस प्रकार कला की कोई कृति कलाकार की अपेक्षा रखती है उसी प्रकार कविता भी किसी कवि की सृष्टि होती है । लोक कविता के सम्बन्ध में भी यही बात समझनी चाहिए । उसका सम्बन्ध किसी विशिष्ट कलाकार से ही होता है ।[2]

चाइल्ड के मत को व्यक्तित्वहीन व्यक्तिवाद कहा गया है । उनका मत है कि जिस प्रकार किसी काव्य का लेखक होता है उसी प्रकार लोकगीतों की रचना भी किसी व्यक्ति द्वारा हुई है, परन्तु उसमें व्यक्तित्व का अभाव रहता है । उसकी रचना में वाणी अवश्य मिलती है परन्तु उसका व्यक्तित्व उसमें बिल्कुल नहीं रहता । वह एक वाणी है, व्यक्ति नहीं ।[3] मौखिक परम्परा के कारण उस वाणी में अन्य व्यक्तियों की वाणी भी मिश्रित हो जाती है । उसमें नये अंश जुड़ जाते हैं और पुराने छूट जाते हैं ।[4]

1- बिशप पर्सी-- रैलिक्स आफ एंशिएन्ट इंग्लिश पोयट्री, भूमिका, पृ० 24
2- एफ बी गुमेर- ओल्ड इंग्लिश बैलेड, भूमिका, पृ० 40
3- चाइल्ड- दी इंग्लिश ऐंड स्काटिश पापुलर बैलेड्स, पृ० 24
4- ----वही---- पृ० 17

इस प्रकार वह रचना व्यक्ति की न होकर सम्पूर्ण समाज की हो जाती है। चाइल्ड का मत ग्रैनिम से किसी सीमा तक ही मिलता है। ग्रैनिम ने व्यक्ति को बहुत अधिक महत्व दे दिया है। जबकि चाइल्ड की दृष्टि में व्यक्ति का व्यक्तित्व समष्टि का व्यक्तित्व बन जाता है। चाइल्ड के मत का उसकी पुस्तक की भूमिका में लेखक किट्रिज ने भी समर्थन किया है। लोकगीतों और लोक गाथाओं का यदि सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो सबसे अधिक तथ्यपूर्ण मत चाइल्ड का ही प्रतीत होता है। आज यही मत प्रायः सर्वमान्य हो गया है।[1]

डा0 रॉल्फ विलियम्स ने अपनी पुस्तक "दि स्टडी आफ सांग्स" में कहा है -"लोक गीत न पुराना होता है और न नया। वह तो जंगल के एक वृक्ष के समान है, जो जिसकी जड़ें तो दूर जमीन (भूतकाल) में धंसी हुई है; परन्तु जिसमें नई 2 शाखाएं, पत्ते और फूल फूलते फलते रहते हैं। इनका रस संसार को कोई भी व्यक्ति, किसी समय चख सकता है।"[2] "कोई भी गीत शास्त्रीय नियमों, उपनियमों या लक्षण ग्रन्थों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है वही लोक गीत है।"[3] लोकगीत मानव जाति के हृदय से अपने अभावों द्वारा जन्य, प्रकृति प्रदत्त ध्वनि के द्वारा स्वतः उमड़ घुमड़ कर प्रकट करने वाला संगीत है जो हृदय का बोझ हल्का करने के लिए भावों की अभिव्यक्ति के लिए बोलने की अपेक्षा गाकर गीतों द्वारा व्यक्त किया जाता है।"[4]

आंचलिक लोक गीत अपनी विशेषता में कम लोक-प्रिय नहीं। ये गीत अपने प्रदेश का पूर्णरूप से प्रतिनिधित्व करते हैं।

1- कनौजी लोक साहित्य लेखक डा0 सन्तराम अनिल पृ0 46
2- दि स्टडी आफ, सांग्स लेखक डा0 रॉल्फ विलियम्स
3- लोक भाषा विशेषांक से उद्धृत पृ0 246
4- इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका पृ 450

4- बांगरू लोक गीतों का वर्गीकरण :-

लोक साहित्य के अध्ययन करने वाले विद्वानों की भाँति लोक गीतों का विद्वानों द्वारा सम्यक् विश्लेषण एवं वर्गीकरण कियागया है । परन्तु लोकगीत का वर्गीकरण स्वयं में एक बड़ी विकट समस्या है । परन्तु आज भी यह वर्गीकरण की समस्या सामने खड़ी दृष्टि-गोचर होती है । डा० चिन्तामणी उपाध्याय का मत है कि - लोकगीतों का वर्ण्य विषय इतना अधिक व्यापक है, कि उनका वर्गीकरण करना कठिन हो जाता है ।

लोक गीतों के जितने भी वर्गीकरण उपलब्ध है उनके दो आधार पाये जाते है - प्रथम तो विषय वस्तु को आधार मानकर तथा दूसरा गायन शैली को आधार मानकर कुछ विद्वानों ने वर्गीकरण के समय गाने के अवसर तथा गाथा गायन पद्धति, रचना शिल्प पर भी ध्यान दिया है और इसने उनकी परम्परा को ही आधार रूप मानकर वर्गीकरण किया है।

लोकगीतों के वर्गीकरण प्रस्तुत करनेवालों में सर्वप्रथम रामनरेश त्रिपाठी का लिया जाता है । जिन्होंने संकलन के आधार पर लोकगीतों को ग्यारह वर्गों में बाँटा गया था और दूसरे संस्करण में इन वर्गों को बढ़ाकर 28 कर दिया है ।"[1]

श्री त्रिपाठी जी का वर्गीकरण लोकगीतों के वर्गीकरण की परम्परा में आधार शिला के रूप में माना जाता है । इनके वर्गीकरण में

1- कविता कौमुदी (ग्राम गीत) 1955, पृ० 67/68
लेखक श्री रामनरेश त्रिपाठी ।

प्रथम प्रयास होने के कारण त्रुटियों का आना स्वाभाविक ही था । "प0 सूर्यकरण पारिक ने लोक गीतों को 29 वर्गों में विभक्त किया है ।"[1] परन्तु इन्होंने संस्कार और विवाह, हरजस और प्रभाती गीतों के भिन्न 2 वर्ग बनाकर उन्हें यों ही वैसे बढ़ा कर दिया है । इनके अलावा डा0 कृष्ण देव उपाध्याय ने विभिन्न विद्वानों के वर्गीकरण पर आलोचना प्रकट करते हुए वैज्ञानिक ढंग से अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया है :-[2]

1- संस्कारों की दृष्टि से ।

2- रसानुभूति की प्रणाली से ।

3- ऋतुओं एवं व्रतों के क्रम से ।

4- विभिन्न जातियों के प्रकार से ।

5- क्रियागीत के आधार पर ।

डा0 सन्तराम अनिल लिखते हैं कि -"डा0 उपाध्याय के वर्गीकरण पर सबसे बड़ी यह आपत्ति की जा सकती है कि "रसानुभूति की प्रणाली" वर्गीकरण का सिद्धान्त या पद्धति हो सकती है, वर्ग नहीं । इसका कारण यह है कि "रसानुभूति" किसी वर्ग विशेष के लोकगीतों की विशेषता नहीं, रस तो सभी लोकगीतों में मिलता है, और रस की दृष्टिकोण से रखकर समस्त लोकगीतों का विभाजन किया जा सकता है । इसी वर्गीकरण के प्रथम वर्ग में संस्कारगीतों में ही रस दृष्टि से अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि उपर्युक्त वर्गों में गीतों के अतिव्यापन का दोष आ जाता है और वर्गीकरण की वैज्ञानिकता समाप्त हो जाती है ।"[3]

1- राजस्थानी लोकगीत लेखक प0 सूर्यकरण पारिक सम्वत् 1999, और पृ0 22

2- भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा0 कृष्णदेव उपाध्याय 1960 पृ0 151

3- कन्नौजी लोक साहित्य लेखक डा0 सन्तराम अनिल 1975 पृ0 48-49

यों तो लोकगीतों के वर्गीकरण की अनेक प्रणाली हो सकती है परन्तु उनमें से चार को प्रमुखता दी जा सकती है ।[1] वे इस प्रकार है :-

1- रस के आधार पर ।

2- रागों के आधार पर ।

3- कथातन्तु के आधार पर । मुक्तक और कथात्मक

4- आकार की अनुकूलता के आधार पर

डा० सत्येन्द्र, डा० शंकर लाल यादव, डा० मोहन लाल बाबुलकर, डा० कृष्ण लाल हंस, डा० त्रैलोक्यनारायण लाल, डा० चिन्तामणि आदि अनेक विद्वानों ने विभिन्न आधारों को दृष्टि में रखकर अलग अलग वर्ग निर्धारित किये परन्तु इन सबके द्वारा निर्दिष्ट वर्गीकरण किसी न किसी रूप में लोक जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित है चाहे गीत संस्कार या ऋतु या व्रत या जाति या किसी कार्य, या कृषि कार्य या देवी देवताओं किसी भी प्रकार हो उसका सम्बन्ध लोकजीवन से होता है । चूंकि लोक गीत लोक का, लोक के द्वारा, लोक के लिए होता है अतएव उसके वर्गीकरण का मूलाधार भी लोकजीवन होता है । उसमें भाषा और बोली का विशेष स्थान भी होता है ।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए कनौजी लोक गीतों का निम्नलिखित वर्गीकरण कर रहे हैं जिसमें सभी तत्वों का समावेश हो जाता है ।

कनौजी लोक गीतों का वर्गीकरण

- संस्कार गीत
  - जन्म
  - विवाह
  - मृत्यु
- कृषि गीत
- देवी देवताओं व्रत त्योहारों के गीत
- ऋतु गीतें
- क्रिया गीत
  - नृत्य, अनुभूति तथा एवम् संवाद प्रधान
- बाल गीत
- धर्म नैतिक सम्बन्धी गीत
- अन्य गीत

1- कनौजी लोक साहित्य लेखक सन्त राम अनिल 1975, पृ० 49

1- संस्कार गीत :-

संस्कार से अभिप्राय: शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के दैहिक, मानसिक और बौद्धिक परिष्कार के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों से है, जिनसे वह समाजपूर्ण विकसित हो बन सके । इनमें अनेक आरम्भिक विचार, धार्मिक विधी-विधान उनके सहवर्ती नियम तथा अनुष्ठान भी समाविष्ट है जिनका उद्देश्य केवल औपचारिक दैहिक शौच होकर संस्कार्य व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार, शुद्धि और पूर्णता भी है ।[1]

संस्कारों से मनुष्य के व्यक्तित्व का और विकास होता है । यह संस्कार इस प्रकार व्यवस्थित किये गये हैं कि जीवन के आरम्भ से ही व्यक्ति अनेक प्रभाव में आ जाता है, उसको अनुशासित जीवन बिताना जरूरी हो जाता है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि संस्कारों में अनेक ऐसी विधियाँ है जिनकी उपयोगिता केवल विश्वास अथवा श्रद्धा पर ही आधारित है । लेकिन संस्कारों के मूल में निहित सांस्कृतिक उद्देश्य के माध्यम से व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव को कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता । भले ही किसी वैज्ञानिक व्यवस्थित योजना में उनकी गणना या सिद्धि ना हो सके ।[2]"

संस्कारों की संख्या के विषय में स्मृतिकारों में मतभेद है । डा० गौतम ने 40 [चालीस], वैखानस ने 18 [अठारह], अंगिरा ने 25 [पच्चीस], व्यास ने 16 [सोलह], पाराशर व वाराह ने 13-13

1- हिन्दू संस्कार लेखक राजबली पाण्डेय पृ0 19
2- हिन्दू संस्कार लेखक राजबली पाण्डेय पृ0 26

[तैरस - तैरस] ए अवतारायन नै ।। [कारख] को बनाते है । सर्वाधिक लोक प्रिय सोलह [16] है जो परम्परागत मान लिए गये है । वे सोलह संस्कार है - गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तो नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूड़ाकरण, कर्ण-वेधन, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि ।[1]

अपने सुदूर काल से ही संस्कार जीवन की आवश्यकतानुसार परिवर्तित किये जाते रहे हैं । स्थानीय आवश्यकतानुसार भी इनमें परिवर्तन हुआ है । प्रत्येक परिवार अपनी अपनी आवश्यकतानुसार इनका पालन करता है । बहुत से संस्कारों का आजकल प्रचलन नहीं रहा है । यहाँ के लोक गीतों की परम्परा में भी जन्म, विवाह एवं मृत्यु संस्कारों का वर्णन मिलता है । मुंडन संस्कार की प्रथा भी यहाँ की कहीं कहीं पर है ।

भारतीय धर्म शास्त्रीयों की षोडश संस्कारों की जो व्याख्या की है उसमें पुत्र जन्म, मुंडन, मृत्यु संस्कार के अतिरिक्त यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कारों में कोई न कोई गीत गाये जाते हैं । इनमें मृत्यु संस्कार के अवसर पर गीतों की संख्या बहुत कम होती है । विवाह एवं जन्म आदि संस्कारों पर स्त्रियाँ अपने मधुर कंठों से गीत गाकर अपने हृदय का उल्लास और आनन्द की अनुभूति प्रकट करती हैं ।

जहाँ इन संस्कारों के गीतों में उल्लास और प्रसन्नता की भावना बिखेरे रहती है और इनमें रस की प्रधानता जिसमें शृंगार रस का पुट प्रचुर मात्रा में दृष्टिगोचर होता है पाया जाता है । वहाँ मृत्यु गीतों में विषाद की अमिट रेखा रहती है । प्रायः इनमें वियोग की प्रचुरता का समावेश होता है ।

अब कुछ संस्कार परक गीतों का विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है ।-

---

1- हिन्दू संस्कार लेखक राजबली पाण्डे पृ0 33

2-

1- <u>जन्म संस्कार के गीत :-</u> स्त्री पुरुष के जीवन की सार्थकता भी पुत्रोत्पत्ति में ही मानी गई है । सन्तानोत्पत्ति करने वाली स्त्री को महाभाग्यशालिनी कहा गया है :-

> प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृह दीप्तयः ।" 1
> स्त्रियः श्रियश्चगेहेषु न विशेषो स्ति कश्चन ।।

पुत्र प्राप्ति को भारतीय समाज व्यवस्था में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है । पुत्र प्राप्ति के लिए विवाहिता नवयुवतियाँ तरह तरह की मनौतियाँ मनाती हैं । सामाजिक स्तर के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति पुत्र जन्म के आनन्द को प्रकट करने के लिए नृत्य गान आदि का आयोजन करते हैं । आदि कवि वाल्मीकि ने राम जन्म के अवसर पर गन्धर्वों द्वारा गाने और अप्सराओं द्वारा नाचने का वर्णन किया है :-

> जगुः कलं च गन्धर्वाः, ननृतुश्चाप्सरो गणाः
> देव दुन्दुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिश्च खात्पतत् ।।" 2

महाकवि कालीदास ने रघु के जन्मोत्सव में महाराज दिलीप के आनन्द का वर्णन करते हुए उनके महल में वेश्याओं के नृत्य करने तथा मंगलगान करने का उल्लेख किया है :-

> सुखश्रवाः मंगलतूर्यनिस्वनाः
> प्रमोद नृत्यैः सहवारयोषिताम् ।
> न केवल सद्मनि मागधीपतेः
> पथि व्यजृम्भन्त दिवौकसामपि ।" 3

यहाँ के लोक गीतों की परम्परा में पुत्र जन्म के गीतों का विशेष महत्व है । पुत्र जन्म के अवसर पर हर्ष-प्रकर्ष मानव जीवन की प्रकृति है ।

1- मनुस्मृति ।

2- रामायण - बाल्मीकि ।

3- रघुवंश कालिदास 3/19

पुत्र जन्म से लेकर 5,7,9, या 11 दिन पर्यन्त पुत्रोत्सव के गीत गाये जाते हैं। देश के अन्य प्रदेशों की तरह यहाँ भी कन्या को शुभ एवम् स्वागत का नहीं माना जाता। इस मान्यता के मूल में मनोवैज्ञानिक कारण तो भी रहे हैं परन्तु सामाजिक एवम् आर्थिक सुरक्षा की भावना भी अत्यन्त प्रबल रही है। परन्तु आज की सामाजिक व्यवस्था से उस समय की व्यवस्था भिन्न थी।

यहाँ कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं जिनसे पुत्री एवम् पुत्र जन्म का अन्तर और मान्यता स्पष्ट हो जाती है।

जिस दिन लाडो तेरा जनम होया था
होई ए मावस की रात।
नौ लख दिवले लाडो बाल धरे थे
तौ भी घोर अंधेरी रात।

और पुत्र जन्म पर :-

जिस दिन तेरा जनम होया था
होई ए सौरज की रात।
एक अकेला दिवला हे लाला चास धरा था
जगमग जगमग रात।

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि कन्या के जन्म होने पर अनेक दीपकों की रोशनी भी अन्धकारमयी नजर आती है परन्तु पुत्र के जन्म पर एक दीपक की रोशनी भी चारों तरफ उजियारा ही उजियारा कर देती है।

संस्कृत कवि पंच तन्त्राकार ने भी कन्या की उत्पत्ति को

कष्ट एवम् चिन्तादायक बतलाया है :-

पुत्रीति जाता महती ही चिन्ता,
कस्मै प्रदेयेति महान वितर्क ,
दत्वा सुखं प्राप्स्यति वान वेति,
कन्या-पितृत्वं खलु नाम कष्टम् ।" 1

जन्म संस्कार की रीतियों को निभाने का कोई भी उल्लास कन्या के जन्म पर नहीं पाया जाता । यदि कोई परिवार करता भी है तो आन्तरिक दुःख से क्योंकि लड़कों को तो बोझ समझा जाता है - अनावश्यक । वातावरण का अनुभव स्वयं कन्या के शब्दों में :-

म्हारे जन्म में आले ठेकर,
भाई के में थाली ।
बुड्ढा भी रोवै बुढ़िया भी रोवै,
रोए आली पाली ।।" 2

अतः पुत्रोत्पत्ति को आधार मानकर ही जन्म संस्कार पद्धति की व्याख्या की जा रही है । गर्भवती स्त्री को भिन्न 2 मासों में भिन्न 2 प्रकार की वस्तुओं की इच्छा होती है । इनमें संयोग श्रृंगार का वर्णन अधिक रहता है इसमें स्त्री पुरुष की रीति क्रीड़ा, गर्भिणी की शरीर यष्टि, प्रसव पीड़ा, दोहद, धाय को बुलाने और पुत्र जन्म की चर्चा का उल्लेख होता है । गर्भिणी स्त्री को प्रायः विभिन्न स्वादों वाली वस्तु खाने की इच्छा होती है ।

गर्भवती औरत की तुलना में बांझ स्त्री अपनी आन्तरिक पीड़ा की अग्नि में सुलगती रहती है । उसकी दुख की पीड़ा असीमित होती है ।

1- मित्रभेद कथा |5| श्लोक 222

2- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य डा० शंकर लाल यादव 1960 पृ0 127

बाँझ स्त्री को हमारे समाज में बड़ी दैन्यि व दयनीय स्थिती रहती है। उसे उस वृक्ष की भाँति समझा जाता है जिसके नजदीक आने पर पक्षीन पखेरू सलीन प्रभाव पड़ता है :-

रहो रहो बाँझड़ली[1] दूर रहियो
तेरी ए तेरी लागसी म्हारे पर छाँ[2]
रहो रहो तूँ कुलखणी[3] गरब का बोल
हम घरों ए हम भाई भतीजा वाळो[4]
भाई ए भतीजा तेरी भाए सपूती
तेरे ए तेरे हिवड़े[5] बाळण दो बळै

उसकी इच्छा ऐसी रहती है कि कोई उसकी अंगुली पकड़ कर चले और उसके साथ खेले और वह अपने पुत्र पर अपना सारा वात्सल्य उँडेल दे और समाज उसे प्रसन्नता से स्वीकार करे। पुत्र कामना की तस्वीर एक गीत के माध्यम से बड़ी ही मार्मिक बन पड़ी है :-

म्हाँरे म्हारा राजीड़ा[6] जी सहराँ मैं चालो
है कोई जी है कोई बालक पकड़ै आंगळी जी
बोलो ऐ धन मूरख गवार
बिन जाया[7] कैं पकड़ै आंगळी जी
तिरया बोल्यार[8] बांझड़ली है सोभै[9]
ना कोई जी ना कोई बालक खेलै आंगणै जी

1- बाँझ । 2- ~~शोभा देता है~~ निकट होने से । 3- कुलक्षणी सी स्त्री ।

4- भाई भतीजों वाली । 5- हृदय में अग्नि जलती है ।

6- मेरे राजा । 7- बिन उत्पन्न हुए । 8- लोपर पीता हुआ ।
9- शोभा देता है ।

ओजणा :- यहाँ गर्भिणी की इच्छाओं को "ओजणा" की संज्ञा प्रदान की गई है। इन्हें "दोहद" भी कहा जाता है। इन परिस्थितियों में गर्भिणी को विभिन्न वस्तुएँ खाने की कामना करती है जैसे - मूंग, बेर, चने, कैराकर, कबोला, नीम्बू आदि खाद्य पदार्थ। गर्भिणी अपनी रुचि के पदार्थों को अपने पारिवारिक जनों से आग्रह करती है :-

कहियो सुसरा जी ने मेरा मन खट्टे बेरां ने,
पैठ बैठे बैठक बैठे, दुकान बेच ल्या दे,
मेरा मन खट्टे बेरां ने।
मेरे पेट में नरवर गढ़ निचली में, काला काला मोटी२ कलियाँ
छोला सुरमा, बेर की बेर कुहारे,
मेरा मन खट्टे बेरां ने।
कहियो जेठ जी से मेरा मन खट्टे बेरां ने,
घोड़ा बेचे हाथी बेचे, बेच बेच ल्या दे,
मेरा मन खट्टे बेरां ने।
मेरे पेट में नरवरगढ़ में, काला काला, मोटी मोटी कलियाँ,
छोला सुरमा, बेर की बेर कुहारे,
मेरा मन खट्टे बेरां ने।
कहियो देवर जी से, मेरा मन खट्टे बेरां ने
बस्ता बेचे, पट्टी बेचे, पोथी बेच ल्या दे,
मेरा मन खट्टे बेरां ने।
मेरे पेट में, नरवरगढ़ में ....
कहियो राजा जी से, मेरा मन खट्टे बेरां ने
ओकन बेचे सोकत बेचे, कुलिया बेच ल्या दे,
मेरा मन खट्टे बेरां ने।
मेरे पेट में नरवरगढ़ में ....

पत्नी की रुचि की व्याख्या गृहस्थ के सामाजिक जीवन में कितनी स्वाभाविक बन पड़ी है उसमें देवरानियों, जेठानियों के ताने, उनकी जलन पति द्वारा गर्भिणी की प्रताड़ना आदि सम्मिलित है। देवर द्वारा उसे कुएं में गेरने के लिए उकसाना आदि का चित्र स्वाभाविक बन पड़ा है :-

मेरा भंवर ने भेजी निशानी एक ताला एक छूरी
मेरा दिल मांगे हरी हरी कली सास दिल मांगे हरि 2 कली
ताला सों मेरा घर रखवाला, छूरी कनारे कली ** मेरा दिल
जब उन कलियां ने धीरण बैठी, सास निगोड़ी जली ** मेरा दिल
जब उन कलियां ने जोखन बैठी, दुरानी जिठानी जली ** मेरा दिल
सैयां के घर आला आया खुब दड़ादड़ दई **** मेरा दिल
दुरानी जेठानी ताने मारे फिर भी खायी लो कली *** मेरा दिल
छोटा देवर म्हूँ उठ बोल्या देल कुआं को लगी *** मेरा दिल
मार कूट कुआं में गेरी बालम ने सौं लई कली *** मेरा दिल

गर्भवती स्त्री की अधिकांश रुचि बेरों में रहती है। बेरों के प्रति उसकी रुचि और आग्रह का स्वाभाविक चित्रण इन लोक गीतों में इस प्रकार बन पड़ा है :-[1]

म्ने भावें कराले के बेर खटे हैं बेर मेरा मन बेरां ने।
म्ने सुसरा छाल्या री सेज नें तो तो खोपड़ा आया जिलाय
कराले के बाग में।
म्ने जेठ छाल्या री सेज ने तो तो खोड़ा आया जिलाय
कराले के बाग में।
म्ने देवर छाल्या री सेज तो तो कुलिया आया जिलाय
कराले के बाग में।[2]
म्ने बन्धा छाल्या री सेज ने तो तो गोरी आया जिलाय
कराले के बाग में।
म्ने भावे कराले के बेर खटे हैं बेर मेरा मन बेरां ने।

1- रुचि लगना।
2- प्रियतम (पति)।

निम्नलिखित लोक गीत में गर्भिणी की भिन्न भिन्न मास की रुचियों, उत्कण्ठाओं एवम् कामनाओं का स्वाभाविक तथा मार्मिक चित्रण हुआ है । इसमें भिन्न भिन्न मासों में दूध दही, नीम्बू, बेर, लड्डू, गुन्द, फली आदि वस्तुओं की कामना का सुन्दर चित्रण है :-

जी पहला मास जै लागिया दूध दही मन जाय,
मेरे जीजा मैं अम्मा नी दियार ।
दूजा मास जै लागिया मेरा निम्बुआँ मैं मन जाय,
मेरे जीजा मैं अम्मा नी दियार ।
तीजा मास जै लागिया, मेरा बेरां मैं मन जाय,
मेरे जीजा मैं अम्मा नी दियार ।
चौथा मास जै लागिया, मेरा लड्डुआँ मैं मन जाय,
मेरे जीजा मैं अम्मा नी दियार ।
पाँचवा मास जै लागिया मेरा खीर पूड़ै मैं मन जाय,
मेरे जीजा मैं अम्मा नी दियार ।
छठा मास जै लागिया मेरा गुंद गिरीमन भाय,
मेरे जीजा मैं अम्मा नी दियार ।
सातवाँ मास जै लागिया मेरा फलियाँ मैं मन जाय,
मेरा जीजा मैं अम्मा नी दियार ।
आठवाँ मास जै लागिया मेरा भाजी मैं मन जाय,
मेरे जीजां मैं अम्मा नी दियार ।
नौवाँ मास जै लागिया मेरा होलू स्वाद सुहाय,
मेरे जीजा मैं अम्मा नी दियार ।[2]

1- भूले हुए जो ।

2- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव 1960 पृ० 127

प्रसव पीड़ा :- जच्चा की हलवे की तीव्र इच्छा होती है । बेचारी जिस किसी प्रकार आटा, घी, मिठा, चूल्हा आदि देवरानी, जेठानी आदि से प्राप्त कर लेती है । हलवा बनाकर तैयार हुआ ही था कि बेचारी को एन वक्त पर प्रसूति पीड़ा ने आ दबाया । जच्चा की विवशता देखिए:-

कोई कोई अगीठी कढ़ाई ना देय मेरा दिल हाले ने ।
जैसे तैसे मने लई कढ़ाई, सासू जी आटा ना देय,
मेरा दिल हाले ने ।
जैसे तैसे मने आटा लिया जिठानी मीठा ना देय,
मेरा दिल हाले ने ।
जैसे तैसे मने मिठा लिया दोराणी घी ना देय,
मेरा दिल हाले ने ।
जैसे तैसे मने घी लिया ननदल चूल्हा ना देय,
मेरा दिल हाले ने ।
जैसे तैसे मने हलवा बनाया ओबरियाँ[1] जाने ना देय,
मेरा दिल हाले ने ।

प्रथम प्रसव के वक्त स्त्रियों पीड़ा का अनुभव बहुत कटु एवं तीखा होता है । पीड़ा के साथ चिन्ता बनी रहती है । चिन्ता एवं कष्ट का मिश्रित स्पष्टिकरण :-

कुक्कड़ 2 बोले पीड कलोकले कोई जागेगी
जागेगी सास म्हारी नणद म्हारी जागेगी

पति उसके प्रसव पीड़ा में कोई मदद नहीं करता और झूठी सहानुभूति भी नहीं दिखाता । खाने को पंजीरी मांगता है तब पत्नि द्वारा

1- होने वाला बच्चा ।

तथ्यों की पुनरावृत्ति :-

मैरै उठै थी पीड़ तन्नै भावै थी पंजीरी
मैरै उठै थी पीड़ तन्नै आवै थी नींद

उस कष्ट के समय उसका देवर ही उसकी सहायता करता है। दाई को बुलाकर लाता है। सास एवं ननद तो छोड़कर बैठ जाती हैं ताना देती हैं। सहानुभूति एवं सहायता करने के बदले में देवर साहब इनाम की प्राप्ति का वचन भी पाता है :-

सास ननदैरी छोर बन्धाती,
छोटा देवर दाई नै बुलाती।
छोटे देवर नै बाजूबन्द दिवा दूं,
जो देवर दाई नै ल्याती ।

<u>पुत्र जन्म</u> :- पुत्र जन्म की सूचना मिलते ही कांसी की थाली या कहीं कहीं कांसी का कचौला भी बजाया जाता है :-

जिस वख्त तेरा जन्म हुआ थाली बाजी टनन-टन ।
देवता मग्न होया थाली की आवाज सुण सुण ।।

ज्यों ही थाली के बजने की आवाज आसपास पहुंच जाती है। पुत्र के घरवालों को बधाई की शुरुआत हो जाती है। बधावे गाये जाते हैं। पुत्रोत्पत्ति की रात को "जिस दिन लाला तेरा जन्म होया था, सोने ए सौरम की रात" कहा जाता है। घर के बाहर नीम की हरी टहनियाँ टांग दी जाती हैं। छोछक के समय जो पति अपनी पत्नी को घर के कुएँ

झूठे मैं गैर गया था उसे अब पछतावा होताहै। बच्चा पैदा होने से पहले दोनों में वाद-विवाद होता था। पतिदेव ने लड़की पैदा करने पर पत्नी के ठां भी करने की पूर्व चेतावनी दी थी। परमात्मा ने पुत्र देकर पत्नी की लाज रख ली उसके ठां भी होने बच गये अन्यथा उसे बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता :-

हे जीवन्दन रूड़ कटाय के एक जमड़ पलीज़ा पड़ा
मेरे[2] जामा मैं अन्तर हो दिया।
गोरी के धम उमलेगी धोकड़ी ध्यारे काट ल्याणी नाक कान
मेरे जामा मैं अन्तर हो दिया।
कोए नौ के दस मासियां कोए आज पड़ा री मन्द लाल
मेरे जामा मैं अन्तर हो दिया।

साथ को साथ जब पति महोदय पंजीरी मांगता है तो किस प्रकार उसे दिये हुए तानों का सबक को नब्ज पहचान कर उत्तर देती है और अपनी समझदारी का परिचय देती है :-

कौण[3] घड़ी कढ़ाईयां कौण घड़े चिमन्या ?
मीठी लागै पंजीरियां।
ठठेरा घड़ी कढ़ाईयां, लोहार घड़े चिमन्या
मीठी लागै पंजीरियां।
कौण करै कढ़ाईयां, कौण देवै चिमन्या ?
मीठी लागै पंजीरियां।
सासु करै कढ़ाईयां, ननद देवै चिमन्या।
मीठी लागै पंजीरियां।
कौण खागी पंजीरियां, कौण चाटे होठ ?
मीठी लागै पंजीरियां।
जच्चा खागी पंजीरियां, बालम चाटे होठ।
मीठी लागै पंजीरियां।
तू तो पीवै हुक्का, मैं लागी था धक्का,
ठोस्सा खावै पंजीरियां।
मीठी लागै पंजीरियां।

पुत्रोत्पत्ति पर गाये जाने वालों में हनुमान जी का निम्न गीत बहुत ही प्रसिद्ध है । इसमें हनुमान जी की उत्पत्ति, माता का नाम, आकर विराजमान होने की प्रार्थना, उनके प्रिय वस्त्र, पुत्रोत्पत्ति दातृत्व का वर्णन, विपत्ति में रक्षा की प्रार्थना सुन्दर ढंग से वर्णित है :-

किधर ते आये अर्जुन पाण्डे किधर ते आये हनुमान ?
हनुमान पियारे ! थे बल कहाँ है समाय ।
आगम ते आये अर्जुन पाण्डे पच्छम ते आये हनुमान
थे किन जाये अर्जुन पाण्डे? थे किन जाये हनुमान ?
कुन्ती ने जाये अर्जुन पाण्डे, अंजनी ने जाये हनुमान ।
कित उतरैंगे अर्जुन पाण्डे ? कित उतरैंगे हनुमान ?
मन्दर उतरे अर्जुन पाण्डे मन्दिर में उतरे हनुमान ।
कित बैठैंगे अर्जुन पाण्डे, कित बैठैंगे हनुमान ?
चन्दन चौकी अर्जुन पाण्डे , लाल पिलंग हनुमान ।
के पहरैंगे अर्जुन पाण्डे ? के पहरैंगे हनुमान ?

धोला बिस्तर अर्जुन पाण्डे, लाल लंगोटा हनुमान ।
के जीमैंगे अर्जुन पाण्डे? के जीमैंगे हनुमान ?
बूरा चावल अर्जुन पाण्डे, सवा मलीदा हनुमान ।
कद सुमरैंगे अर्जुन पाण्डे ? कद सुमरैंगे हनुमान ?
दुख में सुमरें अर्जुन पाण्डे, भीड़ पड़ी में हनुमान ।
या किन तोड़ी लाल पिलंगियाँ ? या किन तोड़ा गढ़ लंक ?
कैसे कारज राजा रामचन्दर के सारे ।
कैसे म्हारे .... के सारे ।[1]

इसके अतिरिक्त कुलदेवता आदि देवताओं के गीतों का भी रिवाज है । इन्हें स्यावड़ू के गीत, दाई, बिहाई तथा होलू के गीतों के नाम से पुकारा जाता है । मेला तथा बच्चे के सम्बन्धी गीत भी गाये जाते हैं ।

1- यहाँ दादा, ताऊ, पिता आदि के नाम लिये जाते हैं ।

न्हाणवार :- बच्चा होने के तीसरे दिन जच्चा को स्नान कराया जाता है। इस रस्म को "न्हाणवार" कहा जाता है। प्रातःकाल घर के द्वार पर भूमिया या भूमि पर "सतिया" मांडे जाते हैं। आस-पड़ौस की औरतें उस स्थान पर अनाज की ढेरी (जिसे बैरा घालने या भूने की रस्म कहते हैं) बनाते हैं। स्नानोपरान्त जच्चा को उसकी परिक्रमा कराई जाती है। इस अवधि में जच्चा का देवर बच्चे के पास खाट पर बैठता है और स्नान कराने का नेग लेता है। "भाभी ने बेट्टा जन्मे लाड्डू" वाली कहावत यहीं साकार हो उठती है :-

सास घाल्यूं नाई, नणद घाल्यूं बाबल,
जेठाजी घाल्यूं अग्गा लाल*** जेठाणी मेरी गौरल री
सास गावे गितियां नणद धरे सतिया,
जेठाणी ने ओबरा मेरा लाल**** जेठाणी मेरी गौरल री

स्यावड़ (-गीत :- बच्चा होने और नामकरण होने तक का समय स्यावड़ का कहलाता है। धुलिका धूम अर्थात् जच्चा की कमरे के दरवाजे पर ठीकरा या किसी मिट्टी के बर्तन में अग्नि प्रज्वलित रखी जाती है ताकि हानिकारक प्रभावों से नवजात शिशु की रक्षा हो सके। स्यावड़ के दिनों बिल्ली का आना बड़ा खतरनाक एवं अशुभ माना जाता है। हालरे-जिकड़ी, लोरी आदि के इन गीतों में पुत्र कामना का, मां की खुशी तथा आनन्द आदि की भावना का समावेश दिखाई देता है। राम कृष्ण जन्म, मथुरा जन्म तथा पुत्र जन्म आदि के गीत भी गाये जाते हैं :-

जन्मे राम रमैणी अवध में
रानी कौशल्या ने राम पूत जाय
दशरथ के दो बैया अवध में :*** जन्मे राम
रानी कौशल्या ने साड़ी छुटाई
दशरथ ने दिये मोती अवध में*** जन्मे राम
रानी कौशल्या ने कुछ लुटाई
दशरथ ने दिये धन्य अवध में*** जन्मे राम

1• वह ।

इसी तरह वन में लव कुश जन्मे आदि गीतों का वर्णन भी मिलता है ।

<u>नेग चार के गीत</u> :- पुत्रोत्पत्ति के पीछे विभिन्न प्रकार की रस्में निभाई जाती हैं । उनके साथ 2 नेगों का भण्डारा भी खुल जाता है । नाई ब्राह्मण एवं दाई के नेगों के अतिरिक्त सास, देवर, देवरानी, जेठाणी आदि के नेग होते हैं क्योंकि :-

जेठाणीआवै पलंग बिछावै
दोराणी आवै दीवा जलावै
सासू म्हारी आवै गिलियाँ गावै
उनका भी नेग चहावै ।

सास गीत गाती है, जेठाणी पलंग बिछाने का दोराणी पर्दा लगाने का कार्य करती है तो उनको नेग भी चाहिए। पुत्र जन्म की खुशी है मोले पर। क्योंकि दादा एवं दादी जी का प्यारा पोता हुआ है - चाचा, चाची, ताऊ, ताई का प्रिय भतीजा बेचारी सबको उनको नेग देने का आग्रह करती है :-

सासू म्हारी आवै खिचड़ा खवाई[1] मांगी दे दो नै उनका ही नेग
जी म्हारै भोले राजा कान्धा[2] ले पकै राजा कूदे[3] ले हलैराजा
जिठाणी म्हारी आवै पिलंग बिछाई मांगी दे दो नौलखावी नेग
जी म्हारै भोले राजा....
नणदल म्हारी आवै चूची धुलाई मांगी दे दो उनका ही नेग
जी म्हारै भोले राजा .....
फूआ म्हारी आवै सथिया धराई मांगी दे दो उनका ही नेग
जी म्हारै भोले राजा....
देवराणी म्हारी आवै पंखा झुलाई मांगी देदो उनका ही नेग
जी म्हारै भोले राजा......

1- खाना ।
2- सरकण्डा ।
3- कूदों से ।

सभी अपना अपना नेग प्राप्त करती हैं । ननदल के बारे में वह चाहती है :-

जच्चा सभी को कहती है
सुणोरी म्हारी पाड़ पड़ौसण
सुणोरी म्हारी दौर जिठाणी
नणदो ने कोए मत कहियो
आज म्हारे होलरियो[1] हुए

उसे अपने जेवर जाने का भय रहता है कहीं ननदल को खबर मिली और वह फौरन भावज के पास पहुँची । काफी प्रयत्न के बावजूद भी आखिर ननदी को भतीजा होने की खबर मिल ही जाती है । सर्वप्रथम तो वह जच्चा की चूची धोने की रस्म अदा करती है - ताकि उसका प्रिय भतीजा अपनी माँ के स्तनों से दूध पी सके । जच्चा के स्तनों को धोकर अपना नेग माँगती है । तो भावज के शब्दों को देखिए :-

मांग मेरी नणदो, मांगण का दिन आज,
टूम[2] मत मांगिए, सोन्ने की नाथ ।

आखिर अपने मन की इच्छा ननद के समक्ष प्रस्तुत करती है मगर ननदल कहाँ मानने वाली थी । वह भाभी के नाराज होने पर भी अपना नेग लेकर ही मानती है । भाई अन्त में "हो कोन कहूया सोई ल्यो" भाई अपनी बहिन की नाराजगी नहीं चाहता । वह नेग के रूप में हार दे देती है । नेग के उपरान्त बहिन अपने भाई की खानदानी वृद्धि हेतु कामना करती है :-

रै तेरी कूखी बधियो बेल,
वीर । मन्ने राजी कर दई रै ।

1- पुत्र ।
2 - गहने ।

छठी :- छठी छठे रोज लड़के के जन्म पर मनाई जाती है । सारी रात गीत भजन आदि का कार्यक्रम चलता रहता है हर परिवार इस दिन अपनी श्रद्धा एवम् आर्थिक स्तरानुसार खर्च करता है और विश्वास किया जाता है कि इस रात के माता [बेह माता] बच्चे की किस्मत लिखने आती है । देवी की आराधना की जाती है जिससे वह प्रसन्न होकर जच्चा एवं बच्चे दोनों को आशीर्वाद देती है :-

छड़ए[1] कगड़ै[2] सती राणी नीसरी[3] भर गोबर की गैल ।
गोबर छिड़का भोली राणी भोपड़ी[4] धरती मैं तुरा लिया[5] ।
छड़ए कगड़ै सती राणी निसरी भर गीहूँआं[6] की गैल ।
गीहूं छिड़का भोली राणी भोपड़ी, धरती मैं राख्यो ए बीज ।
छड़ए कगड़ै सती राणी निसरी भर लोटा जल नीर ।
गड़वा तो छिड़कै भोपड़ी, धरती सुहाए रिझाव[7] ।

बच्चे को नहलाकर उसे कठला, ताबीज, सोने या चान्दी के ठूक अर्ध चन्द्रमा, कुरता, टोपी आदि पहनाए जाते हैं और आंखों मैं काजल डाली जाती है इसी दिन प्रसूति गृह के दरवाजे पर सतिए मांडे जाते हैं । जच्चा को खाने के लिए चावल दाल का भोजन दिया जाता है ।

नाम करण तथा होम पूजन :- प्रायः दसवें दिन स्यावड़ अथवा सूतक से समाप्ति के लिए लड़के के नामाकरण के लिए पंडित से होम करवाया जाता है । दसोटन करने वाले इसी दिन अपने परिवार एवं कुटम्ब कबीले के लोगों को खाने पर आमन्त्रित करते हैं ।

रत जगा :- रत जगे मैं सारी रात जागरण होता है । औरतें गीत गाती हैं और प्रसन्नतापूर्वक हाथों मैं मेंहदी रचाती हैं । उनकी प्रसन्नता उन्हीं गीतों से

1- वचन ।
2- मुहल्ला ।
3- निकली ।
4- टोकरा।
5- भूमि पर गिर पड़ी । 6- गेहूं । 7- छिड़काव ।

दृष्टिगोचर होती है । जच्चा के गीत भी गाये जाते है :-

जच्चा नहाले न्हाण सौरैसै
पकुराईया खाट बिछाले ।

बच्चे सम्बन्धित गीत जिसमें टोपी, कठला, लंगड़ी, झुनझुना आदि अनेक गीतों का वर्णन होता है । कठला पुत्र के गले में पहनाने का आभूषण होता है। कुल की प्रथानुसार सिकिनत, ताबिज आदि भी पहनाये जाते है । शिशु अपनी माँ से नाना वस्तुओं की तुतली भाषा में माँग करता है तो माँ का स्वाभाविक एवम् सरसतापूर्ण उत्तर का वर्णन देखिए:-

होलर कहे री अम्मा मुझे कठला घड़ा दे
चल सुनारे की दुकान रे लला तुझे कठला घड़ा दूँ
होलर कहे री अम्मा मुझे झुनझुना मंगा दे
चल बिसाती की दुकान रे लला तुझे झुनझुना मंगा दूँ
होलर कहे री अम्मा मुझे टोपी सिला दे
चल दर्जी की दुकान रे लला तुझे टोपी सिलादूँ
एक टोपी, दूजा अंगा तीजी अचनी सिलादूँ

<u>जच्चा पूजन</u> :- जच्चा द्वारा पुत्रोत्पत्ति के 11, 15, 21, 27, या 31वें दिन मुहूर्त दिखाकर "जच्चापूजन" की रस्म पूरी की जाती है । जच्चा के सिर पर लोटी रखके दालान की परिक्रमा करवाने के पश्चात, कूएँ पर लेजाकर उसको धोक मरवाई जाती है । जच्चा को कूएँ की धोक मरवाने को "कुआँ धोकना" कहा जाता है । इस अवसर पर जच्चा की झोली में भिगा हुआ बाजराडाला जाता है तथा उसके सिर पर पिला ओढ़ना होता है । यह "पिला" जच्चा की माँ के यहाँ से आताहै ।"पीला" की महत्ता के कारण ही इसे "पीला गीत"

कहते है । पुत्रोत्पत्ति के गीतों में यह सर्वाधिक प्रचलित एवं लोक प्रिय है :-

ओढ़ सुहागण राणी पूछड़ो चाल्यो न नागर पान
मोलैरी मूंगी सापूतड़ी जिण्यै रे लिखायग म्हारा नाम
पीला तो ओढ म्हारी जच्चा सरवर चाली जी
सारा सहर सराही पति प्यारा जी पीला रंगा दुपीजी ।
पीला ओढ तो म्हारी जच्चा पाणी नै चाली जी
पीला ओढ म्हारी जच्चा कूआ पै बैठी जी
कोई सास नणद मुख मोड़या गाढ़ा मारू जी ** पीला रंगा दो जी
आँख ना खोले मुख से ना बोलै जी
कोई जच्चा का राजन कुमला हुलै गाढ़ा मारू जी ** पीला रंगा
दिल्ली सहर से लाखवा बैद बुला दो जी
कोई जच्चा का जीव की कमाई गाढ़ा मारू जी ** पीला रंगादो जी
आखयां की खोलै जच्चा मुख से भी बोलै जी
कोई जच्चा का राजन खिला हुलै गाढ़ा मारू जी ** पीलारंगा दो
तै मन लूं थी म्हारा सुख सौहन का जी
कोई प्यारी हूं कि दुप्यारी गाढ़ा मारू जी * पीला रंगा दो
पुत्र जामती जच्चा प्यारी भी लागी जी
कोई सेज चढन्ती अधिक प्यारी जी गाढ़ा मारू जी **पीला रंगादो
पीला तो ओढ म्हारी जच्चा पाणी नै चाली जी
पीला तो ओढ म्हारी जच्चा कूंए पै बैठी जी
कोई सास नणद मुख मोड़या गाढ़ा मारू जी *** पीला रंगा दो

इस प्रकार इस गीत की लय और सरसता मधुरता उत्पन्न कर देती है ।

जलवा पूजन :- चालीस दिन पश्चात बच्चे की माँ (जच्चा) सिर पर बड़ा टोकनी लेकर और उस पर कुश की आंटी रख कर कुएं पर जाती है। कुएं के पाड़े पर चावल की सात ढेरी करके हाथ जोड़ करके अपने बर्तनों में कुछ पानी लेकर घर लौटती है। पुत्रोत्पत्ति के पश्चात जच्चा के कार्य करने की यह आरम्भिक कड़ी है।

जच्चा का भोजन : आर्थिक स्थितिनुसार यहाँ जच्चा के लिए कुछ घी की अजवायन और फिर भोजन खाने के लिए बनाया जाता है। जच्चा को दो समय सुबह शाम दूध तथा हलवा आदि भी खिलाया जाता है। अजवायन का पौष्टिक आहार सिर्फ अन्न से पूर्व तथा भोजन पुत्रोत्पत्ति पश्चात। दस दिन पश्चात एक समय चावल की खिचड़ी अथवा दाल फुलका खिलाया जाता है। फिर शनैः शनैः पौष्टिक आहार दिया जाता है।

छूछक (छूछा) :- यह रस्म जच्चा के पीहर वालों को पूरी करनी पड़ती है "छूछक" में वस्त्र, आभूषण (कड़ला, बाजू, पातड़ी, हिंसला आदि) बच्चे के झुगला, टोपीआदि और कुछ धन भी दिया जाता है। जच्चाका आग्रह अपने घरवालों से की उन्हें अपनी सामाजिक छाप बनाये रखने के लिए ऐसा क्या लाना चाहिए :-

है री मा भैरली पीहर में
ऐ बीरा छूछक ल्याइयो रे
सासू का ल्याइयो बीरा
सुसरा का ल्याईयो रे
चुन्नड़ी बरस मंगाईयो रे " " चीटली भेज रही

इस गीत में आगे वह अपने पीहर वालों से देवर, जेठ, जेठानी, ननंद और अपने पति आदि के लिए भी वस्तुएं मंगाने के लिए आग्रह करती है :-

जेठाणी कल्याईयो रे बीरां
देवर से मोंसिआर
नंद ननदी भी ल्याइयो रे'' चीठड़ी भेज रही
रे मेरे चंचल बीरा
बलमाँ का साफा हरया रंगाइयो रे
चंचल का भी ल्याइयो रे''' चिट्ठी भेज रही

पलणा :- बच्चा ज्यों 2 बड़ा होता जाता है । माता को माता बाप मां उसे पलने में डालकर अपना कार्य करने लगती है :-

तेरी दादी झुलावै तूं झूल ललणा
मेरा छोटा सा झूले अटल पलणां
तेरा बाबा पड़ावे अटल पलणां
मेरा छोटा सा झूले अटल पलणा
तेरा ताऊ पड़ावे अटल पलणा
तेरी ताई झुलावै तूं झूल ललणा

मुंडन संस्कार :- पुत्र जन्म के पहले वर्ष, तीसरे वर्ष या पांचवे वर्ष बच्चे के बाल उतरवाये जाते हैं दूसरे और चौथे वर्ष शुभ नहीं माना जाता । मुझांवा बाटू या अन्य स्थानों पर अपने अपने कुल देवता के सामने बाल उतरवाये जाते हैं अपने 2 रिश्तेदारों में लड्डू भी बांटे जाते हैं। मूल नक्षत्र में होने वाले बच्चे के लिए शुद्धिकरण हेतु 27 विभिन्न कुओं का जल कंकर, पत्तों आदि इकट्ठे करके मां बाप चौकी पर बैठ कर हवन करवायाजाता है और 27 ब्राह्मण जिमाये जाते हैं ताकि इस मूल नक्षत्रों का कुप्रभाव कम हो सके ।

11• <u>विवाह संस्कार के गीत :-</u> यह शब्द व "वह" धातु के घञ् प्रत्यय लगाने से बना है। इसका अर्थ होता है "पति आपस में वहन करना" आपस में मिलकर विधिपूर्वक जीवन वहन करना। सामान्यतः विवाह शब्द का तात्पर्य स्त्री पुरूष के उस सम्बन्ध से है जो मैथुन के साथ ही समाप्त नहीं हो जाता अपितु अपितु उसके बाद भी जबतक उत्पन्न शिशु स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के योग्य नहीं हो जाता, विद्यमान रहता है।

विवाह संस्कार भारतीय संस्कृति में ही नही बल्कि संसार की सभी संस्कृतियों में एक महत्वपूर्ण स्थानरखता है। पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए विवाह करना अनिवार्य है। धार्मिक कर्त्तव्यों को निभाने के लिए यह भी आवश्यक है। प्राचीन हिन्दू वर्णाश्रम में गृहस्थाश्रम अनिवार्य अंग माना जाता रहा है और इस कारण विवाह भी अनिवार्य था। स्मृतियों में गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठतम आश्रम कहा जाता है।

हिन्दू विवाह एक प्रकार का धार्मिक संस्कार है और यह बिना धार्मिक कृत्यों के सम्पन्न नहीं किया जा सकता है। इसे पुरोहित द्वारा अग्नि को साक्षी मान कर सम्पन्न कराया जाता है। बिना किसी संस्कार के किया विवाह अवैध माना जाता है।

विवाह का अवसर समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण था। इसी कारण कई विधी विधान प्रथाएं तथा रितीयाँ प्रचलित हो गई। विवाह समुदाय में हर्ष एवं आनन्द की घटना होती है है। अतः लोग भोज, संगीत, एवम् नृत्य आयोजित कर प्रसन्न होते है। प्रत्येक अवसर पर का गीत अत्यन्त मार्मिक एवम् अनूठा होता है।

क्रम

यहाँ के लोक गीतों में विवाह का इतना उल्लास होता है कि विवाह से कई दिन पहले ही गीत गाने आरम्भ कर दिये जाते हैं। विवाह के दिन से और विवाह सम्बन्धी सभी अनुष्ठान सम्पन्न होने तक लोकगीतों का क्रम नियमित रूप से चलता रहता है। इन दिनों अवसरानुकूल गीतों के अतिरिक्त सामान्यतः श्रृंगारिक गीतों की प्रधानता रहती है। यहाँ विशिष्ट अनुष्ठानों का विवरण और तत्सम्बन्धी गीतों का वर्णन किया जा रहा है। इस प्रदेश में प्रचलित रीति-रिवाजों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि विवाह सम्बन्धी अधिक लोक गीतों का महत्व भी दर्शाया जा सके।

पहले सगाई करवाने का कार्य ब्राह्मण या नाई किया करते थे। परन्तु समय के परिवर्तन के कारण अब यह जिम्मेवारी सन्तान के माता पिता पर आ गई है। इसीलिए वे चाहते हैं कि जोड़ी जचने वाली हो अर्थात "अनजोड़ा हो पर बदजोड़ा ना हो" इस उक्ति को चरितार्थ करने का प्रयत्न करता है। वैसे भी समाज आजकल "चट मंगनी पट शादी" वाला हो गया है।

दिन पर दिन परिस्थितियाँ बदलती जा रही हैं। मान्यताएँ बदल रही हैं—रीति-रिवाज जटिल हुए, जटिल से सरल हुए और जो अब इस क्षेत्र में रीति-रिवाज चल रहे हैं, उनका विवरण दिया जा रहा है :-

<u>लगन पत्रिका :-</u> विवाह का शुभारम्भ लग्न द्वारा होता है जो "लग्न पत्रिका" कहलाती है। यह लग्न पत्रिका लड़की वालों द्वारा लिखवाकर लड़के वालों के यहाँ भेजी जाती है। इसकी अवधि 21, 15 या 11 दिन होती थी जो अब घटकर 9 या 7 दिन रह गई है। लग्न पत्रिका के समय कन्या द्वारा गणेश जी का मण्डप पूजन आदि संस्कार सम्पन्न करवाए जाते हैं। इसी पत्रिका में विवाह का मुहूर्त होता है।

नेग के अनुसार राशि तथा नारीयल डालकर फिर पत्रिका को लड़के वालों के घर पहुंचा दिया जाता है।तेल, चावल तथा मिठाई आदि भी भेजी जाती है । लड़के द्वारा भी इन्हीं संस्कारों की पुनरावृत्ति की जाती है और''' पत्रिका ग्रहण । तत् पश्चात बिरादरी के लोगों में मिठाई वितरण - यह एक प्रकार से सांकेतिक रूप में शादी का न्योता होता है ।

इसी दिन से दोनों पक्षों [वर तथा वधू] के मुखिया को शादी की चिन्ता आरम्भ हो जाती है :-

म्हारे घर राजकंवड़ी[1] का ब्याह,
चिन्ता में नींद ना आवती जी महाराज ।

इस तरह एवम् भावनापूर्ण वातावरण में राजकुंवरी का राज कंवड़ी हो जाना स्वाभाविक जान पड़ता है क्योंकि बाप दादा के मैले कपड़ों से कन्या के विवाह की चिन्ता का साफ आभास होता है । कन्या के पीले हाथ करने के पश्चात् ही वे चिन्ता मुक्त होंगे :-

हे म्हारे तो मैले कपड़े उस दिन उजले,[2]
तू रे साजन घर जावोगी ।

अर्थात उनके चिन्तारूपी मैले कपड़े तो कन्या के पति के घर जाने पर ही साफ एवम् स्वच्छ [चिन्तामुक्त] होंगे । क्योंकि यहाँ तो लड़की जरा सी बड़ी होने पर "चीला" लगती हुई दिखाई देती है- "हे म्हारो हलाहल लागी चोलणा" "हलाहल" "चोलणा" लगती है ।

1· सामान्य कन्या राजकुंवरी [राजकुमारी हो] बन गई और तत्पश्चात ने "र" को "ल" में बदल दिया है और अत्यन्त स्नेह प्रकट करने के लिए "ड़ी" प्रत्यय का सहारा ले लिया गया है और "राजकुंवरी" "राजकंवड़ी" बन गई ।

2· कपड़े स्वच्छ होने पर भी उन्हें गन्दे या मैले 2 ही लगते हैं मैले है इसलिए कि उनके यहाँ कन्या ने जन्म जो ले लिया है ।

बाबा एवम् बालक से उसका सार्थक विश्वास अनुभव देखिए:-

बाबा देस जान्दा परदेस जाइए,
म्हारी जोड़ी का वर ढूंढ़िए ।
हो दादा एक अर्ज सुण मेरी जाइए जो,
मेरा लाला कना मत टोरिए ।
मेरे मारे सोली ओल मेरी नाक,
कर्ड ते तेरी मे कुछ जानो ।

दादा जी को अपनी प्यारी पोती की चिन्ता लगी रहती कि वे देस विदेश मे घूमकर उसकी जोड़ी का वर गुलाब से कुछ जैसा वर ढूंढ लाए:-

गुलाब जैसा, एक जैसे ए बाढे भी ए लाडली,
ढूंढ्या है कुछ गुलाब का ।

"लग्न पत्रिका" के समय गाया जाने वाला लोकगीत जिसकी कोमल भावना सहज ही अपनी छाप अंकित कर डालती है :-

कड़िया ते आया नालेर, कड़िया ते आया री म्हारे जैस लो का टीकना,
बीर बधावो राज ।
आंगण ते आया नालेर, आंगणे आया री म्हारे जैस लो का टीकना,
बीर बधा । बीरा ।
कड़ियां रे उतारां नालेर, कड़ियां रे उतारा म्हारे जैस लो का टीकना,
बीर बधा बीरा ।
गोद उतारा नालेर, माथे उतारा री म्हारे जैस लो का टीकना,
बीर बधा बीरा ।

बने की ससुराल ऐसी मिली है जिसमें उसे 7 साले और सालियों की संख्या अधिक है ऐसा वर्णन "टीक्ला" नामक गीत में है :-

लड़िया रे जी सोहै नालेर, लड़िया रे ले सोहै म्हारे छैल बने रा टिक्लार,
जीर बना जी राज[1] ।
बोलो में सो हे नालेर, माथे री सोहै म्हारे छैल बने रा टिक्ला,
जीर बनो जी राज ।
है धम तै फूल अनार, किसा पर पाया री म्हारे छैल बने ने सासिरा,
जीर बना जी राज ।
सात साल्यां सुकराड़, सालो री अधिप री म्हारे छैल बने रे ससुराल,
जीर बना जी राज ।

"हलराड़ो"[2] की चोकसा मगहली हुई नजर आती है और वर की सालियों को भरमार अमिक गीतों में बड़ी ही रोचक अभि को प्रस्तुत करती है ।

बड़ी वालो में यह भी गीत गाये जाते है जिन्हें "बन्ड़ो" कहा जाता है । इनकी संख्या इस वक्त गाये जाने की परिस्थात होती है । बन्ड़ो का एक नमूना:-

लाडू जी की प्यारी बनी जल भरने को जाती है ।
आँखों में तो बना देखे जल भरने को जाती है ।
तोड़ दे दस्सो ने तोड़ दे हूड़े ने,
जल भरने को जाती है ।

---

1. "जोर" कुआ जी रे है । रे वर्ण लड़ होते हुए भी लोकगीत की कोमल भावना के साथ "जोर" बनकर प्रयुक्त हुआ है । "जीर बना जी राज" जीरे बना जीराज का संक्षिप्त रूप हुआ ।
2. हलराड़ो किलना विविध शब्द है । अति 7 अत 7 हन -हलाल्ला प्यारी वधू लाड़ली -"हलराड़ो" या "हथलेवा" । यो "हलराड़ो" "चोकसा [illegible] विशेष जो शादी के वक्त बनाया जाता है ।

इसी प्रकार इस अवसर पर कन्या को उसके बचपन के समय से अब तक घर की स्मृतियां लोक गीतों के माध्यम से दोहराई जाती है जिस घर में उसने जन्म लिया उसकी व्याख्या की जाती है :-

मेरे दादा के चार ओबरे[1], चारों ही जगमग हो रहे
पहले में ए लाडो जन्म लिया था, दूजे में खेल खिलाइयां
तीजे में ए लाडो जन्म लिया था, चौथे में ब्याह रचाइयां
मेरे दादा की ऊँची हवेली, जिसमें चार चौबारियां

भात - न्योंदणा :- विवाह की तिथि की निश्चितता और लग्न की सम्पन्नता के उपरान्त विवाह के विभिन्न "टेहलों" में गति आ जाती है। बहिन अपनी सुविधानुसार विवाह से पूर्व अपने मां बाप के घर "भात न्योन्दने" (भात का निमन्त्रण) देने के लिए जाती है। साथ अपने पतिदेव या किसी पुत्र को ले जाती है। प्राय: गुड़ की भेली, नारियल या गोले, खाण्ड के कूजे, माल आदि सामग्री लेकर जाती है। समय परिवर्तन तथा व्यस्तता के कारण आजकल इस सामग्री के साथ लड्डू भी ले जाने का रिवाज चल पड़ा है। गुड़ आस-पड़ोस में गीतों के पश्चात वितरित कर दिया जाता है। भात के गीतों के साथ 2 "बनड़ा" या "बनड़ी" (जैसी भी स्थिति हो) के श्रृंगारिक गीतों की भरमार रहती है :-

कोरी हड़ियाँ बोरा बोली बन्दी न्योन्दन आई भातई[2]
मेरे घर आइयो मेरी मां का जाया मेरे घर विरद
उपाइयो[3]....... ।

पत्नी अपने पति को कहती है यदि तेरे पास भात भरने का ढंग नहीं है तो :-

मेरी कण्ठी ले जा भर आ भात बाहण मेर।
मेरे कुंवर ने ले जा भात में न्योन्दण आई मेरे,
मेरी पायल, गलसरी, माला, पलरी ले जा,
भरो जा आज भात बाहण के ।

---

1. कमरे ।
2. भाती - बहिन के भाई ।
3. यश बढ़ाइए ।

भात निमन्त्रण की रस्म पूरी करके बहिन-बहनोई अगले दिन या समयाभाव हो तो उसी दिन वापस आ जाते हैं ।-

<u>हलदात-बान-तेल :-</u> यह रस्म प्रायः शादी से 7 या 5 दिन पूर्व शुरू होती है । बान की संख्या लड़की की अपेक्षा लड़के की अधिक होती है । समयाभाव के कारण "बानों" को एक दिन में (सुबह-शाम) दो करके सम्पूर्ण कर लिया जाता है । यदि लड़की के बानों की संख्या लड़के के अनुपात में अधिक हो तो उस संख्या को अनुपातिक दृष्टि से कम कर दिया जाता है क्योंकि "बान" लड़की के क्रमशः लड़के से कम ही करवाये जाने शुभ माने जाते हैं । इनकी संख्याओं का विवरण भी "लग्न पत्रिका" में ही होता है । "बान" बैठाने पर तेल चढ़ाया जाता है । "बान" बैठाने से पूर्व दिवस "हलदात" की रस्म सम्पन्न की जाती है जिसका तात्पर्य है- हल्दी चढ़ाना । सम्भवतः "हाथ पीले" करना मुहावरे का प्रचलन यहीं से हुआ हो । एक बानगी प्रस्तुत है :-

कहिए री उस खाती के छोहरे नै, खाती के छोहरे नै चौकी तो ल्यावै
म्हारे लाल नै ।
चौकी तै ल्यावे म्हारे....[1] नै तैल .... हर मथुरा जी के लाल ने ।
कहिए उस कुम्हार के नै कुल्हड़ा[2] तो ल्यावे म्हारे लाल नै ।
कुल्हड़ा तो ल्यावे म्हारे लाल नै.....तेल नै हर मथुरा जी के लाल नै ।
कहिए री उस चमार के नै जूते तै ल्यावे म्हारे लाल नै ।
कहिए री उस दर्जी के नै कपड़े तै ल्यावे म्हारे लाल नै ।
कहिए री म्हारे समधी नै बन्नी तै ल्यावे म्हारे लाल नै ।
बन्नी तै ल्यावे म्हारे लाल नै.....तेल नै हरमथुरा जी के तैल नै,
म्हारे लाल नै ।

---

1. कोई नाम ।
2. मिट्टी का बर्तन ।

"बन्दाल" मैं सात सुहागनें लड़के या कन्या की झोली मैं जौ तथा नमक डालती है । तीन बार दो-दो, और चौथी बार एक स्त्री जो प्रायः लड़के की माँ होती है । यदि लड़के या कन्या की माँ विधवा हो तो उसके स्थान पर यह कार्य बड़ी भाभी, उसके भी न होने पर किसी नजदीक सुहागिन रिश्तेदार से यह कार्य सम्पन्न करवाया जाता है । यह सातों सुहागिनें "तेल चढ़ाने" और "तेल उतारने" के कार्य के लिए निश्चित् की जाती है । जौ, मेंहदी की गांठें भी होती है जिन्हें पिसकर उबटना [बटणा] तैयार किया जाता है जिसका इस्तेमाल किया जाता है - बान के समय । "बटणे" का चित्रण.... उसकी बनावट तथा कर्मों की व्याख्या का दृश्य इस प्रकार है :-

काहे कटोरी मैं बटणा काहे कटोरी मैं तेल ?
ऐत लाडूडे बैठया बटणा[1] ।
सोन्ने कटोरी मैं बटणा रूपा कटोरी मैं तेल ।
ऐत लाडूडे बैठया बटणा ।
आ मेरी दादी देख ले आ मेरी ताई देख ले ।
तुम देखया सुख होय,
ऐत लाडूडे बैठया बटणा ।
आ मेरी बूआ देख ले आ मेरी चाची देख ले ।
तम्है[2] घणे[3] रंग चाव[4],
ऐत लाडूडे बैठया बटणा ।

---

1. उबटना । 2. तुम्हें ।
3. ज्यादा । 4. प्रसन्नता ।

"बटणें" का प्रयोग समयानुसार किया है अथवा यह परम्परानुसार किया जाता है। बान के समय का दृश्य जब भाभी अपने लाडले देवर को "सीठणें" देती है :-

छोटा देवर म्हारा लाडला ऐ बान बिठाणा होगा
ऐ सखी सहेली कट्ठी हो लो तेल चढ़ाणा होगा
दरजी के न मेरे दामण पै सलमा[1] गुजार दिये
गली 2 पै मेरे पति के कोटडे तार दिये
लिलगार के ने मेरे दामण पै सलमा गुजार दिये
कूं 2 पै मेरे पति के कोटडे तार दिये
सुनारे के ने मेरी टूमा[2] पै सलमा गुजार दिये
का नग पै मेरे पति के कोटडा तार दिये
छोटा देवर म्हारा लाडला ऐ बान बिठाणा होगा
ऐ सखी सहेलीकट्ठी हो लो तेल चढ़ाणा होगा

<u>रत जगा :-</u> रात्रि जागरण बान के से पहली रात को होता है। सारी रात जागरण करके इसके मंगलाचरण स्वरूप देवी देवताओं के गीतों से आरम्भ किये जाते हैं फिर जो "बन्डे" या "बनड़ी" जैसी स्थिति हो उसी के अनुसार श्रृंगारिक गीतों की प्रधानता का बोल बाला रहता है। "रतजगे" का एक गीत:-

के रे करेंगे हरे बाजियां, कैसे करेंगे सुनार ?" आज बधावा मेरे राम का
कुंडी ते मारे हरे बाजियां, सूना[3] ते घड़े सुनार ।" आज बधावा मेरे राम का
के रे चुगै कोयले, के रे चुगै मोर ? "' आज बधावा मेरे राम का
दूध पिवेंगी कोयले, पाणी पिवेंगे मोर ।" आज बधावा मेरे राम का
किस रूत बोले कोयले, किस रूत बोले मोर ?" आज बधावा मेरे राम का
साम्मण बोलेंगी कोयले, भादों बोलेंगे मोर ।" आज बधावा मेरे राम का

---

1. फूल । 2. जेवर । 3. सोना ।

रात्रि के अन्तिम पहर में किसी कमरे देव स्थापना निमित्त थापा लगाया जाता है। फिर थापा रखकर मेहन्दा गाकर बहुएँ और लड़कियाँ हाथों में मेहन्दी लगाती हैं। लड़का या कन्या मेहन्दी और घी का थापा लगाते हैं। मेहन्दी की सुन्दरता मांगलिक लोकगीत में सहज ही मिलती है :-

मेहन्दा बिसाहवा[1] में गई थी, कोई छोटा देवर मेरे साथ ।
मेहन्दा पीसण में गई थी, कोई छोटी ननदल मेरे साथ ।
मेहन्दा लावण[2] में गई थी, कोई छोटा देवर मेरे साथ ।
देवर के लगाऊँ आंगली[3], आपणे सारे हाथ, मेहन्दा भरूया जी हाथ,
कोई छोटा देवर मेरे साथ ।

यह था मेहन्दी के माध्यम से देवर के प्रति प्यार की भावना से भरा अनन्त्य लिए कुछ सीठ्णा। मोहल्ले की औरतों द्वारा विवाह वाले घर की औरतों को भी सीठ्णे दिये जाते हैं क्योंकि वे सारी रात जागरण करती हैं और घ र वालियाँ सो जाती हैं :- [5]

का कूबड़ो[4] लाऊँ है.........   ....
तेरी बाहयाँ में तो आली भरडू ने सीप रहया
गल लाय रहिया[6]
हम रातूँ रात जागरयाँ ।

इस प्रकार गीतों के माध्यम से व्यंग्यात्मक तौर से भी मज़ाक, ठेस लगाते होते रह सकते हैं क्योंकि शादी को कुछ समय ख़ुशी का पर्व होता है ।

---

1. खरीदने ।
2. लगाने ।
3. अँगुली ।
4. कमगादड़ ।
5. यहाँ पर घर के बच्चों के नाम दिये जाते हैं ।
6. वर से सम्बन्धित ।

<u>तेल चढ़ाना</u> :- तेल चढ़ाने के समय वर या वधू (विवाहकुमारी) को आरी या पट्टे पर बैठा कर मन्दिर के वक्त निश्चित की गई औरतें भी तेल, उबटन, मेहन्दी और दही से भरी सराइयों में से दूर्वादल द्वारा बारी बारी तेल चढ़ाती हैं और उस समय इस गीत की ध्वनि सहसा ही कर्ण-पटलों से टकरा जाती है :-

काहे कटोरी में बटणा काहे कटोरी में तेल
हलवाड़ु बैठ्या बटणा तो मेरी ताई देल है
तम बैठया सुख होए, ऐ हलवाड़ु बैठया बटणा
मेरे कढ़े बढ़ भी चढ़े, नूर चढ़े भारे ला
है हलवाड़ु बैठ्या बटणा ।

(ताई के स्थान पर माँ, बुआ, बहिन आदि का नाम लेकर इस गीत को बढ़ाया जाता है)। तेल चढ़ाते वक्त पैरों घुटनों, कन्धों और सिर माथे को स्पर्श करने की प्रक्रिया करती है। इसके पश्चात् सात औरतें द्वारा वर या वधू के माथे पर दही लगाई जाती है :-

दही घाल्लो हे दही घाल्लो[1] ।
सात सुहागण दही घाल्लो ।।

तत्पश्चात उबटन आदि लगाके नायन की सहायता से स्नान कराया जाता है। उबटने से वर या वधू के सौन्दर्य में वृद्धि होती है। नायन की अनुपस्थिति में स्नान करवाने का कार्य भाभी करती है। इस प्रकार का गीत :-

म्हारे आंगन चौकड़[2] हे,
किन डोल्या पाणी ?
म्हारा हलवाड़ु न्हाया है,
उन डोल्या पाणी ।

---

1. घालना या डालना ।
2. चौक ।

और उस उबटने के पानी के चौकू में बहू ने फूकर अपनी टाँग कुड़ाई और उसके उस हाल की उपमा बड़ी ही चैतोहारी बन पड़ी है :-

आई ......[1] की बहू टै पड़ी[2] है,
उसकी टाँग मचाणी ।
पड़ी ए पड़ी जवकारे है,
ज्यू दल्ली रानी ।
भौरो में तै लोवड़या है,
ज्यूँ सावन का पाणी ।
मौस्याँ[3] में तै लोवड़ी है,
ज्यू म्याम्मी बोटी ।
आहै बटोरी में बटणा ।

मजाक से परिपूर्ण देवर भाभी का हँस शोटूणा ।

__आरता__ :- स्नानोपरान्त [आरता] का "टैक्का" होता है । उसके श्रृंगार के उपादान पावों में राखड़ी हाथों में कंगना, गले में हंसली या सोने की जंजीर हाथ में लोहे की छन्टी [परन्तु इसका रिवाज बदलता जा रहा है]..... यह छड़ा विष्णु का प्रतिनिधि... वर । भगवान को चन्दन से चर्चित किया जाता है । वहाँ दुल्हे राजा को उबटने से जो "मरमट बोलणा" कहलाता है:-

मैं तन्नै बूझूँ म्हारा लाड़के बन्ड़ा,
तेरै मुख पै मरमट किन चिनया ?
म्हारे बीरा कै म्हारी भाभी जी चिना[6] दिया,
म्हारे मुख पै मरमट उन चिनाया ।
मैं तन्नै बूझूँ म्हारा लाडु बन्ड़ा,
तेरै नैणां सुरमा किन सारया[7] ?
तेरै बीरा कै तेरी भाभी जी चिनालिया,
म्हारे नैणां सुरमा उन सारदिया ।

---

1. किसी का नाम । 2. गिर पड़ी ।
3. भैंस । 4. गर्भवती ।
5. पूछना । 6. लगाती ।
7. [illegible] ।

वर का शृंगार करने पर भी भाभी छिनाल कहलाती है वर के हाथों में भी मेहन्दी रचाई जाती है। हाथों में सुरमा हाथों में मेहन्दी उसकी खूबसूरती उसकी शादी की चर्चा और इस शहर में इस प्रकार मची है :-

"मची है इस शादी की शहर में किसी शादी है ?
बन्ने के दादा से पूछो, बन्ने के ताऊ से पूछो,
उन्होंने इस तरह फरमाया मेरे पोते की शादी है।"

तब होता है आरता:-

एक हड्डियाए पीपल, सुख कलिए
डाली डाली भी पड़ी,
तेरे आरते को जा मेरी भाभू,
बड़ीए बहुी का आरता ।
तेरे हाथ लोटा गोद बीरा,
कर दे सुहागन आरता ।
तेरे हाथ कटोरा गोद भतीजा,
कर दे सुहागन आरता ।
तेरे हाथ लोटा गोद बेटा,
कर दे सुहागन आरता ।

तेरे आरते को जा मेरी भाभू,
बहू ए बहू का आरता ।

इसके पश्चात अर्घ दिया जाता है फिर थाने के सामने बैठा कर वर या कन्या की देवताओं की पूजा सम्पन्न कराके प्रसाद बाँट जाता है। फिर "बाने का" कार्यक्रम कुल-भाई बिरादरी में भी यह कार्य कराते। जो बान्ना देना है

---

1. लपड़ा ।

वर या वधू को कुछ उसके घर ले जाया जा जाता है, वह अपनी आर्थिक स्थिति अनुसार परिवार गणों को जिमाता है और संध्या को वर या वधू गीतों के साथ वापस घर आ जाता है :-

हूली हो ली उठ मेरो लाडू ।

बाखिड़ा घर आया ।

<u>बनवारा (बनवाड़ा)</u> :- वर या कन्या बनवाड़े -घी, खाण्ड , खीर, गुन्द आदि स्वादिष्ट भोजन खा के पुष्ट होते हैं । उबटन आदि से सौन्दर्य तथा पौष्टिक पदार्थों से शारीरिक पुष्टि एवं सुन्दरता में वृद्धि होती है - वास्तव में यह सब है विवाह से पूर्व की तैयारी :-

मैं तन्ने दूं मेरा लाडू बनवाड़ा,

तन्ने के के भोजन दोन्दूया ?

मैं तन्ने खवाऊं मेरी लाडू,

खीर, खाण्ड का भोजन दोन्दूया ?

<u>भात भरना</u> :- अपने बच्चे की शादी पर उसकी माता अपने पिहर भात न्योंद कर आई थी । अब उसके बाप भाई आदि अपनी आर्थिक स्थिती अनुसार अपने भान्जे या भान्जी के विवाह पर जो कुछ देते हैं वह "भात भरना" कहलाता है । सामान्यत: वर या की बारात रवाना होने से पूर्व भाती आते हैं । उनका स्वागत होता है। उनकी बहिन उनकी (अपने भाई, दादा, पिता, ताऊ आदि) की बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रही होती है क्योंकि उन्हीं भात भरने से उसकी इज्जत बढ़ेगी और उसके मायके की इज्जत भी बढ़ेगी ।

भात भरने की इन्तजार का समय समाप्त हुआ और अब वह अपने बाप, भाई आदि से भात भरने का आग्रह करती है :-

कद की देखूं थी बाट, भाई जाए सब ते पहलां न्योतिया[1] ।
बढ़े सो का लाई से बा[2]र, अपना रे कुंवर[3] पहलां न्योतिया ।
तेरो भावज ने ला दई बार, अपना रे कुंवर सजावती ।
दरनी ने ला दई बार, बढ़ी सिंगावती ।
कुनबे ने लाई से बार, तेरा है कसला बढ़ावती ॥
लेकिन लाई से बार, भाई जाए सबसे देहला न्योतिया ।
भाबू ने लाई से बार, तेरा चूड़ रंगावती ।
बाबल ने लाई से बार, तेरा है कसला बढ़ावती ।
लेकिन लाई से बार, भाई जाए सबसे पहलां न्योतिया ॥

औरतों में ईर्ष्या स्वतः रहती है । उसकी जेठाणी के कई भाई है और उसके एक । फिर जेठाणी के भाईयों की अपेक्षा उसके एक भाई का महत्त्व विशेष मानती है :-

मेरी जेठाणी के पांच भाई
मेरे तो मां का जाया एक है
वे तो पांच आए पचास लाए
मांगी तो लाए कैसे चुन्नड़ी ।
उल्टी तो दे दे कैसे चुन्दड़ी
वो तो एक आया लाख आया
रेशम को लाया कैसे चुन्नड़ी ।
भात भर के चालण लाग्या
ओढ दिखादे कैसे चुन्दड़ी ।

---

1. निमन्त्रित किया ।
2. देरी ।
3. पुत्र ।

इस अवसर पर सभी स्त्रियाँ मिलकर भात गाती हैं । गीत है "मिश्री से कुएँ" मेरी माँ का जाया जिस ते मैं ऊजली" स्नेहाप्लावित वातावरण पैदा करता है... भाई बहिन के प्यार की सरसता प्रदान करता है :-

कहाँ है तै आवें बाबल राजा, कहाँ है तै चाचा ताऊ,
कहाँ है तै मेरी माँ का जाया जिस तै मैं ऊजली[1] ।
ऊँटाँ आवे बाबल राजा, बहलाँ चाचा ताऊ,
हाथी की हौदें मेरी माँ का जाया, जिसतै मैं ऊजली ।

ताऊ, पिता जी, चाचा को कहाँ उतारा जाए जिससे वे सम्मानित[1] हों और मेरी भी कदर बढ़े :-

किस सी उतारूं बाबल राजा किस सी चाचा ताऊ ?
किस सी उतारूं माँ का जाया जिस तै मैं ऊजली ।
परसाँ[2] उतारूं बाबल राजा पोलीं[3] चाचा ताऊ
रंग रंग महलें मेरी का जाया जिस तै मैं ऊजली ।
के रज बसै बाबल राजा, के रज चाचा ताऊ ?
के रज मेरी माँ का जाया, जिस तै मैं ऊजली ।
मोहर असर्फी माँ का जाया जिसतै मैं ऊजली ।

भातियों के स्वागतार्थ गाये जाने वाले उपर्युक्त हृदय स्पर्शी मार्मिक गीतों में अपार भाई बहिन का प्यार फूट फूट पड़ता है । मांढ़ा ।

<u>मांढ़ा (मण्डप)</u> :- विवाह स्थल पर बांसों का अथवा बल्लियों की सहायता (किन्या पक्ष) से यहाँ मांढ़ा बनाया जाता है। उन पर आम, जैसे आदि के

---

1. सम्मानित ।
2. चौपाल ।
3. बैठक ।

पल्लै लौटे जाते है । जच्चा-रखनी को गाय के गोबर से लिपा जाता है इसका सारा खर्चा मामा वहन करता है । इसमें स्थानानुसार भिन्नता आ जाती है । इस अवसर पर प्रायः यह गीत गाया जाता है :-

सिरी राम बाढ़े पिछवाड़ियाँ,
लछमन रोप्या है थाम्ब,
मांढण्यूं सिरी राम का ।

दोनोंपक्षों वाले परिवार में "मैल का दिन भी मनाते है साथ वाल स्त्रियाँ "चाक" पूजने जाती है । गीत गाती जाती है । अधिक श्रृंगार गीत गाये जाते है :-

बाबू छोटे वाले ने गलियों में आके शोर किया,
बन्ने के दादा को लगाऊ भर भर थैले लाते है ।
बन्ने की दादी को कटोरी भर 2 देने आती है ।
बाबू छोटे वाले ने गलियों में आके शोर किया ।।

इस प्रकार चाक पूजने जाते वक्त एक अन्य श्रृंगारिक गीत भी गाया जाता है :-

बन्ने न्यावण[1] लाया न्यावण छूटी है,
दायें[2] म्हारे बालरियां ।
बन्ने बाबको लाई रस्सा छूटी है,
द दायें म्हारे बालरियाँ ।

औरतें कुम्हार के घर जाती है "मैली" के साथ ही एक कोने में पाँच मौल कच्चा एक दुकरे पर लगाए जाते है । और इन के साथ अथवा मैली की कला के साथ पाँच सराइया जिनमें मिठाई रखी जाती

---

1. गाय के पाँव में बाँधने की छोटी रस्सी ।
2. पति ।

है, कुछ लालसूत्र या मौली से बाँधकर टाँग दी जाती है । वरपक्ष के घर इस दिन जीमनवार की चहल पहल बनी रहती है ।

<u>घुड़ चढ़ी (निकासी) :-</u> घोड़े पर चढ़ने की रस्म वास्तव में "दुकाव" की रिहर्सल मात्र होती है । "घुड़- चढ़ी" से पूर्व तेल उतारने की रस्म उसी तरह निभाई जाती है जिस प्रकार तेल चढ़ाने की । यहाँ तेल पैर वधै का कार्य माथे से शुरू होकर पैरों पर खत्म होता है । तत्पश्चात् स्नान आरता की प्रक्रिया । तदुपरान्त नाना कपड़े पहनाता है । लड्डू आदि का पूजन भाभी द्वारा आँखों में काजल या सुरमा डाला जाता है ।

सेहरा बन्धी के पश्चात् माँ अपने पुत्र को "स्तन" देती है । घोड़ी सँवारकर दूल्हा घोड़ी पर सवार । घोड़ी के हाँठ फड़फड़ाते तो स्त्रियों का उल्लास- भरी स्वर "घोड़ी हौलाँ के मरकावे बन्ने ने भावसिखावे हो राम" आखिर चाल भी बन्ने को सिखानी ही :-

एक घोड़ी बजारे तैं आई, उसने बाबा ने राख
बुलाई होराम,
घोड़ी की चाल सवालड़ी[1] ।
घोड़ी हौलाँ के मरकावै, बन्ने ने चाल सिखावै होराम,
घोड़ी अंगिया के मटकावै[2], बाले बन्ने ने ऐंड सिखावै हो राम,
घोड़ी की चाल सवालड़ी ।
घोड़ी पायाँ के मटकावै, बाले बन्ने ने चाल सिखावै हो राम,
घोड़ी की चाल सवालड़ी ।

---

1. सवाई चाल ।
2. मटकाती है ।

दूसरी घोड़ी की सुन्दरता बेजोड़ है। "घुड़चढ़ी" के गीतों के स्वर गूंजते हैं :-

घोड़ी खोवे बाबा दरबार, बन्नेरी मेरे मन भावेगी ।
चिर[1] आवे थेहों[2] की दूब[3], बन्नेरी मेरे मन भावेगी ।
पी आवे बनड़ा वीर, बन्नेरी मेरे मन भावेगी ।
चढ़ आवे सजनी का है बन्द, बन्नेरी मेरे मन भावेगी ।
चढ़ आवे माईयां के है वीर, बन्नेरी मेरे मन भावेगी ।

अब घोड़ी चलने को तैयार है उसे बड़े घरों की मर्यादा का पूरा पूरा ध्यान है :-

तू तें चाल घोड़ी मेरे दादा के दरबार
मैं तो अभी बहू महाराज, मन्ने बड़े घरां की लाज ।
बन्ना जी के कुरा-नाल, घोड़ी फिरै चच्चां की चाल
तू तें चाल घोड़ीचाल मेरे दादा के दरबार
मैं तो बहू महाराज, मन्ने बड़े घरा की लाज ।

दूल्हा ज्यों ही घोड़ी पर बैठता है, उसका बहनोई घोड़ी की "बाग" पकड़ने की रस्म अदा करता है। वर का बाप अपने जमाई को "बाग" पकड़ाई का नेग देता है। घोड़ी चलती है और बहिन पीछे 2 राह पर अपने भाई पर तन्दुल बिखेरती चलती है। भाई के प्रति प्रत्येक विघ्न की झुक कामना करती हुई चलती है-बहिन। देव पूजाओर मन्दिर में भगवान से आशीर्वाद प्राप्त करके उसे किसी धर्मशाला या सामान्य स्थानपर ठहराया जाता है क्योंकि अब तो वह घर बहू लेकर ही आयेगा।

बारात का प्रस्थान :- बाराती "फलदे" के पास इकट्ठे हो जाते हैं जहां से

---

1. घर आती हैं।
2. पुराने समर के खण्डहर।
3. बढ़िया किस्म का घास।

बारात का प्रस्थान करना होता है । बारात प्रस्थान के समय गीतों का बाजार गरम रहता है :-

"ए मेरी नीली घुड़ पिलाये, सिन्धु हो लो बराती ।"

ज्यों ही स्त्रियाँ बेल चढ़ने के गीत गाने आरम्भ करती हैं तो तुरही बाजे के स्वर चारों ओर गूँजने लग जाते हैं । इसका स्थान शनैः शनैः बैण्ड-बाजे ग्रहण कर रहे हैं :-

मेरा बाबा रे बरजे बाजे बाजे रे बाजे,
धूप पड़े बरी तपे, ।

एक अन्य गीत इसी सम्बन्ध में इस प्रकार है :-

उतार फिरे बरी चरणाये, घोड़ा तहरे लेवे ।
घोड़ा ऊपर बोरणिमोरे, मारणियाँ की लार वे ।
बिन्दू बेटा ब्याहवण चढ़ चला, उतार फिरे इक ठौर वे ।

बारात के प्रस्थान के बाद विवाह की पूरा काम का केन्द्र कन्या पक्ष का घर होता है परन्तु इससे पूर्व वर पक्ष के घर बारात जाने वाली रात्रि को (आजकल तो बारात दिन में भी जाने लगी है तो दिन में) एक पक्ष का वर्णन किया जाता है।

<u>घोड़ा-घोड़ी (घोड़ियाँ) :-</u> बारात प्रस्थानोपरान्त वर पक्ष के घर में औरतों का मेला लगाता रहता सारी रात परन्तु आजकल दिन में भी, रहता है । इस दिन घोड़ा-घोड़ी का विशेष महत्व रहता है । इस अवसर पर औरतें दूल्हा-दूल्हन का स्वांग (रचती)।

अक्सर भाभी की रस्मों की पुनरावृत्ति करती हैं। गीत गाये जाते हैं यह हंसी मज़ाक से परिपूर्ण भाव होता है :-

देखो रे इस टूटलिए के भाग,
पराई जो[1] ले ले भाग ।
इस टूटलिए के हाथ ना पां,
पराई जो[2] ले ले भाग ।

बधावा :- "चौथी" के बाद वधू के आने का समाचार होता है तो उसके उपलक्ष में गीत गाये जाते हैं जो "बधाई या बधावा" कहलाता है। इसकी कम से कम संख्या पांच और अधिक इच्छानुसार :-

पांच पुरी बधावें संख्या,
ले दे रे दादी के गोत,
बधावा री म्हारे गीत भात ।

यहाँ अन्य सम्बन्धियों का नाम लेकर गीत दोहराया जाता है।

बारात अगवानी :- कन्या पक्ष के घर बारात की सूचना वर पक्ष का नाई देता है। कन्या पक्ष का नाई बारात के पहुँचने की खबर कन्या पक्ष के मुखिया एवम् परिवार को देता है। कन्या पक्ष की ओर से बारात का स्वागत किया जाता है। मीलनी की रस्म के बाद बारात किसी धर्मशाला, चौपाल अथवा किसी पंचायतीमकान में ठहराई जाती है। वहाँ बारातियों का खाने, पीने नहाने आदि सभी प्रकार की सुविधाओं का प्रबन्ध किया जाता है। कहीं2 यह स्थान "जनवासा" या "डांडवासा" भी कहलाता है और बारात "जनेत" और बाराती "जनेती" कहलाते हैं।

---

1. टूटी टांगों वाला ।
2. पत्नी ।

फेरे :-

ढुकाव के बाद बारात जनवासे में जाती है और लग्नानुसार वधू को उसके मामा उसे पूर्व की तरफ मुंह कराके मण्डप में लाता है। और उसे हवन कुण्ड के समीप बैठा देता है। शादी के जोड़े में लिपटी कन्या फेरों के बाद एक नयी जिन्दगी में प्रवेश करेगी। अतः इस अवसर पर औरतें गा उठती हैं :-

मढ छोड़ कमण बाहर आई, आगे मेरा नवी नानका अड़ रह्या[1]
मढ छोड़ कमण बाहर आई, आगे मेरा भाभी ताऊ अड़ रह्या
मढ छोड़ कमण बाहर आई, आगे मेरा बाबल राजा अड़ रह्या

इस गीत को अन्य सम्बन्धियों के नाम जोड़कर आगे भी बढ़ाया जाता है। वहीं वर एवम् वधू के वस्त्रों के छोर परस्पर बांधा है इसे "गठजोड़" कहते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि इन दोनों पहले अलग अलग थे अब एक ऐसे बन्धन में बन्ध गये हैं। अतः भावी जीवन में मिलकर कार्य करेंगे। यह "गठजोड़" वर के घर तक बन्धा रहता हैं। पुरोहित मन्त्रोच्चारण करके हवन करता है। वधू का दाहिना पैर पत्थर पर रखवाकर उसका पति प्रत्य पत्थर की तरह दृढ़ रहने का मन्त्र कहलाया जाता है। वर और वधू अग्नि की प्रदक्षिणा करते हैं। वर अपने दाहिने हाथ की ओर आगे बढ़ता है और कन्या उसके पीछे पीछे चलती है। कई बार तो वह इतनी तेज चल पड़ती है कि सखियां उसे बीच में ही टोक देती हैं :-

हौले हौले चाल म्हारी लाड़ो,
हंसगी सखि सभी सहेलिए।

इस प्रकार वेदी के चार उल्टे चक्कर वह काटता है फिर तीन सीधे

---

1. मार्च रोहतक।

चलकर दुल्हन चलती है और वर उसके पीछे पीछे चलता है । यह रस्म फेरों की रस्म कहलाती है । इस अवसर पर स्त्रियाँ गाती हैं :-

पहला फेरा लीजिए बाबा की प्यारी,
दूजा फेरा लीजिए ताऊ की प्यारी ,
तीजा फेरा लीजिए चाचा की प्यारी,
चौथा फेरा लीजिए काका की प्यारी,
पाँचवाँ फेरा लीजिए भाई की प्यारी,
छठा फेरा लीजिए अम्माँ की प्यारी,
सातवाँ फेरा लीजिए लाडो हुई ए पराई ।

सात फेरे हो गये और लाडो पराई हो गई । जो आजतक उसके लिए अजनबी थे वो उसके लिए अपने हो गये । दुल्हन के मन में अनूठी कल्पनाएँ जाग रही हैं । कभी 2 वह अजनबी में शंकित हो जाती है। तब स्त्रियाँ उसे हौसला प्रदान करने के लिए गाती हैं:-

तू क्यों लाडो अनमनी,
तेरे समरथ[1] बाबा जी साथ, रत्नागर चौंरी चढ़ी ।
तू क्यों लाडो अनमनी,
तेरे समरथ भाई जी साथ, रत्नागर चौंरी चढ़ी ।

इस गीत में आगे ताऊ, मामा आदि का नाम भी जोड़ा जा सकता है । इस वक्त के कुछ सीठने बड़े मनभावने हैं :-

"****[2] की माँ है पूरी अनाड़ी
****छोरा है ज्यादाँ लाडला
लेवण आया था एक टके की फूटी का भाड़ा" ।

---

1. सामर्थ्य ।
2. वर का घर ।

ढुकाव :- वैसे तो "ढुकाव" का समय संध्याकालीन होता है परन्तु आजकल दिन में भी यह रिवाज सम्पन्न होने लगा है। "ढुकाव" से पूर्व कन्या पक्ष वाले जनवासे में वर से गणेश आदि का पूजन करवाके, उसको तिलक करके ढुकाव के लिए वर पक्ष को निमन्त्रित करते हैं। फिर बारात सहित दूल्हा कन्या के घर सज, बाजे के साथ पहुंचता है। दरवाजे पर चौकी पर वर को खड़ा करके आरता उतारा जाता है - यह कन्या की बड़ी बहिन या भाभी करती है। "वार फेर" की रस्म अदा की जाती है। वर "तोरण" /मारमा/ के पर टहनी मारता है। गीतों में इस वक्त सीठनों की अधिकता रहती है। केवल जाए तो "सीठनें ही सीठनें" होते हैं :-

लड्डू पेड़ा लड्डू पेड़ा ले राखी मेरे दुल्हे आए
ढूंढर लड्डू मां ने मेरी दादी मेरे बाबा ने बुलाए

बारातियों के आने की खुशी की व्याख्या निम्न रहस्यमयी एवम् तरके करती हैं :-

जिस रात्री तुम आए जोतियों उस रात्री पै थी चोर
हो बेबां राँड के जी।
चोर सिंवारा के करे, थारी माँ ने लेग्या चीचोर
हो बेबा राँड के जी।
जिस रात्री तुम आए जोतियों उस रात्री पै थी सिंह
तुमने सोची गादड़ी, तुमने तुम्हें खाई थी सीख
हो बेबां राँड के जी।
जिस रात्री तुम आए जोतियों उस रात्री पै थी धूं
धूंविवारा के करे, थारा सिंह खया थी धूं
हो बेबां राँड के जी।

---

1. बन्दी औरत के।

जनेती भी ऐसी बातें सुनकर उन्हें घूर घूर कर अपने अपने कोणों के अन्दाज से निहारने लग जाते हैं तो औरतें उनके इन भावों का वर्णन भी नहले पे दहला के रूप में करती है :-

हे देख्यो बारातीयों म्हारे कान्हों
सीसा छिमक्दा थारे कान्हों
दिन छिप गया काले बादल में
थारी नजर म्हारे काजल में.....हे देख्यो
दिन छिप गया कोरी कुन्डी में
थारी नजर म्हारी कुन्डी में...   हे देख्यो
दिन छिपग्या लाल मीरे में
थारी नजर म्हारे डेरे में ...हे देख्यो

<u>सेहरा</u> :- आजकल सेहरा गायन का रिवाज भी काफी प्रचलित हो चुका है । सेहरे सम्बन्धी एक लोक गीत देखिए:-

भिर[1] कोन्हें यो बाग लगाइयाँ, कोन्हें[2] यो सींचा से पेड़
हे एक मालण गूंदा[3] सेहरा ।
भिर माली ने बाग लगाईया, मालण सींचा से पेड़
भिर एक गूंदा मालण सेहरा ।
भिर कोन्हें या डाल निवाइयाँ, कोन्हें तोड़् ये से फूल
भिर एक गूंदा मालण सेहरा ।
भिर माली ने ने डाल झुकाइयाँ, मालण ने तोड़े से फूल
भिर एक गूंदा मालण सेहरा ।
भिर कोन्हें ठौर बठाईया, कोन्हें यो गूंदा सेहरा
कोन्हें गूंदा मालण सेहरा ।
हे भिर रंगीन का हिरा ब्याहियाँ, भिर या मालण जो जाए
हे एक मालण गूंदा सेहरा ।

1- नारियों द्वारा प्रयुक्त आदरसूचक सम्बोधन ।
2- किसने । 3- गूँथा ।

हाल मैं आई जी मैं कांधे नातियां वां ढूंगी उजर आप मैं भी डालके का काम भी कर देती हैं वर के पिता को आंखों ज्याकसी हैं:-

तन तो लंबी दुबला धारी लोटी[1] ए मोटी
वा आप खावे मक्खन चुरमा[2] तन्ने सुखी ए रोटी
आप सोवे सेज पै तन्ने टूटी ए खटोली
आप पहरे घूमर घाघरा तन्नै फाटी हे लंगोटी
भर बाजार मैं जिसकी बहूं ग्वालन छोटी
संग मैं ताबी क्यूं कहवे था जिसकी ए छोटी
[3] हैं क्यूं कही रे था बेटी ए लोटी

वर आता जाकर हाथ धोने लगता है उस समय भी ओ गवारे सीटनें दिये जाते हैं:-

आठ घड़ी गई आठ घड़ी, बन्दू कराये बात घड़ी ।[4]
झाड़ी ए रांघड़ की फूल, आई लाल जी के मुख फूल ।
हाथ है मूल संवारे मूल को फेरा कबाड़ा मूल ।
इस के बीच आजात, दादी ने रेती त्याजात
मुहबारी की भरी परात बाबो व झाड़ी की बात

× × ×

लाल फिर वरखा बरसावे जी, झाड़ी के मूल मैं वो आई लाल न्हावे जी उबे[5] 2 कोरा कोरी कास बसावे जी, देखो म्हारा जीजा बंधा न्हावे जी । बंधा न्हावे अनबा न्हावे, हर जी की पीढ़ियां बाबा पास कराये जी ।

---

1. पतली ।
2. अधिक घी डाला हुआ ।
उसीकी का नाम
4. पेशाब । 5. इकट्ठा होकर ।

पंजाबी सिक्खि एक बाँके उल्लाले में किसी सेठानी की बहल को देखकर तमाशा देखने का सिलसिला ही मजेदार बन पड़ा है :-

भीतर बैठा सरबमती है सिर पाया पाता ।
"" " ही देखे है देख के ह्यबेदेख्या तमाशा ।।

सेठानियों की बहल को देखकर तमाशा देखा जाता है और वर की माँ को भी यही कहा जाता :-

"चलो की मारढ़ देखी फिरे
चढ़ूं तेल में सेठी तिरे ।"

साँझी की बुराई को याद देते हैं और उसका सीधारास्याद करते सीभारस्ती लेती हैं :-

आदकाँ[2] के लाम्बे झोड़े
दादा सोसर्की के जुड़ गये घोड़े "" बन्या ते दे परणा ।

कूढ़ाँ में आई मलाई
दादा हो सबकी की मर गई बुराई " " बन्या ते दे परणा ।
हाड़िया के लाम्बे मेर
दादा हो सबकी ते ब्याह दखाणि फेर "" बन्या ते दे परणा ।
कींकरा के लाम्बी करोली
सबकी की रिता गई ज्योली[3] " " बन्या ते दे परणा ।

<u>बारात का जीमणा :-</u> जब बाराती जीमते हैं अर्थात भोजन करते हैं इसे "जीमणवार" कहा जाता है । इस वक्त कन्या पक्ष की ओर से "सेठानियों" को अपने तरफ से

---

1. किसी का नाम ।
2. आक का फूल ।
3. सब्ज पेड़ ।

ये कन्या अपनी मात जोड़ो में यही पूछती :-

कोरी ढेट आए थी सई सौं के बीगम

कै तारे खिवर[2] आए बी

छाब वा चढ़े छप्पर वाग्ये ड़ांगर घर बड़ाये बी

* * * *

जोरा पड़्या में बाह हाथ जोड़ो वा बाह
ओच्छी जीवर ताम्बी सूत पिटे जोशी छती फूल
ताम्बी बिंदर बगत बीवा, तारे जोशी अवल खिवर बीवा[3]
आवी रोटी वांड बीवा, जोशी घर चढ़े रांड बीवा

कन्या दान :- फेरों के पश्चात अजीवा छुड़ाया जाता है । अजीवा छूटे समय कन्यादान पिता कन्यादान करता है । पिता की अनुपस्थिति में पितामह चाचा भी कर सकते हैं । कन्यादान करना बड़ा ही पुण्यकार्य है :-

सोन्या का दान अन्न वान्दी का दान,
अर कन्या का दान दुहैवा[4] हो राम ।
कन्या दान म्हारे बंदा राम देवा,
मैं भी छाती भारया भी राम ।

साथी (थथ) कहावणा :- फेरों के बाद ही बापे के सामने वर का मोड़ खुलता है । दूल्हा दुल्हन भी के सिये थीये भी वोक नारो हैं । वर का मूंह

---

1. संध्या ।
2. चिलना ।
3. बेगैर ।
4. दुर्लभ ।

मीठा करवाया जाता है । वर के जय * ।जवध। कहलाते जाते हैं । जिसके प्रतिफल में वर को नेग मिलता है । यह आर्थिक स्थितिनुसार हुआ करता है जय* के नमूने :-

1- थाली में थाली थाली में पीता
   दूसरा म्हारा रायजी हाथ म्हारी सीता

11- जन्म पलाईयां जन्म पलाईयां,
   जन्म पै धरी आंधी ।
   एक तो ब्याह वाले,
   दूसरी है दो बांधी ।।

मोड़ टापने की रस्म भी अदा की जाती है ।

कंवर <u>कलेवा, बांडा न्हाण आदि</u> :- यह रिवाज आजकल लोपता प्राप्त करता जा रहा है क्योंकि बारात एक रात से अधिक नहीं ठहरती । यह रिवाज तब अधिक लोकप्रिय था जब बारात दो तीन दिन ठहरती थी अब तो कार्य को पीटने उसके भोजन करने के साथ 2 ही किये जाते हैं इन गीतों के माध्यम से वर, वर के सम्बन्धियों का उपहास किया जाता है :-

मां ए तिलकतियां[1] बहन उघलिया[2]
बाप बेटी बोप भड़वा का भड़वा
मां ए वण्डाल की ।

---

1. बबनाल ।

2. भाग के जाता ।

परन्तु सास ठीक इसके विपरीत अपने जमाई पर मोतियों तक न्यौछावर करने के लिए तैयार रहती है और वह उसे उसकी माँ से भी अधिक प्रिय लगता है :-

हीरें भी वारां[1] जमाई जी
वारें पे मोती भी वारां
वारां धी[2] घर लाल जमाई जी
वारें पे मोती भी वारों

और

मामा दे प्यारा जमाई जी
अपनी सासूं दे लाडला

बाबल, भाई आदि का नाम जोड़कर इस गीत को बढ़ाया जाता है ।

दान-दहेज एवम् विदा (विदाई) :- पहले तो विवाह के दूसरे दिन दान में दी जाने वाली सभी वस्तुएँ एवम् धन प्रदर्शनार्थ रखा जाता था परन्तु आजकल उसी दिन सायं या सुबह जैसा भी कार्य हो, हो जाता है । वधू का पिता वर के पिता को दहेज में दिये जाने वाले आभूषणों, वस्त्रों, बर्तनों और अन्य सभी वस्तुओं को दिखाकर उसकी सूचि सभा के मध्य में देता है । पुत्री के विवाह पर उसको अपनी सद्भावना से जो कुछ देता है प्रायः उसे वर पक्ष वाले सहर्ष प्रेमपूर्वक स्वीकार कर लेते हैं । इसमें दोनों पक्षों की म मर्यादा कायम रहती है। परन्तु आधुनिक दहेज प्रथा - विषय बनकर रह गया है । बारात के प्रस्थान के समय जब सभी ससुराल जाने को तैयार हो

---

1. न्यौछावर करना ।
2. पुत्री ।

गई तो सखियाँ अपनी लाडली सखी की मधुर विदाई पर रो पड़ती हैं उसकी आँखो में आँसू आ जाते है:-

सावण साल पड़ी मेरे झूल झूल भर आए नैण
अपणी साथण का मैं दामण सिमा[1] द्यूं गोटवां गीलादूं तार[2]
अपणी साथण नै मैं कुडता सिमां द्यूं बटणा की लादूं तार
अपणी साथण नै तावली[3] मंगा द्यूं भाइयां की लादूं लार
अपणी साथण नै मैं महल मैं बैठा द्यूं गैल[4] पतीपति भरतार

परदेस में है एक तोता (पति) और एक मैना (लड़कियों में से एक लड़की) जो ले चला। बाकि उसकी स्मृतियाँ-उन मधुर क्षणों की याद में रोकर जाती हैं :-

आयो परदेसी सूवटो[5] लेग्यो टोली मैं से टाल[6]
एकलड़ी[7] क्यों चाल्ली हो
छलगो बाबा थारो देस[8]
एकलड़ी क्यों चाल्ली हो

अन्य सम्बन्धियों के नाम से इस गीत को आगे बढ़ाया जाता है। सखियाँ अपनी प्रिय सखी को गीत के माध्यम से अपनी वस्तुएँ सम्भालकर रखने को कहती है :-

प्यारी प्यारी बन्नी अपने कुण्डल सम्भाल,
तेरे कुण्डलों पै मेरी नजर जाती है।
फूल खिलने से सुगन्ध निकल जाती है,
शादी होने से रंग बदल जाती है।
प्यारी प्यारी बन्नी अपनी पायल सम्भाल,
तेरी पायल पै मेरी नजर जाती है।

---

1. सिलवाना । 2. कतार ।
3. जल्दी । 4. साथ में।
5. तोता । 6. न्यारा ले जाना । 7. अकेली । 8. देश

माँ अपनी लाड़ली को धीरज बंधाते हुए ससुराल में रहने की मर्यादा एवम् तौर तरीके समझाती है :-

> रोइये मत, घबराइये मतना, बस्ता उठ नारीं छोड़ए है
> हमने बेटी पाल देह कर बड्डा काम समझए है
> अपने सासू ससुरा ने माँ बाप का स्थान समझइए हैं" "हमने बेटी
> अपने जेठ जेठानी ने तारे का चांद समझइए है" "हमने बेटी
> अपने देवर दौरानी ने मिंठी का खेल समझइए है" "हमने बेटी
> अपनी छोटी ननद ने गुड़ियाँ का खेल समझइए है" "हमने बेटी

वधू आगमन की सूचना :- वर के घर बारात वापस पहुंचने की वधू की खबर सबसे पहले देने वाले को वर पक्ष की तरफ से उसकी आर्थिक स्तर के अनुसार नेग दिया जाता है। इसे प्राप्त करने के लिए काफी प्रतियोगिता (कम्पीटिशन) रहता है।

वर गृह में वधू का स्वागत :- जब वधू प्रथम बार वर के घर में प्रवेश करती है तो स्त्रियों द्वारा बधावा, मंगलाचार और बन्ना के स्वागतार्थ गीत गाये जाते हैं। "द्वार रुकाई" की रस्म सम्पन्न की जाती है और वधू को गृह प्रवेश की अनुमति मिलती है। बाप्पे के सामने सास अपनी वधू को बैठाकर उसका मुंह देख के मुंह दिखाई" देती है। तत्पश्चात अन्य औरतें उसका मुंह देख सकती हैं। और मुंह दिखाई देती हैं। रात्रि को रतजगा और देवपूजन की पुनरावृत्ति होई।

देई (देवी) थान पूजन :- अगली सुबह वर-वधू को देई थान पूजन करवाया जाता है जिसमें सुख में जीवन की मंगल कामना की जाती है। रास्ते में गली मोहल्ले में मिलने वाली औरतें मुंह देखती हैं, उसके रूप सौन्दर्य की प्रशंसा करती हैं। वर-वधू के साथ पति, देवर आदि सोटकी[1] खेलते हैं। गीत गाये जाते हैं।

---

1. जाल के वृक्ष की टहनी।

कांगने खुल का खेल :- देई थाप पूजन के बाद यह खेल खिलाया जाता है एक बड़े थाल में जल और भरकर वर-वधू के समक्ष रख दिया जाता है। उसमें अंगूठी फेंका वर-वधू के कांगने उसमें डालकर वर की भाभी उन्हें खिलाती है। वर-वधू को अंगूठी खोजने के लिए कहा जाता है। जिसके हाथ में अंगुठी आ जाती है वही विजयी होता है। ऐसा सात बार किया जाता है। वधू पक्ष की ओर से स्त्रियाँ वधू को जिताने की चेष्टा करते हुए, वर को उसी की माता एवम् भौजाई आदि तरह तरह के उपालम्भ गीत गाकर देती हैं। इसी समय वर वधू एक दूसरे के कांगने डोरे बांधते व खोलते हैं। बांधते समय उल्टी गांठे लगा दी जाती हैं। दोनों की चतुराई देखी जाती है कौन जल्दी गांठे खोलता है। इसी अवसर का गीत :-

तै तो देहली पै दुधाई[1]
बामण की कांगणा बांध खुले
तै तो बासी टिकड़ पाली[2]
बामण की कांगणा बांध खुले
हम तो काचे दूध पिलाए[3]
बामण की कांगणा झट खुल्या

खेल की समाप्ति पर अंगूठी वधू को पहना दी जाती है और कांगणा उसके सिर पर रख के वर कहता है :-

कमाई कमाई मां के हाथ।
मूंह का कौलार तेरे हाथ।।

तत्पश्चात देवर द्वारा नई भाभी को "भली बाहुड़ भाभी से बेटा" की बात कहलवाई जाती है और उसे खेल दिया जाता है इस प्रकार विवाह की रस्में समाप्ति की ओर अग्रसर होती हैं।

रात्रि को वर वधू के प्रथम मिलन को "सुहागरात" कहा जाता है। वैसे आजकल इन रिवाजों में आधुनिक समाज की रुचि कम होती रही है परन्तु फिर भी आस्थाएं कायम हैं।

---

1. दरवाजे पर दूध पिलाया।

2. बासी रोटियों से पालन किया। 3. कच्चा दूध पिलाया।

III- <u>मृत्यु (अन्त्येष्टि) संस्कार</u> :-

मृत्यु पर कोई विजय नहीं पा सकता है। इसे सदैव विलक्षण एवं भयावह समझा जा रहा है। मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता है? यह प्रश्न आदिकाल से अनुत्तरित रहा है इस रहस्य को आजतक कोई नहीं जान सका है। प्रत्येक धर्म में इसके विषय में भिन्न 2 दृष्टिकोण हैं। मृत्यु गीत की परम्परा भारतीयसमाज बहुत प्राचीन है। वेदों में इस प्रकार के अनेक सूक्त उपलब्ध हैं। मृत आत्मा को सम्बोधित करते हुए वैदिक ऋषि कहता है :-

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिः
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः
उभा राजाना स्वधया मदन्ता
यमं पश्यासि वरुणं च देवम् ।[1]

हरियाणा के लोगों पर वैदिक परम्परा का एवं प्राचीन आर्यों की परम्पराओं का सीधा प्रभाव पड़ा है। मृत्यु संस्कार में तो यह तथ्य साफ रूप से नजर आता है।

<u>शव की व्यवस्था</u> :- जब कोई यह अनुमान करता है कि इसकी मृत्यु होने वाली है तो वह स्वयं या उसके सम्बन्धी उसकी मृत्यु निकट देखते हैं तो सभी निकट सम्बन्धी इकट्ठे हो जाते हैं। उसका सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की तरफ कर दिया जाता है। मरणासन्न व्यक्ति को चारपाई से उतार कर स्वच्छ गोबर से लीपी हुई भूमि पर लिटा दिया जाता है। ऐसी मान्यता है कि उत्तर में विष्णु पुरुष रहता है। मरणासन्न व्यक्ति को सांसारिक मोहमाया से छुड़वाने को उसके कान के पास रामायण या गीता का पाठ किया जाता है। मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में गंगा जल एवं तुलसी दल भी डालते हैं। शव को स्नान कराके उसे नये कपड़े से ढक देते हैं। रात्री में मृत्यु हो जाने पर परिवार के सब सदस्य जागरण करते हैं और भजन आदि गाते हैं।

---

1. ऋग्वेद 10/14/7

<u>शव यात्रा :-</u>

यहाँ बाँस की अर्थी बनाई जाती है और उस पर सरकण्डा या कुश बिछाया जाता है। यदि विधवा की मृत्यु हुई हो तो उसके सभी आभूषण उतार लिये जाते हैं परन्तु सुहागिन के हाथों में लाल चूड़ियाँ पहना दी जाती हैं। और माँग में सिन्दूर लगा दिया जाता है। उसे लाल या केसरिया ओढ़नी या सुहाग चुनड़ी से ढक दिया जाता है। शव पर सफेद कपड़ा डाल दिया जाता है। अर्थी पर सम्बन्धी व मित्र कपड़े व फूल डालते हैं। अर्थी उठाते समय पाषाण से पाषाण हृदय भी रोये बगैर नहीं रह पाता। श्रीमद्भागवत में कृष्ण द्वारा कंस के संहार के पश्चात कंस की रानियाँ घोर विलाप करती हैं :-

हा नाथ प्रिय धर्मज्ञ करुणा नाथ वत्सल ।
त्वया हतेन निहता वयं ते सगृहप्रजाः ॥
त्वया विरहिता पत्या पुरीयं पुरुषर्षभ ।
न शोभते वयमिव निवृत्तोत्सव मंगला ॥[1]

अर्थी को कन्धों पर श्मशान ले जाते हैं। शवयात्रा का नेतृत्व मृतक का ज्येष्ठ पुत्र या निकट सम्बन्धी प्रमुख करता है। बैकुण्ठी या अर्थी के आगे मृतक के पुत्र, पौत्र आदि साष्टांग दण्डवत् करते हुए चलते हैं। " राम नाम सत है, " " सत बोलो गत है " कहते हुए चलते हैं और औरतों का समूह काफी पीछे चलता है। अपनी 2 आर्थिक अवस्थानुसार शव पर पैसे फेंके जाते हैं। ऐसा प्रायः वयोवृद्ध व्यक्ति की बैकुण्ठी पर होता है। जवान की मृत्यु पर बड़ा ही मर्मस्पर्शी एवं हृदय विदारक गीत देखिए:-

जब मैं घर से लीकड़या मन्ने फेर बताव,
हो गया सौंप कलेज, मन्ने फेर बताव,
हाय हाय मन्ने फेर बताव ।

---

1. श्रीमद्भागवत दशम् स्कन्ध अध्याय 44 श्लोक 44/45

अर्थात पहले ही सारे शकुन-अपशकुनों में परिवर्तित होते जा रहे थे। फिर भी उसका ध्यान नहीं दिया गया:-

सारी सखियों का कोठरी तन्नै मारया स्यों का नाग,
हाय हाय मचऊ ढेर कुपात।

जब जीवन साथी सदा सदा के लिए दूसरे लोक में चला जाता है तो औरत विधवा हो जाती है इस वियोग की स्मृति जिसका अन्त नहीं, कांटो के समान उसके शरीर को बेधती जाती है -उर उर कर देती है विषाद की रेखाएँ :-

अरे मेरे करम के तारे जल गए अऊ मोती दुसाय
अरे मेरे करम के दुखरा भर गए, उठ गए मनिहार

उसका शरीर स्वतः आग की भट्टी की तरह सुलगने लगता है और ऐसा आभास होता है मानो पीड़ा रूपी बिच्छू उसके शरीर को विदारित कर रही हो :-

अरे मात जले जैसे कांच की भट्टी पजावे ।
अरी बिच्छू के मारा डंक लहर ज्यूं जा आवै ।

शवदाह :- शव श्मशान भूमि में पहुंचता है। चिता के स्थान को मन्त्रोच्चारण के साथ पवित्र जल छिड़क कर शुद्ध करके लकड़ियों की चिता बनाकर उस पर शव को रख दिया जाता है। शव के कपड़े अंगी आदि को दे दिये जाते हैं। शव पर लकड़िया रखके घी आदि डालकर, कुश या सरकन्डे के पूले में आग लगाकर चिता में आग लगा दीजाती है। मृतक का पुत्र या नकट सम्बन्धी शव के चारों ओर प्रदक्षिणा करके चिता को जलाता है। मन्त्रों के साथ घी, हवन सामग्री आदि डालकर अग्नि प्रज्वलित की

जाती है। मृतक का पुत्र चिता को आग देने से पहले उसका नाम लेकर उसका तथा सम्बन्धी ऊंची आवाज में पुकारता है "......" चलाये आये है आग" यह सम्भवतः इसलिए किया जाता है कि यदि किसी दैवी कारण से मृत देह में जीवन लौट आये तो उसे चेताया जा सके। चिता जलने के कुछ समय बाद मृतक का लड़का या भाई अर्थी की एक बांस तोड़कर शव की खोपड़ी पर मारते हैं। इसे "कपाल क्रिया" कहते हैं। शव के जलने पर उसकी परिक्रमा करके पास के तालाब पर स्नान करके आते हैं।

<u>अशौच</u>:- मृतक के निकट सम्बन्धियों को अवदाह के बाद अशौच "स्यापा" रखना पड़ता है। सामान्यतः इसकी अवधि 12 दिन होती है। बाल मृत्यु पर 3 दिन का तथा शिशु की मृत्यु पर अशौच गौण मात्र होता है।

<u>फूल ठापा :-</u> दाह क्रिया के तीसरे दिन चिताभस्म पर दूध और जल का सींचन कर मन्त्रों के उच्चारण के साथ अस्थियों को चयित किया जाता है इसे "फूल चुगना" या फूल ठापा कहते हैं। अस्थियों को कपड़े की कोथली में डाल कर रखा जाता है फिर सुविधा अनुसार गंगा (गढ़गंगा) गढ़मुक्तेश्वर या हरिद्वार, कलू आ दि में उनको पंडे द्वारा प्रवाहित किया जाता है।

<u>शोक गीत :-</u> मृत्यु के 13 दिन तक शोक मनाया जाता है क्योंकि पुरुष की तेहरावीं 12वें दिन और औरत की 13वें दिन होती है। निकट के सरोवर तट पर पीपल के साथ कोरी हांडी सुराख की हुई लटका दी जाती है। इसी अवधि में "मूंह काण" (शोक प्रकट)

किया जाता है। इसमें मित्र, सम्बन्धी, सभी आते हैं।

इसी समय मर्द की मृत्यु पर आमतौर से इन शब्दों को दोहराया जाता है :-

हाय हाय बछड़ा पेच्छी आता[1] ।

हाय हाय बछड़ा पेच्छी आता ।।

जब मर्द रंडवा हो जाता है तो गृहस्थी चौपट हो जाती है और उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर जाता है क्योंकि पत्नि के न रहने पर जीवन निरस हो जाता है :-

टूटल खटोली[2] नवड़ विच सोया ,

एक बार सुपने मैं आईये, प्यारी ए ।

इसके अलावा विवाहिता कन्या की मृत्यु पर भी शोक गीत गाया जाता है उसे बागों की कोयल के समान समझा जाता है जो बागों को छोड़कर अस्तित्वहीन हो गई "बागाँ दी कोयल आज उड़ गई" क्योंकि लाड़ली की सूरत माँ की आँखों के सामने तैरती रहती है हटाए से भी हटती नहीं है।

<u>तेहरावीं :-</u>

इसी दिन बारह ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है। यज्ञ होता है और कपड़े लत्ते आदि दान दिया जाता है। चावल रांधकर पीपल के पत्तों पर पक्षियों को खिलाया जाता है। "पगड़ी" की रस्म अदा की जाती है। ज्येष्ठ पुत्र को पगड़ी बन्धती है अर्थात परिवार की सारी जिम्मेवारी उस पर आ जाती है।

<u>श्राद्ध तर्पण :-</u>

पितरों की चिर शान्ति हेतु कुशोदक जल, पैसा पिण्ड

---

1. शोक प्रकट करने का शब्द विशेष ।

2. छोटी चारपाई ।

तारक आदि स्थानों पर श्राद्ध तर्पण कराया जाता है। प्राचीनकाल में पृथूदक (पेहोवा) तीर्थ पर सरस्वती के जल में खड़े होकर महाराज पृथु ने अपने पिता महाराज वेन का श्राद्ध तर्पण करवाया था ताकि स्वर्गवासी को मुक्ति मिल सके।

वरसौंधी :- मृतक की मृत्यु वाले दिन एक साल तक हर मास उसी तिथि को यज्ञ करवाकर ब्राह्मण जिमाया जाता है जो "महीना" कहलाता है फिर छः मास बाद "छःमाही" और साल बाद (वरसोंधी) की जाती है। जिसमें रिश्तेदार सगे सम्बन्धी इकट्ठे होते हैं। ब्राह्मणों को जिमाकर यज्ञ भी करवाया जाता है। "काज" भी इसी अवसर पर होता है। अन्य कई कार्यक्रम विधवा को लाठड़ाने का विधुर विवाह कार्य इत्यादि कि क्रिया भी आरम्भ की जाती है।

वरसोंधी के श्राद्धों के दिनों में मृतक का मरने वाली तिथि को ही श्राद्ध जो "कनागत" कहलाता है और प्रत्येक वर्ष उसके मरने की तिथि को ब्राह्मण जिमाया जाता है दीपकसिंख और दान दक्षिणा देना आदि रस्मों की पुनरावृत्ति होती है।
रंडवे का हाल बड़ा ही कष्टदायी होता है उसे अर्धरात्री को उसकी पत्नि दिखाई देती है वह सुबक सुबक कर रोने लग जाता है परन्तु वास्तव में उसकी बात पूछने वाला कोई नहीं रहता :-

रंडवा तो रोवे आधी रात, सपने में देखी कामणी[1]
कोई ना पिस्से उसका पीसणा, कोई ना पूछे उसकी बात,
सिसक सिसक[2] रंडवा रो रहा आधी है पूरी बात,
सपने मे देखी कामणी ।
कोई ना रोटी बना देवे, कोई ना पूछे उसकी बात,
सपने में देखी कामणी ।

---

1. प्रेयसी ।
2. सुबक सुबक कर ।

2. <u>कृषि गीत</u> :- इस कृषि प्रधानप्रान्त में यहाँ के लोग गीतों में अच्छे तौर-तरीके और क्रियाकलापों का अच्छा खास वर्णन कृषि के विषय में मिलता है उदाहरणार्थ कृषि खाद कृषि के सम्बन्धित उपकरणों, पशु, प्राकृतिक सम्बन्धी उल्लेख मिलता है। कहीं कहीं आधुनिककृषि यन्त्रों का भी प्रयोग किया जा रहा है। "खेती खसम सेती" वाली उक्ति की प्रधानता का समावेश भी रहता है। इन गीतों में किसान के काम की बहुत सी बातों का उल्लेख एवम् महत्व दर्शाया गया है :- जो

मोठ, बाजरा, टिब्बा[1] में राखी, गहूँ राखी क्यारियाँ।
बोलता कुवे में राखी और भैंस राखी नारियाँ[2] ।।
खेती करे सो उपराकरे ना तो घर में पड़े मरे।
ज्यों 2 झोले, त्यों 2 ज्वार, बरसे मालिक मूसलाधार।
उन्हें उपजे ढ़ेर ज्वार देताजा सौ कृपा ये ठेहर आया हो ।।

खाद विषयक वर्णित लोकगीत में खाद की महत्ता कथन किया गया है। अर्थात खाद न डालने से खेत में रेत ही रेत रहता है। इसका वर्णन यूं है :-

खेती तो रेती भली, जिसमें डाली खाद[3]
कर जोड़े काम न करे, कन्या राखे लगाके हाथ
हाथ भिखारिणी अन्नदा जी की खेती।

धरती एवम् गौ माता की स्तुतिगान भी लोकगीतों में दर्शाया गया है। इस प्रदेश में बुआई का समय नई आशा एवं उत्साहित तरंगों से भरा हुआ होता है। इस मौके पर किसानों में विशेष आन्तरिक प्रसन्नता की लहरें

---

1. रेत का टीला।
2. पानी में।
3. खाद।

देती हैं इस मौके पर किसान कई प्रकार के अपने शकुन मनाता है और देवी देवताओं की प्रार्थना करता है । गाए की स्तुति का एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

धरती माता नै हरया करया,
गऊ के जाये नै हरया करया,
बीच बखु के गाम मैं हरयाकरया,
गंगा माई नै हरया करया ।

इन पंक्तियों में किसान द्वारा ग्राम, देवता, इन्द्र और गंगा रानी की कृपादृष्टि एवम् उनका अन्न के उत्पादन के प्रति पूर्णरूपेण आस्था झलकती है ।

कृषि गीतों में बरसात के दृश्यों का भी जिकर मिलता है, बरसात के लिए किसानों का आह्वान इस प्रकार है वे इच्छा प्रकट करते हैं कि आकाश में तैरते हुए बादलों को देखकर कि वे उनके खेतों में बरसें । इस बात का वर्णन है :-

उमड़ें उपरां बादलिड़ा उपरा क्यूं आ, बरसै तैंधू का म्हारे देश
छम मैं पाळिड़ा[1] जुम जुम, छम मैं तो भर दे जोहड़-डाबड़ा[2] ।।
कूआ रे पाळिड़ा क्वाँ[3] की कों, के उजाड़ा मेरे बापका ।
कूआ रे पाळिड़ा तेरैड़ी रांड, के उजाड़ा मेरे बापका ।।

प्रत्युत्तर में देखिए :-

मत दे हे सुन्दर मनै तै गाल, तेरे सरीखी[4] म्हारे बी गोरड़ी[5] ।
आईये हे सुन्दर म्हारे ए देस, लहँद रंधादे अपर बन्दड़ी ।।

---

1. पाली ।
2. छोटा तालाब ।
3. कूआ ।
4. इस जैसी ।
5. गोरी ।
6. लहँगा ।

बीज कैसा होना चाहिए और उसे खेत में किस ढंग से बोना चाहिए ताकि फसल की मात्रा अधिक हो और अच्छी हो । इसकी एक बानगी प्रस्तुत है :-

तीन सीधे जौ चाखे, गेहूं चार ज्वार ।
ऊंट पांव में बाजरा[1], नाव पैर में नार ।
सीधी 2 कपाटी, पौंड़े छिदे बहार ।
हाथ पैंडी बाजरा मेंढक कूद ज्वार ।
और कोढ़ चाल बोए मोठ गंवार ।

भिन्न 2 प्रकार की फसलों को बोने के समय का चातुर्य पूर्ण वर्णन भी बांगड़ लोकगीत में मिलता है :-

जौ के राखिये नाड़ली, वैसाख के बीजिए ईंख ।
वो घर कदे ना बसे जिनहाली[2] पराई सीख ।।
साढ़ जो बोवे बाजरा, सावण बोवे ज्वार ।
मोठ जो बोवे भादवा, कभी न आवे हार ।।
गेहूं चाणा चाहे ना, साढ़ में क्यों ना बावे था ।
खेती खसमां सेती कुछ अपेती, कुछ परेती ।
नहीं तो खेती की खेती ।।

हाली अथवा हल तैयार करवाके खेती बोने की तैयारी करता है तो औरत क्या कहती है :-

हालिड़े 2 हल चढ़ैया[4] ले ओरणा[5] हथियल चाँद का
आया हो हालिड़े साढ़ मास बाजरा तो बोदे
दूजे ज्वार में ।

---

1. तिरछो कपास ।
2. जिनहोवे ती ।
3. हाली ।
4. हल चढ़वा (चलवाना)।
5. बीज बोने की नाली ।

इससे फसल की भूमि एवम् के बोने का समय की उचित सही सिद्ध हो जाती है। और जोपके खेत में फसल उगाई गई है इसका जिकर एक औरत इस प्रकार करती है :-

चोखा चोखा री माँ मेरी बणी आला खेत,

खेत क्यारी में गई ।

यानि बणी वाले खेत में फसल उगाई गई है और उसकी रखवाली के लिए वह लड़की गई है। हाली रोटी लेगी और साग किसप्रकार का खाता है इसका हाल वर्णित है :-

बाजरे की रोटी पोई रे हालिड़ा,
बथुवे का रांधा[2] रे साग ।
आठ बरसाँ का रे हालिड़ा,
बीरमाँ[3] बार हालिड़ा कीतो[4] ।
बरसण लागी रे हालिड़ा बादली ।।

ईख की खेती में कठिन परिश्रम होने पर भी वह कष्ट प्रदान करने वाली मानी गई है किसान को उसे सही रखने के लिए आठों पहर की निगरानी रखनी पड़ती है। वैसे यह नकदी फसल है। उसके लिए कितना कष्ट उठाना पड़ता है उसकी व्याख्या एक मार्मिक कथा परक गीत में मिलती है :-

बहुत सताई ईखड़े, तनै बहोत सताई रे ।
बालक छोड़े रोंवतें रे तनै बहोत सताई रे ।
टापड़ी में छोड़ा पीलका,
अर छोड़ड़ी है लावड़[5] गायं ,
बगोड़े ईखड़े तनै बहोत सताई रे ।
बहुत सताई ईखड़े तनै बहोत सताई रे ।

---

1. रखवाली । 2. पकाया ।
3. छोटा । 4. थाना ।
5. दूधारू गाय ।

यद्यपि ईख बोने (बुवाई) पर किसान वधू ने अपनी अच्छी मनवाई थी । परन्तु उस कार्य का प्रतिफल जब मिलने लगा तो सहज ही उसके मुख से निकला :-

ईख बुवाई के फल पाई, ईख बुवाई मेरे अच्छी पड़ाई ।
ले सवा सेर बहू के सिर लाई, सुसरा तैं लडूंगी पीठफेर के ।।
आधा ऐ सासड़ तनै ईंडा ले पकड़ूंगी, जेठ तै लडूंगी दिल खोल के ।
सुसरा तै लडूंगी पीठ फेर के ।।

जेठ, जेठाणी, देवर-दोराणी और सौकण से लड़ने को तैयार है । फसल काटने के समय की दशा बहुओं व्यथा एक ग्रामीण लोक गीत में बड़े ही सरस एवम् सुन्दर ढंग से बन पड़ी है :-

चने उपाड़ने बाड़िये, मसरी फूलन लाल ।
साल सुनके बाड़िये, मेहूं घूंघट लाल ।।

"लावणी" के वक्त तो बेचारी किसान वधुएं अपना श्रृंगार तक नहीं कर पाती क्योंकि कार्यों में इतनी व्यस्त रहती हैं कि उन्हें फुरसत ही नहीं मिलती । सुबह से शाम तक कार्य में लीन रहती हैं वे अपने बच्चों को पालने का समय भी निकाल पाती :-

पाँच पंसास की मांग मढ़ाई, पड़गी लावणी फरक ना पाई ।
साँझ तोहीं करी लावणी, साँझ पड़ै घरां फिर आई[3] ।
आगे सास लड़ती पाई, बेध्यां क्यूं नातनाम, बख्त क्यों ना आई ।
सास मेरी मैं गलकी सुनाई, आधी पीस के चक्या चौरे आई ।
गलकी क्यां ना खोलयो हो..के भाई, किसनी हरण छिकाये ना आई ।

---

1. तक ।
2. फसल काटना ।
3. वापिस आई ।

पशुओं की करुण पुकार और उनके प्रति निर्मम क्रूरता का भी सहज वर्णन मिल पाता है । अशक्त एवं बूढ़े बैल को उसका स्वामी बेचना चाहता है जिसने सारी उमर अपने मालिक (किसान) की सेवा की । परन्तु अब वह उसे जीवन के अन्तिम दिनों में दूर करना चाहता है :-

अरे क्यूं रोवै बूढ़ा बैल,
मैंने मत बेचे रे पापी,
तेरे कुआं- कोल्हू में चाल्या,
नाज[1] कमा के तेरे घर घाल्या[2] ।
अब तन्नैं करती बजर की छाती[3] ।

एक अन्य मार्मिक चित्रण अर्थात दिवाली का त्यौहार है परन्तु उस रोज में भी उस किसान के घर की अभाव ग्रस्त अवस्था देखकर हृदय चित्कार उठता है :-

कात्यक बदी मावस आई, दिन था साँझ दीवाली का ।
आंख्यां[4] के मैं आंसू आ गये अब घर देख्या खाली का ।।

बांगड़ लोक गीत में गाय की दुर्दशा का वर्णन मिलता है :-

क्यूं खड़ रही बोली गांय, मेरी कोई पूछता नाहीं,
मेरे दिन थे फिरी भगवान, मैं दुख पाए रही ।

कोल्हू के गीतों में मल्हारों का विशेष स्थान है । रात्रि के एकान्त क्षणों में किसानों की प्रतिभा को मानों पंख लग जाते हैं । मल्हारों को गाकर किसान अपने दुख एवं असामान्य कष्ट की पीड़ा का अनुभव इन गीतों के माध्यम से भूल जाता है । ये गीत उसके हृदय स्फूर्ति एवम् उत्साह के साथ साथ मनोरंजन

---

1. अनाज ।
2. डाल दिया ।
3. कठोर हृदय ।
4. नेत्र ।

प्रकट करते हैं । उनके प्रणय की गम्भीरता का उत्कृष्ट प्रदर्शन देखिए:-

चंदा तेरीए चांदणी, सूनी पलंग बिछा ।
जागूं पिया एकली, गई कटारा खा । मेरे बावले मल्होर
पास चले ज्यूं सेज गई कुंडे चले कसार
घूंघट में गोरी चले डीप पुरष की बार । मेरे बावेल मल्होर

कोल्हू और गुड़ की मिठास की महत्ता एक बांगरू लोक गीत में इस प्रकार है :-

है कोल्हू की आरही ओट सुहासी बातें हैं[1] ।
बलपत का हो रहा साँझ रात की काटे है ।
है जल्दा भार तक्त पर ऐड भौंरां का दिल डाटे है ।
है मेरा कोल्हाडे चाक और देवर गुड़ बाटे है ।
है कोल्हू की आ रही ओट सुहासी बातें हैं ।

लटपट एवम् दुःसाध्य प्रकार्य "बाजरा" की रोटी को कई पढ़े लिखे लोग सिमेंट की उपमा से अभिहित करते हैं परन्तु कृषक इसकी महत्ता को ही स्वीकार करते हैं क्योंकि वह शक्तिदायक भोजन है :-

बाजरा कहे मैं बड़ा अलबेला,
दो मूसल से लडूं अकेला ।
जे तिरी बाजी[2] खिचड़ी खावै,
काया फूली कोठी[3] हो जावै ।

इस प्रकार बांगरू लोक गीतों के कृषि प्रधान गीतों के माध्यम से प्रार्थना गीत, फिल्काण गीत, कटाई गीत तथा अन्य विविध कृषि गीतों को समावेश बड़ा ही सफल एवम् सुरुचि पूर्ण मिलता है ।

---

1. बैलों के गले में बन्धे हुए घुंघरुओं की ध्वनि ।
2. बाज और बबरा करने वाली ।
3. भारी भरकम ।

3· देवी - देवता एवम् व्रत- त्योहारों के गीत :-

भारतीय संस्कृति लोक संस्कृति- जन संस्कृति ग्रामों में ही निवास करती है। कृषक की जिन्दगी उसका जीवन साधन, ऋतु परिवर्तन के चक्रानुसार घूमते है। प्रत्येक ऋतु परिवर्तन उसके लिए विशेष महत्व रखता है। इसी कारण लोक संस्कृति का भी इनसे अत्याधिक सम्बन्ध है और उसमें समाये पर्वों और उत्सवों का भी। लोक संस्कृति के अभिन्न अंग तीज- त्योहारों की थाती, देवी-देवता की स्तुति, व्रतों की उपासना नारी के आंचल में सुरक्षित टिकी है। उसके अभाव में इनकी सम्पन्नता नहीं हो सकती। इसी कारण लोक संस्कृति के विभिन्न मौकों पर गाये जाने वाले नारी कण्ठ की ललित मधुर ध्वनी युक्त गीतों और सहज स्वाभाविक लय में थिरकने वाले नूपुरों का अपना स्थान है।

इस प्रदेश की लोक नीति नीति और त्योहारों का महत्व " आईये त्युहार ! त्योहार ! अर चलिए त्योहार " से स्पष्ट झलकता है। त्योहारों की दृष्टि से यह क्षेत्र अपना निजित्व रखते हुए भी उत्तरी भारत से बिल्कुल अलग नहीं है। होली, दिवाली, दशहरा, संक्रान्ति आदि त्योहार प्राय: दूसरे स्थानों की तरह यहां भी मनाये जाते है। फिर भी अनेक पर्वों में इसकी अपनी विशेषता है। " इस क्षेत्र में त्योहार और उत्सव हमारे जीवन को अपनी अद्भुत शोखी से भरपूर करते हुए उसे सन्तुलित रखते हैं। सम्भवत: सन्तुलन के दृष्टि कोण से ही कुछ त्योहारों को छोटे-मोटे त्योहारो और कुछ अन्य को बड़े त्योहारों का नाम देकर इन्हें अलग- अलग मान्यता दी गई है।"[1]।

वर्ष के भिन्न-भिन्न मासों में आने वाले पर्व, व्रत त्योहारों

1· जन-साहित्य विशेषांक पृष्ठ 53

आदि तथा भिन्न-2 मासों में मनाये जाने वाले पर्व, उत्सव, तीज, त्योहार और देवी-देवताओं की अराधना की विधियों का वर्णन किया जा रहा है :-

चैत्र मास के प्रथम पक्ष में माता पूजन और दूसरे पक्ष में देवी पूजन आरम्भ होता है। पहले नवरात्र को नव-वर्षोत्सव भी मनाया जाता है। स्थानिय मानयता अनुसार "सीली सातें" तो सोम्वार को धोका जाता है। चेचक को यही "शीतला माता" का प्रकोप माना जाता है। "शीतला माता" का प्रकोप भंयकर होताहै। माता का हर भक्त उससे आतंकित रहता है :-

पहले आवे री माता कुजकी[1],
पाछे हल-हले[2] ताप ।।.. सच्ची सेढ मसाणिया[3]
तन्ने ध्यावे री माता मा तो
हाड़ छिके-छिके[4] माता निकले,
मोती को उणियार[5] ।।.. सच्ची सेढ मसाणिया

उपासना में किसी प्रकार की भी त्रुटि नहीं होने दी जाती तभी तो "म्हारे पे मैर करेगी माता शीतला" की कृपा का एक दृश्य देखें :-

मैर करेगी माता आपणी,
पाले तूं भ्रू जावे ।।.. सच्ची सेढ मसाणिया
तन्ने ध्यावे री माता दो जो,
एक पुत्र दूजी नरर ।।.. सच्ची सेढ मसाणिया

"शीतला माता" की पूजा के पहले दिन रविवार को शाम को मीठे चावल या दलिया बनाया जाताहै। जिसका प्रयोग सुबह सोमवार को मिट्टी के आटे से "एक पकासे" और हल्दी आदि रंगिरि से शीतला माता

---

1. कुजी या कुरी।
2. धीरे-धीरे ।
3. माता का एक अन्य नाम।
4. /T कोड 92 कर ।
5. मोती के आकार के ।

की छोंक मारी जाती है और बच्चों के पहनने के लिए हल्दी से रंगी कौड़ियों के/गुण के हार बनाये जाते हैं । अपने बच्चों के साथ औरतें मुख्य -2 माता की पूजा करने जाती है और उसके गीत गाती हैं :-

भर कपूधारा छोंक देया जी सेढल माता जी ।
....थारो माये कुलादया जी सेढल माता जी ।

कुछ कंवारी के लिए चावल आदि बनाई हुई वस्तुएं पहले ही निकाल कर माता के प्रसाद के रूप में शेष सभी ग्रहण करते हैं । माता का एक अन्य धार्मिक लोक गीत की छवि इस प्रकार वर्णित है :-

कई कहाई गुलगुलों से ,
माता छबेला जाये ।

अब हमारी सेढ़लन
माता राजी हो जाये ।

दादो दायका कुनबा
नहीं समाय ।

नवरात्रों में निरन्तर देवी की पूजा का विधान है । इस त्यौहार को मेले लगते हैं और चैत्र मास की शुद्ध शुक्ला पक्ष की अष्टमी को घरों में हलवा पुरियां तैयार की जाती है । उसके पश्चात् कन्या को भोजन खिला कर दक्षिणा देकर देवी प्रसाद ग्रहण किया जाता है । इस दिन मन्दिरों में मेले भी लगते हैं । देवी गीत का नमूना :-

ऊंचा रो कोट सुरंग देवी जाल मां ,
हरियल पीपल तेरे बार मेरी माय ।
हरियल पिपल पीपल फूलिए फलीयो ,
ते तो फूले आज भवानी मेरी माय ।
कोण ले फूले मइया कोण लावे,
कोण ले भोटे देवे मेरी माय ।

1• शीतला माता का ही नाम ।

2• गुड़ और आटे को मिला कर घी या तेल में पकाया हुआ ।

महीने भर देवी अर्थात भवानी शक्ति की पूजा भिन्न-भिन्न रूपों में होती एक बांगरू लोक गीत में देवी की सुन्दरता एवं भक्ति का वर्णन इस प्रकार है :-

देवी री झूले मइया, लोकड़िया झुलावे, धर्मराज झोटे दे माय।
सीस राणी तेरे स्याडू री सोहे, ऊपर गहद किनारी मेरी माय।
हाथ राणी तेरे महदा सोहे, पोरी-पोरी छल्ले विराजे मेरी माय।
पैर राणी के पायल सोहे, बिछवे का धुन बाजे मेरी माय।
सोवती जागो मेरी मात भवानी, तेरी चाल सवाई मेरी माय।
इब कै तो गुनाह ए बक्स मेरी जालमां, तेरी जै-जै करदा आऊं माय।
बेटे री पटिया पोते मइया साथ री ल्याऊं, नंगी पैर आऊं मेरी माय।

वैशाख में कुछ धाम से मनाये जाने वाले रामनवमी और बैसाखी का यहाँ विशेष महत्व नहीं है। बैसाख में भी यहाँ कहीं-कहीं माता पूजन ही चलता है।

ज्येष्ठ (जेठ) कड़ाके की गर्मी का महीना होता है। इस मास में "जेठड़े" का रिवाज है। प्रायः स्त्रियाँ मास भर एक घड़ा जल पूरे मास किसी मन्दिर या किसी ब्राह्मण के घर रखती है। निर्जला एकादशी "पाणी राखणी ग्यास" के दिन खरबूजे, पंखे, गुड़ आदि वस्तुएं बांटी जाती है। ठण्डाई पिलाना भी इस दिन पुण्य समझा जाता है। एक सुराही दान में दी जाती है। निर्जला एकादशी का नाम सार्थक करने को व्रत बहुत ही कम लोग रखते हैं। निर्जला एकादशी का एक गीत इस प्रकार है:-

ननदल री ग्यास करिए री। ननदल मेरी चौबीस करिए री।।
ननदल मेरी बारह करिए री। जै री ननदल चौबीस ना होवें री।।
जै मेरी ननदल बारह ना होवें। ननदल मेरी छः भी करिए री।।
ननदल मेरी ग्यास करिए री।।

---

1. खजूर।

आषाढ़ मास में कोई उत्सव अथवा त्यौहार नहीं मनाया जाता है। इसका कारण शायद यह है कि इस मास में वर्षा आरम्भ हो जाती है। और कृषि प्रधान प्रदेश के लोग अपने खेती बाड़ी के कार्यों में जुट जाते हैं। उत्सव के लिए अवसर कहाँ? यह तो व्यस्तता का महीना है।

श्रावण (सावन) मास में पर्वों एवं त्यौहारों की झड़ी लग जाती है। यह फुरसत और मौज बहार का महीना होता है। "आई तीज बखेर गई बीज" से तात्पर्य त्यौहारों के आगमन का सूचक माना जाता है। झूले पर स्त्रियों का विशेष आकर्षण होता है। इस मास में विशेष खुमारी रहती है। नशा सा छाया रहता है। खेत बोये जा चुके हैं। बादलों की गर्जन, घनघोर बादलों में दामिनी का चमकना फिर रह रह कर रिमझिम बरसात का वातावरण वास्तव में आनन्द ही आनन्द होता है। ऐसे प्राकृतिक वातावरण में त्यौहार प्राणी मात्र में स्वाभाविक आनन्दमयी तरंगों का समावेश कर देता है। श्रृंगारिक भावनाओं से अभिभूत नवयुवा स्त्रियाँ मस्ती भरी गीतों में झूल रही हैं। कहीं नवीन बालिकाएँ भ्रातृ प्रेम में विभोर हो जाती हैं:-

मेरी पीपं[2] तले री लाण्डा मोर,
रे बीराँ वारी वारी जाँ।

सावन के पहले पक्ष में "भैया पांचे" को भाई की दीर्घायु की कामना में उपवास किया जाता है। फिर त्रयोदशी या चतुर्दशी को शिवरात्री का त्यौहार मनाया जाता है - हे कैलाशी के वासी तेरी जय हो.. और बम बम बम लहरी आदि भजनों से वातावरण गूंज उठता है। शिवरात्री

---

1. भाई।

श्रावण औरभादव में वर्ष में दो बार मनाई जाती है । पंजाब में यह केवल श्रावण में ही मनाई जाती है ।

श्रावण शुक्ला तृतीया को "तीज" यानि "भाई तीज"और "नई तीज" मनाई जाती है । तीज के बाद तो त्यौहारों की शुरुआत हो जाती है – झड़ी सी लग जाती है । तीज का वास्तविक नाम मधु-श्रवा तीज है । मधु श्रवा का अर्थ है – शहद का टपकना । इन गीतों में शहद ही तो टपकता है प्रेम का :-

बाग में पपीहा बोल्या मैं जाणी सूण आया रे
अम्बर चढ़ के देखण लागी..[1]वीरा आया रे
माँ की तीयल बाहण की ओढ़नी भाभी की सुआर लाया रे

सूर्य की तेज धूप से पृथ्वी तप उठती है –वर्षा से संतप्त भूमि शीतल हो जाती है । पुष्पों में पराग पनपना आरम्भ हो जाता है । कुछ शरीर के अंग बढ़ते हैं । कई इसे स्वर्ण गौरी का व्रत भी कहते हैं –अर्थात स्वर्ण गौरी व्रत दिन के आधार पर ही इस त्यौहार का प्रचलन हुआ । तीज के पहले दिन बालिकाएं कह उठती हैं "आज सुहारे तड़के तीज " अतः पहले दिन घरों में लड़कियों के निमित्त सुहारा ।सिन्धारा तैयार किया जाता है । इसके लिए सुहालियां[2] मीठी मिठाईयां आदि बनाई जाती हैं । नई चूड़ियां पहनती हैं और रानी को हाथों में मेहंदी रचाती हैं और जिधर दृष्टि दौड़ाई जाए उधर ही घरों में,बागों में वधुएं –लड़कियां झूलती नजर आयेंगी "झूला जांगी है माँ मेरी बाग में" और साथ ही :-

तीजाँ का त्यौहार आ रै सावण की ।
बड़ी पींघ पै नटके छोरी बाहमण की ।।

---

1. भाई का नाम ।
2. आटे में गुड़ मिलाकर सरसों के तेल में पकाकर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ ।

झूलने के बाद का एक अन्य गीत जब पींग वृक्ष की शाखाओंको स्पर्श करने लगती है तो मधुर वाणी कण्ठों से अनायास ही स्वर फूट पड़ते हैं :-

बड़ बड़ डाहला[1] झूलती, ऐ मेरी सासड़ राणी,
सात सखी का साथ ।
राह मुसाफिर मिल गया, ऐ री मेरी सासड़ राणी,
करै बातीठी मीठी बात ।
कौण मुसाफिर मिल गया, ऐ री मेरी बहुड़ राणी,
किसकाथा हथियार ।
अंग गौरे मुख पातले, ऐ मेरी सासड़ राणी,
फेंटा[2] कीहथियार ।
कोठै चढ़ के देख ले, ऐ री मेरी बहुड़ राणी,
वो से तेरा भरतार ।
पाट्यां मैं तारैं पड़ गए, ऐ मेरीसासड़ राणी,
अंखियां भी हो गई लाल ।
पाट्यां मैं मेहन्दी लाले, ऐ मेरी बहुड़ राणी,
आंख्यां मैं सुरमा स्यार[3] ।

रक्षा बन्धन "सलूमण" या "सलोने" श्रावण के शुक्ल पक्ष का एक अन्य त्योहार है । बहनाई बहन के प्यार का प्रतीक है । इस दिन बहिनें अपने भाईयों की कलाई पर राखी बांध कर अपनेपरस्पर स्नेह को गूढ़ से जुहार करते हैं :-

पहुंची[4] बंधवाले रे बीर,
तनै लड़ रही बाहण माँ जाई ।

---

1. बरगद के पेड़ की शाखा ।
2. छुरा ।
3. डालना ।
4. राखी ।

रक्षा बन्धन के तीन दिन पश्चात भादों की कृष्णा पक्षी तृती-या को "बूढ़ी तीजों" का त्यौहार मनाया जाता है। बूढ़ी तीज का अभिप्रा-य यह समझिए की श्रावण शुक्ला तीज से उसमें भरा पन कुछ छूटा था इसकी वरन परीपूर्ति के फलस्वरूप रक्षा बन्धन का त्यौहार मनाया गया यही आज कुछ कुछ छूटा सा हो गया है।

गूगा नौमी से पूर्व भादों की अष्टमी का जन्माष्टमी ..जो की कृष्ण का जन्म दिवस है, मनाया जाता है। इस दिन व्रत रखा जाता है। मन्दिरों में कृष्ण की मनोहारी झाँकियाँ प्रस्तुत की जातीहैं "मेरी कृष्ण का जन्म होया बाबा की देलों में" अर्धरात्री को श्री कृष्ण भगवान का जन्म होता है। कृष्ण पूजा भगवान से होता है... सामूहिक आरती होती है। रात्री के 12 बजे तक व्रत रखा जाता है मन्दिरों में प्रसाद के रूप में पंजीरी चरणामृत आदि मिलते हैं। कृष्ण की लीलाओं के भजन गाये जाते हैं :-

मेरे चरणों में लाग्या मेरा ध्यान,
बाँसुरी की धुन[1] सुन के।
राजाँ ने छोड़ दिया राज करणाँ,
राणियाँ[2] ने छोड़ दिया रणवास,।
बाँसुरी धुन सुन के।
पालियाँ[3] ने छोड़ दिया गऊएं चरावणी,
गऊआं ने चरणा छोड्या घास,
बाँसुरी कीधुन सुन के।

गूगा नवमी को "गूगापीर" की छड़ी घर घर घूमती हुई एक सामान

---

1. मुरली की आनन्दमयी तान।
2. रनिवास।
3. पाली।

संगम स्थल पर पहुंच जाते है। मोर के पंखे का एक बाँस के सिरे पर बांधकर "छड़ी" तैयार की जाती है। डेरू वाले इस छड़ी को लेकर गूगे की पंवाड़ा के गीत गाते चलते हैं। और गूगे की ओर से पूजा ग्रहण करता हुआ चलता है पूजामें अन्न और पैसे मिलते हैं और डेरू वालों को अन्न। मेले का संगम स्थल प्रायः तालाब जहाँ लोग रक्षा बन्धन के पवित्र धागे को विसर्जित करते हैं। गूगापीरी की पूजा थोड़ी बहुत सारे भारत चलती है। गूगापीर हमारी मर्यादा तथा निर्बल रक्षक एवम् नाग पूजक वीर था। गूगा उत्सव के निमित्त गीत गाये जाते हैं :-

नीली का घोड़ा, गोरा बाँका,
धरती में धसा समाय।
आ राणा एक बरी घर आ.....।
* * * *
और सब सब घर गये, तूं क्यों हरियाली आँख,
वारी मेरे जाहिर पिर रहिया ..।......।

भादों कृष्णा चतुर्थी को गणेश चतुर्थी का उत्सव मनाया जाता है। भादो कृष्णा अष्टमी को दुबड़ी का त्यौहार मनाया जाता है। इसी दिन स्त्रियाँ अपने पुत्र और पति की समृद्धि के निमित्त उपवास करती हैं :-

दूबो ए दूबड़िया,
सहिरे जाये री घर भरिया।
गोद खिलाये री घर भरिया,
सास जाये री घर भरिया।

एक पट्टे पर मिट्टी से बड़-बच्चे आदि बनाकर दूब और कुम कुम आदि से उनकी पूजा करती है। माँ माताकी पूजा की जाती है। पुत्र जन्म

---

1. युवक।
2. बार।
3. दूब का नाम।
4. न्यौछावर होना।

के उपलक्ष में तो विशेष उत्सव मनाया जाता है । भी माता की पूजा से धन-धान्य, पुत्र-पौत्र की वृद्धि की कथा कहकर दूबड़ी की पूजा सम्पन्न की जाती है । तत्पश्चात इसे पटड़े को पास के तालाब में विसर्जित किया जाता है ।

भादों की अमावस्या को "सतियों" की पूजा सम्पन्न की जाती है घर की लड़कियों के अतिरिक्त शेष सभी को सतीपूजा का हक होता है । पुत्र जन्म पर यह पूजा विशेष रूप से सम्पन्न की जाती है । पुजापे की सामग्री ग्रहण करने का अधिकार केवल कन्याओं को है ।

भादों की पूर्णिमा से श्राद्ध (कनागत) आरम्भ हो जाते हैं जो आश्विन मास के दूसरे पक्ष तक चलते हैं । कनागतों के बाद देवी पूजा आरम्भ हो जाती है । देवी पूजा शिवरात्री की तरह वर्ष में दो बार मनाई जाती है अतः इसे छः माई या छः माई अष्टमी का त्यौहार कहते हैं यद्यपि चैत्र और आसौज दो महीनों में देवी पूजा होती है परन्तु इस मास की पूजा का विशेष महत्व है क्योंकि इन दिनों कन्याएँ अपने घरों में सांझी देवी की प्रतिमूर्ति और उसकी सांझी होने के कारण सांझी की पूजा करतीं हैं । तत्पश्चात सांझी की पूजा की जाती है :-

जी जी आरती-बारी सांझी माई के ।
सोलह कनागत पितरों की ।।

* * *

आरता है आरता,
सांझी माई आरता
के ओढ़ेगी ? के पहरेगी ? क्यों है की माँग भरावेगी ।

दसवें दिन सांझी को विदा करके उसके पति के घर भेज

भेज दिया जाता है जौ तब गैत गुड़ाकर :-

साँझी चाल्ली सासरे ।

जौ तावैल जुड़ाइये होराम ॥

देवी की "साँझी मूर्ति" को मटके में रखकर उसे पानी में तैराते हैं । बीच में एक दीपक स्थापित कर दिया जाता है । प्रातःकाल उसे साँझी को मटके से डालकर तालाब में विसर्जित कर दिया जाता है । एक सखी दूसरी को साँझी माईको जभी जभी सासरे विदा करने पर प्रताव बाटती है ।

आश्विन शुक्ला दशमी को विजय दशमी (दशहरा) का त्योहार मनाया जाता है । विजय दशमी से पूर्व नौ दस दिनों तक स्थान स्थान पर रामलीला होती है । राम की सवारी बड़े उत्सव के साथ सारे शहर में निकाली जाती है तथा रामलीला मैदान पर रावण और उसके सम्बन्धी कुम्भकरण, मेघनाद अहिरावण आदि के पुतले बनाकर जलाये जाते हैं । शहरों में गाँवों में विजय दशमी को मेलों का विशेष रूप में उत्साहपूर्ण आयोजन होता है । विजय दशमी होने की वजह से यह राम की पूजा विजय के रूप में मनाई जाती है विजय दशमी को गोबर की दस टिकियाँ बनाई जाती है दरी पर रखकर उसी अवधि में उगाये जाने वाले जौ से पोक मारी जाती है ।

कार्तिक मास में पौ फटने से पूर्व स्नान करने का बहुत महत्व माना जाता है कार्तिक में सुबह सुबह स्नान करना बड़ा ही कठिन काम है । उदाहरणार्थ :-

पिरस बलगो अपणी बालम सूआ, ।

कहो तो कातक न्हाल्यूं हो राम ।

कातक न्हाणा बड़ा ही दुहेला,

लाईयों बाम बणीये होराम ।

कातक की शीतलता में शीत होने के बावजूद भी औरतें लड़कियाँ कातक में स्नान करने जाती है कातक में ?सारा मौका " करती हैं। इस मास में सूर्योदय से पूर्व कन्याएं, स्त्रियाँ गाना गाती हुई तालाब या कुएँ पर स्नान करने जाती हैं। इन दिनों गणेश और पथवारी की पूजा करती हैं क्योंकि वही भूले हुओं को मिलाने वाली है :-

पथवारी ए पथ की राणी
भूल्याँ ने राह बतेरा ने पाणी
बिछड़्याँ[1] ने आण मिलाईयो।
पथवारी ए तै सींचे[2] कुंआरी
हूँ घर घर पाइयाँ।
पथवारी हे तै सींचे सुहागण,
हूँ ?? पाइयाँ।
पथवारी ए तै सींचे सपूती,
हूँ पूत पर पाइयाँ।
पथवारी ए तै सींचए बूढ़ी,
हूँ बैकुण्ठ बासा पाइयाँ।
हूँ हूँ वर घर पाईयाँ।

करवाँ चौथ (करवा चौथ) कार्तिक मास में कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन रखा जाता है। स्त्रियाँ इस व्रत बड़े चाव एवम् श्रद्धा से करती हैं। व्रत होने पर भी इसे त्यौहार के समान ही मनाया जाता है। प्रातः चार बजे या इससे भी पूर्व उठकर औरतें कुछ चूरमा या अन्य कोई मिठी (मीठी) वस्तुएँ खा कर ?? लेती हैं क्योंकि इस व्रत में चन्द्रोदय तक एक जल के सिवा कुछ नहीं खाया जाता। स्त्रियाँ स्नान आदि से

---

1. बिछड़े हुए।

2. सींचना।

निवृत्त होकर गणेश पूजन करके चाँद के उगने पर करवे मिष्ठान से भरकर रखती हैं - पानी का पात्र भी रखा जाता है। व्रत के बाद करवा लेकर सभी करवों को क्रमशः उससे बदल दिया जाता है करवा चौथ के व्रत की कहानी सुनी जाती है। देवीपूजनोपरान्त करवों को ब्राह्मण को दे दिया जाता है। चन्द्रोदय होने पश्चात् को अर्घ्य देने के बाद ही स्त्रियाँ भोजन करती हैं। सौभाग्य की इच्छा लेकर ही स्त्रियाँ इस व्रत को रखती हैं।

कार्तिक मास में ही कृष्ण पक्ष में होई। अहोई। का व्रत जिसे अष्टमी के नाम से जानते हैं, किया जाता है। इसमें स्याऊ सहित भगवान शंकर की पूजा का विधान है। स्त्रियाँ ऐसे शुभावसरों पर पुत्रवती हाथों में मेंहदी लगाती है। इस दिन नये नये वस्त्र और स्वर्णमयी आभूषणों से स्वयं को सजाती हैं। दीवार पर होई बनाई जाती है "स्याऊ सहित भगवान शंकर एवम् अपने परिवार का चित्र" उसका पूजन करके चन्द्रोदय पर उसे अर्घ्य देकर वह अपनी सास का आशिर्वाद करती हैं। यह व्रत पुत्र, पुत्रवधू की कामना के लिए किया जाता है।

तुलसी माता के व्रत और उसकी कृष्ण भगवान के साथ विवाह का भी विधान है। तुलसी माता को शुभकामनाएँ कल्याणकारी बताया गया है :-

तुलसी माता मैं तुम चाहूँ, निहुरा हीरूँ तेरा,
मैं अमर बिसारा तेरा।
कृष्ण जी का कान्हा पहनो पीताम्बर की धोती पहनो,
तो क्या बिसारो तेरा।
निहुरा हीरूँ तेरा मैं अमर बिसारा तेरा।

---

1. कल्याण।

पुत्रों का विवाह कृष्ण से किया जाता है. इसलिए लोक गीतों में अनेक कृष्ण को माध्यम बनाकर उसके गीत प्रचलित हैं :-

घर लेवाल्येतीलो प्रणी हो राम
आप अकेला साकुल खोलिए
हे रे मेरी मांसी के जाय खोलिए रे मेरे बीर ।
के तेरे हाथ्थी रे बीरा ढाल कटारी
के तेरे हाथ्थी रे गुप्ती तीर । हे रे मेरी ....

कार्तिक की अमावस्या को दीपावली (दीवाली) त्योहार बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। दीवाली के दो दिन पूर्व धन तेरस को "यमदीवा" या "गोरीदीवा" जलाया जाता है। छोटी दीवाली और फिर बड़ी दिवाली । दीवाली की रात्री को घर के आंगन मकानकी छतों, मुंडेर आदि पर दीपक जलाकर कतारों में रखे जाते हैं । रात्री को लक्ष्मी पूजन किया जाता है और फिर बड़े बूढ़ों के चरण स्पर्श आशिर्वाद प्राप्ती ।

कार्तिक शुक्ला को गोवर्धन पूजा होती है । मन्दिरों में इस दिन "अन्नकूट" होता है जिसे प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता है गोबर से धरती पर गोवर्धन (गोरधन) बनाकर उसकी पूजा की जाती है ।

शुक्ला दूज को "भैयादूज" दिन का पर्व होता है - इसमें भाई अपनी बहिन के घर जाता है और उसे उपहार स्वरूप कुछ न कुछ भेंट प्रदान करता है ।

कार्तिक शुक्ला अष्टमी को गोपाष्टमी को गौओं को ग्रास देकर उनकी परिक्रमा एवं पूजा की जाती है क्योंकि गायें कृष्ण भगवान को बहुत प्रिय थी वे उनको बड़ा दुलार करते थे गाय को माता के रूप में भी स्वीकार

किया गया है। यह पूजन वंश वृद्धि की कामनाके लिए होता है। भाव का गीत देखिए :-

मेरा दूध पीवे संसार, घी तैं खावे खिचड़ी
मेरे पूत कमावै नाज, गऊ माता की जई
जब भी मेरे गले पै छुरी
मेरे कित गए सिरी किसन भगवान ।

कार्तिक शुक्ला एकादशी को "देवोठनी ग्यास" मनाई जाती है। किसी परात या तसले के नीचे देवताओं के चित्रित लकीरें लगाकर वहाँ गेहूँ गुड़, रूई, बेर आदि वस्तुएँ रख दी जाती हैं। घर के देव उठाने वाली क्वारी कन्याएँ उस सामग्री को ग्रहण करती हैं। कहते हैं इस दिन क्षीर सागर में भाद्रपद की एकादशी को सोये हुए विष्णु भगवान जागे थे। इस दिन विष्णु भगवान की पूजा होती है। इस दिन से अगले आठ महीने हरियाली एकादश तक विवाह का मुहूर्त रहता है। देव उठाने के लिए गाये जाने वाले गीतों की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :-

डाभ कटाओ हे डाभ कटा के सेवड़ी बटाओ हे ।
सेवड़ी बटाय के देवाँ नै सुआओ हे ॥

* * * *

उठो देव बैठो देव हाटे कटी चटकाओं देव ।
आज हरियाँ पाँच पछेटे ने बहन...[2] थारा बेटा ॥

* * *

औरे धौरे हरे अनार, ये भाई ..[3] तेरे यार ।
औले कौले लटके जामी, ये भाई ..[4] तेरी भाभी ॥

---

1. भाव ।
2. कोई नाम ।
3. भाई का नाम ।
4. भाई का नाम ।

देवठणी ग्यारस के कुछ अन्य गीतों की बानगियाँ प्रस्तुत हैं :-

फूल फूलड़ी के आया नाग, राज करै...का बाप
फूल फुलड़ी के घाल्यो बाड़की, राज करै..की दादी ।।

* * * *

दे कुण्डे हाथ जे नाम, दे ऊठी दोवळ नाम ।
ऊठो हे म्हारे .... के देव ।।

कार्तिक पूर्णिमा को "गंगा स्नान" करने की परम्परा का विशेष महत्व है । ऐसा कहा जाता है इस दिन भगवान का मत्स्य अवतार हुआ था । इस दिन किये गये दान का फल दस यज्ञों के समान माना जाता है । गंगा स्नान के एक गीत में विरहिणी सीता की विरह वेदना दृष्टव्य है :-

आया है गंगा जी का स्नान, के हम तुम संग चले मेरे राम ।
आप उतर गये पार, राधे ओला दूर रहा मेरे राम ।।
ज्यों रे पीतलड़ी में घीव की रखड़ी है छोड़ गये मेरे राम ।
ज्यों रे कड़ाही में तेल कि रखती है छोड़ गये मेरे राम ।
आप उतर गये पार, राधे ओला दूर रहा मेरे राम ।।

कार्तिक का एक अन्य लोकप्रिय गीत का पहला चरण सुनकर हृदय आनन्द से भर उठता है :-

छोटा सा छोकरा गऊ चरावै,
पानी प्यावो चन्द लाल,
हे री कोई राम मिले भगवान ।

मंगसिर में त्यौहारों का अधिक जोर न रहता है "मकर संक्रान्ति" भी पौष मास में मनाई जाती है । वैसे तो यह माघ के मास में आती है । इसका नाम "यम-तर्पण-चतुर्दशी" बताया जाता है । इस दिन सभी सूर्योदय से पूर्व उठने का प्रयत्न करते हैं । बच्चे आग जलाकर उसके समक्ष बैठ जाते हैं । खिचड़ी, गुड़ और तील दान किया जाता है । "ओवर.. देवर को दिया जाता है + भाभी द्वारा । बहू अपने बड़ों का मिठाई एवम् वस्त्र आदि देकर सम्मान करती है ।

मकर संक्रान्ति को गरीब एवम् भिखारी को भूनने आदि दिये जाते हैं। बन्दरों को भी खिलाया जाता है। यह पूर्णरूपेण दान पुण्य का त्यौहार है।

पंजाब की लोहड़ी का रूपक जिसे यहाँ तिलकुटा कहते हैं प्रायः संकट-चौथ (गणेश-चतुर्थी) को तैयार किया जाता है। इस दिन माताएँ अपने पुत्रों की हितकामना के लिए उपवास करती हैं। धन्य धान्य से परीपूर्ण करने वाले, संकट से मुक्ति दिलाने वाले इस व्रत को यहाँ की स्त्रियाँ उत्साह एवं साहस से मनाती हैं।

"बसन्त पंचमी माघ शुक्ला पंचमी को मनाया जाता है। बसन्त का यह पहला त्यौहार है। वास्तव में बसन्त की मस्ती फागण में देखने को मिलती है जबकि बुड्ढी, कंवारी और यौवनाएँ सभी रायसं में मस्त देखी जाती हैं :-

"बुड्ढी ए लुगाई मस्ताई फागण में
बिन घाली मस्ताई फागण में
काची अम्बली गदराई फागण में"

"काच्ची आम्बियाँ" नई फूटती हुई जवानी का स्वाभाविक एवम् बिम्बात्मक चित्रण है। बसन्त की छटा का अद्भुत सौन्दर्य की छिटारिका :-

मोर मुकुट की लटक बसन्ती,
चन्द्रकलाँ की लटक बसन्ती।
सिर पर सोहे सितबन,
कुण्डल छविहार बसन्ती॥

बसन्त स्वागत तथा फागुन के आरम्भ से होली के संगीत की मन्द एवम् गम्भीर परन्तु वेग वती धारा अविरल रूप से बहने लगती है।[1] फागुन मास की पूर्णिमा को होली कादहन होता है-झाड़ कांटों का ऊंचा सा ढेर लगा दिया जाता है और उस पर "बड़ कुल्ले" जो गोबर के बने होते हैं, डाल दिये जाते हैं। जब औरतें सज संवर कर ढाल, बड़कुले आदि लेकर होली की धोक मारने जाती हैं तो उनके कण्ठ से मधुर स्वर लहरी गूंज उठती है :-

के रे करण है जौ बोये,
के रे करण है बांस ।। " हंसा बोलिए मेरे राम
तरन करण है जौ बोए,
लाठी टेकण है बांस । " हंसा बोलिए मेरे राम

होलिका की सातबार परिक्रमा करते हुए निम्नलिखित गीत गाती है :-

...[2]काटटैवी की बाली ईश्वर पूरे होली रे ।
पूर पूर मेरी माँ के जाए सब दिन खेलैं होली रे ।

होली दहन पर माँ की पीड़ा का आभास देखिए कि होलीका बचपन के रूप में प्रहलाद यानि उसके पुत्र को साथ भस्म करने की नियत से बैठी है :-

मात थारी बचपन बेटा होया अब तीज बैठी री ,
मात थारी बचपन ।

जब री प्रहलाद होली में बैठाया,
बींड[3] बलता लिकड़ के आया,
मात था री बचपन ।

---

1. हरियाणा का एक सांस्कृतिक अध्ययन व डा० शंकर लाल यादव के "लोकगीत" के.लेख से पृ० 308
2. कोई नाम ।
3. बींद ।

मुहूर्त के अनुसार होली का दहन होता है होली के दहन के अवसर का लोक गीत :-

होली आ आयी आ है,
पकड़ियाँ लोबाँ ।

अर्थात मस्ती का अवसर आया आ रहा है जो, गेहूँ और जौ की बालियाँ होली का दहन से पूर्व दिखाई जाती हैं उनको अब दहन के बाद भून लिया जाता है। होलीका दहन के अगले दिन फाग अथवा धुलहण्डी का फाग खेला जाता है। फागें गाई जाती हैं डफ आदि बजाए जाते हैं लोग आपस में रंग डालकर प्रेम प्रकट करते है :-

होली की खेलें डफली बजा के गलियों में उड़ाये गुलाल ।
कठियो गुलहेटण ते होली खेलण आवे नवाब
काली री गुलहेटण छाज्या री आती
मूरकी आता री नवाब
होली की खेलें डफली बजावै नर भर गारे री गुलाल ।

यहाँ इस अवसर पर "धमाल राग गाया जाता है जिसपर डफ बजाया जाता है। इसमें इतिहास, पुराण, श्रृंगार एवम् घरेलू वातावरण के रंगारे होते हैं। एक पौराणिक चित्र देखिए [1]:-

लिछमण करै बाया लगा रे शक्ती लिछमन के ।
ऐसा रे कौन कोई वीरा जे जिवाले,
आधा राज सवाई लक्ष्मी ।...लिछमण के..
कै तो जिवाले सीता रे सतवंती,
कै तो जिवाले हनुमान जती ।..लिछमण के ..

इसके पश्चात फिर वही चैत मास का आगमन "शीतलामाता सेढ मसाणी" का त्यौहार आ जाता है। वर्ष भर की वही परिक्रमा और समय के साथ त्यौहारों का वही चक्र ।

---

1. हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन डा० शंकर लाल यादव के "लोकगीत" के लेख से पृ० 308

4: ऋतु - गीत :- लोक गीतों में काफी संख्या में ऋतु गीत प्राप्त होते है ।लोक लोक गीतों में ऋतु गीतों का अपना महत्वपूर्ण योगदान होता है ।-प्रकृति के रमणीय संसार में लोक जीवन का विशेष सम्पर्क रहता है । नगर की संघर्ष एवम् कोलाहल मयी सभ्यता से परे सामान्य ग्रामीण जनता प्रकृति के सुखं शान्तिमय वातावरण में अपने जीवन की श्रेष्ठतम निधि को उपलब्ध कर लेती है । प्रकृति के उन्मुक्त प्रांगण में लोक मानस का स्वतन्त्र साम्राज्य होता है । सूर्य की सुनहरी किरणें उनमें भावना की फूल खिलाती है चन्द्रमा का सुधा-सिक्त प्रकाश उसमें कल्पनाओं का माधुर्य बिखेरता है । समीर के चंचल झोंके उसमें नवीन कामनाओं की तरंगे उत्पन्न करते है । पावस का मेघाच्छादित प्रकाश जब नन्हीं -2 बूंदों से पृथ्वी का अंक भर देता है और मधुमास का उमड़ता हुआ सौरभ जब सम्पूर्ण वायु मण्डल में मादकता बिखेर देता है तब लोक कण्ठ पर अन्तर्मन की भावनाएं मधुर - गीतों की स्वर बनकर लहर उठती है ।प्रत्येक ऋतु मानव जीवन में मौलिक प्रेरणा बनकर आती है । और संगीत सौन्दर्य भर देती है । प्रकृति का कण-2 लोक गीतकार के प्राणों को स्पन्दित करके नये -2 गीतों की रचना करता है ।

कांगड़ लोक गीतों में ऋतुओं के माध्यम से अभिव्यक्ति हुई है जिनमें स्त्री -पुरुषों की विभिन्न आन्तरिक परिस्थितियों का निरूपण होता है ।विभिन्न ऋतुओं आने वाले विभिन्न मासों श्रावण, अश्विन, कार्तिक, फाल्गुन आदि के गीतों का उल्लेख है ।

सावन (श्रावण) के गीत :- वर्षा ऋतु के आगमन सूचक कजरारे बादल आकाश में दौड़ रहे है । इस से पूर्व बरसात की इन्तजार आषाढ़ से ही शुरू हो जाती है । इसी विषय में जब किसी प्रिय जन से लम्बे अर्से बाद मुलाकात हो तो कहते है - "भाई। मैंह जियो बाट्ट देखी तेरी ।"

सावन का महीना वर्षा काल के चार महीनों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस ऋतु में स्त्रियाँ सावन और झूले के गीत ही अधिक गाती हैं। सावन के गीतों में अनेक प्रकार की अभिव्यंजना प्राप्त होती है :-

सावन का महीना मेरा रोम-भिम बसी
मन मैं समझाऊं तो भी बैरी जोबन तरसै

सावन की अत्यन्त उत्कट प्रतीक्षा रहती है।

निम्न गुच्छिकाएं अर्थात निंबोलियाँ लग गई है-पक गई है सावन आना ही चाहिये:-

नीम के निंबोली लागी, सावन कद आवैगा।
आवै री मेरी माँ का जाया गाड़ी भर-2 ल्यावैगा।

बरसात बड़ी भली लगती है। आकाश में बिजली चमक रही है परन्तु पति देव (प्रेमी) नहीं है उनकी याद रह-2 कर सता रही है :-

रे गगन गरजै झिमाले[1] बिजली, पड़ै बुन्दियाँ भरै क्यारी,
सबै बरखा लगै प्यारी ।
कहाँ गये सेज के रसिया ? लगा गये एक से लिकिया,
कहाँ गये बाग के माली ? लगा गये एक ही डाली,
रे गगन गरजै झिमाले बिजली ।

विवाहिताएं भी इस मास में अपनी मायके जाना अधिक पसन्द करती है क्योंकि उन्हें रह-2 माँ का दुलार एवम् स्वतंत्र रूप से झूलने का समय याद आता है :-

नान्हीं-[2]2 बुन्दा मैं हे सावण का मेरा झूलणा,
एक झूला घाल्या मैंने बाबल के राज में,
बाबल के राज में ।

1· चमकती है।

2· छोटी-2।

और "झूलण लागी है मां मेरी बाग मैं" की संगीत स्वर लहरी वातावरण मैं रस घोल देती है :-

झूलण लागी है मां मेरी बाग मैं री ।
बारी कोए संग सुहेली ब्यार[1] ।
झूलण लागी है मां मेरी बाग मैं री ।।
कोए पंदरा की मा कोए बीस की री ।
मां री कोए संग सुहेली ब्यार ।
झूलण लागी हैं मां मेरी बाग मैं री ।।

" झूले के गीत अथवा हिण्डोला राग सावण की मधुरिमा को चार चांद लगा देते है । मल्हार राग की तरह पवन आधारित ये गीत सावण के वातावरण की अनुभूति कितना प्रगाढ़ बना देते है । इसे तो कोई भुक्त भोगी ही जान सकता है :[2] झूले के कुछ एक गीत इस प्रकार है :-

बहू :- आया री सासड़ राणी सावण, पाटड़ी[3] घड़ा दे चन्दण रुख की[4] ।
सासड़ :- म्हारे तो बहु चन्दन न रुख[5] जाय घड़ाइयो अपने बाप के ।
बहू :- आया री सासड़ सावन झूल बटा दे पीले पाट की ।
सासड़ :- म्हारे तै बहु पीला न पाट जाय बटाईयो अपने बाप के ।
बहू :- आपणा नै दे दी पाटड़ीझूल म्हारै तै आगै धर दिया पीसणा ।
ओढ़ री सासड़ थारा पाट कहूं बेठ थारा पीसणा ।
आवै री सासड़ मां जाया वीर इसने छंदा[6] दे भाई बाप कै ।
सासड़ :- इसकै बहु मोका नाय कातक पाछै जाईयो अपणे बाप कै ।

दूर का नूर झूले पे कितना निखर आया है उसकी

---

1. चार । 2
2. हरियाणा के लोक गीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ० ।।
3. झूलने की पट्टी [सीढी]
4. घड़ा बनवादे चन्दन के वृक्ष की ।
5. वृक्ष ।
6. भेज दे ।

शुकसारिका का संवादात्मक वर्णन :-

सुनण आली बोलता[1] है के बोलण का टोटा
सुनण बाहर चल्याँ करे है पींच बागण में
मीठी बोली तेरी[2] है जणो कोयल बागण में
तेरे बागण में ललकार उठे चमक रहा घोटा ।..सुनण आली.
तरह तरह के वाये है बोदह बागण की डाली
पड़ के बाड़ खड़ा है मैं रोवे तब्बी बागण आली[3]
तेरे हूँ पे लटके कालाबाग सा मोटा ।..सुनण आली ..
मोटी मोटी आख्याँ के माह डोरा स्याही[4] का
के के गुण मैं कहूं तेरी इस बरन कलाई का
बल्ला सा मुखड़ा तेरा जर्यों धूर का लोटा ।..सुनण आली..

प्यार भरे वार्तालापका एक अन्य धार्मिक लोक गीत जिसमें कसमें खाई जाती है :-

मोटी 2 बुन्दाँ बूड़े पे आई, सोनावक है बाहर लागी
हो मन्ने तेरी सौंह - अब वो भीजण[5] बाहर लाग्गी
तो मामक है भारी लागी-ओ मन्ने तेरी सौंह ।
अब वो भारीभीजण लाग्गी-तो मामक है बैल छुडाई[6]
हो मन्ने तेरी सौंह -बाजणी टीबैल चिपके है मारे[7]
तो मामक है बांह छुडाई -हो मन्ने तेरी सौंह ।

"चातक भी विरहिणी तथा विधवा के हृदय में पीऊ-पीऊ बोलकर मानो तेल के छींटे मारता है । हरे भरे नीम के डालों में छीपा हुआ

---

1. डाली जाती है ।
2. चमक ।
3. पैदा करने वाली ।
4. काजल ।
5. भीगने लगी ।
6. बैल जोड़ा ।
7. बैल ।

चातक विरहिणी को बैरी की तरह खटकता है[1]।"

कोय पी पी -पपैया है बैरी बोलता,
कोयं बोले है पीऊ पीऊ बोल .....
तू मत बोले रे पपीहा बैरी मौन मैं ।

सिन्धारे की कोथली तैयार करने के लिए अपनी माँ से बहन का भाई आग्रह करता है :-

मीठी तो करदे माँ कोथली, सामण री आया गुलता,
मीठी तो करदे माँ कोथली, जागा री बाहण के देस,
मौहरां ने छू ला दिए ।

काली और सफेद दोनों प्रकार की घटाओं का भी वर्णन इसी मास में मिलता है :-

काली घटा डरावनी,
धौली तो बरसण हार ।

यानि काली घटा तो केवल भयभीत करने वाली होती है परन्तु सफेद घटा तो मूसलाधार बरसात का रूप धारण कर लेती है ।

<u>बारह मासा</u> :- श्रावण के गीतों "बारह मासा" का विशेष उल्लेख मिलता है । "बारहमासा" गीतों में वर्ष के बारह महीनों में होने वाले कार्यों के सुख दुखों का विवरण प्राप्त होता है । इसीलिए शायद इनका नाम "बारह मासा" पड़ा । "इनमें विरह जन्य वेदना का कथन रहता है । सावन के मन भावन काल में वियुक्ताओं का विरह जब उत्कर्ष को प्राप्त होता है, तब उसका प्रवाह बारह मास के रूप में फूट पड़ता है[2]।"

---

1. हरियाणा के लोक गीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ० 13
2. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ० 229

अपभ्रंश तथा मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में भी "बारह मासा" का वर्णन और षड् ऋतु वर्णन दोनों के साथ-2 आये हैं । राजस्थानी बारह मासा में कृषक के दैनिक जीवन की व्याख्या भी होती है और कृषक के सादे जीवन का इतिहास भी । बारह मासा और षड् ऋतु वर्णन को लोक तत्व का प्रभाव ही कहा जा सकता है । इसी शैली पर " छः मासा " और " चौमासा " भी होते हैं ।

हरियाणवी " बारह मासा " जिन्हें बारह मासिया के नाम से भी पुकारते हैं ये विरह व्यंग्य हैं । पति के प्रवासी होने पर विरहिणी जीवन के हाव भाव को पूरा करने में असमर्थ है । काश ! कहे कि उसके पति देव (प्रेमी) घर म्हें होते[1] :-

चैत मैं, री माँ- मेरी , सामणी हो ,
बैसाखी बैसू री बेरी सर्ग भड़ुया जी ।
जेठ मैं, री माँ- मेरी , चढ़ूंगी छू,
साढ़ मैं बरसे , री माँ- मेरी , राम जी री ।
सावण मै , री माँ- मेरी , आवेगी तीज ,
भादुए मैं , आवे सलोंगे जोर की री ।
आसोजी , री माँ- मेरी , देवता का है ,
कातक मै , लम्बी री नाली बाजरा जी ।
मंगसीर मैं, री माँ- मेरी , जाड़ुया आज्या,
पोह मैं , जाड़ुया री बेरी जोर का ।
माह मे महाजन लोग
फागण मैं , फाला खेलें री सामनी ।

जायसी के बारह मासा में और हरियाणवी बारह मासिया की विषय वस्तु में अद्भुत साम्य प्रतीत होता है ।

---

1. हरियाणा के लोक गीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृष्ठ 23

दूसरे भाव में सभी मास सुहावने होते हैं, यदि घर में प्रियतम हों। उन्हीं के साथ पर्व - त्यौहार मनाने, कृषि कार्य करने, पूजा स्नान आदि कर्म करने में आनन्द मिलता है। वर्ष भर का प्रवास असह्य है। हे सुए। यदि तू " कुभाखा " बोलेगा तो मैं क्षमा नहीं करूंगी। भात - बरात में गाये जाने वाले बारह मासिया शैली के भी यहाँ प्रचलित हैं :-

चैत ज मास सुहावन्यां सुआ रे, जे घर हों हरके लाल,
मैं लाडली हरयाली सुआ रे।

मल्हार :- सावन में गाये जाने वाले गीतों में यहाँ मल्हार का मुख्य स्थान है। इसका प्रधान विषय विरह वियोग होता है। " मल्हार " गीतों में छन्द शास्त्र के नियमों का पालन नहीं होता है। रस की दृष्टि से भी ये गीत बड़े ही कोमल और हृदय स्पर्शी होते हैं। मल्हार के गीतों में विरह जन्य स्थितियाँ कई कारणों से उपस्थित होती हुई दृष्टि गोचर होती हैं। बाल विवाह के कारण यौवनावस्था में ही होने वाली विधवाओं का करुण क्रंदन या पति के वियोग में वर्षा ऋतु की मनमोहिनी छटा के कारण उत्पन्न विरह या पारिवारिक सम्बन्धियों द्वारा मिलने वाले अपमान की स्थिति में इन गीतों की निष्पत्ति होती है। नीचे के गीत में मिहर पीहर और इसकी तुलना यहाँ की बालिका स्वयं सचित्र कर रही है :-

हरि हरी ये जरी की हे माँ ! मेरी चुन्दड़ी जी।
हे जी कोई दे भेजी मेरी माँ ने साथ,
इन्द राजा ने भिजोए लगा दई जी।
जहाँ तो वहाँ है माँ मेरी छुहारू जी।
ए जी कोई बीच बाबुल के लाडू,
इन्दराजा ने भिजो ए लगा दई जी।

आश्विन (आसौज) के गीत :- आसौज के शुक्ल पक्ष से पहले दस दिन साँझी के गीत गाये जाते हैं। आसौज शुक्ला प्रथमा को मिट्टी से बने चान्द सितारों से दिवार पर एक चित्र बनाया जाता है। मिट्टी के आभूषणों से उसको सुसज्जित करते हैं। जो स्त्री अपने मोहल्ले में सुन्दर चित्र की स्थापना करती है उसकी प्रशंसा की जाती है - यही चित्र "साँझी माई" कहलाती है रात्रि को इसको भोजन दिखाया जाता है :-

मेरी साँझी औरे धौरे फूल रही कचनार,[1]
आन मैं तन्नै छू[2] लेगा के तेरे भाई ।
तेरे पाँच पचास भतीजे नौ दस भाई,
आन बेबाँ[3] का ब्याह रचाया किसकी करी सगाई ।
पाँचाँ का तो ब्याह रचाया, दसाँ की सगाई... .

एक अन्य गीत में साँझी की सुन्दरता के बहाने सासू ससुर ननद की कदर तोड़ी जाती है :-

हे मेरी साँझी, तेरी चम्पा फूली आँखें,[4] कुरबान[5] साँझी ।
हे मेरी सासू, तेरी गिल गिल तोडूँ पाँडू,[6] कुरबान साँझी ।
हे मेरा सुसरा, तेरी दाढ़ी लिकड़ा लवरा, कुरबान साँझी ।
हे मेरी ननदो, तेरी तौड़ घड़ा बडूँ अनी,[7] कुरबान साँझी ।

श्राद्ध अथवा कनागतों के पश्चात यह साँझी का कार्यक्रम शुरू होता है । बांगर लोक गीत में इसकी प्रामाणिकता देखिए:-

साँझी साँझा है कनागत[8] पछली पार
देखण चाली है संझा लेखिजार
वो तो देखिया भाला है चंदा हार जड़ाऊ[9] ।
देखण चाली है शान्ति के लखिआर
वो तो देखिया भाला है चंदा हार जड़ाऊ ।

---

1. एक सुन्दर झाड़ । 2. छूना । 3. बहिन ।
4. अँखियाँ । 5. बलिहारी । 6. पपड़ी ।
7. घेरा लोहे का । 8. श्राद्ध । 9. हार जड़ाया ।

अब देखिए साझी के लश्कार का[1] रूप, सवारी एवम् जुलूस :-[2]

दूमों सी ठाठर रै कै फूलों की महकार
सोना का छोड़ा रै कौन करै असवार[3]
कै मैं हूँ चन्दा है, सांझी का लश्कार
आ मेरे माई जाये रै, के बैठो लाल बिछाए
थारे चौकूयां ने दाजा रै, लूटने सब भर लौर

विजय दशमी को साझी को उतार कर एक सुराख वाली मटकी में रखकर, चान्द सितारों पर दीपक जलाकर रख दिया जाता है स्त्रियाँ इस पात्र को गाँव के समीप सरोवर में विसर्जित कर देती हैं। इस दृश्य की मोहकता मन को बरबस ही मोह लेती है। ऐसा आभास होने लगता है मानो अम्बर के सितारे सरोवर में तैर रहे हों। साझी की यह प्रथा देवी पूजन का ही एक रूप है। इन्हीं दिनों पड़ने वाली अष्टमी भी तो दुर्गाष्टमी के रूप में मनाई जाती है।

<u>कार्तिक (कातक) के गीत :-</u> धार्मिक रूप में इस मास की महत्ता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। भोर में ही तारों की छाँव में मोहल्ले की स्त्रियाँ स्नान करने के लिए गीत एवम् भजन गाती हुई जाती हैं - समीप के किसी सरोवर या नहर पर, कहीं कहीं कुएँ पर भी स्नान किया जाता है। और ठन्डे जल में स्नान करती हैं। कातक का नहाना बड़ा कठिन होता है इसका दर्दपूर्ण दृश्य वाणिक लोक गीत में इस प्रकार है :-

पिलस बैठन्ता[4] अपणाँ बाबल बूझया, कहो तो कातक नहा न्हाल्यूं हो राम।
कातक न्हाणा बेटी बड़ा ए दुहेला, लाईयो बागबगीचा हो राम।
दूध झलोकती[5] अपनी माय बूझी, कहो तो कातक न्हाल्यूं हो राम।
कातक न्हाणा बेटी बड़ा ए दुहेला, सीधे धरम की क्यारी हो राम।

---

1. गहरी उपजाऊ भूमि। 2. जुलूस।
3. साथ ले जाने वाला। 4. चौपाल में बैठा हुआ।
5. दूध बिलोती हुई।

भोर का शान्त, शीतल और निर्मल वातावरण भावमय पवित्र वाणी से गूँज उठता है - वातावरण का वर्णन कितना रोचक बन पड़ा है :-

छिप रहा चाँद लटक रहे तारे, कह चन्द्रावल रानी,
कैसे भर लाऊँ जमना जल झारी ।

क्योंकि इस घाट तो मेरा घड़ा नहीं डूबता और घाट है उस पार कृष्ण मुरारी है :-

सासू की जाई मेरी ननद हठीली[1] रात ने छदा देई पानी,
कैसे भर लाऊँ जमना जल झारी ।
उसे घाट मेरा घड़ा न डूबे, इसे कृष्ण मुरारी,
कैसे भर लाऊँ जमना जल झारी ।
कैंधा है की तिरी ढँली गुजरिया प्यारी, प्याली[2] की जलझारी,
कैसे भर लाऊँ जमना झारी ।
अदन चंदन की ढँली कन्हैया प्यारे, सोने की जल झारी,
कैसे भर लाऊँ जमना जल झारी ।

माता सीता की वियोग तथा ग्रामीण नारी की मानो पीड़ा बन गई है । आखिर नारी हृदय की पीड़ा को वही समझ सकती है :-

राम मरेंगा सिया बिना, सिया मरेगी पिया बिना,
है कोए राम मिलै भगवान ।
ऊपर बैठा हनुमत बीर, आँखों में भर आया नीर,
है कोए राम मिलै भगवान ।
कहो नहीं लाई थी देर, ऊपर से गूँठी दई गेर,
है कोए राम मिलै भगवान ।

---

1. हठीली जिद्दी ।
2. किस वस्तु की ।

फागुन (फागण) के गीत :-

फागुन का आगमन नवीन उत्साह एवम् उमंग का संचार करता है । प्रेम के प्लावन में ओत प्रोत मानव समाज अपूर्व उल्लास और असीम आनन्द का सृजन करता है । हर्ष की तीव्रतम भाव हिलोरें स्वर बद्ध होकर गीतों के रूप में मुखरित हो उठती है । सारा मास ग्राम्य वातावरण मस्ती एवम् रंगारंग में डूबा रहता है :-

फागण आया रे ..फागण रंग भरूया रे
आगली पै बन्दर कोठ्यो, फागण आया रंग भरूया रे,
फागण आया जोबन भरूया

फागण के इन लोक गीतों में अनूठी उमंग एवम् अलौकिक उल्लास होता है जिससे आह्लाद भरी घटनाओं की स्मृतियाँ जागृत हो जाती है । देखिए एक अल्हड़ पनिहारिन का पनघट के मार्ग में अपने पीव (पति) से प्रथम मिलन :-

बालम गढ़ की लहर सिखाई,
चालण चोण[1] बधाई ।..हो म्हने तेरी सौंह
ओढ चहर पाणी नै चाली,
घट पनघट पै आई, ।.. हो म्हने तेरी सौंह
गोट्टो 2 बून्द कुएं पै आई,
गाभरू नै चादर ताणी ।. हो म्हने तेरी सौंह
चादर मांहि के भोजण लागी,
गाभरू[2] नै छतरी ताणी ।..हो म्हने तेरी सौंह
छतरी में हो भीजण लागी,
गाभरू नै पछियां[3] बिछाई ।. हो म्हने तेरी सौंह
पछियां में हो भीजण लागी,
गाभरू नै अरथ जुडाया हो । ..हो म्हने तेरी सौंह

---

1. गोढ ।
2. जवान ।
3. कमर ।

शृंगार से भरपूर फागण गीतों की लहरियाँ अनोखे अल्हड़-पन और लुभावने अन्दाज में संजीवनी शक्ति के रूप में प्रवाहित होती है। राही जीवन के पथ पर अग्रसर होता है :-- रंग सी के ये मधुर स्वर उसके कानों से टकराते हैं :-

कोरी कोरी चांदी की कामणी घड़ाई,
आर ज्यूंया कामण्या[1] हो ।-- अरहो मन्ने तेरी सौंह
फागण का मस्त महीना हो ।-- हो मन्ने तेरी सौंह

ज्योंहि फागण के आगमन का आभास होने लगता है प्रेयसी अपने प्रेमी से मिलने के लिए आतुर होती दिखाई देती है। उसकी आकांक्षाएं उसके शब्दों में :-

काची आम्बी गदराई सामण में,
बूढ़िया लुगाई मस्ताई फागण में ।
कहिए री उस जेठ बैरे ने,
बिन न्हाल्यां[2] ले जा फागण में ।-- काची आम्बी..

प्राकृतिक चित्रण भी फागण के गीतों में मिलना स्वाभाविक सा लगता है[3] :-

दिल्ली तेरे गोरे गोरे रे ज्यूंयाया जौ का खेत,
जमना जी के कांठै पै ज्यूंया या गीहूं का खेत ।

ससुराल से नवयुवती को लेने के लिए नाई आया परन्तु लक्ष्मी ने जाने से साफ इन्कार कर दिया। फिर जेठ, ब्राह्मण, ससुर जी बारी बारी उसे लेने के लिए आते हैं परन्तु वह जाने के लिए तैयार नहीं होती।

---

1. ना ।
2. बिना न्हाये हुए ।
3. हरियाणा के लोक गीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ० 16

अन्त में पतिदेव आये और उसने (तत्पोी) ने माँ से ससुराल जाने की "हाँ" कर दी क्योंकि उसीके प्रेम विरह में तो वह तड़प रही थी - उसी के साथ तो वह जाना चाहती है :-

कुड़ी कूड़ा माँ गेरती, कुड़ी लागी आग ।
प्यारे जोबनजिरदे माँ एकला ।
नाड़ा एक गया माँ देखो, माँ जाँ छ माँ सासरे नाई की साथ,
प्यारे जोबनजिरदे माँ एकला ।
जेठो आया लिवार, माँ जाँ 2 माँ ससरे उस जेठ की साथ,
प्यारे जोबनजिरदे माँ एकला ।
छोटो आई कूली थी बालम आया लिवार, माँ जाँ उसी साथ,
प्यारे जोबनजिरदे माँ एकला ।
लाठी आई बाजती सूसरा आया लिवार, माँ जाँ? उसी साथ,
प्यारे जोबनजिरदे एकला ।
हाथी आया कूता पिया आया लिवार,
जागी जागी माँ सासरे प्रीतम के साथ,
प्यारे जोबन जिरदे माँ एकला ।

फल्गुमास में उस सवेरे को योगा-वादन (बीन) के कौतक से मंत्री अभि-भूत मुग्धा पुनः पुनः उससे बीन बजाने का तथा उसके साथ चलने का आग्रह करती है :-

सपेरे बीन बजा दे हो, चालूँगी तेरे साथ ।
महलाँ के राज आलो, रे मन्ने डूंगी लगे उदास,
डूंगी में गुजर करूँगी, हो चालूँगी तेरे साथ ।

---

1. जोबन ।
2. जलता जा रहा है ।
3. पति का बड़ा भाई ।
4. लेने आने वाला ।

फागुन मैं मन की प्रवृत्ति श्रृंगारिक हो जाती है। श्रृंगार भावना मन को तरंगित करके उज्ज्वल रस मैं सराबोर कर देता है :-

फागण के दिन चार, री सजनी फागण के दिन चार
मद जोबन आया फागण मैं, फागण आया जोबन मैं
झाल उठै सै मेरे मन मैं, जिसका वार न पार री सजनी।..
प्यार का चन्दन महकन लाग्या, गात का जोबन लहकन लाग्या
मस्तानी मन बहकन लाग्या, प्यार करन नै त्यार री सजनी।..

चन्दा की चान्दनी का अमृतपान करके सभी का मानस नाच उठता है वह कहती है गीत मैं अपने जीवन की एक कहानी। प्रेम पूर्ण आत्म कथा.... वह किसी के प्रेम मैं भीगे बिना अर्थात रंगे बिना नहीं रह सकी :-

ऊंचा डेरा बाखर डेरा बिच बिच बोदो बेहर,
क्यारै क्यारै राज कहैंगे रहिया ना पनमेसर
छोटे छोहरे के ना जांगी, बालम थारे के ना जांगी
देस बिराणे के ना जांगी।
बासण बांटे बासण[2] बांटे, साडै रहा बटोल्ला[3]
यो भी क्यों न बांटी राडू है घर मैं देवर भोला
छोटे छोरे के ना जांगी ......
बासण बांटे बासण बांटे साडै रह गई थाली
यो भी क्यों न बांटी राडू है घर मैं नणदल वाली
छा छोटे छोरे के नां जांगी ....
सौड़ बांटी, सोड़िया बांटी, साडै रह गई रजाई
यो भी क्यों न बांटी राडू है रातो भरी लुगाई
छोटे छोरे के ना जांगी ....
घर बांटा बरवाला बांटा, साडै रह गई मोरी
यो भी क्यों न बांटी राडू है रातों हो गई चोरी
छोटे छोरे के ना जांगी...

1· बर्तन । 2· मटके । 3· हाण्डी ।

लाल गुलाल और रंगों की बहार में रंगा प्यार भरा एक नृत्य देखिए जिसमें केसर, कस्तूरी, पिचकारी, माला आदि का मनोहारी क्रियात्मक वर्णन है :-

उड़े हो गुलाल, रंगीलो हो रसिया,
केसर कस्तूरी की चमचमाई । ...उड़े हो गुलाल
भर पिचकारी मैरे माथे पै मारी,
बिन्दी[1] की आब उतारी हो रसिया ।..उड़े हो गुलाल
भर पिचकारी मैरी छाती पै मारी,
माला[2] की आब उतारी हो रसिया ।..उड़े हो गुलाल
भर पिचकारी मैरे हाथों पै मारी, गज
गजरे[3] की आब उतारी हो रसिया ।..उड़े हो गुलाल
भर पिचकारी मैरे पावों पै मारी,
बिछुआ[4] कि आब उतारी हो रसिया । • उड़े हो गुलाल

सहपत्नी अभियोग के नाट्य गीत भी मिलते हैं । लजिआर का गीत भी बड़ा कलात्मक एवम् मार्मिक बन जाता है जब माता के आगमन के सन्देश अतिथि सेवा और कन्या विदा के दृश्यों का संयोजन उसमें किया जाता है :-

नणद भावज हम बातलसी री, बोल्या मौरे पै काग भावज ।
आज आवे री ।
बाजणी सी बजनी री ननद ठाढे ठाढे नारे कढ़ा ऐ जेठ लजिआर ।
आज आवे री ।

भाग नृत्य के माध्यम से भाग आदि खेलने के नृत्य गीत बड़े ही मनोहारी हैं :-

गोरी जागी से भाग, आज खेलां रे भाग
खेल्यां रे प्यारो सारे मिलके खेलां रे भाग
मस्त महीना आ गया ।

1• माथे की बिन्दी । 2• गले का जेवर ।
3• हाथों का जेवर । 4• पावों का जेवर ।

5. क्रिया गीत :- इसके अन्तर्गत नृत्य, अनुभूति, तर्क एवम् संवाद प्रधान गीतों का वर्णन किया जा रहा है। यहाँ स्वयं भगवान शंकर ने अपना ताण्डव नृत्य किया और श्री कृष्ण ने इसे अपना क्रीड़ा स्थल बनाया था। यहाँ के लोक गीतों में नवरस का मिश्रण है। पुरुषों के नृत्यों में डमक, ढफ एवम् गुगा नृत्य आदि आते हैं। उदाहरणार्थ :-

ढफ बाजे म्हारे बाजे संग देस,
म्हारे रंग बसो।

स्त्रियों के नृत्यों में गौरी, डोलो, छंटो लोक नृत्य, घूर, झूमर, घूमर, खोरिया, गणगौर पूजा आदि नृत्य आते हैं। उदाहरणार्थ :-

कोरी-कोरी चान्दो को तागड़ी घड़ाई।

स्त्री-पुरुषों के सांझे नृत्यों में फाग, होली, धमाल आदि नृत्य आते हैं। धमाल नृत्य का उदाहरण :-

"मयूर बजाए छोरा नोलगर का"।

अन्य अनेक गीतों में ऐसे गीत हैं जिनकी लय पर पाँव स्वतः ही थिरकने लग जाते हैं। इन लोक गीतों में लोक संस्कृति के कुछ पक्षों का नितान्त सच्चा एवम् सुगठित प्रतिबिम्ब प्रदान किया गया है। इनके आनन्दमयी चित्र इतने कम शब्दों में शिष्ट-साहित्य में भी प्रायः दुर्लभ मिलते हैं। अंगों के संचालन के द्वारा एक साथ ही विभिन्न मुद्राओं द्वारा गीतियों की सहायता से शारीरिक चेष्टाएं मन मोहक होती हैं। न

नृत्यात्मक गीतों के माध्यम से शब्दों का

का चित्रण मन मोहक रूप में देखिए:-

ए चटक[1] चालूंगी मटक[2] चालूंगी
ए मेरा रोवे नन्द लाल गोदी में ले लूंगी
अपने ससुर के आगे बहु क्योंकर चालेगी
मैं तो गज का घूंघट[3] ताण मटक चालूंगी••ए चटक•••
अपने जेठ के आगे बहु क्योंकर चालेगी
मैं तो आधा[4] घूंघट ताण मटक चालूंगी •ए चटक •••
अपने देवर के आगे बहु क्योंकर चालेगी
गल में चुन्नी गेर मटक चालूंगी••• ए चटक ••••

इसमें ससुर के समक्ष घूंघट, जेठ के समक्ष आधा [आधा] एवम् देवर के समक्ष [illegible] घूंघट की कोई आवश्यकता नहीं रही-गोरी को। यह नृत्य गीत रिश्ते के आदर का आभास देता है। ••• अब एक और नृत्य प्रधान गीत देखिए जिसमें प्रत्येक बोल के साथ औरत नृत्य मग्न हो जाती है :-

टोकणी पीतल की रे दिल्ली से मंगाई
सांस पाणी जागी रो सारी जान्दी आई रे लुगाई
कहा हो न्हूं बोल्या रास्ते में बहू रे बतलाई
बोलण का दोष नहीं उड़े खड़ी थी रे चार लुगाई ।••सांसपाणी जागी•
नणद मेरी न्हूं बोली रे लठ बाजण दे रे मेरा भाई
देवर मेरा न्हूं बोल्या सभी चार विवाहूंरे मेरा भाई
जेठ मेरा न्हूं बोल्या या गये घरां की लुगाई ।•• सांस पाणी जागी••
दोराणी मेरी न्हूं बोल्यी मत मारे जेठ कसाई
पड़ोसन मेरी न्हूं बोल्यी छैला की पोटै रे लुगाई
पीटण का दोष नहीं छैला[6] के ब्याही रे आई ।•सांस पाणी जागी••

1• चुस्ती से ।   2• मटकतो ।   3• निकाल ।
4• आधा ।   5• नीच खानदान की ।
6• खूबसूरत लड़का ।

निम्नलिखित नृत्य प्रधान गीत पंजाबी से प्रभावित है क्योंकि बांगड़ और पंजाबी में काफी समानता भी है :-

> खड़ा कन्दा कटोणी बन्दी,
> बाजर दे बोल सुण मुण्डूया ।
> सास लड़दी सहौरा लड़दा,
> एक मैं नही लड़दी सुण मुण्डूया ।
> जेठ लड़दा जिठाणी लड़दी,
> एक मैं नही लड़दी सुण मुण्डूया ।

अनुभूति प्रधान गीत :- अनुभूति गीत का अन्तरंग तत्व है क्योंकि गीत का आधार इसी से बनता है । अनुभूति से भीतर से उद्भासित कला ही वास्तविक गीति कला का परिचायक होती है जिसकी लोक गीतों में प्रचुरता है ।[1] उदाहरणार्थ :-

> मेरी डोल कूँए मैं लटके से
> मेरी चोरी पोरी मटके से
> मेरा भिलमिल करै सरीर
> परे ने होले ने ।

अनुभूति प्रधान एक अन्य गीत में दूध बेचने के बुरे प्रभाव का वर्णन निम्नलिखित है :-

> ये लोग हुए कमजोर, रे जिस दिन ते दूध बिकण लाग्या
> मेरी सास कहै है बहू पिसो ने पिसणा मेरे ते पिसता ना पाट••
> जिस दिन ते दूध ••••
> मेरी सास कहै है बहू गोबर गेरो मेरे ते उठदी ना छैल
> जिस दिन ते दूध ••••
> मेरी सास कहै है बहू पाणी भरले मेरे ते खिंचता ना डोल•••
> जिस दिन ते दूध •••••

1• हरियाणा के लोक गीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ० 9

वास्तव में अनुभूति गीत का प्राण है ।

संवाद प्रधान [सम्बन्ध परक गीत] :- इसके अन्तर्गत स्त्री -पुरुष, पुरुष -पुरुष एवम् स्त्री-स्त्री के संवादों के गीत प्राप्त होते हैं । इनको सम्बन्ध परक गीत भी कहा जाता है । देखिए एक उदाहरण :-

के तू बैर कटोल्ड़ा ? के तेरी गहरी छाँ ? किसली एक लौकन बटोएल्ला

पति: ना मैं बैर कटोल्ड़ा, न मेरी गहरी छाँ ।

पत्नि: सरवर पाणी मैं गई सुण आई नई बात

एक लुगाई न्यू कहै तेरै हाकिम का ब्याह

किस गुण ब्याही दूसरी मेरे औगुण दे बताय

पति: औगुण थोड़े गुण घणे छोटी बहू का चाह

पत्नि: किसकी लेंगे कांगणी किसके लेंगे बाटू चौक ?

पति: थारी स्यांगे कांगणी थारी स्यांगे बाटू चौक

पत्नि: कौण करैगो आरता कौण गावै गीत ?

पति: बाहण करैगी आरता भावज गावै गीत ।

पति, पत्नि एवम् उसकी माँ के मध्य में सम्बन्ध परक अनुभूति का रसास्वादन देखिए:-

पत्नि:- पिया बारह बज गये उपर एक सिरहाणै थारै खड़ी खड़ी ।

पति: गोरी गहरी आगई नींद गोरी की तै याद भी नहीं रही ।

पत्नि : मने मन मैं लाया है विचार तेरा तै आज कोई भी नहीं ।

पति: गोरी मान चाहै मत मान तेरै तै प्यारा कोई भी नहीं ।

पत्नि: मेरी सासू दे रही गाल बहू ए यामी कित गई ।

पुत्र माता से : मता मत ना दी दैदे गाल बहू मेरे धोरै खड़ी ।

माता पुत्र से :- बेटा बोल मरी रै दस मास आज लौ कोड कही ।

पुत्र माता से:- माता म्हारा दी ना स दोष फिर या त खड़ी ए खड़ी ।

तर्क प्रधान गीत :- एक गीत जिसमें वधू अपने ससुराल जाने से कतराती है क्योंकि वहाँ के वातावरण के अनुरूप होना बड़ा कठिन लगता है । तर्क देखिए:-

सासरे मैं जाणा होगा, का ला साँप खिलाणा[1] होगा
दूसरे के हाथ का दिया खाणा होगा, बैठी-बैठी रोऊं
इस जिन्दगी नै हे मैरी बेबे किस विपदा मैं खोऊं ।
जिसकी पाड्या लकूणी सासू तले टूक ऊपर आँसू[2]
तले टूक और ऊपर आँसू, मैं बैठी बैठी रोऊं
इस जिन्दगी मैं हे मैरी बेबेकिस विपदा मैं खोऊं ।
बाल्ला ईंधन गीला[3] हे बेबे नणद दिखावे ठोस्सा हे बेबे
किस पै करूं भरोसा हे बेबे, मैं बैठी- बैठी रोऊं
इस जिन्दगी नै हे मैरी बेबे किस विपदा मैं खोऊं ।

बागर की एक नवयौवना अपने सासरे जाना चाहती है । इस विषय मैं उसका तर्क कितना सार्थक सा नजर आता है:-

ताव्वल करके हाल सासिरे सासु नै लखाण लाऊंगी
पैसेर पक्का हारै पीसणा आप सटर[4] के लाऊंगी
तै मैरी सासू मौटा पीसे कड़ीयां कै लटकाऊंगी
आ लैगा दे उस हारबारी नै उसनै भी भी समझाऊंगी

बलद बेच दे भैंस बेच दे कड़ी कड़ा दे दामेंकी भाईयां की सूं
हो परदेसी इब नहीं सू जाणे की ।
अर गैर कौम मत ब्याईयो ब्याहीयो ठोड़ ठिकाणे[5] की
बखत उठ के रूका मारया बहू भागगी भगाणे की ।

---

1. भंयकर परिस्थितियों मैं रहना 2. हर समय का रोना
3. गीला ईन्धन 4. नणद को ताने बाजी
5. गहरी नींद मैं सोना
6. बड़े खानदान की

6. बालगीत :- स्त्री व पुरुषों के गीतों की तरह बालकों के गीत भी होते है। इन गीतों की प्रवृत्तियों में उतना ही अन्तर होता है जितना कि एक बालक और युवा मनुष्य की रुचि, प्रवृत्ति और आयु में अन्तर होता है। "बालगीतों से यहाँ अभिप्राय है -बालकों के लिए गेय गीत, लोरियाँ एवम् क्रीड़ागीत।"[1] सर्वप्रथम गीत आता है लोरी का :-

लल्ला लल्ला लोरी रे आँ आँ आँ आँ लल्ला लल्ला लोरी रे
दूध की भरी कटोरी रे आँ आँ आँ आँ दूधकी भरी कटोरी
लल्ला लल्ला लोरी ....
लल्ला की माँ पाणी नै जा आँ आँ आँ लल्ला की माँपाणी
नै जा
लल्ला दूध मलाई खा आँ आँ आँ लल्ला दूध मलाई खा
लल्ला रे लल वधियाँ रे, बारह गज का तमीयाँ[2] रे
चन्दा मामा आयेगा, दूध मलाई लायेगा
लल्लाको खिलाएगा। आँ आँ आँ

एक अन्य बालगीत के माध्यम से बाल प्रेम और काम के मध्य सर्क का कितना स्वाभाविक, सुन्दर एवम् सम्मोहक चित्र दर्शाया गया है :-

गज्जर गज्जर दूध बिलोवै ।
गुजरी तेरा बेटा रोवै ।।
रोवै तो रोण दे ।
मन्नै दूध बिलोण दे ।।

बालक-बालिकाओं में जगजीवन को समझने की क्षमता तो होती नही परन्तु अनुकरण की प्रवृत्ति इनमें बड़ी प्रबल होती है। शिशु एवमं बालकों के इन गीतों को "क्रीड़ा-

---

1. हरियाणा के लोक गीत का सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ 46
2. छोटी लंगोटी।

गीत" की संज्ञा देना ही उपयुक्त जान पड़ता है। निम्नलिखित क्रीड़ागीत शिशुओं के खेल एवं मनोरंजन का प्रमुख साधन है :-

आट्टे बाट्टे दही चटाके
गोरी गां के गोरे बच्चे।
बड़े कोन्या पाया बड़े कोन्या पाया
बर.. यू पाग्या.. यू पाग्या ।।

यह था छन्दात्मक गीत। ऐसे गीतों में तीन चार अधिक शब्दों का प्रयोग नहीं होता। यह शिशुओं के मानसिक विकास की स्थिती का सूचक है। इन गीतों में कल्पनाएँ भी बड़ी विचित्र होती है। ये गीत अनुकरण करने की प्रवृति के सूचक, रोचकता एवं जीवन में अवतीर्ण होने के लिए सक्षम बनाते है। ये थे तीन से छः वर्ष की आयु के शिशुओं के गीत।

छः वर्ष से 16 वर्ष तक की आयु के बाल्य और किशोरावस्था के गीतों के शब्द, वाक्य एवं भाव बाल-मनोविज्ञान की दृष्टि से बड़े रोचक होते है। जहाँ कहीं भी दो चार बालक या बालिकाएँ एकत्रित हुए -वहीं उनके खेल आरम्भ हो जाते है :-

अगड़ बगड़ में पड़ुया मरवाणा
कोए ल्यो डिपटी कोए लो थाणा

शिशुओं के कण्ठाग्र[1] से एक निश्चित गति में जो स्वर प्रवाहित होते है वहाँ कुछ रित शब्द लयात्मक होकर गीत का स्वरूप धारण कर लेते है :-

तोड़ तोड़ बोड़ी आई
तोड़ दी तगाड़ दी ।
कोए ल्यो चमचम
कोए ल्यो रस गुल्ला ।

---

1. वितरित करदो।

शिशु जब कुछ बड़ा होजाता है और संसार की वस्तुओं को समझने एवम् परखने का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति में होता है, तब बुद्धि की परीक्षा के लिए कुछ गीत क्रीड़ाओं का आयोजन होता है। दैनिक जीवन से सम्बन्धित कुछ वस्तुओं को लेकर बालक आपस में ज्ञान की परख करते है :-

कोठे कुछ है ?.....अनार।
अनार में है ? ..... दाणा।
दाणे में है ?.... रस।
यांद्री[1] ..... रैडी..... घस लिगी।

बालक बालिकाओं के गीत उनकी आयु, ज्ञान और बौद्धिक स्तर को पूर्ण रूपेण प्रतिबिम्बित करते हैं ? एक संवाद युक्त खेल का नमूना देखिए[2]:-

बुढ़िया री   बुढ़िया के टोहवे से ...सूई टोहू सूँ ।
सूई का के करेगी ?.... कोथला सीमूँगी ।
कोथला में के घालेगी ? रपइये घालूँगी ।
रपइये का के करेगी? भैंस ल्याऊँगी ।
भैंस का के करेगी ? .. दूध पीऊँगी ।
दूध पीवै री दूध पी लै री ।

कहकर सब बच्चे हंस कर भागते हैं।

बालगीतों के मनोवैज्ञानिक आधार को दृष्टि पात करने से स्पष्ट होता है कि उनकी कल्पना पर घर एवम् ग्रामीण वातावरण का बहुत प्रभाव होता है।

---

1. दौंस्ती ।

2. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ० 452

7· राजनीति सम्बन्धी गीत :-

राजनैतिक चेतना के अनेक गीतों की इन लोक गीतों में उपलब्धियाँ प्राप्त है । जिनमें देश के शहीदों के गीत पाये जाते है । जिनके जीवन चरित्र से देश के लोगों में - लोगों के मानस में चेतना की नई लहर जागृत होती है । उधम सिंह की देश भक्ति का चरित्र - चित्रण देखिए:-

उधम सिंह ने उधम मचाकर उधम[1] दीन्हया तार[2]
बड़े होल और बड़ी सभा में डायर को दिया मार
जिसे की हतक[3] करी ना वीर इस दुनिया में ।

सत्याग्रहियों ने देश के लिए आत्मबलिदान किया साथ ही साथ विलायती माल का बायकाट किया और स्वदेशी के प्रति जागृति उत्पन्न हुई । यह सब हुआ गान्धी जी के असहयोग आन्दोलन से :-

तुम छूट विलायती छोड़ो हे सखी,
महात्मा गांधी आ रहे है ।
तुम खदर पहना करो हे सखी
तुम माथ और बाली छोड़ो हे सखी
महात्मा गांधी आ रहे है ।
तुम मिल का चून पिसाना छोड़ो हे सखी
घर का पिसा खाया करो हे सखी
महात्मा गांधी आ रहे है ।
तुम फिल्मी गाने छोड़ो हे सखी गांधी
गांधी के गीत गाया करो हे सखी
महात्मा गांधी आ रहे है ।

1· विनाश ।
2· करना ।
3· परवाह ।

जिस समय देश द्रोही नत्थूराम ने गाँधी जी की हत्या कर दी और सारी मानवता को कलंकित कर दिया उस समय का एक बांगरू करुणामयी लोकगीत का चित्रण इस प्रकार है :-

नत्थू राम जब बैठ गया जहाज मैं बन्दूक ले ली हाथ मैं
जा दिल्ली मैं जहाज ठहराया गाँधी धोरै आया
पहलीगोली लागी कोन्या दूजी मैं थर्राया
है तीजी गोली मैं प्राण त्याग दिये मौत घाट पै आया
है नत्थूराम तन्नै सरम कोन्या[1] आई तन्नै किते
कुआँ जोहड़ ना पाया ।

बापू की मौत पर सारा देश दुख से दुखी हो गया और इस देश के नर नारी बापू के हत्यारे को कोसने लगे । एक अन्य बांगरू लोकगीत मैं इसका वर्णन इस प्रकार है :-

बावा कुनबा[2] छोड़ पिता जी स्वर्ग लोक मैं सो गये ।
है भारत के नरनारी बिना पिता के होगये ॥
नत्थूराम तन्नै सरम ना आई बापू कै गोली मारी ।
तेरे करमां नै रोण लागरी बैठी योह दुनियाँ सारी ॥

गान्धी जी सत्य एवं अहिंसा के पुजारी थे । अन्तिम समय मैं भी प्रभुराम का ध्यान था :-

बापू नै कह्या राम राम, करै जग तै किया किनारा
राम के मन्दिर मैं जा पोहूँचा श्री राम का प्यारा

---

1. नहीं ।
2. परिवार ।

बागड़ लोक गीत के माध्यम से इन्दिरा गान्धी के जीवन वृत का वर्णन कितना सरस, सुन्दर एवम् समयानुकूल बन पड़ा है :-

नेहरू जी की इन्दिरा गान्धी कालेज मैं पढ़ण बिठाईरी ।
कालेज मैं एक मुसलमान था उससे सलाह मिलाईरी ।
सात द्वाल की सात मिठाई दोनों ने रल मिल खाई है ।
तकरी हुई है जब कन्टी बाजी इन्दिरा घर पै आई है ।
बाकर हो मेरी शादी करदे ढूंढ आई वर अपना है ।
दो लड़के होने के बाद या इन्दिरा रान्ड कहाई है ।
सबने मिलके फेर या इन्दिरा गद्दी पर बैठाई है ।
इन्दिरा गांधी गद्दी पै बैठाई नई नई रीत चलाई है ।

संजय गान्धी की मौत का वर्णन लोक गीत के माध्यम से देखिए:-

शिखरी मै जहाज चलाते है संजय
जहाज के जहाज भिड़गी है ऐ लैबे...जहाज मै लाश ।
इन्दरा ए है टैक्सी मैं चुके है लैबे
इटली ते राजीव आया देहली के बीच मै है लैबे...जहाज मै लाश
चन्दन की लाकड़ी ल्याया दो मण की है लैबे ..जहाज
उसकी इन्दरा माता रोवै टक्कर मार है लैबे.. जहाज मै लाश
उसकी सोनी भाभी रोवै टक्कर मार है लैबे
उसकी मेनका ब्याही रोवै टक्कर मार है लैबे ..जहाज मै लाश

शहीद हो गये गान्धी जी देश को बली देदी पर परन्तु बापू की सफल क्रान्ति का भी जनमानस पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा :-

नया जेवड़ा महैं कोल्लो, गान्धी जी की जय बोली
एक जलेबी तेल मैं, गान्धी भेज्या जेल मैं
सेर बाजरा झोली मैं, बन्दूा टंगरहूया पोली मै
कोरा छड़वा नीम तलै, आजादी की जोत जलै

8• विविध गीत :-

संस्कार गीत, ऋतु गीत, कृषि गीत आदि के अलावा बहुत से ऐसे गीत हैं जिन्हें किसी भी अवसर पर गा लिया जाता है। ऐसे लोक गीतों के उन्मुक्त भाव जन जीवन के प्रत्येक अंग को स्पर्श करते हैं। ये लोक गीत जीवन के सुख दुख, राग-द्वेष, आशा-निराशा आदि भावनाओं से ओत प्रोत हैं। इनमें श्रृंगार गीतों का बाहुल्य होता है। कितने ही लोक गीत हैं जिनमें ऐसा मोहक सौन्दर्य वर्णन, साकार वेदना मानवीय पीड़ा, हर्षोल्लास आदि सबकुछ इनमें निहित है। एक मार्मिक प्रसंग का सजीव चित्रण जब सैनिक की गरमी एवम् स्नेह पूर्ण मुस्कान प्रेयसी के लिए गुलाब जल की शीतलता प्रदान करने का कार्य करती है :-

रिमझिम बरसैगो मेंह, जांनी[1] ने छोड़ा राखै बस लिया
पल्लू री घोड़े की लगाम, जान ने दू रायी नौकरी
छोड़ो धण[2] घोड़े की लगाम, साथ्या के साथी म्हारे दूर[3] गए।
छूटी से घोड़े की लगाम, आँसू तो गेरे हरियल मोर
तुम पिया जाओ उस प्रदेश जिस के गए न उल्टे बाहुड़े[4]
खाइए पिया सूलं[5] बबूल सूलां के साथी बैरी सो रहे।।
तुम गोरी रहो तो बाघ दूध न पीवे बबूल जो
तुम ने डसियो काला नाग, साथियां ने मारो बिजली
डेहरां में डसियो काला नाग बालर मारे हेरिया बिजली
डेहरा में पालियां की भैंस बालर लम्बू तन रहे।
उठ धण दियो असीस[6], जब हम जावां नौकरी
तुम ने पिया मिलयो राज साथियां ने मिलो जागिर
तुम धण जन्मयो पूत डोला बैठ जल्वा पूजियो
म्हारे पियो जाईयो परदेश जिस से उल्टे बाहुड़े।

1• प्रियतम 2 प्रेयसी 3 दूर मंजिल पर।

4• वापिस लौटे। 5• शूल।

6• आशीर्वाद।

स्त्री हृदय की अन्तरात्मा से भरा एक अर्थात प्रतिबिम्बित भावों से भरा एक सौकण गीत जिसमें जीवन का लम्बा अनुभव है । और जीवन के दुख सुख की धूप छाँव देखते देखते जिसका जीवन व्यतीत होता है । गृहिणी ने पड़ौसन के यहाँ गए प्रियतम के पास सन्देश भेजा परन्तु पति आने से इन्कार कर देता है । पड़ौसन का मूसलाधार वर्षा में घर ढह जाता है - तब वे दोनों उसका दरवाजा खटखटाते हैं :-

मैरे आँगन माँ मैरी कड़वा सा नीम, ले ढलती ले फिरती छाया
पड़ौसन के घर ढल रही ।
घड़ बटाँ दूरी माँ मैरी कड़वा सा नीम ढलती ले फिरती छाया
पड़ौसन के घर ढुल रही ।

माँ उसे मना करती है:-

मत काटे मत काटे धी मैरी कड़वा सा नीम ले ढलनी ले फिरती छाया
छाया बासवड़े जी ।
तेरे ठैले धी मैरी लाड़ज पूत लाल पड़ौसन के दो बासड़ ।

गृहिणी अपने पति को बान्दी के हाथ नहाने और भोजन करने के लिए बुलाती है :-

बान्दी भेजूँ औ साहबा । घर आ ताता सा पाणी सीला हो रहा
तुम न्हायो रे गोरी म्हारी कंवर मक्कर हम ले पड़ौसन के घर न्हा ल्याएँ
बान्दी भेजूँ औ साहबा । घर आ लगी रसोई सीली हो रही
तुम जीमों[1] तुम जीमों रे गोरी म्हारी मात पिता हमरे पड़ौसन के साथ
घर जीम रयाँ ।

मूसलाधार वर्षा हुई पड़ौसन का घर ढह गया उनका निवास का स्थान नष्ट हो गया । बरसात के कारण उनका स्थान बेकार हो गया ।

---

1. भोजन करना ।

पतिदेव पड़ौसिन को साथ लेकर सिर पर खाट उठाए गृहिणी के घर द्वार पर आ खड़े हुए :-

बरस्या बरस्या रे इन्दू मूसलाधार लाल पड़ौसण का घर ढह पड़ा ।
चाल्या चाल्या रे इन्दू सिर धर खाट लाल पड़ौसण के सिर गूदड़ा[1] ।
खोलो खोलो रे गोरी म्हारी कवर किवाड़ साँकल खोलो लोह-सारली ।
म्हारी भीजे री गोरी पचरंग पाग लाल पड़ौसण के सिर चूनड़ी ।

गृहिणी लड़के से कहती है कि इस निर्लज्ज को खेत के उपर डालने का कपड़ा ओढ़ने को दे दो । क्योंकि यह रजाई ओढ़ने के योग्य नही है :-

दे दो रे छोरे कुलदां का पाल लाल लसीलो इन्दू पड़ रहे जी ।

केवट को भगवान राम गंगा पार जाने का आग्रह करते है तो पार जाने चाहते है :-

नइया[2] वाले तेरी नाव मै बैठणा चाहूँ सूँ
मन्ने पार लगादे मै रोज रोज आऊँ सूँ
यूँ तो पाणी तो ढलर ढोल मै काढण का ढूंग कर दे··नइया
टोटा खोटा बुरी लगाली, मैरे पीसका कोन्या छोरे
मैरे कपड़े ले लो मेरा करो किरराया पार ··· नइया
किस राजा का राजदुलारा कौण तुम्हारे संग मै
दशरथ का मै राजदुलारा सीता से म्हारे संग मै··· नइया

शराबी की औरत का हाल समाज की दृष्टि मे कैसा होता है उसकी पीड़ा एवम् कसक का आभास एवम् मनन तो वह स्वयं उस कष्ट को सहन करती हुई

---

1. बिछड़े का बिछौना ।

2. नाव ।

सहन करती है । घर में बच्चे भूखे मरते है- अन्न नही होता ।
शराबी महोदय गये रात तक घर लौटते है । बेचारी को रात को
उसकी खोज में जाना पड़ता है :-

कुएं उपर नीर भरे था नार शराबी कीऔर सुखी संसारसुखी दुखिया नार
शराबी की

अपने पीहर ते आई हूं मैं छम भौरा ल्याई हूं
खानदान ने देख्या कोज सिंगवाड़ा ? मैं ब्याही हूं मारें सै धिक्कार बुरी
है लहर शराबी की ।
••और सुखी संसारसुखी दुखिया नार शराबी की

घर में थाली और कैसा कटोरी सब बिकवाली[1] रो
घर में दाने सेर नहीं है चाले अत की प्याली रो
बिना कमाये कित आवै पड़ा पड़ा चाल्ले या हालत बूरी, है लहर शराबी
••और सुखी संसार सुखी दुखिया नार शराबी की ।

पन्द्रह सोलह खड़े हो गये दारू के लंगवाड़े है
लातह लातां घुस्म घुसा लागे करण लड़ाई है
हाथ टूट गया पाँव टूट गया मारे धिक्कार बुरी है लहर शराबी की
•• और सुखी संसार सुखी दुखिया नार शराबी की ।
आधी रात सिखर ते ढल गई घर तक भी ना आया है
मैं रोवती सुबकती चाल पड़ी पड़ा[2] जाल मैं पाया है
ग्यारा[3] के मांह कैसा पड़ा पाया मारे धिक्कार, बूरी है लहर शराबी की
•• और सुखी संसार सुखी दुखियानार शराबी की ।

प्रेम प्रसंग, सोहन, सैदट का प्रेम आदि गीतों के अतिरिक्त हास्यविनोद

1• बेच दी ।
2• पानी का खड्डा ।

3• कीचड़ ।

वाले गीत आते हैं । बहरों के परिवार का हास्यगीत इस प्रकार है[1] :-

सासू बहरी सुसरा बहरा, बहरा से घर आल्हा[2] हो ।
इन तीनों में मैं भी बहरी, ज्यारां का से लोहड़ा है ।
सासू तो मेरी रोटी पोवै[3] मैं जाऊँ रुटियारी है ।
सुसरा ते मेरा भैंस चरावै, वो उन रहा से हाली है ।
हाली छोड़ बटेऊ आया, टेसन[4] की राही बताइयो है ।
धोले के ते पान सैं[5] लाग्गै, नीला चार सो मैं आ रहा है ।
रोटी ले कै गई रुटियारी[6], कुर्दा[7] के नीचे लाग्गो है ।
नूण मिर्च तेरी माँ ने गेरा[8], मने गाल[9] सुना रहा सै ।
सुसरा आया भैंस चरा के बहू जाणै[10] की कह रही सै ।
कोण कहवै था गांहिया[11] मैं धंसी, काली काढ़ु के[12] ल्याया हूँ ।
कोण कहै था भूखो रह रही, डहरा[13] मैं चरा के ल्याया हूँ ।

गाँवों में अब भी आप स्त्रियों को चरखा कातते हुए देख सकते हो पहले जहाँ वे सामूहिक रूप से कातती आती थी अब वो रूप बदलकर व्यक्तिगत हो गया है । सामूहिक रूप से चरखा चलने की घूमर घूमर और प्रसन्न रमणियों के मधुर कण्ठ से गाये जाने वाले गीत अलौकिक आनन्द उत्पन्न करते है । चरखे का एक गीत इसी का प्रतीक है :-

नौ दस महीने तेरी हुई घड़ाई, ग्यारह कहूया पलान मैं
जब इस चरखे मैं घल्यो[14] पीढ़ा, चारों खूटे ज्यां के
चरखा खुब कण्या रंग ला है ।

---

1. हरियाणा के लोक गीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ० 12
2. पति । 3. पकाना । 4. स्टेशन । 5. हवेल ठीक पाँच सौ है ।
6. रोटी ले जाने वाले । 7. खेत । 8. डाला । 9. गालियाँ ।
10. प्रस्थान । 11. पेड़ । 12. मसला चमका कर ।
13. खेत के खेत 14. डाला गया ।

चर्खे का गीत आगे इस प्रकार है :-

जब इस चरखे में लगी रे पांखड़ी[1], आर लगनी जवा है,
चरखा खूब क्या रंग ला रहे ।
जदी इस चरखे में लग्या रे ताकुआ, आर माल जवा है,
चरखा खूब क्या रंग ला रहे ।
जब यह चरखा बन के आया देख्या था मिल रहा है ,
चरखा क्या खूब रंग ला रहे ।
जब यह चरखा हुआ पुराणा चरखे ने ढोंक जला है,
चरखा खूब क्या रंग ला रहे ।

प्रेयसी अपने प्रियतम को परदेश जाने पर दिल को यह समझाकर बहला लेती है कि चरखा तो है परन्तु विरह वेदना पराकाष्ठा को स्पर्श करने लगती है :

तम तो चाल्ले नौकरी म्हारा कौण हवाल[2],
योहूपिड़ला मेरे मन बस्या ।
पिड़ला[3] 2 के करे री गोरी पिड़ले ल्यावा ल्यार,
योहूचरखा मेरे मन बस्या ।

कोठी चावल रे गोरी छोड्या गोरी म्हारी बैठी मौजखुल
योहू चरखा मेरे मन बस्या ।
चरखा ल्यादूं रे गोरी रंगीला पीढा लाल गुलाल,
योहू चरखा मेरे मन बस्या ।
तक्वा ल्यादूं रे गोरी म्हारी सार का बाल्को जरीदार,
योहू चरखा मेरे मन बस्या ।
बहुत प्यारी हो पिया मेरे साथ ते तुम बिन आदर नाय,
योहू चरखा मेरे मन बस्या ।
लाम्बी हो गई पिया बतूली डागर आ ना ढोर,
योहू चरखा मेरे मन बस्या ।

---

1. पंखुड़ियाँ । 2. रखवाला । 3. पर्चा ।

5- प्रचलित वणिक लोक गीत एवम् उनका विवेचन :-

[1]

जच्चा

सुसरे जी से अरज करें थी,
म्हने हरी हरी दाख मंगादो जी ।
बहू इस रुत में दाख नाही है,
मैवा मिसरी खाल्यो जी ।
बालम जी से अरज करें थी,
म्हने हरी हरी दाख मंगादो जी ।
वो गए पंसारी की दुकान पै,
ल्याए हरी हरी दाख तुला कै ।
जा कै सोई मिली पै,
बालम तै कह दी बात बड़े प्यार तै ।
जो गोरी थम छोरी जणोगी,
बुरी बात करो गी हम तै ।
जो गोरी थम पूत जणोगी,
दाख मंगा दूं और बड़े तै ।

(जन्म संस्कार सम्बन्धी)

[2]

प्रसव पीड़ा

कोहकी[1] कोहकी कढ़ूं[2] गुहार,
दर्द उठा से कमर में, हो राजोढ़ा[3],
था ना रहूंगी तेरे घर मैं ।
दौराणी जिठाणी बोल्ली मारै,
जब क्यूं सोती थी बगल मैं, हो राजोढ़ा,
जच्चा ना रहूंगी तेरे घर मैं । (जन्म संस्कार सम्बन्धी)

1- कुह कुह कर । 2- रास्ता । 3- हे राजा ।

[3]

नेग

बहू ! किधराँतै आई दाई बहू तै आजा नाई
बहू तै आई नणद बीजली
या तेरी माँ की जाई ।
भीतर आजा मेरी नणदी मांगूगी तेरै पाएँ
के मांगैगी दाई माई के मांगैगा नाई
के मांगैगी नणद बीजली
या तेरी माँ की जाई ।...भीतर आजा
पाँच रुपइये दाई मांगै सवा रुपइया नाई
इक्कीस मांगै नणद बीजली
या तेरी माँ की जाई ।....भीतर आजा
पाँच रुपइये दाई नै दे दूँगी सवा रुपइया नाई
एक अठन्नी नणद बीजली
या तेरी माँ की जाई ।...भीतर आजा
[जन्म संस्कार सम्बन्धी]

[4]

पीला ओढ़णा

दिल्ली सहर तै पति छदूदर मंगा दूयो जी
रिन्दी लीलगार पै पीला रंगा दूयो जी
कल्याँ तै पल्ला[2] और पपीहे
कूंट पै औघड़ सान्ती छपा दूयो जी
पति प्यारे जी
जुग जुग जियो सास ससुर जी
जिन्ने जवर देख केराई जी
पति प्यारे जी । [जन्म संस्कार सम्बन्धी]

1- तेज स्वभाव की ननद । 2- किनारे पर ।

[5]

जच्चा के छिछौली

जच्चा तौ मेरी भोली भाली री
जच्चा तौ मेरी बड़ी हरयाली री
चार कनस्तर घी के खागी ढ़ाई मन पक्का बूरा री
जच्चा तौ मेरी पाणी ना मानी री
जच्चा तौ मेरी बड़ी हरियाली री
सांप मार सिरहाणे धर[1] लिया बीच्छू मार बगल मैं री
जच्चा तौ मेरी मकड़ी तै डरदी री
जच्चा तौ मेरी बड़ी हरियाली री
आए गये[2] का लहंगा[3] पाडै सास नणद की चुटिया री
जच्चा तौ मेरी कहणा ना मानै री
जच्चा तौ मेरी बड़ी हरियाली री
जेठ सुसर की काण ना मानै[4] देवर तै राड़ मचावै[5] री
जच्चा तौ मेरी सरम उतारी री
जच्चा तौ मेरी बड़ी हरियाली री

[जन्म संस्कार]

[6]

मेल गीत

पांच पतासे पान्या का बिड़ला
ले सैय्द पै जाइयो जी
जिस डाली म्हारा सैय्द बैठ्या
वा डाली झुक जाइयो जी । ** पांच पतासे

1- रखना । 2- आने जाने वाले व्यक्ति ।
3- घाघरा । 4-शर्म नही मानती ।
5- झगड़ा मचाती ।

[7]

बन्नी

मैं तो बीस बरस की होली बिना शादी का विचार
नाई ब्राह्मण गए, दिल्ली के बाजार
उन ने सारी दुनियां ढूंढी कोई ना जोड़ी का भरतार
एक दिल्ली में बूढ़ा बैठ्या करत विचार
भाई मेरी शादी करदे, ले ले ढाई हजार
वाने डाढ़ी मूछ कटाई सी मूंछी मूंढे ले ज्वान
बेटी फेरे ले ले तेरे करम के भार
मेरी शादी फेरे लें ले तेरी जोड़ी का भरतार

[विवाह सम्बन्धी]

[8]

बन्ना

मची है धूम शादी की शहर में किसकी शादी है
बन्ने के दादा से पूछो बन्ने के ताऊ से पूछो
उन्होंने हंस कर फरमाया मेरे पोते की शादी है
मेरे बेटे कीशादी है
मची है धूम शादी की शहर में किसकी शादी है
बन्ने के बाबल से पूछो बन्ने के चाचा से पूछो
उन्होंने हंस कर फरमाया मेरे बेटे की शादी है
मेरे बेटे की शादी है
मची है धूम शहर में किसकी शादी है
बन्ने के नाना से पूछो बन्ने के मामा से पूछो
उन्होंने हंस कर फरमाया मेरे दोते की शादी है
मेरे भान्जे की शादी है
मची है धूम शादी की शहर में किसकी शादी है

[विवाह सम्बन्धी]

[9]

भात

पिया मेरी किंकणी ले जा, भइया बाहण के भात
मैं कैसे जाऊं नोतन ना आई मेरे भात
हो उसने कोई न जाने हम ने लीया संवार
है तनक सी ने भैया लिया रे सम्हार
पिया मेरा झूमर ले जा, भइया बाहन के भात
मैं कैसे जाऊं नोतन ना आई मेरे भात
हो उसने कोई न जाने हम ने लीया संवार
है तनक सी ने भैया लिया रे सम्हार
पिया मेरा गुलबन्द ले जा, भइया बाहन के भात
कैसे जाऊं नोतन ना आई मेरे भात
हो उस मैं कोई न जाने हम ने लीया संवार
है तनक सी मे भैया लिया रे सम्हार

(विवाह सम्बन्धी)

[10]

बन्ड़ा

बन्ना जी मैं तो राज घर[2] से आई
बन्ना जी तेरे बाबा की ऊंची हवेली
बन्ना जी तेरे बाबल की ऊंची हवेली
बन्ना जी मैं तो पढ़ती पढ़ती आई
बन्ना जी मैं तो राज घर से आई
बन्ना जी तेरी दादी बड़ी लड़ाकी
तेरी अम्मा का तेज मिजाज
बन्ना जी मैं तो डरती डरती आई। (विवाह सम्बन्धी)

1- भात का निमन्त्रण देने

2- खुशहाल घर ।

(11)

उबटन

ऊठ लै रै ऊठ लै रौसन बान[1] बठावांगे
बटणे की कटोरी तेल चढ़ावांगे
ऊठ लै रख मौड़ बंधाले नै
रौसन छोरी गैल ब्याह करवाले नै
फेरे होलिये विदा होली, बैठगी डोले मैं
घर का कुणा दे साल रौसन छोरी नै
उसकी पीछे भरती तेरै ब्याह मैं गैजा[2] बरदी
ऊठ लै रै ऊठ लै रौसन बान बठावांगे
बटणे की कटोरी तेल चढ़ावांगे

(विवाह सम्बन्धी)

(12)

सीटणां

हमनै बुलाये कूबरे[3] कूबरे भूंडे[4] 2 आये री
हमनै बुलाये लम्बे लम्बे मोटे नाटे[5] आये री
हमनै बुलाये बड़े बड़े ले छोटे छोटे आये री
हमनै बुलाये गोरे गोरे काले काले आये री
हमनै बुलाये हाथी ते चढ़े गधे चढ़ कै आये री
छाज का है चौर बुलाया झाडू का है सेहरा री

(विवाह सम्बन्धी)

(13)

बुआ कहिणा :-

कौण उधली[6] की कहिणा, तेरी मां बाहमण का भागणा[7]
कौण राजो कै डौरिया तेरी मां बाहमण गोरिया।

(विवाह सम्बन्धी)

1- तेल बान चढ़ाने की रस्म। 2- गोरवी। 3- कुबे।
4- गन्दे। 5- ठीगणे। 6- बहू को भगाने वाली।
7- मां तथा बहन का घर छोड़ कर भाग जाना।

[14]

जामाता की मृत्यु पर

जब लौं घर तै लिकड़या गभरू शेर जुआन
हो गया लौज कलौज गभरू शेर जुआन
हाय हाय गभरू शेर जुआन
बाम्है बोल्ली कोतरी दाऐं बोल्या काग
गभरू है जुआन हाय हाय गभरू है जुआन
मारी क्यों ना कोतरी तैं मारया क्यों ना काग
हाय हाय गभरू शेर जुआन
कन्ध तेरो बांधी पालकी कन्ध तेरा कढ़ुआ सिंगार
हाय हाय गभरू शेर जुआन
भइयां बांधी पालकी भइयां नै कढ़ुआ सिंगार
हाय हाय गभरू शेर जुआन
कुआरा का प्यारा हाय सासू का प्यारा हाय हाय
हाय हाय गभरू शेर जुआन [मृत्यु संस्कार]

[15]

सांझी का गीत

जाग सांझी जाग तेरै माथै लाग्या भाग
पीली पीली पट्टियां सदा सुहाग
मेरी सांझी कै ओरै धोरै चौल्यां की मूठो है
मैं * लम्बे कुन्दु कचालेरी है चौल्यां की मूठो[1] है
हे मेरे बाप ब्याहर्या बतना बोरया मेल मुलाई
लेले गी चौल्यां की मूठो है
[देवी देवता तीज त्योहार सम्बन्धी]

1- कुंडी ।

[16]

सामण का गीत

सामण का महीना मैया रिमझिम रिमझिम बरसै
मन नै समझाऊं तौ भी बैरी जोबन तरसै
तीजां के दिनां की तौ भी आस बड़ी भारी
पीहर मैं भी न आए मैं घणी दुखां की मारी
सामण का महीना मैया रिमझिम रिमझिम बरसै
मन नै समझाऊं तौ भी बैरी जोबन तरसै

लोक गीत

[17]

फागण का गीत

फागण के दिन चार री सजनी, फागण के दिन चार।
मद जोबन आया फागण मैं
फागण भी आया जोबन मैं
झाल[1] उठै सैं मेरे मन मैं
जिनका वार न पार[2] री सजनी, फागण के दिन चार।
प्यार का चन्दन महकण[3] लाग्या
गात[4] का जोबन छलकण लाग्या
मस्ताना मन बहकण लाग्या
प्यार करण नै तैयार री सजनी, फागण के दिन चार।
गाओ गीत मस्ती मैं भर कै
जी लाओ सारी नर नर कै
नाचण लागीं छम छम करकै
उठन दो झंकार री सजनी फागण के दिन चार। लोक गीत

1- मन में उमंग की लहरें उठ रही हैं।
2- जिनका कोई अन्त नहीं है। 3- महकने लगा। 4- शरीर।

[१६]

<u>खेती उपकरण</u>

खेत काटती जाए अनमोल दराती लोहे की
ओ जी ओ जी ओ जी
सर सर सर सर हवा चले और खेत मेरा लहराए
खर खर खर खर चले दराती काट काट गिराए
खेत काटती जाए अनमोल दराती ओ.......
आसमान में सूरज चमके धूप पड़े मदमाती
टप टप टप टप गिरे पसीना फिर भी चले दराती
खेत काटती जाए अनमोल दराती ....
जल्दी जल्दी काटें भैया अपनी 2 क्यारी
इन कामों में दीखे झलकती जीवन ज्योत म्हारी
खेत काटती जाए अनमोल दराती .....

[खेती कृषि सम्बन्धी]

[१७]

<u>बणी वाला खेत</u>

बीयाबड़िया री मां मेरी बणी वाला खेत रखाली मैं गई
राही राही री मां मेरी दो चले जायं एक गोरा एक सांवला जी
गोरा री मां मेरी राही जा सांवला म्हारे खेत में री
"के रे सांवला भूला से राह के तेरी ब्याही बाप कै जी"
"ना मैं हे सुन्दर भूला हूं राह न मेरी ब्याही बाप कै जी
हम तो हैं सुन्दर तेरे लायक बाप तेरे के साजना जी"
"तेरे कैसे रे सांवला तीन सौ साठ बाप मेरे के मेहनती जी"
"तेरी कैसी है सुन्दर तीन सौ साठ बाप मेरे की बीमारी जी"

[कृषि सम्बन्धी]

[20]

हास - व्यंग्य/ परिहास

सर पै बन्टा टोकणी हाथ मैं डेढू ढोल
हाली छोड़ू बटेऊ चाल्या पाणी पिया दे एक गिलासा
हैंग के मै ढोल भरी न धर दिया पाणी पी लै साहब
पतली सुथरी दूर का आली कहदे ले तन्नै गैल भी ले चालूं । ** सर पै
चौखु की तली की मेरी चुन्दड़ी रंगा दे
कन्धारे की गोंद लवा दे काई की उसकै पेमक लवा दे
चान्द तारे लै उसमैं फूल गिरा दे
फिर चालूंगी तेरै गैल बटेऊ । ******** सर पै बन्टा
कूए' की धक्की का मेरा कुरता सिमा दे
पाछलै ते उसमें कालर लगवा दे
पैंड़ियों के उसमैं बटन लवा दे फिर चालू तेरै गैल बटेऊ ।** सर पै
धरती का मेरा दामन सिमा दे सांप
सांप गुराहिया की झाली लवा दे
घास फूस की झामम लवा दे
काली नागन का नाड़ा डलवा दे फिर चाले तेरै गैल बटेऊ ।
लाडुओं की मेरी सैली पनवा दे
गुलदाये की नीम भरा दे
जलेबियां की उसकी बाली लगा दे
पूरियों की उसकी छात डवा दे
जब चालू तेरै गैल बटेऊ ।**** सर पै
मेरै गैला छोड़ू है पां टकी
मेरै ना धन की धाला है नां टकी
मेरै ना मेले चाल ।****** सर पै

[विविध गीतों]

[21]

हास्य व्यंग्य

है मन्ने ढ़ाई सेर की राबड़ी रान्धी है सोलह मान्डे पोए है
मेरी गैल्यांकाढू कुत्ता मैं चारों तरफ़ लखाई है
किते ना दिखया कतूला मैं एक तरफ़ लखाई है
छोपड़ी मैं सोवै कतूला मन्नै ठोकर मार जगाया है। ... है मन्ने
बोईया रा मुँह बाया है।
वो ढ़ाई सेर राबड़ी पी गया सोलह मान्डे खा गया है
खादू कै उठ्या मरोड़ा उसनै भाज कै लिया खिटोड़ा है। ... है मन्ने
ज़ब उसके नो मन हेरे मन्ने ओठे ले ले लिये फेरे है
खादू के दस मन भाजी और मैं कलम ते भी राजी है। ... है मन्ने
खादू की पाटी धोती है और कुर्ते वाले ते भी राजी है
खादू के टूटे लोटर मैं चप्पी वाले ते भी राजी है। ... है मन्ने

[विविध गीत]

[22]

गांधी व ज्वाहर लाल

ज्वाहर लाल भी सूरा करै थे साथ गान्धी जै का
सब दुनियां मानी सांची बात गान्धी जी
चरचा भी हूआ होण लागी दिन रात गांधी की
सख विधापक है एक नहीं थी जात गांधी की
हाथ लखड़ी पायां केड़ी थी गहना गांधी का
सारे सौं कर पूछा रैलों मैं रहना गांधी का
जो मिल रा से सुराज एक भी थी लहना गांधी का
मिल है म्हें सारी कौम हारे थी कहना गांधी का
0=================== 0

[राजनीति सम्बन्धी]

1- सच्ची ।

"चतुर्थ अध्याय"

बांगड़ लोक साहित्य में कथात्मक एवम् सांग परक गीत

भाग (क): कथात्मक गीत

1. लोक गाथाओं की विशेषताएँ :-

(1) अज्ञात रचनाकार (2) प्रामाणिक मूलपाठ की कमी

(3) संगीत और नृत्य का साहचर्य और सहयोग

(4) स्थानीयता की गंध (5) मौखिक परम्परा

(6) अलंकृत शैली का अभाव (7) उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव

(8) रचनाकार के व्यक्तित्व का अभाव (9) दीर्घ कथानक की विशालता

(10) टेक पदों की पुनरावृत्ति (11) इतिहास की संदिग्धता ।

2. लोक गाथा और गीत कथा

3. लोक गीत और लोकगाथाओं में भेद

4. बांगड़ लोक गाथाओं (कथात्मक गीतों) का वर्गीकरण

(1) प्रेम कथात्मक गाथाएँ :- निहालदे का व्याख्यात्मक अध्ययन ।

(2) वीर कथात्मक गाथाएँ :- आल्हा, गोरा बादल का व्याख्यात्मक अध्ययन ।

(3) अद्भुत (आश्चर्यजनक) कथात्मक गाथाएँ -गूगावीर का व्याख्यात्मक अध्ययन ।

(4) लोक कथाएँ :- सत्यवादी हरिश्चन्द्र का व्याख्यात्मक अध्ययन ।

भाग (ख) सांगपरक गीत

1. लोकनाट्य परम्परा और लोकमंच
2. बांगड़ सांगों का उद्भव एवम् विकास
3. बांगड़ सांग की रचना एवम् उसका स्वरूप
4. बांगड़ सांग और हिन्दी नाटक में अन्तर
5. बांगड़ सांगों में प्रेम तत्व
6. बांगड़ सांगों में गुरु भक्ति
7. बांगड़ संगीत में सूफी प्रभाव
8. बांगड़ सांगों में जीवन दर्शन
9. बांगड़ सांगों पर फिल्मी प्रभाव
10. कुछ प्रमुख बांगड़ सांगों की रागनियाँ एवम् उनका विवेचन ।

-0---0----0

"चतुर्थ अध्याय"

बांगरू लोक साहित्य में कथात्मक एवम् संगीतपरक गीत

भाग [क] प्रबन्ध गीत [कथात्मक गीत] :-

लोक साहित्य में लोक गाथाओं का प्रमुख स्थान है । प्रबन्ध गीत या कथात्मक गीत कथा के रूप में मिलते हैं । ये छन्द पंक्तियों के साथ 2 गद्य में भी कहा गया है परन्तु ये पद्यात्मक अधिक है । सर्वप्रथम "गाथा" शब्द ऋग्वेद में मिलता है । यज्ञ के अवसर पर गाथा गाने का उल्लेख वहाँ मिलता है[1] । अंग्रेजी में ये बैलेड कहलाते हैं । लैटिन बैलारे जिसका अर्थ नृत्य करना है । ऐसा लगता है नृत्य गीत पहले बैलेड कहलाये बाद में नृत्य की गौणता पर कथात्मक गीतों को बैलेड कहा जाने लगा । हिन्दी में बैलेड का पर्यायवाची लोकगाथा है[2] । लोक गाथा की परिभाषा कुछ पाश्चात्य विद्वानों की इस प्रकार है :-

The name given to a style of verse of unknown authership dealing with episode or simple motive rather than sustined theme written in a standvil from more or less fixed and suitable for the oral transmission & treatment showing bittle or nothing of fineness of deliberate art."3

[बैलेड ऐसी पद्यों का नाम है जिसका रचयिता अज्ञात हो, जिसमें साधारण आख्यान हो और जो सरल मौखिक परम्परा के लिए उपयुक्त तथा ललित कला की सूक्ष्मताओं से रहित हो ।"

---

1. ऋग्वेद 9/32/1
A balled is a song that tells a story. G.L. Kitredge.
2.
3. Encyclopeadia of Britanica (Balled) Page 993

A ballad is a simple narrative lyric, a song of known of unknown origin that tells a story." 1

(बैलेड एक साधारण कथात्मक गीत है जिसकी उत्पत्ति संदिग्ध है।)

भारतीय विद्वानों ने कथात्मक गीतों को "गीत कथा"[2] तथा "लोक गाथा"[3] एवम् "प्रबन्ध गीत"[4] आदि नाम दिये हैं। डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने इन गीतों को "लोकगाथा" की संज्ञा दी है जो उचित और सार्थक है। कारण यह है कि गीत कथा या कथागीत में लोक भावना को व्यंजित करने की शक्ति का अभाव प्रतीत होता है। वस्तुत: ये दोनों शब्द सायास य निर्मित हुए हैं तथा इनका निर्माण अंग्रेजी के (बैलेड) शब्द के भावानुवाद से प्रतीत होते हैं। "लोकगाथा ही उचित नामकरण है जिसमें लोक भावना भी सन्निहित है तथा भारतीय लोक परम्परा के निकट पड़ता है।

"यहाँ के लोक जीवन में प्रचलित लोक कहानियाँ बहुदा विश्वसनीय है और उनमें कौतूहल तथा मनोरंजकता भी बहुत है परन्तु जो वैशिष्टय लोक गाथाओं में आ गया है -वह लोक कथाओं में नहीं है[5]।"लोक गाथाओं में गेय तत्व के साथ 2 दीर्घ कथानक अपेक्षित है। प्राय: गीतों के मुख्य पात्र के आधार पर इनका नामाकरण हो गया है। गोपीचन्द, आल्हा, निहालदे, आदि इनसे सम्बन्धित गीतों का आशय प्रकट करता है।

1/2. <u>लोक गाथाओं की विशेषताएं</u> :-

लोक गाथाओं की मूलभूत विशेषताओं के सम्बन्ध में प्राय: सभी भारतीय और पाश्चात्य विद्वान एकमत हैं। इसका कारण यह है कि विश्वभर की लोकगाथाओं की विशेषताएं लगभग एकसी है।

---

1. Encyclopeadia Americana (Vol. III Ballad) Page 94
2. राजस्थानी लोक गीत लेखक डा० सूर्य करण पारीक पृ० 78-85
3. लोक साहित्य की भूमिका लेखक डा० कृष्ण देव उपाध्याय पृ० 71
4. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ० 267
5. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ० 268

इन विशेषताओं के आधार पर हम आसानी से लोकगाथा और अलंकृत काव्य में अन्तर कर सकते हैं । डा० कृष्ण देव उपाध्याय के अनुसार लोक गाथाओं की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं[1] :-

[1] अज्ञात रचनाकार [2] प्रामाणिक मूल पाठ की कमी

[3] संगीत और नृत्य का साहचर्य और सहयोग

[4] स्थानीयता की गंध [5] मौखिक परम्परा

[6] अलंकृत शैली का अभाव [7] उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव

[8] रचनाकार के व्यक्तित्व का अभाव [9] दीर्घ कथानक की विशेषता

[10] टेक पदों की पुनरावृत्ति [11] इतिहास की संदिग्धता ।

[1] <u>अज्ञात रचनाकार</u> :- कथात्मक रचना विभिन्न कालों का परिणाम है अतः उसमें बदलते समय की मनोवृत्ति के भी दर्शन किये जा सकते हैं । इस प्रकार लोक गाथाएँ उस समय के परिवर्तन का एक विश्वसनीय आधार तैयार करता है परन्तु वह अपने रचनाकार के बारे में कुछ नहीं बताता । यहाँ निहालदे, ढोलामारू, गोपीचन्द, पूर्ण भक्त आदि अनेक लोकगाथाएँ प्रचलित हैं । परन्तु उनके रचनाकार के सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ भी कहना सम्भव नहीं है ।

[2] <u>प्रामाणिक मूल पाठ की कमी</u> :- लोकगाथाओं का कोई प्रामाणिक पाठ उपलब्ध करना कठिन कार्य है क्योंकि रचनाकार उसे रचकर समाज को सौंप देता है । और उसके प्रयोग करने वाले उसमें अपनी योग्यता और रुचि के मुताबिक परिवर्तन करते रहते हैं और अपने भावों के अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं । अलंकृत काव्य और स्वर्णिम काव्य ये दो प्रकार के काव्य बताए गए हैं । मौखिक परम्परा होने के कारण लिपिबद्ध करने

---

1. लोक साहित्य की भूमिका लेखक डा० कृष्ण देव उपाध्याय पृ० 114

की अपेक्षा लोक गाथाओं में परिवर्तन की सम्भावना भी कहीं अधिक होती है। उदाहरणार्थ मूल आल्हा का रचनाकार जगनिक था परन्तु अधिक लोकप्रिय होने के कारण इसके अनेक पाठ मिलते हैं। जो अपने मूल ग्रन्थ से काफी भिन्न हैं।

[3] संगीत और नृत्य का साहचर्य और सहयोग :- संगीत, नृत्य और गीत एक मधुर त्रिवेणी के समान हैं इनका साथ लगभग अनिवार्य सा रहता है क्योंकि एक के अभाव में दूसरे का पूर्ण रसास्वादन प्राय असम्भव सा रहता है। अंग्रेजी के "बैलेड" शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द "बैलारे" से मानी जाती है जिसका अर्थ नाचना होता है अत: आरम्भ से बैलेड से उस गीत का अभिप्राय: समझा जाता था जो नाच कर गाया जाता था। इसे समूह स्वर में गायाजाता था। उत्तेजनात्मक तथा पुनरावृति मूलक संगीत के बिना गीत का पूर्ण आस्वादन नही होता। संगीत ही गीत का प्राण और आत्मा माना गया है। ग्रामीण स्त्रियाँ नृत्य और संगीत के साथ गीत गाती हैं।

[4] स्थानीयता की गंध :-लोक गाथा के निर्माण के साथ ही साथ उस विशेष प्रान्त के वातावरण एवम् स्थानियता का उसमें समावेश हो जाता है अत: कथात्मक गीतों में स्थानीयता की गंध निश्चित रूप में मिलती है। लोकगाथाओं की घटनाएँ चाहे कहीं की भी हों उनकी कहानी कहीं की हो परन्तु उनमें स्थानीयता का समावेश आवश्यक रूप में हो जाता है।

[5] मौखिक परम्परा :- लोकगाथाएँ मौखिक परम्परा के रूप में आदिकाल से सुरक्षित रही हैं। क्योंकि भारतीय मानस के लिए मौखिक परम्परा द्वारा बहुमूल्य ज्ञान राशि को सुरक्षित रखने के बाद नही है। सचाई तो यह है कि मौखिक परम्परा और परिवर्तनशीलता ये दो विशेषता लोक गाथा को नई स्फूर्ति प्रदान करती हैं। जिससे वह विकसित और समृद्ध होती रहती है क्योंकि वह लोक मानस की सम्पति बन जाती है जिससे रस ग्रहण करती रहती है।

---

[6] अलंकृत शैली का अभाव :- लोकगाथाएँ रचना विधान की दृष्टि से बहुत अधिक समृद्ध नहीं होती। यहाँ रचना विधान से तात्पर्य अलंकृत शैली काव्य शास्त्रीय तत्वों से है जिनका समावेश अलंकृत काव्यों में अनिवार्यतः होता है। लोक गाथाओं में विभिन्न शास्त्रीय विधि निषेध की अवज्ञा मिलती है, शायद उन्हें उनके पालन की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती इनमें अलंकार और रस की अपेक्षा छन्द और लय की व्याकुलता होती है। इस प्रकार भाषा और भाव दोनों ही धरातल पर कथात्मक गीतों का अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है।

[7] उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव :- लोक गाथाओं में उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव पाया जाता है। क्योंकि इनमें कथानक को अधिक से अधिक वेग प्रदान करने का क्रम जारी रहता है। इसलिए उपदेश की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। लोकगाथाएँ उपदेश के रूप में उस प्रकार की कोई बात नहीं कहती जो नीति के दोहों में प्राप्त होती है। अतः इनमें प्रत्यक्ष रूप से नीति कथन का अभाव दृष्टिगोचर होता है। ये साहस, शौर्य, वीरता, त्याग, सहानुभूति, प्रेम आदि भावनाओं को चित्रित करती है।

[8] रचनाकार के व्यक्तित्व का अभाव :- जहाँ तक श्रोता को प्रभावित करने की बात है लोक कवि इसमें विशेष रुचि नहीं लेते न तो कथा में उनका सक्रिय भाग होता है और न अन्य गीतों की भान्ति यहाँ गायक के विचारों और भावनाओं की झाँकी ही उपलब्ध होती है। लोक साहित्य में रचनाकार का व्यक्तित्व सर्वथा गौण होता है।

[9] दीर्घ कथानक की विशेषता :- कथात्मक गीतों की कथावस्तु की लम्बाई उसकी एक विशेषता है। इन गाथाओं का आख्यान बड़ा ही लम्बा होता है और कोई कोई गाथाएँ विशाल आकार की दृष्टि से महाकाव्यों की समता करती है। भले ही उनमें काव्यात्मक उतनी मात्रा न हो।

---

(10) <u>टेक पदों की पुनरावृत्ति</u> :- टेक पदों की पुनरावृत्ति को हम लोकगाथाओं की सर्वप्रमुख विशेषताओं में से मान सकते हैं। गीतों की पुनरावृत्ति जितनी अधिक बार की जाए, उतना ही अधिक आनन्द आता है। टेक पदों की आवृत्ति के कारण संगीतात्मकता आ जाती है। इन टेक पदों का अपना भिन्न वैशिष्ट्य है।

(11) <u>इतिहास की संदिग्धता</u> :- लोक गाथाओं की ऐतिहासिकता या तो होती ही नहीं या संदिग्ध होती है। क्योंकि लोकगाथा का रचयिता कोई इतिहास विशेषज्ञ नहीं होता और उसे इतिहास का अधिक ज्ञान भी नहीं होता और उसे इतिहास निर्माण की चिन्ता नहीं होती। वह तो अपनी रुचि के अनुरूप कुछ ना कुछ जोड़ता रहता है। गोपीचन्द, आल्हा, भिवालदे आदि का उल्लेख इतिहास में प्राप्त होता है परन्तु उनसे सम्बन्धित कुछ घटनाओं पर ऐतिहासिक दृष्टि से प्रश्नचिन्ह भी लगाए जा सकते हैं।

2. <u>लोक गाथा और गीत कथा</u> :- लोक गाथा और गीत कथा इन दोनों में लोक कथा और लोक गीतों के तत्वों की सम्मिलित उपलब्धि होती है। गीत कथा में एक लोक कथा अपने पद बद्ध रूप में विद्यमान रहती है। सुविधार्थ इसे हम लोक साहित्य का खण्ड काव्य भी कह सकते हैं। साथ ही लोक गाथा का विस्तार भी गीत कथा से अधिक होता है और उनकी कथा सूत्रता और घटनाओं के संयोजन की दृष्टि से तो उनमें विविधता होती है।

प्रायः विभिन्न क्षेत्रों की लोक गाथाओं की कुछ परिवर्तनशीलता के साथ एकरूपता पाई जाती है। लोक गाथाएँ यद्यपि लिखित रूप में गद्य के समान प्रतीत होती हैं परन्तु लोक कण्ठ के संयोग से उनमें भी गेयता का समावेश हो उठता है जो वास्तव में पद्य की प्रचुरता देती है।

---

3. लोक गीत और लोक गाथाओं में भेद :- लोक गाथा में दीर्घ कथावस्तु रहती है परन्तु लोक गीत में कथानक का अभाव ही रहता है। किसी भाव विशेष पर ही लोक गीत की रचना हो सकती है। कहीं कहीं कथानक रहता भी है तो गौण रूप से।

दूसरे लोक गाथा में चरित्रों की प्रधानता रहती है। किसी व्यक्ति विशेष के सम्पूर्ण जीवन का सांगोपांग वर्णन उनमें रहता है। परन्तु लोकगीतों में भावों की प्रधानता रहती है। नित्य प्रति की घटनाओं से सुख एवम् दुख, संघर्ष एवम् द्वन्द, प्रार्थनाएँ एवम् भावनाएं उनमें रहती है।

तीसरे लोक गाथा का आकार बड़ा होता है। वह महाकाव्य के समान विशाल एवम् गहन होता है। पर लोक गीतों का स्वरूप अपेक्षाकृत काफी कम होता है।

चौथे लोकगाथा में विषय की इतनी विविधता नहीं रहती जितनी लोक गीतों में रहती है। वहाँ केवल कथानक से सम्बन्धित विषयों का ही निरूपण होता है पर लोक गीतों का विषय क्षेत्र विस्तृत होता है। विभिन्न संस्कारों, त्योहारों, प्रथाओं, ऋतुओं एवं परम्पराओं आदि का उनमें वर्णन होता है। लोक गाथा में समस्त विषय मुख्य कथानक से चिपटे हुए रहते हैं। उनका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता। पर लोक गीत में समस्त विषय स्वतन्त्र रूप में आ सकते हैं। लोक गाथाओं में संगीत तत्व का एक समान प्रवाह रहता है। एक ही लय में प्रेम, विरह तथा युद्ध आदि का वर्णन हो जाता है। परन्तु लोक गीतों में भावों के अनुकूल संगीत शैली बदल जाती है।

4. बांगरू लोक गाथाओं (कथात्मक गीतों) का वर्गीकरण :- लोक गाथाओं का निर्माण चारणों और भाटों द्वारा प्राचीनकाल से होना शुरू हुआ था।

अपनी अपनी सुविधा के लिए उन गायकों-चारणों या जोगियों ने उन्हें कल्पना का पुट भी दे दिया है।

चारणों द्वारा गाये जाने वाले स्थानिय राजाओं का वर्णन उनकी शूरवीरता का इतिहास, जिसमें राजा की वंशावली और कौटुम्बिक इतिहास रहता है। उदाहरणार्थ :- ढोला मारू, निहालदे, आल्हा, हरफूल जाट जुलाणी का आदि। प्रथम प्रकार की लोक गाथाएँ है।

दूसरी प्रकार की लोक गाथाएँ पूर्ण भक्त, ध्रुव भक्त आदि अर्द्ध धार्मिक तत्वों वाले पुजारी या जोगीयों द्वारा संरक्षित राग या किस्से आते हैं।

भक्त अथवा पण्डों द्वारा गाये जाने वाले गूगा पीर अथवा जाहर पीर, बाबा गैबो सिद्ध महात्मा, सन्यासी या देवी देवताओं के जीवन चरित्र की महत्ता का बखान होता है। ये तीसरी प्रकार की लोक-गाथाएँ है।

इनके अतिरिक्त डूम-डूमणी, मिरासी आदि द्वारापुत्र जन्म, विवाह उत्सव आदि शुभ अवसरों पर भी ये गाथाएँ गाई जाती है।

टेम्पुल महोदय ने इन गाथाओं को छः चक्करों में विभाजित किया है[1]:-

प्रथम चक्कर रसालू चक्र के नाम से अभि हित है इसमें शौर्य के चमत्कार पूर्ण साहसिक कार्य मिलते है।

द्वितीय चक्र या पाण्डव चक्र है इनमें किसी न किसी रूप में पौराणिक वृत्त का सम्बन्ध होता है। ये प्रायः महाभारत के प्रकार की गाथाएँ है।

तृतीय चक्र में शौर्य और सिद्धी का मेल है इसे गूगा चक्र भी कहते है। सन्तों की गाथा इसी के अन्तर्गत आती है। पच

चतुर्थ चक्र सिद्ध सम्बंधि है इसमें पूर्ण भक्त एवम् धन्ना भक्त

---

1. "दि लीजेंड्स आफ दी पंजाब" लेखक सर आर सी टेम्पुल पृ. 12 प्रथम भाग

आदि गाथाएँ आती है ।

पंचम वर्ग "सखी सरवर" के प्रकार की गाथाओं का है ।

षष्ठम वर्ग "स्थानीय ह्वीरो" हरफूल जाट जुलाणी वाला आदि गाथाएँ आदि/है आती है ।

विषय और विधान के आधार पर लोक गाथाओं के और भी कई भेद किये जा सकते है । "कथावस्तु के आधार पर इन गाथाओं में भेद पाया जाता है, यह भेद कई प्रकार का हो सकता है । परन्तु प्रेम, उत्साह एवम् अद्भुत तत्वों की प्रधानता से इन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है ।"[1] परन्तु हमारी दृष्टि में कथात्मक गीतों या लोक-गाथाओं के तीन की बजाय चार भागों में वर्गीकृत किया जाना चाहिए जो साहित्यिक दृष्टि से अधिक उपयोगी है :-

(1) प्रेम कथात्मक गाथाएँ (Love Ballads)

(2) वीर कथात्मक गाथाएँ (Hero Ic Bals)

(3) अद्भुत (आश्चर्य जनक) कथात्मक गाथाएँ (Coronachemd)

(4) लोक कथाएँ (Folk Tales)

(1) <u>प्रेम कथात्मक गाथाएँ</u> :- सभी प्रकार की प्रेम तत्व की प्रधानता वाली गाथाएँ जिनमें प्रेम असाधारण परिस्थितियों एवम् वातावरण में जन्म लेता है प्रेम कथात्मक गाथाएँ कहलाती है । सभी प्रकार की पौराणिक गाथाएँ - धार्मिक परम्पराओं वाली लम्बी कथाए, संस्कृत साहित्य से सम्बद्ध आख्यान, किसी स्थानीय पुरुष के साहस और वीरता की गाथा तथा वृहद आख्यान जो सम्पूर्ण कथा के साथ साथ अन्य उपगाथाओं को भी अपनी परिधि में संजोए हुए है - उन आख्यानों (लीजेन्ड्स) की श्रेणी में आती है[2] ।

1• हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ० 268

2• हरियाणा लोक गाथाएँ लेखक श्री देवी शंकर प्रभाकर पृ० 10

राजा नल, पूर्ण मल, राजा रिसालू, निहालदे, ढोला मारू, सरवरनीर, नौ-टंकी आदि इसी श्रेणी में सम्मिलित है । जहाँ पूर्णमल की गाथा में प्रेम एकांगी है वहाँ कंवर निहालदे ने असाधारण परिस्थिति और वातावरण से घिरा हुआ है क्योंकि कंवर निहालदे के परवाने यानि प्रेम पत्र अपने आप में प्रत्येक महाकाव्य के समान हैं । ये थे कुछ प्रेमाख्यान प्रधान गाथाएँ ।

निहालदे :- इस प्रकार प्रेम प्रधान गाथाओं के अन्तर्गत आनेवाली "निहालदे" प्रेम कथात्मक गाथा सबसे अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध है । "वस्तुतः प्रेम तो लोक गीत तथा लोक गाथाओं की अनुप्राणिका शक्ति है ।"[1] वास्तव में निहालदे एक वृहद प्रेमाख्यान है जिसमें सैकड़ों दूसरी लोक कथाओं का जन्म होता है । "निहालदे" का यह प्रेमाख्यान यहाँ के लोक जीवन में रमा हुआ है मानों सुलतान और महकम "कहने दो पात्र" न होकर यहाँ के प्रियजन हों -जन जन के सुख दुख के साथी हों ।[2] कंवर निहालदे बाग में झूल रही है । सुलतान उसके समीप घोड़ा लिये खड़ा है । तो कहीं कंवर निहालदे महकम को उलाहने भरे पत्र लिख रही है ।

विरहिणी की वियोग वेदना निहालदे की पीड़ा बन जाती है । वह अपने प्रवासी प्रेमी के वियोग में "निहाल" शब्द ही दोहरा देती है :-

परदेसी की प्रीत को कोए मत करियो होड़
कमजारे की आग ज्यों गया सिलगता छोड़
सोन्ना ल्यावण पी गये सून्ना कर गये देश
सोन्ना मिला ना पी मिले हुए जल बन से केश

"निहालदे प्रेमाख्यान में सुलतान और निहालदे के उत्कट प्रेम की पराकाष्ठा है । दोनों का प्रथम मिलन हुआ और प्रथम भेंट में ही दोनों की भावना का एक दूसरे की भावना में वरण हो गया । क्योंकि भावना में

---

1. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ० 269
2. हरियाणा लोक गाथाएँ लेखक श्री देवीशंकर प्रभाकर पृ० 31

भावना का वशीवश होना ही सात्विक प्रेम है । आनन्द विभोर होकर राजकुमार ने विवाह का प्रस्ताव रखा :-

सुनो बात फिर सी कही,
मुँह आँचल दे निहाल ।
सिर के ऊपर रख दई,
कुँवर ने पचरंग ढाल ।

दोनों की शादी धूमधाम से हुई । सुलतान अपनी प्रिया के संग इन्द्रगढ़ में रहने लगे । समय व्यतीत होता जा रहा था परन्तु इन्द्रगढ़ का राजकुमार फूल, निहालदे के रूप सौन्दर्य पर मोहित हो गया और उसने षड्यन्त्र करके सुलतान को मारना चाहा । उसने सुलतान को इन्द्रगढ़ छोड़ने पर मजबूर कर दिया । वह निहालदे से बोला :-

इन्दरगढ़ रहणा नहीं जाणाँ पड़ै और ।
फूल कँवर दुश्मन बणा वो मनै कहै दुलैर ।।

निहालदे रोकर कहने लगी :-

पीहर मैं दिन काटती सब कै था मेरा काम ।
ब्याह तै छोड़ी बालमाँ मेरा जीणा हुया हराम ।।

सुलतान उसे धीरज बंधाता है :-

छट्टी तीजाँ तक मिलूँ यो मेरा है इकरार ।
छोड़ बाग मैं जाऊँदे किते कर लूँगा रोजगार ।।

छट्टी तीज का वायदा करके सुलतान निहालदे को समझाकर चल दिया । सुलतान नरवर गढ़ का एक वीर सरदार बना । वहाँ महाराज ढोल की महारानी मरवण को बहिन बनाकर पवित्र रिश्ते में बाँध लिया । ईर्ष्यालु लोगों ने उनके पवित्र प्रेम को बदनाम करना शुरू कर दिया । निहालदे

यह सुनकर "सौत की डाह" से भभक पड़ी । उसने भाट को तीन सौ साठ परवाने लिखे । नमूने के तौर पर देखिए :-

समुन्द्र[1] माँह है मेरा पति तू क्यों सुहागण होले
कट जा तेरी जीभ भाट भी के मूँह ते के बोले

सुलतान उस भाट का दरबारी घोड़ा लेकर चला तो वह भाट [भटणी] रो पड़ी । बोली :-

किसी सन्द का सा घीर सुन्ना कर चाल्या मर वर नै
तेरी रांडै भाट बाकूज माँ जाए लाल पड़या अपने घर नै

इधर सुलतान सुस्ती के कारण ठीक समय पर न पहुँच सका तो कुँवर निहालदे ने चिता पर बैठने की तैयारी कर ली । वियोग वेदना से तड़प उठी । पपीहे से बोली :-

पी की वाणी छोड़ दे क्यों रहा कालजा सारै[2] 2
तौ पपीहा पाणी मिलै मैं नहीं भरतार
पैसा बोटी[3] दे दे मनै दीखै नरक के हाट[4] बजार
दुःख सुख की बतलाय हूँ जा मिलूँ भरतार

चिता में अग्नि प्रज्वलित हुई । निहालदे के चारों तरफ आग थी । ठीक उसी समय सुलतान ने पहुँच कर चिता में छलाँग लगाकर अपनी जान पै खेल के प्रेयसी [निहालदे] को बचा लिया ।

[2] वीर कथात्मक गाथाएँ :- वीर गाथाओं [केवाड़ा] में ऐतिहासिक पुट के साथ साथ कल्पना का भी समावेश होता है । बहुत सी ऐसी घटनाएँ जो किसी कारण वश इतिहास में स्थान में असमर्थ रह गईं -चारणों

---

1. समुन्द्र
2. कलेजा छीलना
3. म फूल
4. दुकान

भाट्टो और जोगियों द्वारा शाखों, पवारों और गीतों में ढलकर परम्परागत [पीढी दर पीढी] रूप में जन गायकों को प्राप्त होती रही । आल्हा-ऊदल, भूरा बादल, जैमल फत्ता, गूगा, हरफूल जाट जुलाणी आला आदि प्रसिद्ध गाथाएँ इसी के अन्तर्गत आती है । आल्हा के प्रत्येक दृश्य में वीरता का चित्रण है, भूरा बादल के साखे, जैमल फत्ता के पवारे और हरफूल जाट जुलाणी आला जातीय वीराख्यान है । गूगा का पराक्रम यहाँ के जनमानस के हृदय में समान पूर्ण अंकित है ।

आल्हा :- यहाँ के वीर रस साहित्य को दो शैलियों में बाँट सकते है - प्रथम आल्हा एवम् दूसरे साखे । बादलो की गर्जन तर्जन के मध्य चौपाल से सावन भादों की सुहावनी रातों में ढोलक की थाप के साथ साथ आल्हा खण्ड की वीरता से भरी हुई पंक्तियाँ सहज ही सुनाई दे सकती है । शान्ति वन्दना ही देखिए जो आल्हा खण्ड के गायन में आरम्भ होती है :-

जय जग जननी, सब दुःख हरणी, तारण तरणी पालन हार ।
शरण पड्या सूँ माता तेरी नैया मोरी लगादे पार ।
पूरब सुमरूँ कामाछा नै उतर सुमरूँ श्री केदार ।
पच्छम सुमरूँ विंध्य वासिनी, दक्खन रामेश्वर सरकार ।
धौल गिर को सुमर भवानी और कैलाश सारदा ध्याय ।
मैया सुमरूँ गढ़ मेरठ की कलकत्ते की काली माय ।

आल्हा उत्तर भारत के अधिकांश भाग में गाया जाता है परन्तु हरियाणावी आल्हा अपनी शैली स्वयं में बेजोड़ है । यह एक वृहत वीर गायन है । वर्षा ऋतु में महीनों रात ढलने पर भोर होने तक गायी

जाती है और अगली रात को फिर कथासूत्र वहीं से आरम्भ होता है जहाँ से छोड़ा गया था। शताब्दियों से आल्हा की वीरता पूर्ण पंक्तियाँ यहाँ के जन मानस को दुश्मनों से लोहा लेने की प्रेरणा देती रही है। वीरता पूर्ण पंक्तियों का इतना साक्षात् प्रभाव है कि यहाँ के लोग निर्बल का स्वयं सहारा बन जाते हैं और उन्हें धीरज बन्धाते है -"जब तक जीवैं आल्हा उदल तुमको कौन बड़ी परवाह" यह आल्हा की पंक्ति इस बात का साक्षात प्रमाण है।

जब गढ़ महोबे में माहिल के चुगली खाने पर राय पिथौरा पृथ्वी-राज चौहान महोबा के महाराजा परिमल से अपने पाँचों बाज और घोड़े वापिस माँग लिये तो राय पिथौरा से दुश्मनी लेना भी उसके लिए असम्भव सा था परन्तु आल्हा-उदल गरजे :-

एक बार तो क्या कहिए सात बार आवे चौहान
बावन गढ़ के जितने राजा उनसे वीर बड़ा बलवान
लिख देयो चिट्ठी तम[1] पिरथी को कर दूँ चूर सभी अभिमान
उड़गे बाज हम ना देंगे जब लग घट में अपने प्राण
चाचा दौलत[2] तन्ने जितकी खातर करेंगे हम अंसाण

आल्हा वाणी में अनेक युद्धों का वर्णन मिलता है। यहाँ एक युद्ध वर्णन का आल्हा गायक की वाणी में देखिए:-

सन सन सन सन गोला छूटे चुम्ता आसमान छुआ जाय
जिस घोड़े के गोला लागे उसका पता भी लागे नाय
जिस योद्धा के गोला लागे उसका सिर धरण पे जाय
गोला लागे जिस हाथी के वो झट परवत सा गिर जाये

---

1. तुम
2. दूर

ज्यों ज्यों दुश्मन के ढेरे गोलों के फटने से उनकी मस्ती गई त्यों 2 गोलियों बौछार झाड़ने लगी :-

दन दन दन दन गोली छूटे जोधा खूब भरे हुंकार
झाड़ मारी वैरी के दल छपक छपक चाले किलकार
छट छट छट छट जाल्हा करता तेगा सन्न सन्न सन्नाय
बौ सरोही सर सर करती आता सन्नाटा सन्नाय

भूरा बादल: यहाँ दूसरी ओर इस प्रधान गायक जोगी "भाटे" कहलाई, ये जोगी के गाथे के नाम से भी जाने जाते हैं। यह शैली आल्हा शैली से भी प्राचीन है। आज का जोगी प्राचीनकाल का चारण ही तो था जो युद्ध के मैदान में अपनी सेनाओं को ओज पूर्ण वाणी में गाथे गा-गाकर अपनी सेना के जवानों में वीरता संचार करता था - उनके पूर्वजों की यश गौरवगान क्यों भावनी गा गाकर। जो अनेक घटनाएँ इतिहास के पन्नों में स्थान नहीं पा सके हैं अभी हमारे पूर्वजों की बहादुरी का इतिहास जोगियों के पीढ़ी दर पीढ़ी के द्वारा हमारे समक्ष सारंगी के साथ आज भी विद्यमान है - यह रही जोगियों की सांस्कृतिक परम्परा की महत्ता। लेकिन आज यह परम्परा शनैः शनैः दम तोड़ती जा रही है।

"भूरा बादल" यानि "गोरा बादल" के युद्ध की गाथाओं के रूप में निम्नलिखित हैं जो जोगियों द्वारा गाये जाते हैं :- राजा रत्न सैन के दुश्मनों द्वारा धोखे से पकड़े जाने पर रानी पद्मिनी भूरा बादल के पास सहायता के लिए, विनय करने पर वह पुराने

वैमनस्य के कारण सहायता के लिए इन्कार कर देता है तब भूरे की रानी के उत्साहित स्वर देखिए:-

भूरे बादल की कामनी बोली पटरानी
राजा सुरमा मरद है राजपूत की रानी
ये बाईं तम्ने जाँच है अब मत न जानो
मैरे सग तले की स्त्री चढ़े सेज बिराजी
यहाँ कहावे राजपूती यहाँ ही मुसलानो
कलमाँ पढ़े सुल का ही हुक्म पठाणी
ख्वो अब अपने पीव की लोकोत्तर बानी
इस राजा के मरी, बादर यहाँ तजो प्राणी
भूरे बादल की रानी बोलनी राजा के ताहीं
राजा तेरो माँ राज्य ने आज के लिए कमर कमाई
किले गलियारे के बीच में जा ठोकर खाई
तूँ हिन्द नहीं राजपूत किले ब्याही स्याही

और आखिर में भूरे की पत्नि इतना कहने पर भी सबर नहीं करती वह स्वयं युद्ध में जाने को तैयार हो जाती है :-

सिर की चमड़ी तार दे कटवाई
मैं लड़ूंगी फौज में छट्टण की नाहीं
मार गौरी बादशाही छोड़ूंगी नाहीं
जिनकी और लड़ैगी फौज में उनका जीवन नाहीं

भूरे की माँ भी उसे युद्ध में जाने का आदेश देती है । भूरा अपनी माँ को अपने पिता को जहर देकर मारने की बात याद दिलाता है । तब उसकी

में उसे पाण्डवों द्वारा संकट में दुर्योधन की सहायता का उदाहरण पेश करती है :-

भूरे की माता बोलती सुन भूरा बेटा
ये सोलह सौ पद्मनी तेरै क्यों चौफेरा
तनै देवर- देवर कह रही क्यों मुकरा फेरा
के राणी आंसू गेरै मोर ज्यों पिया मरते मेरा
तोड़ कगार दे कांगना पकड़ै सब गेरा
गैरो साह के दर्गा में रे ब्याह हो गा तेरा
साज्या होज्या आरता कवारूया बेटा
वेरी था तो के हुया भाई था तेरा
सैर गढ़ा के कीड़िए हूं रहा भौरा
तूं बोटै ना पूछी मनै दे दे धीरा
पै पड़ु दर्गा में टूटकै मार ढाढू टेरा

भूरा का जवाब :-

भूरा बादल बोलता माता के ताहीं
माता वो दिन याद नां तू राड किराई
इनका सौहरा धितराष्ट्र सैन था क्यों दगा कमाई
मेरा बालक मारूया छार दे मेरा राज छवाई

राजमाता :-

भूरे की माता बोलती भूरे के ताहीं
बेटा क्यों रणां को रनी कर म्हारै आई
तेरा अमर पटा दरगाह का लिख्या है न्याई
बेटा भरया समुन्द्र देख के गो पीज आई

इस प्रकार अनेकों उदाहरण देकर राजमाता अपने पुत्र भूरे को पद्मिनी की सहायता करने के लिए प्रेरित करती है :-

केरतर[1] कैरों[2] पाँच पिछ दुर्योधन भाई
चीर कृष्ण कानिया राख ना संकया[3] खाई
भीम लड़ो भगवान सों जब हुई लड़ाई
भगवान के चक्कर पै भीम गदा चलाई
स्वर्ग में होंगे वासे उनके रे वीरां
जिसने गीता भागवत सुनाई

"भाना" नामक लोहार जो एक भोक सैनिक है उसे भी उसकी माँ युद्ध के लिए प्रेरणा देती है । सभी वीर राजियों को वेश भूषा में पालकियों में बैठकर बादशाह की छावनी की तरफ चलते हैं । बादशाह अपने उद्देश्य पूर्ति पर खुश होकर पिंजरे में कैद रत्न सैन को पालकियों के समक्ष लाता है । रत्न सैन भूरा के कुकृत्य की भर्त्सना करता है और अपना सिर पटक मारता है पिंजरे को देखकर । परन्तु भूरा "माजदे" और "कुनादे" रानियों के नाम कहकर "भूरे" संकेत करता है जिसे रत्न सैन समझ लेता है । जहूरखे में आग लगने के इशारे पर चित्तौड़ी राजपूत पालकियों से निकलकर खून की होली खेलने लग जाते हैं । देखिए वर्णन :-

जहूरखे में लगी आग हुई धूमधाम[4]
कड़ कड़ नाड़े टूटे डोल्याँ[5] दरम्यान
डोल्याँ से कूदे सूरमे[6] मारया के लाल
लोहा बाजे खड़ाखड़ तलवार कटार

---

1. देना
2. कौरव
3. शंकर
4. नाश
5. डोली
6. वीर

मुगलों की सेना को भूरा बादल एवं उसके साथी की वीरता से रौंद रहे थे :-

> मारे कटारे तनां मैं उठे गर गाप
> को मारया को मर गया खा खा पछाड़
> सरदू काजी लिया मार, तम्बू के बाहर
> बाहर मैं सुरखी न्यूं की साम्मण के ताल
> जैसे दूध बिलोवै गुजरी मथुरा दरम्यान
> होली जैसे कामनी रंग की छूटै फुहार

इसी प्रकार जैमल फत्ता, वीर जवाहर लाल, हरफूल जाट जुलाणी वाला आदि गाथाएँ इसी के अन्तर्गत आती है। जिनका विस्तृत वर्णन आगामी [परिच्छेद]   में वर्णित है।

[3] <u>अद्भुत कथात्मक गाथाएँ</u> :- अद्भुत तत्वों की प्रधानता वाली गाथाएँ साहसिक कार्यों के साथ 2 अलौकिक तत्वों का मिश्रण रखती है। "कितनी ही कथाएँ ऐसी होती है जो अलौकिक तत्वों पुरुषों - देवी देवताओं के अनोखे कार्य कलापों परियों और अनोखे लोकों की कल्पना भूमि पर कथा की सृष्टि होती है। पशु पक्षियों का बोलना, जादूगरनी का मक्खी बनाकर अपने पास रखना, खड़ाऊँ पहनकर हवा में उड़ना, एक ही कटोरे से सैकड़ों की भूख मिटाना, परियों के देश की सैर करना। इस प्रकार अलौकिक घटनाएँ इन कहानियों वर्णित होती है। जादू टोने की कहानियाँ भी इसी के अन्तर्गत आती हैं। इन्हें काल्पनिक गाथाएँ [फैबल्स] भी कहा गया है[1]। "शीला दे" में महल के दीप द्वार आदि

---

1. हरियाणा लोक गाथाएँ लेखक श्री देवी शंकर प्रभाकर पृ ।।

बोलकर चकित कर देते है । ये मानवेतर तत्व श्रोता के आश्चर्य की सीमा को तोड़ देते है ।

गूगा वीर :- लोक गाथाओं की इस तीसरी श्रेणी में अद्भुत गाथाओं गूगा वीर "जाहरपीर" के कई कृत्यों में अनोखे दर्शन मिलते है । वैसे यह भी वीर गाथाओं के अन्तर्गत भी लिया जा सकता है । देखिए कुछ अलौकिक दृश्य :-

कजली बन सूं गोरख आया चौदह सौ चेला संग लाया ।
आ बागों में डेरा लाया बारह बरस का सूखा बाग हराया[1]
फूलों का डोना[2] माली भर के ल्याया अम्मा बाछल[3] जाय दिखाया
औषध चेला ने जाए अलख जगाया रानी भिक्षा लाई गुर की दिक्षा
सेवा में बाछल आई
जाहरपीर मरद अवतारी
उन्ने जीत पीरी पाई ।

गूगा जब गर्भ में है तभी वह चमत्कार दिखाता है - रथ के बैलों को जब साँप डस लेता है तो अपनी माता को स्वप्न में इस मुश्किल के उपाय का संकेत देता है । और सिरियल से शादी के समय भी इसी प्रकार की अद्भुत बात बनती है । तातिग नाग का कामरूप देश में जाकर नाग बनकर सीरियल को डसना फिर सपेरा बनकर महल में जाना और गूगा से शादी करने की शर्त स्वीकार करने पर उसे पुनः जीवित करना । इस तरह गूगा की शादी होना । सीरियल और उसकी सास यानि

---

1. हरा भरा करना ।
2. दोना ।
3. गूगा की माँ ।

गूगा की माँ बाछल के मध्य वार्तालाप के पदों का वर्णन देखिए :-

बोलै सरियल कै कहै सुण सासु मेरी बात
सुण सोई रंग महल मैं मन्नै आये बाल जंजाल[1]
बिन्दो टूटो भौं[2] पड़ी मेरी कलगी था नाथ
सौपने[3] मैं हलका हुई तेरा छिन्यौ[4] कंवर का राज

इस अद्भुत स्वप्न की बात सुनकर गूगा की माँ बाछल अपनी बहू से कहने लगी :-

बोलै बाछल कै कहै सुण सरियल मेरी बात
ख्यालसौपने की बात से सोचै ना बाल जंजाल
सौपने मैं राजा भये जागत भये कंगाल
सौपने मैं लाला बने कलम्ब[5] ले ले हाथ
म्हारे सिर पै गोरख नाथ से हम उरे करांगे राज ।
पौ फाटी पगड़ा[6] भया मुल्ला नै दीनी बाँग
मरद सँवारै पागड़ी तिरिया सँवारै माँग
बोलै सरियल कै कहै सुण सासु मेरी बात
थूँ थूँ थूका बाछला गढ दादर कै माँह
ऊँची चढके तूँ देख ले हो रहो सें श्याम ।

एक अन्य शाके मैं गूगे की अनोखी भविष्य वाणी अपने भाणजे को :-

बोलै गूगा कै कहै सुण बाला मेरी बात
कितनै[7] भैल्ली ले लई किसकी न्योंदी जा
मेरा तो बाका[9] है छूआ तूँ उल्टा घर नै जा
बाछा रण जीत के तेरै भात भरेगा आ
सूणो मेरे बाला भाणजा ।

---

1. बुरे स्वप्न । 2. भूमि । 3. स्वप्न । 4. गया ।
5. कलम । 6. सुबह होना । 7. कहाँ को । 8. निकम्मा ।
9. छलना ।

[4] लोक कथाएँ :- लोक गाथाओं की चौथी श्रेणी में शताब्दियों से सामान्य लोक जीवन में प्रचलित धर्म सम्बन्धी कथा, व्रत कथाएँ पौराणिक एवम् गीतों के विश्वास पर आधारित गाथाएँ आती हैं। "शान्ति और क्रान्ति के विभिन्न क्षेत्रों में लोक कथाएँ जनसमुदाय में स्फूर्ति एवम् प्रेरणा का एक संचार करती हैं। लोक मानस में परिव्याप्त होकर असीम आनन्द की लहरों में सुन्दर सत्य का उद्घाटन करती है।"[1]

चौथी प्रकार की इन लोक गाथाओं में एक जीवन वृत चित्र देखिए जिसमें पौराणिक कथा सत्यवादी हरिश्चन्द्र के जीवन इतिहास को पदों में कहा गयाहै :-

तीन आदमी घर तै चाले बीखा पड़ी[2] में चाल पड़े
राजा तै भंगी कै लाग्यारानी मिश्रा का नीर भरे[3]
रोहतास कंवर के से बैटे पै माता कै साथ मैं चाल पड़े .. औ भगवान..
ठा कै छुटी[4] राजा चाल्या हुआ तालाब की राही
ठा कै टोकणी रानी चाल्यी वा मिश्रा नीर भरे
कद की देखूं बाट घाट पै मानुस आण की रै
तेरे पति को बदा कोन्या रानी छुटा उठाण को रै
ओरे राजा आंऊ कोन्या जतन बता दूंगी औ
जाती जल मैं डुबै गोता मार छुटा उठा ले न
ठाकै छुटा राजा चाल्या हुआ शहर की राही पैक
ठोकर लागी घड़ा फूटग्या हरि चन्द रौंग लागा रै
सरे नाज[5] का छुटा रै हरि चन्द रौज कहै तै न्याजगा

---

1. लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि डा० विद्या चौहान पृ० 52
2. बुरा समय आना।
3. जल भरना।
4. मटका।
5. अनाज।

कंवर रोहतास को श फूल लाने को भेजा जाता है परन्तु वह जिन्दा वापस लौट के नही आता । विधि ने कैसा मजाक किया उनके साथ ?

देखिए :-

इक्कीस दिन अन्न खाये हो लिये मेरे बस की बात नही
तेरे बस की बात नही सो हूं जा मरघट पै बैठ जा नै
जिस राणी का लाल मरै हूं सवा रुपया ल्याइये है
पूरणमासी का व्रत ऐ राणी तनै बाहलै पाणी ल्याणा सै
रोहतास कंवर से कैहे तेरे फूल तोड़ के ल्यावगी
कदे पातां नै कदे सिरहाणे नै फिर खाट की जड़ को ऐ
रोहतास बेटे तन्ने तड़के फूल ल्याणे से
ठाके डुलिया लड़का चाला मुआ बाग की राही ऐ
खिला कंवल का फूल लड़के ने डाल झुकाली ऐ
लड़के ने तो डाल झुकाई नागन ने डंक मारा ऐ
मुहो[1] पड़के रोग लागा मान्स नही मलो से ऐ
मेरी माता ने बेरा करदी गुम हुई ना शान रे
ठाके डोगा माली चाल्या होया शहर की राही ऐ

तारामती को रोहतास को सांप डसने को खबर मिली तो वह बेसुध हो गई उसे अपने शरीर का होश हवास नही रहा । काल चक्कर ने उसके साथ कितना क्रूर मजाक किया । पहले तो पति को बिकना पड़ा फिर स्वयं को भिल्ल के घर जाना पड़ा परन्तु फिर भी समय के शक्तिशाली एवं परीक्षात्मक हाथों ने अपने पुत्र को उससे छीन लिया ।

---

1. औंधे मूँह ।

रानी रोहतास के पास पहुँची तो वह मर चुका था । उसे उठाकर श्मशान की ओर चल पड़ी । उस समय का हृदय विदारक चित्र शब्दों के माध्यम से देखिए:-

कुएँ को पणिहारी रो तेरा लाल बाग मैं रोवै से
और खबर तिकर नही माता-माता कह रहा से
रोवती सुबकती राणी चाली हुई बागां को राई ऐ
रोवै राणी रुदन मचावै ठा छाती कै लाया ऐ
बड़ी मुश्किल से पाला रे बेटा भर भर बेले[1] प्याए थे
दुनियाँ मैं जाण से बैठ गये रोहतास कदर से बैठे ऐ
ठावै लाश नै राणी चाली हुई मरघट की राही ऐ
चुग 2 लाकड़ी[2] राणी नै बैटै की चिता बनाई ऐ
जब राणी नै आग दई राजा नै रुक्का[3] मारा ऐ
कफन वाले मनै दे सवा रुपया दे जाईये
राजा नै राणी देखी राणी नै राजा देख लिया
सवा रुपया राजा किस से ल्याऊं, के पासे से ल्याऊँ ओ

दोनों ने अपने सत्य एवम् धर्म की लाज रखने में अपना सर्व कुछ न्योछावर कर दिया । धर्म संकट का अन्तिम दृश्य :-

आधा चीर मेरा पाड़ु[4] ले जा भाी नै दे दे नै
तन्नै उठाया तन्नै तार लिया यू रखी का धर्म नही

इस प्रकार उपरोक्त बागिक कथात्मक गीतों का वर्णन तथ्यों के आधार पर कियागया है ।

1· कटोरे ।
2· इकट्ठी की हुई लकड़ी ।
3· आवाज ।
4· फाड़ना ।

भाग (ख) स्वाँगपरक गीत :-

स्वाँग का अर्थ बहाना करना होता है। किसी बात या घटना को छिपाने के लिए, बहाना या भेष बदला जाता है। स्वाँग में ऐसे गीतों का विधान होता है जिसमें वास्तविक स्थिती का ज्ञान नहीं होता है। इस गीत के साथ नृत्य भी होता है। गायक ही नृत्य भी करता है। नृर्तक के पीछे अन्य गायक भी टैक पद दोहराते है। स्वाँग को कहीं कहीं भगत या नाटको भी कहा जाता है जिसका विवरण अगली पंक्तियों में दिया जा रहा है। स्वाँग में वास्तविक बात का प्रगटीकरण नाच कर और गाकर किया जाता है।

स्वाँग नाटक या रूपक का वह प्रकार है जिसमें पद्य की प्रधानता होती है इसे अंग्रेजी में   या गीत नाटक कहते है। इसे काव्यात्मक नाटकभी कहते है। इनमें कथोपकथन अधिकतर पद्य में होता है। कहीं कहीं गद्य में भी वार्ता होती है। इसमें गाये जाने वाले गीत, वार्तालाप एवम् नृत्य का उद्देश्य स्वाँग की सार्थकता सिद्ध करता है।

1• लोक नाट्य परम्परा और लोक मंच :- भारत की संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में शीर्षस्थ है। साहित्य, कला और विशेष रूप से नृत्य गायन और अभिनय की तो यह भूमि प्राचीनतम केन्द्र रहती ही है। जब हम वर्तमान "साँगीत विधा" की और दृष्टिपात करते है तो इसके ताने बाने में व्याप्त अनेक प्राचीन नाट्य विधायों की झलक आँखों के सामने घूमने लगती है अतः साँगीत विधा प्राचीनतम भारतीय नाट्य विधायों गाथा गायन परम्परा लोक वार्ता तथा लीला नाटकों से जुड़ी है। अतःआज यह कहना कठिन है कि साँगीत परम्परा का मूल रूप क्या था और वर्तमान "साँगीत परम्परा" किसी प्राचीनतम परम्परागत नाट्य विधा का वर्तमान रूप है अथवा यह विभिन्न

प्राचीन लोकधर्मी नाट्य परम्पराओं के समन्वय द्वारा किन्हीं कुशल कलाकारों द्वारा खड़ा किया गया कोई मौलिक मध्यकालीन नाट्य रूप है। दुर्भाग्य से आवश्यक प्रमाणों और सन्दर्भों के अभाव में हमें इस सम्बन्ध में केवल कुछ प्राचीन अनुश्रुतियों, साहित्य में उपलब्ध इने गिने प्रदर्शन सम्बन्धी उल्लेखों अथवा प्राचीन कवियों द्वारा अपनी प्राचीन रचनाओं में प्रयुक्त कुछ शब्दों [जैसे स्वाँग, साँग, भगत आदि] को ही आधार बनाकर इस अन्धेरे में टटोलना होगा।"[1]

"स्वाँग" या साँग" ही वह प्राचीनतम शब्द है जो लोकधर्मी प्रदर्शनों के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिस साँगीत परम्परा का हम यहाँ विवेचन करने जा रहे हैं उसके विभिन्न क्षेत्रीय नाम हैं : जैसे भगत, नौटंकी, रास, तमाशा, ख्याल आदि आदि। इन सब नामों में भी सर्वाधिक प्रसिद्ध शब्द "स्वाँग" या साँग ही है। स्वाँग देखना, स्वाँग करना, स्वाँग भरना, स्वाँग बनना, स्वाँग सजाना आदि जैसे अनेक मुहावरे हैं जो स्वाँग शब्द की महत्ता-व्यापकता व प्राचीनता के प्रतीक हैं।

वैदिक काल से पूर्व भी "संगीतक" का प्रचलन किसी न किसी रूप में अवश्य रहा होगा क्योंकि वैदिक काल में तो सामवेद के गीतों के वाद्यों के साथ साभिनय प्रस्तुतीकरण को ही संगीतक की संज्ञा दी गई। नाटक को पंचम वेद की संज्ञा दी गई है जिसे सभी वर्ग के लोग देख सुन सकें "क्योंकि वेदों के पठन पाठन का अधिकार शूद्रों के लिए निषिद्ध था अतः पंचम वेद की रचना अत्यंत आवश्यक प्रतीत हुई। इस प्रकार सभी वर्गों के मनोरंजन के लिए ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर ब्रह्मा ने "नाट्य वेद" की सृष्टि की।[2]

जग्राह पाठ्यं ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि ॥

---

1. साँगीत एक लोक नाट्य परम्परा लेखक श्री रामनारायण अग्रवाल पृ० 13-14
2. नाट्यशास्त्र भरतमुनि 1/17/18

इस नाट्य धर्मी को नृत्य नाटक की संज्ञा दी गई है । प्राचीन नाटकों की यह विशेष नाट्यशैली थी । किन्तु ऐसे नाटकों के पोषक लोकमान्य है इसे आचार्य भरत भी स्वीकार करते है । आचार्य भरत ने लोक धर्मी नाट्य परम्परा का उल्लेख इस प्रकार किया है[1] :-।

स्वभावोपगतं शुद्धं तु विकृतं तथा ।
लोक वार्ता क्रियोपेतमंगलीलाविवर्जितम् ॥
स्वाभावाभि नयोपेतं नानास्त्रीपुरुषाश्रयम् ।
यदीदृशं भवेन्नाट्यं लोकधर्मी तु सा स्मृता ॥

निश्चय ही यह विधा "सामसंगीत" का रूप है जो समयानुकूल संगीतक बनी "सामवेद सहस्त्र गीत्युपाय:" से स्पष्ट है कि सामवेद संगीत का आदि स्त्रोत है । डा० कृष्ण देव उपाध्याय का मत इस सम्बन्ध में कुछ संगत सा लगता है कि सामवेद के गीतों का नाटक के निर्माण में कुछ कम योगदान नहीं है । नाना धार्मिक तथा सामाजिक अवसरों पर नृत्य की प्रथा प्रचलित थी । इस प्रकार गीत "संगीत" नृत्य तथा अभिनय की त्रिवेणी ने प्राचीन नाट्य को जन्म दिया ।[2]"

वैदिक कालीन ब्राह्मणों द्वारा देव एवम् ऋषियों के रूप में स्वर्ग का सांग "स्वांग" धरती पर करने का वर्णन है । पौराणिक कथाओं के अनुसार स्वयं शिवजी महाराज ही स्वांग भरने के प्रतीक है । उन्होंने ही भारत में संगीत और नृत्य की परम्परा की आधारशिला रखी जिसमें ताण्डव नृत्य तथा उनकी अर्धांगिनी (शक्ति उमा) ने लास्य किया ।[3]"

1• नाट्य शास्त्र भरत मुनि अध्याय 13 श्लोक 71-72
2• लोक साहित्य की भूमिका लेखक कृष्णदेव उपाध्याय पृ० 178
3• संवाद पत्रिका नवम्बर 80 से उद्धृत सामग्री ।

नाट्य शास्त्र में "देवासुर संग्राम" वास्तव स्वांग या संगीतक का ही रूप है क्योंकि इसका प्रदर्शन मुक्त मंच पर जनसाधारण का मनोरंजन प्रदान के उद्देश्य से हुआ वरना पराजित होने पर असुरों को उत्पात करने का मौका नहीं मिलता ।"[1]

समाज को भी "प्रेक्षक" या नाट्य के रूप में माना गया है क्योंकि इसमें संगीत या संगीतक की विशेषताएँ झलकती हैं । वाल्मिकी रामायण में समाज नाटक के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है । विल्सन ने भी समाज को नाट्य रूप में स्वीकार किया है । बाण भट्ट की कादम्बरी के अनुसार संगीतक में वीणा, वेणु, मृदंग आदि वाद्यों का प्रयोग होता है । संगीतक का प्रचलन हर्ष के समय में भी था क्योंकि वे स्वयं और भट्ट नारायण भी इसके ज्ञाता थे ।"[2]

हरिवंश पुराण में लोक नाटक के रूप में यादवों के उत्पात का एवम् उत्सव का वर्णन भी मिलता है[3] । भागवत पुराण में कृष्ण लीलाओं के प्रदर्शन का उल्लेख मिलता है[4] :-

मा भैष्टवातवर्षाभ्यां तत्त्राणविहितं मया ।
इत्युक्त्वैकेन हस्तेन यतन्त्युन्निदधे'म्बरम् ॥

स्वांग की एक परम्परा भगत और कीर्तन के रूप में भी पाई गई जिसका विवरण तो एक मात्र अबुलफजल की आईने अकबरी की कुछ पंक्तियों में यदुनाथ सरकार द्वारा इस प्रकार मिलता है[5] :-

"The Bhagtiya have songs similar to above (Kirtaniya) but they dress up in various disguises and exhibit extraordinary mimicry.

---

1. नाट्य शास्त्र भरत मुनि अध्याय 2। पृ० 203
2. संवाद पत्रिका नम्बर 80 से उद्धृत ।
3. हरिवंश पुराण विष्णु पर्व अध्याय 90
4. भागवत पुराण दशम् स्कन्ध अध्याय 30 श्लोक 20
5. आईने अकबरी वाल्यूम 3 पृ० 272

Kirtaniya are brahmins whose instruments are such as were in use in ancients. They dress up smooth-faced boys as women and make them perform singing the praise of Krishna and reciting his acts."[1]

संगीत या स्वांग का यह मंच जो बाद में नौटंकी के नाम से भी जाना गया था एक जन श्रुति के अनुसार :- ।। वीं शताब्दी में पंजाब में किन्हीं मल नामक जाट, रावल नाम के राजपूत और रंगा नाम के जुलाहे ने मिलकर तीन व्यक्तियों के साथ एक मण्डली बनाई जो गाँव गाँव में जाकर ढोलक पर कुछ कथाएँ गाकर सुनाती थी । जो जनता को बहुत रुचिकर लगी । यही गाथाएँ बाद में विकसित होकर मंच पर लाई गई और इसी मंच परम्परा का वर्तमान रूप नौटंकी कहलाया ।[2] सिद्ध और नाथों के समय में यह संगीतक-सांग या स्वांग के रूप में पाने लगा । परन्तु ।। वीं शताब्दी स्वांग अवश्य ही किसी न किसी रूप में उदित हो चुका था । सिद्ध कण्हपा की वाणी में डोम्बी के साथ स्वांग करने की चर्चा मिलती है जो निम्न है[3] :-

आलो डोम्बी तो ए सम करिब म सांग ।
निघिण कण्ह कपाली जोइ लाग ।।

डा० दशरथ ओझा प्रयुक्त इस सांग के शब्द को नौवीं शताब्दी में मानते है । गोरख नाथ की वाणी भी स्वांग को इस प्रकार प्रमाणित करती है[4] :-

अरे स्वांगी सवांगी जो सभी भयो पांची दैवर ल्यायो लार ।
घट में सो आनन्दल मौज़ली, ते कारण छोड्यो भरतार ।।

---

1. आईने अकबरी वाल्यूम 3 पृ० 272
2. संगीत एक लोक नाट्य परम्परा रामनारायण अग्रवाल पृ० 19
3. बौद्ध गान औ दोहा हरि प्रसाद शास्त्री द्वारा सम्पादित पद 30
4. माधव विनोद पृ० 12

सिद्ध कण्हपा, जो नवीं शताब्दी में हुए हैं, कि वाणी का उक्त उद्धरण राहुल जी की "हिन्दी काव्यधारा" से लिया गया है। डा० दशरथ ओझा ने यहाँ प्रयुक्त साँग शब्द के आधार पर स्वाँग परम्परा काप्रारम्भ 9वीं शताब्दी में माना है। डा० सोमनाथ गुप्त इस सम्बन्ध में "माधव विनोद" की भूमिका में लिखते हैं कि "हमारे विचार में यहाँ स्वाँग का अर्थ संग या सम्पर्क है, साँग करना अथवा खेल करना नहीं है। यदि यह अर्थ होता तो ओझा जी [डा० दशरथ ओझा से अभिप्राय है] का मन्तव्य मान्य हो सकता था। वास्तव में उक्त उद्धरण के पाठ में साँग न होकर संग ही है। परन्तु हरिप्रसाद शास्त्री द्वारा सम्पादित "बौद्ध गान औ दोहा" नामक बंगाली पुस्तक में 30 वें पद में यही पद दिया हुआ है। उसमें पाठ साँग ही है। परन्तु उस पद की टीका से पता चलता है कि डोंवी स्वयं योग का एक पारिभाषिक शब्द है और साँग का अर्थ सम्पर्क है[1]।"

चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 15वीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्वाँगों के प्रदर्शन जन रुचि को अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्णतः सफल हो गये थे। यह प्राचीन साहित्य में स्वाँगों के उपलब्ध उल्लेखों से ज्ञात होता है। कबीर ने लोक नाटक के सूत्रधार के अर्थ में बाजीगर शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर किया और उनके स्वाँग रचाने का उल्लेख किया है। एक स्थान पर वे लिखते हैं[2]:-

बाजीगर डंक बजाई। सब खलक तमाशे आई ।।
बाजीगर स्वाँग सकेला। अपने रंग रवै अकेला ।।

एक अन्य स्थान पर उन्होंने इस संसार को भी ऐसा ही बाजीगरी

---

1. माधव विनोद की भूमिका पृ0 12

2. कबीर ग्रन्थावली पृ0 117/90

का खेल माना है[1]:-

अब हम जानिया हो, हरि बाजी का खेल ।
डंक बजाय, दिखाय तमाशा, बहुरि सो लेत सकेल ।।

लोगों की रुचि कथा कीर्तन की अपेक्षा स्वांगों में अधिक होने लगी । कबीर ने स्वयं ही कह रहे हैं[2] :-

कथा होय तहँ श्रोता सोवै, वक्ता मूँड पचाया रे ।
होय जहाँ कहीं स्वांग तमाशा, तनिक न नींद
सताया रे ।।

कबीर ने ऐसे अनेक उदरण दिये हैं जिनमें स्वांग तमाशे उनके आयोजक नटों का सन्दर्भ मिलता है । जायसी के पद्मावत के "बादशाह दूती खण्ड" की यह पंक्ति ध्यान देने योग्य है[3] :-

पातुरि एक हुति जोग सवांगी ।
साह अखारे हुत ओहि मांगी ।।
भीख लेहु जोगिन फिर मांगू ।
कन्त न पाइये किये सवांग ।।

इसमें वेश्याओं से गुप्तचर कार्य भी लिया जाने लगा । अलाउद्दीन ने सांग के लिए पातुरि (वेश्या) का मांगना उस समय के सांग (स्वांग) के प्रचलन को प्रमाणित करता है ।

हास्यार्णव स्वांग में कवि रस रूप ने इस सम्बन्ध में कहा है:-[4]

महाराज तैलंग पति, अति प्रसिद्ध चहुं दाग ।
कामरूप नट सों कहो, हमहिं दिखावहु स्वांग ।।

---

1. कबीर ग्रन्थावली पृ० 127/91
2. कबीर ग्रन्थावली पृ० 127/92
3. पद्मावत बादशाह दूती खण्ड लेखक मलिक मुहम्मद जायसी दोहा 1,3
4. हास्यार्णव: - श्री कुंवर जी अग्रवाल काशी की मुद्रित प्रति
द्वितीय संस्करण

डा० सोमनाथ गुप्त ने इस रचना को सर्वप्रथम की लोक धर्मी लिपिबद्ध स्वाँग कहा है[1]। "साँग का प्रचलन तुलसीदास के काव्य द्वारा भी ज्ञात होता है। उनकी विनय पत्रिका में इस प्रकार वर्णन मिलता है[2] :-

नाच नाचत ही निसि दिवस मर्यो ।

घर अब अधर गगन जल थल में कौन स्वाँगु न कर्यो ।।

पाश्चात्य विद्वान श्री शेक्सपीयर ने भी इस संसार को रंगमंच माना है[3] :-

"The world is like a stage."

ठीक उसी प्रकार गुरु नानक जी संसार को स्वाँग मानते है। वे परमात्मा को नट मानते है जो संसार वालों को साँग करते है :-

नटुए साँगु बणाइया बाजी संसारा ।

गोपियों द्वारा कृष्ण का स्वाँग भरा गया इसका वर्णन तो रसखान ने भी बड़े सुन्दर ढंग से किया है - एक गोपी दूसरी से कहती है कि मैं श्री कृष्ण की भान्ति सिर पर मोर पंखा, गले में घुंघचियों की माला पहन, कृष्ण की तरह हाथ में लाठी लेकर पीला कपड़ा ओढ़, गायों के साथ ग्वाला बनकर रहूँगी अर्थात "भाव तो जोहो मेरो रसखानि, सो तेरे कहे सब स्वाँग करोंगी।" भाव तो यह है कि मैं कृष्ण का वेश भर लूँगी। व

इन तथ्यों से भारत में आदिकाल से लेकर भक्तिकाल एवं रीति काल स तक भारत में साँग, संगीतक, संगीत या स्वाँग अभिनित होने की प्रामाणिकता मिलती है। लोक मंच की परम्परा बहुत पुरानी है। इसमें

---

1. माधव विनोद की भूमिका पृ० 16
2. विनय पत्रिका गोस्वामी तुलसीदास पद 92
3. The seven ages of a man. A poem by Shakespeare.

इसमें संगीत, नाट्य और नृत्य तीनों का खूबसूरत समन्वय पाया जाता है। क्योंकि यह शैली संस्कृत नाटकों में भी थी। लोकमंच ने आदिम काल से मध्यकाल तक स्वांग परम्परा को बनाये रखा। मध्य युग की अप्रत्याशित परिस्थितियों ने परिस्थितियों ने लोकमंच में नवीनता फूंकी। संस्कृत नाटक ए० बी० कीथ ने यह बताया। भक्ति काल में सांग या स्वांग के बदले भक्त और मौलाना गनीमत की मसनवी "नोरंग इश्क" में स्वांग भरने को भात बाज कहा। ये भात बाजों की मण्डलियाँ घूम घूम कर स्वांग प्रदर्शित करतो। औरंगजेब में वेश भरन या नकल करने (सांग) का प्रचलन दिल्ली के आसपास खूब था। महाभारत में भी स्वांग का उल्लेख प्राप्त होता है[1]:-

कहूँ नृत्य कारी नचि गावें ।
कहूँ नों टंकी स्वांग दिखावे ।।

शनैः शनैः ये जनता के काव्यात्मक मनोरंजन का माध्यम बन गये और इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए " सांगीत" लिखना और खेलना भी आरम्भ हो गया।

2· बांगरू सांगों का उद्भव एवं विकास :-

सांगीत परम्परा के अन्तर्गत जिन वर्तमान में विद्यमान नाट्य विधाओं को स्वीकार किया गया है वे निम्न हैं[2] :-

1· मथुरा, वृंदावन तथा आगरा में प्रचलित भगत परम्परा (जिसे कहीं कहीं रहस नाम से भी पुकारा जाता है)

11· हाथरस की स्वांग परम्परा ।

1· इस महाभारत को रचना मौलानागनीमत के समकालीन हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सबल सिंह चौहान ने की थी।

2· सांगीत एक लोक नाट्य परम्परा लेखक श्री रामनारायण अग्रवाल पृ० 16

III. कानपुर की नौटंकी परम्परा ।

IV. हरियाणा तथा मेरठ की सांग परम्परा ।

वास्तव में उक्त नाट्य विधाएँ मूलत: कोई पृथक पृथक परम्पराएँ नहीं है वरन् ये सब एक ही मूल लोक धर्मी नाट्य- परम्परा की कड़ी है जो मध्यकाल में स्वांग नाम से प्रचलित रही । इसी स्वांग का एक नाट्य रूप उत्तर-मध्यकाल में उत्तर तथा मध्यकाल में ख्याल के नाम से विकसित हुआ था और उसी ने पंजाब में ख्याल, राजस्थान में तुर्रा कलगी मालवे में माँच तथा ब्रज क्षेत्र में भगत और स्वांग व हरियाणा तथा मेरठ में सांग नाम से प्रसिद्ध प्राप्त की थी । वास्तव में ये सभी नाट्यरूप मूलत: स्वांग या ख्याल परम्परा के ही स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित विभिन्न रूप हैं[1] ।

यह संगीत शब्द सांग के रूप में आज भी हरियाणा में सुरक्षित है । पहले यहाँ हाथरसी स्वांग की परम्परा बड़ी लोकप्रिय रही है । परन्तु वह परम्परा यहाँ पनप नहीं सकी । आज भी ब्रज की मण्ड लियों का यहाँ बड़ा सम्मान है परन्तु यह परम्परा भी यहाँ से भिन्न है यहाँ की सांग परम्परा का अपना अलग अस्तित्व है । मध्यकाल में हरियाणा के लोक कवि सादुल्ला ने लोकगीतों और लोकनाट्यों की रचना की जो उत्तरोत्तर बढ़ती गई[2] ।

यहाँ की सांग परम्परा सन् 1800 से पूर्व ही आरम्भ हो चुकी थी । सांग परम्परा अभिनय, मंच वाद्यों एवम् वेश भूषा का समीक्षात्मक परिचय का दृश्य रागनी के माध्यम से देखिए :-

हरियाणा की कहाणी सुण ल्यो दो सौ साल की ।
कई किसम की हवा चाल्लो नई चाल की ।

---

1. सांगीत एक लोक नाट्य परम्परा लेखक रामनारायण अग्रवाल पृ० 16
2. मध्यकाल में 12-13 वीं शताब्दी में अब्दुल रहमान कवि ने अपभ्रंश में सन्देश रासक की रचना की थी ।

प० मांगेराम की रागनी से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि बागड़ सांग परम्परा का विकास 1800 से पहले आरम्भ हो चुका था इनकी इसी रागनी में आगे देखिए:-

एक ढोलकिया एक सारंगिया खड़े रहे थे
एक जनाना एक मरदाना दो खड़े रहे थे,
पन्दरा सोल्हा कुंवर जुड़े खड़े रहे थे
गलो और गिलवाडूया मैं खड़े खड़े रहे थे
सबसे पहलम था चतराई किसन लाल की ।।

सी०आर० टैम्पुल ने किशन लाल व्यक्ति से सुनकर कई सांगों की सामग्री संकलित की। एक राजा ध्रुव की गाथा का एक अंश देखिए:-

रानी का डोला लिया, घर में दिया उतार।
जितनी पुर की कामिनी, दरसन करें कई नार ।।
मिल मिल के नारी सभी गावें बजावें ।
बहू को मिलना और खाना खावें ।
रहवे परिवार सभी निवारा निवार ।
रानी का भया बड़ा जितना सार ।
आए राजा मन्दिर में जब रानी के पास।
जो चाहिए सोई कह सुनो मेरी अरदास।

कैप्टन आर० सी० टैम्पुल ने इन सांगों का सम्पादन 1883 ई० में प्रकाशित अपनी पुस्तक "दी लिजैण्ड्स आफ दी पंजाब" में किया जिसमें किशनलाल के बाद इसी परम्परा में अर्थ 1800 का समय कीड़ी लाल का है अतः किशन लाल का समय 1800 ई० से पहले का ही बनता है। उपर्युक्त

---

1. दी लिजैण्ट्स आफ दा पंजाब लेखक श्री आर टैम्पुल वाल्यूम 3 पृ 126

प० मंगे राम की रागनी से यह स्पष्ट होता है कि किशन लाल भाट का समय 1750 ई० था क्योंकि यह रागनी 1950 की लिखि हुई है जो उनके सांगी जीवन का मध्यकाल है।

स्वांग का अभिनय पक्ष किशन लाल के समय में विकासोन्मुख स्थिति में था। आल्हा छन्दों की सीमित संख्या भी इसी तथ्य की पुष्टि करती है। टैम्पल द्वारा संकलित कथानक गाथा के रूप में सामग्री स्वांग की इस सांगीत शैली के बहुत निकट है। यही सांग (स्वांग) का रूपान्तरण करके विकसीत हुई। किशन लाल के बाद इसी परम्परा में बंसी लाल का नाम आता है। इनके सम्पादन में बंसी लाल के तीन सांगों का I. गुरु गुगा II. राजा गोपी चन्द III. राजा नल का संकलन मिलता है। टैम्पल लिखता है :-

"The Legend of Guru Gugga: As played annually at Jagadhari at Holi festival in the Ambala district....

....[illegible] portions of their speeches.[1]"

जिनका टैम्पल ने वर्णन किया गुरु गुगा का एक अंश देखिए:-

हरी शाकुम्भरी माई, तेरो है सोत स्वाई
कहता बंसी लाल बान्के करी सहाई।
बागर देश सुहावना जेवर राजा नाम।
छरे धरम में निरधार नहिनपाप से काम।।

बंसी लाल के स्वांगोंमें चौबोला गायिकी की उदयकालिन रचना है।

---

1. The Legends of the Punjab by C.R. Temple Vol. 3 Page 125

बंशी लाल के गूगा साँग का एक अंश इस प्रकार है :-

सात द्वीप नव खण्ड में नहीं पाई तेरी माया ।
कहता बंशी लाल भगत गूगे का साँग बनाया ।

पं० राम नरेश चौबे के अनुसार साँग की उत्पत्ति सबसे पहले सहारनपुर में हुई । परन्तु सहारनपुर भी हरियाणा का अंग रहा है[1] । इसी प्रकार ब्रज में स्वाँग की आगरा और हाथरस वाली दो गायकी दृष्टि से परम्परा रही । जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है । हाथरस के कलाकारों ने इसे नये छन्द, नई शैली और नया रूप देकर अपने ही तरीके से विकसित किया । आगरे वाले तर्ज प्राचीन और आकर्षक होने पर भी व्यवसायिक रूप धारण नहीं कर सकी । इसी प्रकार ब्रज के साँगों को काफी लोकप्रियता मिली । परन्तु ब्रज के साँगों को हरियाणा की नौटंकी की अमर देन है । नौटंकी सुन्दरी के जीवन वृत्त पर आधारित एक स्वाँग अत्यन्त लोक प्रिय हुआ । परन्तु इसकी मौलिक प्रति न मिलने पर महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध नहीं हो सकी ।

अली बक्श ने बंशी लाल के साँगों की परम्परा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया । इसका समय 19 वीं शती का उत्तरार्ध (1854 से 1900 ई०) माना जाता है । बानगी के रूप में इन्होंने [illegible] फिसाना अजायब की रागनी का यह अंश प्रस्तुत किया है :-

लोगी लुट गई री हम बैरनयाँ
बैरनयाँ री हम बैरनयाँ.... लोगी लुट ....
आज सुहाग हमारे री उनरे सिलकन लागी मेरी छतियाँ ।।
कौन दिलासा देरी पिव पिया बिन तर्कन लागी है अँखियाँ ।।
लोगी लुट गई री हम बैरनयाँ ।

---

1. डा० देवेन्द्र दीपक और देवी शंकर प्रभाकर के मतानुसार सहारनपुर हरियाणा का ही एक अंग रहा है ।

इस समय जैन भजनों का ही रूप धारण किये हुए तमाशे मात्र थे शुद्ध भक्ति के वातावरण में राग रागनीयों के भाव में आ जाते थे। इन गीतों के साथ ही फिसाना अजाईब, पद्मावत, कृष्ण लीला, चन्द्रावल ने, गुल बकावली शिवदान सिंह का बारह मासा, अकबर का सिफत नामा आदि इनके प्रमुख स्थान हैं। सोरठ, देस, मल्हार आदि राग उन्हें अधिक प्रिय थे।

अली बख्श के समकालीन साँगी थे-योगेश्वर बालक राम, कृष्ण स्वामी, गोवर्धन पंडित, शंकर लाल तथा अहमद बख्श। इनके भिन्न 2 साँगों का विवरण इस प्रकार है :-

योगेश्वर बालक राम के साँग :- पूर्ण भक्त, गोपीचन्द, शीलादे, कुड़ी तथा रामायण आदि ।

कृष्ण स्वामी के साँग : दिलबर, कुशामल, जिमनी तथा गुलबकावली आदि ।

गोवर्धन पंडित के साँग : महाभारत कृष्ण लीला, जसवन्त सिंह तथा दुल्ले आदि ।

शंकर लाल के साँग : पद्मनी, भूरा बादल, मोरध्वज, प्रहलाद आदि ।

चुन्नी लाल के साँग : हरिश्चन्द्र आदि

ये साँग अभिनित भी होते रहे हैं। प्राय: ये ख्याल, सवैये चौबोले और कवित शैली में लिखे गये। इनमें सर्वाधिक ख्याति प्राप्त करने वाले अहमद बख्श थे। रामायण जयमल, फत्ता, गूगा, चौहान, सोरठ, चन्द्रकिरण, नवलदे, कंस लीला आदि इनके प्रमुख एवं आर्थिक साँग रहे। उन दिनों थानेसर में बहादर और नानक के दो अखाड़े भी चलते थे। अहमद बख्श का सम्पर्क बहादर के अखाड़े से था।

स्वामी शंकरदास के शिष्य नेतराम 19वीं शती के अन्तिम चरण में एक नाटकीय घटना से कथावाचक से सांगी बन गये[1]। इनका पहला सांग शीला सेठानी था जो काफी लोकप्रिय एवम् दिलचस्प रहा। ये सामाजिक कुरीतियों की धज्जियाँ उड़ाते थे। राम लाल इनकी मण्डली में शामिल थे।

19 वीं शताब्दी की अन्तिम दशाब्दी में सांग मंच पर दीपचन्द नामक एक प्रतिभा सम्पन्न क्रान्त व्यक्तित्व का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने सांग प्रदर्शन को नया रूप प्रदान किया। प० मांगेराम की रागनी से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि " लगभग 225 वर्ष पूर्व जिस ज्योति को कृष्ण लाल भाट ने प्रज्वलित किया। 170 वर्ष बाद उसी ने प० दीप चन्द ने स्वरूप प्रदान किया[2]। आरम्भ नायक नाई का मंच पर अपना अभिनय करके सारंगी एवं ढोलकी वाले उनके पीछे घूम घूम कर साज बजाते थे। यह था सांग का स्वरूप, मुढ़े का सामान। प० मांगेराम की रागनी में दीप चन्द की सांग परम्परा, अभिनय मंच, वाद्यों एवम् वेश भूषा का समीक्षात्मक परिचय इस प्रकार दिया गया है :-

एक सौ सत्तर साल बाद फेर दीप चन्द होग्या
साजिन्दे तो बणा दिए और घोड़े का नाच बन्द होग्या
नीचे काला दामण ऊपर लाल कन्द होग्या
चमोला को भूल गए यूं न्यारा छन्द होग्या
तीन काफिए गाए या क्यों रंगत हाल की ।।

---

1. एक स्थान पर नेतराम जी कथा कह रहे थे। वहाँ जिला मेरठ के खेड़ी निवासी पण्डित किशन लाल ने अपने सांग का दंगल जमाया। लोग कथा से उठकर सांग की राह लेने लगे इस पर नेतराम बड़े खिन्न हुए और उन्होंने कथा गायन को नमस्कार करके एक सांग मण्डली बना ली।

2. हरियाणा लोक मंच कहानियाँ लेखक राजा राम शास्त्री पृ० 28

इसी रागनी का आगे विवेचन देखिए :-

हरदेवा दुलीचन्द चतरू भरतू एक बाजे नाई
घाघरी तो उसने भी पहरी आंगी कुटवाई ।
तीन काफिए छोड़ कै लहरी रागनी गाई
उन ते पीछै लखमी चन्द ने डौली बसाई ।
बता ऊपर कलम तोड़ग्या जो आजकाल की ।
मांगेराम पाणची वाला मन मैं करे विचार
घाघरी के मारे मरगे मूँछ मूछगवार
सीस पै दुपट्टा जम्फर पाया मैं सलवार
इब ते आगे देख लियो चौथा चले त्यौहार
जब छोरा पहरै घाघरी किसी बात कमाल की ।।

इनका पहला साँग सोरठ ही था । "उन्होंने अपने साँग मैं सोरठ नाम की सुन्दरी को नायिका बनाकर अपने साँग का नाम करण "सोरठ" किया था । इससे पहले पंडित नेतराम ने भी शीला सेठानी का "सोरठ" लिखा था । हमारी राय मैं एक ही कथा पर दो सोरठों की रचना होने के कारण सोरठ शब्द यहाँ की जनता मैं स्वांग के पर्यायवाची अर्थ मैं भी प्रचलित हो गया यही कारण है कि "सोरठ" शब्द बाद मैं रोहतक परम्परा के स्वांग का समानार्थक शब्द बन गया ।[1]" ऊंचा मंच बनाकर उनपर साजिंदों तथा अभिनेताओं के बैठने का स्थान निश्चित किया । लोगों ने खुश होकर सोरठ की रूप माधुरी पर मुग्ध होकर इनके शिष्य कुतबी को चान्दी से तोल दिया । बागड़ साँगों के वास्तविक जन्मदाता का नाम दीप चन्द ही है । इनके प्रसिद्ध साँग हैं - सोरठ, सरणदे, राजाभोज, नल दमयन्ति, गोपीचन्द महाराज,

---

1. लोक नाट्य परम्परा लेखक रामनारायण अग्रवाल पृ० 122

जानी चौर आदि । मांगेराम की अभिनय समीक्षात्मक रागनी की प्रथम कली देखिए :-

दीप चन्द की खिम्मा कुतबी, धोली चादर ओढ़या करते
ओले सोले दूगी लाके हाथ तले ने कोढ़या करते
गोली ज्यों निशाना लागै तीन काफिर छोड़या करते
खिम्मा तो सोरठ बण जाता दीप चन्द बणता बणजारा
बैटे कुतबी बैटे कुतबी मैरे मार दिया फटकारा
दोजा बण कै आया करता बीन बजा कै सांग शिकारा
दो काली चढ़ता है ऊपर कहते बात उजाड़ी ।।

यह दीप चन्द के सांगों का तौर तरीका था सांग करने का । प0 दीपचन्द के समकालीन सांगी थे- श्री सरूप चन्द !किशोर छैड़ी!, मान सिंह जोगी !शाहदपुर!, हरदेवा !गोरड़!, बाजे नाई !सिसाना!, चन्दू !भैसरू!, निहाल !नकल!, सुरजभान वर्मा, धुक्का चन्द, धन सिंह जाट, अमर सिंह नाई तथा चतरू लोहार ।

सरूप चन्द किशोर छैड़ी के गंगा राम के शिष्य थे । इनके सांगों में भजन, रागनी, दोहे, चमोले, सोहनी, मरहटी, काफिया !दवरी!सारंग, शेर, गजल कालंगड़ी भरे पड़े हैं । श्रृंगार, वीर एवम् शान्त रसों का प्रयोग और समाज की कुरीतियों का विरोध करने वाले थे । उनके बाद ख्याति प्राप्त सांगी हरदेवा थे जिनको ख्याति दिलाने का श्रेय उनके सांग हीर-रांझा को है । इनके सांगों में समाज के गलत कामों पर व्यंग्य बाण देखिए जो

1.

समाज को इन्टेक्शन भी देते और खिल्ली है सांट भी :-

जब ते धरम छूट्या लोगों बुरी समैं लागो आवण
कुछ कहूं की नहीं जाती; बैठे पीते छोरे बाराती
रै लगे बूढ़े ब्याह करावण । जब ते धरम छूट्या ....

उनके अभिनय कौशल का वर्णन मांगेराम द्वारा आंखों देखा सुनिए :-

हरदेवा तो रांझा बनता चतरू की असाई हीर
सादिक के म्हां आया करता, बोल्या से मारे था तीर
मरगे चतरू मरगे चतरू कहते देखे मर्द बीर

उपर्युक्त दोष छन्द से तत्कालिन सांगियों की कड़ी सी स्पष्ट झलकती हुई नजर आती है । चतरू, हरदेवा का शिष्य था और बाजे भगत भी इन्हीं का शिष्य था । कहते है कि हरदेवा और बाजे भगत के सांगों पर जनता मन्त्र मुग्ध हो उठती थी । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सर्प सपेरे की बीन पर मुग्ध रहता है ।

चितरू के गुरु हरदेवा, गायन म्हारी दे गया मेवा ।
बाजे भगत गुरु की सेवा, सब से बढ़ती जाणो ।।

बाजे भाट ही जो बाद में बाजे भगत कहलाने लगे । इनकी गुरु भक्ति सर्वोत्कृष्ट थी । गुरु हरदेवा की संगत, न्यूं जाणै जगत,

एक बाजे भगत सिखाणे का ।
हमने देख्या सुण्या कि पागल भगत कुण्या
कठिन मामला गाणे का ।।

चतरू और बाजे दोनों हरदेवा के ही शिष्य थे बाजे भगत की साँग शैली का एक दृश्य इस प्रकार है :-

बाजे ने एक ब्रम्मन पाल्या, गिण के ढ़ाक मराई तीन
जमाल क्या के कुराण पढ़ाई लोगों के बिगाड़े दीन ।

दीप चन्द के शिष्य भरतू एवम् हरदेवा के शिष्य चतरू के इलावा लख्मी चन्द के गुरु तथा मामराज के शिष्य मानसिंह जोगी उक्त दौर के जानेमाने साँगी थे । यद्यपि उनके एक ही साँग "मदनपाल प्रभावती" के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है फिर भी अपनी सबल शिष्य परम्परा के कारण जितना नाम साँग साहित्य में उन्होंने कमाया इतना और किसी ने नही ।

साँग साहित्य के कृति स्तम्भ का समय [1903 – 1945] तक रहा । इन्होंने साँग साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की । शुरू शुरू में ये कुछ समय नेतराम के शिष्य सोहन के अखाड़े में रहे । बाजे भाऊ से बाजी मारने के चक्कर में इनके साँगों में श्रृंगार एवम् अश्लील की विपुलता थी । लोग यौवन और प्रेम के इस भवरों के जाल में फस कर रह जाते थे परन्तु गुरू मान सिंह के संपर्क में आने पर इन पर धार्मिक एवम् पौराणिकता की ऐसी अमिट छाप पड़ी की उनकी आन्तरिक भावना में जैसे अध्यात्म का समावेश हो गया हो । उनकी भाव भाषा, कला कौशलता चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई वास्तविकता तो यह है कि प० लख्मी उन मानस के चितेरे साँग और अभिनय कला में बेजोड़ थे । इनकी उत्कृष्ता का वर्णन देखिए:-

लख्मी चन्द ने मार गेरे जब लक्खूहारा गावण लाग्या
बहुत सी दुनिया पाछै रहगी नये 2 साँग बनावण लाग्या
लख्मी चन्द का माईचन्द था काट बैल सी हाल्या करता
बागां में नौटंकी बणके छटोले से साल्या करता
आगे आगे नौटंकी फेर पाछै बामण चाल्या करता
लख्मी चन्द माली की बण कै बान्धया करता साड़ी ।

प० लख्मी चन्द के साँग इस प्रकार है:- शाही लकड़हारा, नौटंकी, सरणदे, भरथरी पिंगला, चन्द्रा हास, मीराबाई, अम्बादेवी, सेठ ताराचन्द बीजा सोरठ, सरवरनीर, रूप बसन्त ध्रुव, शकुन्तला, चापू लौढ़, बाल्टी भोल, और राजा आदि अन्तिम दिनों में इनके साँग पद्मावत एवं पुरंजन-पुरंजनी सन्त एवम् सूफी दर्शन से संकलित है। इनका रहस्यवाद परिष्कृत साहित्य से होड़ लेता है। प० लख्मी चन्द हरियाणा में दादा लख्मी के नाम से प्रसिद्ध हैं .... उन प्रसिद्ध है। उनकी मौत भी कहावत बन गई- दादा लख्मी के से महापुरुष मरगे ...... (अमुक) बोलों बात से से।

पाणची निवासी मांगेराम, लख्मी चन्द के निकट एवं उनके शिष्य रहे उनके ही शब्दों में देखिए:-

पहले मोटर कार चलाई, फिर साँग सीख लिया
लख्मी चन्द के डेरे में।
गैरां के दुख दूर करूं सूं या ताकत से मेरे में।

प० मांगेराम पर भी दादा लख्मी चन्द की अन्तिम आध्यात्मिक भावनाओं का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उनके साँगों में भक्ति, धर्म और ज्ञान का प्रचुर मात्रा में समावेश रहा वैसे आवश्यकता अनुसार प० मांगेरामने श्रृंगार और वीर रस का वर्णन किया :-

एक सखा एक कपूरा रोवके खड़े स्याने मे
छक भात और किसन जन्म के ओटे लोक निशाने मे
बाप अर बेटी बैठ के सुन क्यों पट रही जाम जमाने मे
मांगे राम तो ज्ञान छूटा तेरी खुली पड़ी किताबड़ी
रै इक ज्ञान रहा ना दुनियां की चाल बिगारी।

प० मांगेराम के इस कथन से साफ जाहिर है कि उनके साँग बाप बेटी एक साथ देख सकते थे क्योंकि उनमें अश्लीलता का समावेश गौण मात्र था। सकवा और कूरा उनके प्रिय साँगों के प्रिय विषय रहे। भाषा की प्राञ्जलता, मुहावरों के प्रयोग एवम् घटना सजोंने में ये बेजोड़ रहे। मांगेराम जी ने साँगों के इलावा बांगर के साँग साहित्य के इतिहास को बाधने का पूरा पूरा प्रयत्न किया। इनको साँग साहित्य के इतिहास के कई पदों का वर्णन हमने उपर किया है। उसी रागनी के उतरार्द्ध में उनके सम सामयिक साँगियों का उल्लेख निम्नलिखित है:-

धनपत ने एक श्याम बनाया, श्याम छटकग्या सारा के
पक्का श्याम कुम का छोरा कच्चा श्याम कुम्हारा के
सिल्लो कहकै करे इसारा, लागी छटक गंवारा के
फेरे ठहरो कहकै करे इसारे जालो सहत हजारे ने
सोसो सोसो साँग बनाया जादू का लेई फिर्द सिकारे ने
मुह जब ज्या तो मोट्ठा खाले अक्ले सफ्फ इसारे ने
धनपत सिंह तने ज्यानी चोर दे दे दिया और फाड़ी।
है इब ज्ञान रहा ....

दत्तन्गार का चन्द्रबादी लेल्यो का ले रहया से छोरा
करदू का कर्मवीर बनाया जिसके उपर पागल होया
स ने मारके मुंह मुटकाते आंख्यां में स्याही का डोरा
होर है तने दीन बिगाड्या हिन्दू रहा ना मुसलमान
तो बांदी छोरे होके पीटे तने जाओ सारा ब्रुयान
बनवारी का टिक्का करके दत्तन्गार पकड़ाए कान
हो हो करे जाऊं गादड़ ताले सारी कल उगाड़ी।
है इब ज्ञान रहा ना।..........

जन्माबीर के शिष्य धनपत निगाना निवासी थे । इनका साँग लीलो चमन बहुत सराह गया इनके शिष्य ईश्याम धर्मोरी, चन्दगीराम भिवानी, और बनवारी ढेल है । चन्द्रबादी के शिष्य कर्मबीर, धर्मबीर और सत्बीर रहे । बाद में चन्द बादी के शिष्यों ने अपनी अलग 2 साँग मण्डलियाँ बना ली । बलवन्त सिंह उर्फ बुलीतथा नत्था सिंह के साँगों का अपना एक अलग समय रहा । प० मंगी राम ने अपनी ऐतिहासिक रागनी में साँग का इतिहास इस प्रकार कहते है :-

> रामकिशन मार्ईराम का चेला बैकुण्ठ की पदवी थ्यागी
> दिन धोला पसारी बणग्या मुस्से ने एक बलदी पाग्यी
> अंधि मोच के पढ़के सौग्या पाल्के न तो बकरी खाग्यी
> किसकी बकरी किसका पाल्का वहू बणया से सहज स्याला
> तेरै बस की बात नही है ले लो मैं तुलसी की माला ।
> यूँ धोखा तेरा कोन्या चाल्ले लोए टोह काम अगाड़ी ।
> है सब ज्ञान ....

रामकिशन नारनौंद निवासी और उनके अनुज महाबीर ने साँग परम्परा को आगे बढ़ाया । मुन्शी राम, रामानन्द, लख्मी चन्द के पुत्र तुले राम भी साँग करते रहे । इनके अलावा सुल्तान रामसिंह, प० चतर सिंह होशियारे प्यारे महेन्द्र के साँग भी खेले जाते है । इनमें से कई साँगी आजकल भी साँग खेल रहे है ।

इसके अगले दौर में अनेक साँगी जिनमें अधिकांश भजनी भी है वे इस प्रकार है -गुलाब सिंह सन्धू, वेबीपुर निवासी, जगत सिंह अल्लाम नारनौंद निवासी श्री राम, ओमप्रकाश, भीतराम भालाना निवासी, त्रिलोकराम, केदारनाथ आर्य, पृथ्वी सिंह, रघुनाथ, मत्थूराम मोहर सिंह, ज्ञानी राम, दयानन्द, सुभी राम कुराड़ निवासी आदि । मोहर सिंह फौजी और चुन्नी लाल डान्सर की रागनीयाँ भी काफी लोकप्रिय है ।

मुख्य रूप से बांगरू सांग लोकधुनों जिन्हें रागनी कहा जाता है को अपना केन्द्र बनाकर चलते हैं। परन्तु सोरठ, पीलू, आसावरी आदि रागों का प्रयोग भी बीच 2 में होता है। बांगरू सांगों में आल्हा व पंवारों का प्रयोग भी विशेष रूप से पाया जाता है।

कुछ प्रमुख सांगियों के सांगों का साहित्यिक विवेचन एवम् वर्णन निम्नलिखित है :-

1- सांगी प० लखमी चन्द

सांग का नाम	कथा परिचय	चरित्र गत स्वरूप	कथात्मक स्वरूप	रस की दृष्टि से
1• सरवरनीर	अमतसर में अम्बल राजा, रानी का नाम अम्बली-सर-वर और नीर दो पुत्र। भगवान ने परीक्षा लेने के लिए साधु वेष में राजा से राज मांगकर बाहर कर दिया। दुखी द्वारा जंगल में समय गुजारना और परीक्षा में सफल होना।	धर्म के पालक राजा और रानी। दोनों लड़के सरवर और नीर आज्ञाकारी।	ऐतिहासिक कहानी	वीर, श्रृंगार, हास्य एवम् करुण रस।
2•अंजनादेवी	पवनकुमार और अंजनी देवी की शादि। पवन के दुहाग देनेपर उसका अलग रहना पवन का युद्ध में जाना वहां चकवा चकवी के माध्यम से पवन का छोड़ी हुई अंजना के प्रति आसक्त होना। अंजना का ऋषि की कुटी में रहना वहां पुत्रोत्पत्ति• पुनर्मिलन।	अंजना का सतित्व, त्याग एवं धैर्य का पालन करना। पवन द्वारा गलती का अहसास और प्रायश्चित करना।	पौराणिक कथा	वीर एवं करुण रस।

साँग का नाम	कथा परिचय	चरित्रगत स्वरूप	कथात्मक स्वरूप	रस की दृष्टि से
3 त्रिया चरित्र	"त्रिया" : कर्मपुर शहर के शाम लाल ब्राह्मण का लड़का कि- शोरीलाल। काशी से पढ़कर वापिस आना - बहू को भी आना। सेठानी का त्रिया चरित्र दिखाना, ब्राह्मण के लड़के का सेठानी के त्रिया चरित्र में फंसना। सेठानी द्वारा सेठ का सिर काटना और ब्राह्मण के लड़के किशन का नाम लगाना। भय के मारे किशन का सेठानी को साथ रखना।	सेठानी का त्रिया रूप दिखाते हुए जगह 2 अपना भेष बदलती है वह चरित्रहीन औरत है। किशन की बहू सहानुभूति की पात्र है। लड़का चक्कर में फंसा भयभीत रहता है।	मिश्रणीय कहानी	विभत्स, करुण रस
4. दूर का लटका	मानक पुर गाँव में बंजारे आए मानक पुर के जमींदार के लड़के और बंजारे की लड़की दोनों में प्यार और .... फिर शादी।	लड़का और लड़की का सर्वथ मयी जीवन एवम् व्यक्तित्व।	मिश्रणीय कहानी	श्रृंगार रस की अधिकता
साँगी :- रामकिशन व्यास नारनौंद निवासी।				
1. रंगीली रेशमा	सेठ के पास रूप नगर में एक चन्द्रलाल जाट रहता था। उसके लड़के का नाम रणधीर का कुन्दन पुर के सूरतसिंह की बेटी रेशमा से सगाई। रणधीर का फौज में भर्ती होना मौत की झूठी खबर। रेशमा का बूढ़े से विवाह। रणधीर का छुट्टी आना रेशमा से भेंट प्यार और फिर मिलन।	सूरतसिंह रूढ़िवादी व्यक्ति। रणधीर सुशील चरित्रवान एवम् दृढ़ व्यक्तित्व का मालिक। रेशमा सच्ची प्रेमिका	मिश्रणीय कहानी	वीर एवम् श्रृंगार रस
साँगी : चन्दर लाल बादी उर्फ बैदी				
1. पूरणमल	स्यालकोट (पंजाब) के राजा सलेमान की दो रानियाँ। गोरख नाथ की कृपा से बड़ी रानी को पुत्र प्राप्ति छोटी रानी नूणा दे का पूरन पर आसक्त होना राजा द्वारा पूरन को मरवाने की आज्ञा दिलाना जल्लादों द्वारा उसे कुएँ में डालना। 12 वर्ष तक गोरख नाथ का शिष्यत्व ग्रहण करना वैराग्य धारण करना।	पूरणमल धार्मिक प्रवृति एवम् मर्यादा का पालने वाला नूणादे धूर्त एवम् ऐय्याश औरत	धार्मिक कहानी	श्रृंगार, करुण रस

सांग का नाम	कथा परिचय	चरित्रगत स्वरूप	कथात्मक स्वरूप	रसकी दृष्टि से
2.सत्यवान सावित्री	शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का जंगलों में समय गुजारना राजा अश्वपति की पुत्री सावित्री का उसके पुत्र सत्यवान से शादी करना शापवश समय सीमा पर सत्यवान का मर जाना सावित्री का धर्म राज से दो वर मांगना और सत्यवान का पुनः जीवित होना ।	सावित्री त्याग, उपासना, एवम् धर्म की साक्षात प्रतिमा, सत्यवान माता पिता का सेवक, वजीर बोहार दुष्ट मक्कार ।	ऐतिहासिक एवम् पौराणिक कहानी	वीर, करुण एवम् श्रृंगार रस ।
3.किरणमई पृथ्वीसिंह	अकबर के राज्य में बुन्दी गढ का सिपह सालार पृथ्वी सिंह था । बुन्देलखन्ड में शादी किरणमई से । पन्द्रह दिन की छुट्टी काटकर पृथ्वीसिंह को जब कटार देकर दरबार में लाना शेरखां और पृथ्वीसिंह में किरणमयी के चरित्र को लेकर तकरार । शेरखां को बादशाह द्वारा प्रमाणित का समय देना । धोखे से शेरखां का विजयी होना परन्तु किरणमयी का शेरखान का भेन्डा फोड़ करना बादशाह द्वारा शेरखां को फांसी देना पृथ्वी सिंह और किरणमयी का सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना ।	किरणमयी पति व्रता निति और सत्य की मूर्ति । पृथ्वी सिंह सच्चा प्यार करनेवाला शेरखां ईर्ष्यालु प्रकृति का व्यक्ति और राजा द्वारा फांसी की सजा पाने वाला	ऐतिहासिक कहानी	वीभत्स, श्रृंगार, करुण रस

यह था कुछ सांगों का विवेचनात्मक अध्ययन । इससे स्पष्ट होता है कि अधिकतर सांगों में अनुप्रास, उपमा, रूपकादि अलंकारों का प्रयोग होता है । और सांगों में प्रायः श्रृंगार रस की विपुलता रहती है ।

3• बागड़ साँग की रचना एवम् उसका स्वरूप :- साँग पद्य प्रधान होते है जिन्हे गीति नाट्य भी कहते है। इसे नाट्कीय काव्य कहना और भी अधिक जचता है पुराणों की तरह इनमें गद्य का प्रयोग बहुत कम होता है। जिस प्रकार उनमें "सूत उवाच" या शौनक उवाच मिलता है। उसी प्रकार यहाँ कथानके के तारों को जोड़ने के लिए "वार्ता" का रूप मिलता है। सामान्यत: सभी सांगों में एक लम्बा कथनाक रहता है जिसका नायक धीरो दात्त और धीर ललित व्यक्ति होता है। साँग में कभी कभी कई छोटी उपकथाएँ भी रख दी जाती है अथवा नायक की फल प्राप्ति के पश्चात भी कहानी को आगे बढ़ाकर एक नई कड़ी जोड़ दी जाती है। इस नई कड़ी की कहानी पूरी तरह से पहली पर आधारित होती है।•• वार्ता जो की गद्य भाग है कहानी को आगे बढ़ाने, उसे रोचक बनाने और नायक के प्रच्छन्न गुणों का बखान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में महत्वपूर्ण कार्य करती है। वास्तविकता तो यह है कि पद्य और गद्य सम्मोहक मिश्रण ही साँग रूपी चोला की आत्मा है - इसमें गीत, राग और रागनी हृदय की भावनाओं को प्रकट करती है। देखिए साँग का स्वरूप :-

धर्मपुर शहर में एक श्याम लाल ब्राहमण के एक लड़का किशन लाल था। उसका विवाह कर दिया। काशी जी पढ़ने के लिए भेज दिया। वहाँ से वह खूब पढ़ लिखकर वापस घर आया उसकी औरत भी आगई एक रोज लड़के को क्या कहती है :-

ब्याह किशन लाल का

दोहा:-

बात तेरी मने सून लई तनै नहो कुछ जाण।
जितना मेरा शरीर से सब गुण विद्या की खान ।।

1• त्रिया चरित्र साँग से सांगी लख्मी चन्द पृ 1,2

ज्वाब ब्राह्मणी का :-

दोहा :-

और बात सारी पढ़ी ज्ञान गाल के मैं बढ़ा ।
वेद शास्त्र पढ़ गया पर त्रिया चरित्र ना पढ़ा ।।

काफिया :-

जो कुछ बात सिखनी साजन अपना भ्रम मिटाइये
विद्या ते तनै पास करी से और फिर बै भी ध्यान लगाइये
है तेरी विद्या अधूरी त्रिया चरित्र पढ़ के आइये

ज्वाब कवि का :-

सवैया :-

किशन लाल ते घर ते चल दिया देर जरा सी लाई ना लानी
देश देश फिरै घूमता छूटटी रोटी ना मिलता पानी
कहै का त्रिया चरित्र सीखा करता फिरता आस बिरानी
जाने किस सी ऐसी नार मिलेगी जो त्रिया चरित्र सिखानी

वार्ता :-

भाईयों - रत्नपूर मैं सेठानी त्रिया चरित्र सिखाया करती थी वहती को वक्त से हालत तंग हो गई थी । सेठ कहने लगा सेठानी अब किया करें सेठानी क्या कहती है :-

रागनी

तनै खोटे टोटे के मैं बैठा जा से घर के
परदेशाँ न जाना होगा ल्याऊं कमाई करके
कदनो के बिछड़े बाले मिलते तुरत दिवाला
ऐसे वक्त मैं सब देखै घोर अन्धेरा काला
ऐसे वक्त मैं पढ़ाई अकलो कौण दिखावै मरके ।।

4• <u>बागड़ सांग और हिन्दी नाटक में अन्तर :-</u> भारतीय नाट्य प्रथा के अनुसार नाटक के शुरु में " नान्दी" और अन्त में " भरतवाक्य" होना जरूरी होता है। इसी प्रकार सांग में उनका नाम भिन्न है। "नान्दी" को सामान्यत: सांगी पहली भेंट - जिसमें इष्टदेव की प्रार्थना की जाती है, सांगी इसी में अपनी गुरु परम्परा का वर्णन भी करते हैं :- इष्ट देव की प्रार्थना

ओउम नाम सबसे बड़ा इससे बड़ा ना कोए
जो सुमरन करे ओउम् का शुद्ध आत्मा होये।

x x x x x

शारदे भवानी वास कर मेरे घट के परदे खोल ।
रसना पै वासा करो माई शुद्ध शब्द मुख बोल ।।
दे मन्ने सुमर लिए भगवान
श्री मान सिंह सतगुरु मिले मन्ने जिनते पा लिया ज्ञान ।। [1]

x x x x x

गजा ननं भूतगणादि सेवितम् भूमण्डलम् ।
स्तुति एक ब्राह्मणों नमोः नमोः ।। [2]

x x x x x

जगत जननी जग तारिणी जगदम्बे जगमाता ।
जन पै कृपा कियौ मन्ने जोड़े दोनों हाथ ।। [3]

1• चन्द्र किरण सांगी लख्मी चन्द पृ० ।
2• सत्यवान सावित्री सांगी चन्द्रलाल बादि उर्फ बेदी पृ० ।
3• चन्द्र पाल कन्पाड़ा सांगी जगत सिंह बाल्हाण पृ० ।

गुरु शिष्य परम्परा का एक उदाहरण देखिए :-

"छन्द छज्जू दीपचन्द दादा गुरु कह गया मेरा
हरदेवा पै किरपा करियो मैं हूँ स्वामी दास तेरा
एक उर होज लागै कलि विच होगा डेरा
दे फूक विच समशान उडै धुन पवन बिच ज्यागें ।"

संगीतकार यहाँ परमात्मा, पार्वती (देवी शक्ति), सरस्वती, गुरु वन्दना, गणादि वन्दना करके आगे बढ़ता है । यह पहली प्रार्थना इसलिए कि परमात्मा उसके विघ्नों को दूर करके उसकी मान प्रतिष्ठा (टेक) को बनाए रखे । सांग के अन्त में "भरतवाक्य" को पिछली भेंट कहा जाता है । प0 कुन्दन लाल कृत सांगीत लाखा बनजारा में भरतवाक्य का उदाहरण देखिए:-

नहीं साँच को आँच यत्न करो चाहे करोड़ ।
अटल छत्र जय बोलते ब्राह्मण कुन्दन गौड़ ।।

सांग के अन्त में परन्तु पिछली भेंट से पहले "सैर" आता है । इसमें सांग का निष्कर्ष, उसमें प्राप्त होने वाली शिक्षा तथा उसके कुछ उदाहरण रहते हैं । सांगों में नाटकों की भान्ति अंक, अंकावतार, विष्कम्भक आदि नहीं होते । सांगों में मुख्य रूप से दोहा चौबोला, रागनी छन्दों का प्रयोग होता है । कभी चौबोला के स्थान पर कड़ा या बारह मासा भी आ जाते हैं ।

[illegible] सांगों में प्रेम तत्व, जीवन दर्शन गुरु भक्ति, सूफी प्रभाव के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं इनका लक्षित प्रभाव आगामी पंक्तियों में वर्णित किया जा रहा है ।

---

5. <u>धार्मिक सांगों में प्रेम तत्व</u> :- मन की सुव्यवस्था प्रेम से आती है। "प्रेम वह राग है जिसके उत्पन्न होने पर अन्य सभी राग उसी में लय हो जाते हैं। इसकी अनुभूति मनुष्य में आत्म प्रसाद की उत्पत्ति करती है। यह मन में एकीकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न कर देती है। प्रेम व्यापक तत्व है इसकी शक्ति अपार है।"[1]

धार्मिक सांगों में प्रेम तत्व की अभिव्यंजना सुचरित होकर सार्थकता की अनुभूति प्रदान करती है। इन सांगों में प्रेम तत्व की विपुलता है या यूं कहिए कि प्रत्येक स्थल पर प्रेम की व्याख्या किसी न किसी रूप में की गई है। चन्द्र किरण सांग का एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

अनारकंगा था ग्यारा ते भाव सुणाऊं सुनली ते आन
लाग रही मेरे दिल पुंदया प्रेम का प्याला हंस पूंदया
मेरा था कद का रस घंटा गालने का उदाम है ।।
लखमीचन्द गैर ले जिस दिन फिर आराम रहैगा दिनदिन
कस दिन मेरा काग बणैगा प्रेम का कस के तीर तणैगा
कदे था कदे गा सिलटेर सुणैगा कागी आली याम का ।।[2]

एक अन्य उदाहरण देखिए :-

मेरा तेरा साथ रहैगा मैं पक्का नेम कर दूं
तारे जिन्दगी दिल एक रहैंगे मैं ऐसा प्रेम कर दूं
इसी जगह पर रोज मिला कर मैं था टेम कर दूं
म्हारा तेरा दिल मिलग्या मिठाई कुशल क्षेम कर दूं ।।[3]

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि धार्मिक सांगों में प्रेम निरूपण उत्कृष्ट है।

---

1. मनोविज्ञान और जीवन लेखक लालजीराम शुक्ल पृ0 209
2. सांग चन्द्र किरण सांगी लखमीचन्द पृ0 4
3. सांग लीलो चमन सांगी धनपत सिंह निदाणियां पृ0 10

6. <u>सांगों में गुरु भक्ति</u> :- सांगियों में गुरु के प्रति अपार श्रद्धा एवम् आस्था है क्योंकि किसी भी सांग की रचना करने से पहले किसी ना किसी रूप में गुरु की आराधना करते हैं । प० लखमीचन्द की श्रद्धा भक्ति एवम् आस्था गुरु चरणों में इतनी अधिक थी कि उन्होंने ने अपनी रचनाओं का श्रेय गुरु आशीर्वाद को मानते हैं जो स्वतः स्वाभाविक एवम् महत्वपूर्ण हो गया है :-

लखमी चन्द गुरु जी का नित दास रहेगा ।
बोहे बिना जीत्या ना निरास रहेगा ।।

कवि लखमी गुरु की महिमा का वर्णन गीतों के आरम्भ में गुरु वन्दना से करते हैं :-

ए गुरुदेव करो कृपा मैं शरण लेण ने आया

× ×

ए गुरुदेव करो कृपा मैं चरण कमल चित ला दूंगा

× ×

लखमी चन्द गुरु को नित करता हूं प्रणाम

× ×

गणेश गुरु सरस्वती सुमरण ज्ञान विचार ।
आशा लेकर गुरुदेव की करूँ कथन गुरु संसार ।।

× ×

किरपा निधान पिता का पाप बंधन नाश मूल है ।
करता अरजी बढ़ती उमंग मानसिंह गुणियों की धूल हूं ।।

---

7. बांगिक सांगीत में सूफी प्रभाव :-

बागड़ सांगों में लोक वार्ता के कई तत्वों का समावेश दृष्टिगोचर होता है जैसे -दैवी शक्ति की उपस्थिति, साधु का धूना, प्रेमियों की आयु का निर्धारण- यह तत्व कथा को विकसित करने में सहायक होते हैं। जिस प्रकार सूफी प्रेम कथाओं में राजा का जोगी होना प्रेयसी के मन्दिर में दर्शन होना आदि का समावेश। सूफी प्रेम कथाओं में किसी पक्षी आदि से नायक से रूप वर्णन सुनकर रूप सौन्दर्य पर मोहित होना पाया जाता है। उदाहरण "चन्द्र किरण" सांग में राजा मदन सैन का साधु बनना और धूनी रमाना चन्द्र किरण के महल के सामने तब चन्द्र किरण अपनी बान्दी को साधु की धूनी उठवाने के लिए भेजती है तो साधु को क्या कहती है :-[1]

बाबा धूना ठाले हो म्हारी चन्द्र किरण दुःख पाती से ।। टेक
जो कोय नहीं बात से गजब पिछे रोवै ने सिर धुनता
सो तै कहलो लोग्या सुनता
किसी बोदू की ढाल लखावे से ।।
मदन सैन रूपी साधु ने कहा :-
जा उस चन्द्र किरण ने छाल दे,
उसको खुद मने तावया चाहवे से ।

उसी की सूरत तो देखना चाहता था। मदनसैन फोटो देखकर चन्द्र किरण पर मोहित हो गया था।

---

1. सांग चन्द्र किरण सांगी लखमी चन्द पृ० 15

मदन सैन चन्द्र किरण का फोटो देख कर यूँ कहता है :-

कारीगरी तनै घडू देई अजब निराली शान ।
बेरा ना के हाल हो फोटो मैं घली प्राण ।।

आखिर मैं जवाब चन्द्र किरण का :-

सवैया :-

न्यूँ बोली सुण बाबा जी तेरा रूप बालक छटकै सै ।
नाम भजन मैं ना जिसै मैं जो अठ्ठ सिवाले लटकै सै ।
मिठी मिठी बोली प्यारी कोयल नै मन भटकै सै ।
उपर आजा मेरे महल मैं आनन्द लेने नै लटकै सै ।

उपर्युक्त विवरण से पुष्टि हो जाती है कि बागड़ सांगों पर सूफी प्रभाव लक्षित है ।

8. बागड़ सांगों में जीवन दर्शन :- बागड़ सांगों में जीवन दर्शन का गहरा और अमिट प्रभाव साफ दिखाई देता है क्योंकि किसी भी सांगी ने अध्यात्मवाद को अछूता नहीं छोड़ा है । चन्द्र लाल बेदी के पूरनमल सांग से जीवन दर्शन का एक उदाहरण देखिए:-

सुमर श्री करतार रलो आपा आप सुधार लो ।
काम क्रोध मद लोभमोह इन पाँचों को मार लो ।।
ये दसों इन्द्री यार जिसनै दीनी मार ।।
उसी मनुष्य का होता हमने देखा है उद्धार ।।
होता परलो पार

---

9. बांगरू सांगो पर फिल्मी प्रभाव :- फिल्मों ने मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव डाला है और इस आधुनिक युग में तो फिल्मी प्रभाव अपनी चरमसिमा सीमा पर पहुँच गया है। फिर बांगरू सांग इस प्रभाव से कैसे अछूते रहते? बांगरू सांगो पर फिल्मों का दो रूपों में प्रभाव पड़ा। पहले रूप में सांगियों ने फिल्मी तर्जों पर रागनियों की रचना आरम्भ की। इस रूप में सबसे अधिक जी जी मयारस तर्ज ने लोक प्रियता प्राप्त की :-

देश बांगर में क्या जी चोट दिखाते
चोट बिरोलों में क्या जी दामण काले
दामण कालों में क्या जी पाटे चाले ।।

दूसरे रूप में अश्लील शब्द, अश्लीलता एवम् भौंडे प्रदर्शन को सांगियों ने अपनाया। इस रूप ने तो सांग के महत्वपूर्ण स्तर को बिल्कुल रसातल में पहुँचा दिया :-

आज तूं करले मनमानी मिले ना लड़के या राजी
नहीं पड़ै सासरे जाना ले हाल में होगा आना ।।टेक
क्यूं कर टाल बढ़ाने की चलना और ना
जहर चाट के बैठ मरज्यां उपाय और ना
तन्ने पिया का प्रेम करा ना मैंने पक्का नेम था
पक्का होरा है हिंगताना ।। ।

आरम्भ में तो सांगियों ने फिल्मी तर्जों को अपनाया फिर फिल्मी गीतों को और उनके अश्लील शब्दों को रागनियों में प्रयुक्त करना शुरू कर दिया और फिर अश्लीलता के अपनाने पर तो सांग का मूलरूप कुरूप सा हो गया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सांगी विवेक से काम लें और सांगो की मर्यादित ढंग से रचना करें ताकि सांग साहित्य को नई दिशा मिल सके और सांग साहित्य समृद्धिशाली हो सकें।

10. कुछ प्रमुख सांगियों की रागनियाँ एवम् उनका विवेचन

(1)

बम्बर का वोट[1]

दो नैनां की वोट, मारग्या बम्बर का एक वोट
छाती के टेसवे ।। टेक
रेल ते उतरे थी वा, परियां ते भी सुथरी थी वा
चाल थी कमाल लाल
गोरा गोरा गात सारा अम्बर के में जैसा तारा
चमका हो लाल लाल
पाले पाले होंठ, जणों कागज के से वोट ।। -1
पायल करकी जाती जाती, गोल गोल उठी छाती
सन्नारे से भरे थे
टेसन उपर बिजली पड़गी, मचकात के हाथ लड़गी
एक सैती मरे/डरे थे
आखिर होके ओट, ले गयी बीहूं की सब ओट ।। -2
काट 2 खावे बोली, ऊपर मैल छाती छोली
दिल में अदा मारगी
पोरी पोरी मटके उसकी, दूणी पे जो लटके उसकी
वोट डंक मारगी
आँखों की अखरोट, मेरा तो गई पेट्आ चोट ।। =3
रूप रंग ढंग उसका, पेट पतला तंग उसका
चिंदी की कोरी सी
साल का पन्दरवां लाग्या अक्की का रोग लाग्या
लरजे की बड़ोरी सी
गबदे छूट सपोट, मिले से गुलाब सिंह ते ओट ।। -4
(श्रृंगार रस)-नखशिख वर्णन)

---

1. सांग बम्बर का वोट सांगी गुलाब सिंह पृ0 2

।2।

चन्द्र किरण[1]

बाबा जी मेरे भाग जाग्गे बहुत घणा दुख पाया मैं
मेरी तृष्णा पूरी करे आशा करके आया मैं ।। टेक
मेरे हो रही है कर्म की हानी दुख नहीं जिकरती बाणी
करके मैं तेरी सेवा पाणी पड़ा रहूं तेरे पायां मैं ।।- 1
बहुत घणा मने दुख ओटया है भाग मेरा सदां खोटा है
सब जीना काटोटा है ले मेहूं का लब आया मैं ।। -2
दुख चिन्ता मैं मरण लागरहा कष्ट गात पै भरण लाग रहा
हो सिध तै क्यूं ही फिरण लाग रहा दुनिया और सिखाया मैं ।। -3
लख्मी चन्द बेहूध हो रहा हूं, सब तरियां तैं तंग हो रहा हूं
धर्मी के मैं तंग हो रहा हूं मन्नै मेठा ले भायां मैं ।।-4

।जीवन शर्मा।

।3।

चन्द्र किरण

मेरी बाते बीत बखियारे मैं ।। टेक
बाग विपत का मेरे लड़ रहा है तन का दूर कहीं बड़ रहा है
दुख पड़ रहा है पति म्हारे मैं ।। - 1
मेरा पति दुख पाता होगा भोजन तक ना खाता होगा
आता होगा शोक के दुबारे मैं ।।- 2
पति की रटना हूं तन का दर्द आज मिटवां हूं
मैं टूटया हूं एक इशारे मैं ।।-3
लख्मी चन्द नहीं है ज्ञान रानी दुखा मैं मेरा भगवान
हाजिर नाथ पति के बारे मैं ।।-4

।प्रेम-सरवा।

---

1. सांग चन्द्र किरण वाणी लख्मीचन्द पृ0 9, 20
2. दुश्मन ।
3. बिल्कुल ।

(4)

पूर्ण मल[1]

इच्छरां : तेरे बिना बच्चू स्यालकोट में पूरन घोर अन्धेरा ।
पूरन : हम बनवासी बन में राजी मात क्या काम पड़ा है मेरा
इ० : बड़े दिनों में लाल मिला गई कुल मुश्किल सारी
पूरन : मेरे आसण पे परम गुरु मेरी कर रहा है इन्तजारी
इ० : गोरख नाथ के हों दर्शन इस नाथ चरण की प्यारी
पू० : मेरी मां फिर गुरु मिले मां चलना मुश्किल भारी
इ० : तेरी रोवे है महतारी, लाल कुछ ख्याल करों बथेरा
पू० : दर्शन पाऊं एक बार फिर आज लगाऊं फेरा ।। -1
इ० : माफी दे दे लाल मने यह भारी जुल्म कमाया
पू० : किसी के अख्तियार नहीं मन्दे कर्मों का फल पाया
इ० : बिन बात बिन खोट कंवर तूं कुए में गिरवाया
पू० : तेरे कारण पर्दे मात मन्ने परम गुरु का पाया
इ० : मन्दे करम कराया है तन्ने पाया दुख घनेरो
पू० : चलना मेर समझ माता मैं पूर्ण कुछ तेरा ।।-2
रूपेशाह: पूरनमल तन्ने अता दिया खोया हुआ अब सारा
पू० : मैं चरणों का दास मन्नी सब परताप तुम्हारा
इ० : स्यालकोट का राज करो इस नाते कहणा म्हारा
पू० : जो काम मन्ने रात दिया मन्ने लागे है घणा प्यारा
इ० : शहर खुशी मना रहा है था फीका पड़ा हुआ चेहरा
पू०: दर्शन पाऊं फिर भी आऊं आज चरण मैं दे रहा ।।=3

(सूफी प्रभात)

---

1. सांग पूरन मल सांगी चन्द्र लाल पृ० 22
2. पता ।
3. चक्कर ।

।5।

मायां देवी[1]

वा माया देवी सूठे लई होगी इस ध्यान के माँहं
मेर चले अपमोल बीज बरिया की बात के माँह ।। केक
किती पिता सती ऐ पड़ी, शरीर की पिल्लूल बोल
लिकड़ी

वन्नया दी बात बिगड़ी, पूरे हाल के मांह
अर्थों मुरनाई परछेंदे झूली फिरे ताल के मांह ।।-1
जिसा अपमान भलाती किती रूप की हव बोल सो
किती
पड़ी फूल में अरण अर्थों पिड़ी बाल के मांह
रूकी दूर सन्दूक में अपो बीधे बाल के मांह ।। -2
माल्या बा सत्यावन्द वेईमान, अपा की तसवीर
की बाब
माया देवी की बाब रूकी जिसी हो खलक लाल के मांह
देवदीं दे थोट लगा दिया भरे माल के मांह ।।-3
मंगल चन्द की चटक रानवी सनकिये की हा है
चटक रानबी
वन्का लाल तो इसी रानबी पाई बई सात के मांह
बई बीज की कदर रहे बा इस बदू काल के मांह ।।-4

---

1. साँग माया देवी शाली फकीर साँधी वन्नूलाल पेदी पृ० 9
2. अवीर ।
3. बट्टे पं। ।
4. मछली ।

16.

रूपकला जादूखोरी[1]

रूपकला तेरा रूप देखके आस जीवन की टूट गई ।
पड़ा दिवाला चाके एकदम सारी बूढ़ी छूट गई ।।
रूपकला तेरा रूप गजब का तेरा मेरा ठीक मिलान
मेरे जैसे बने लक्खी से तेरे जैसे भगवान ।।
रस की भरी जवान ज्वान तेरी मनिहारी ने लूट गई ।।
तेरे रूप नै देख देख के इश्क मेरे मन मैं छाया ।
तेरी मेरी आंख लड़ी मैं सख्त बड़ा चक्कर खाग्या ।।
जोबन का तड़का लाग्या जाणा पड़के बिजली उठ गई ।।
चाहे मारदे चाहे बचा दे सौंप दूं तेरा भला ।
तेरी बात पै पागल होग्या छुटग्या मेरा और चला ।।
बेमाता के रूपकला तेरी बात पै टूट गई ।।
तेरे जैसी इस दुनियां मैं हर नहीं देखी भाली ।
रामकिशन के अटक रही तेरी गात पुतली बी काली ।।
तेरी आत्मा की रग दुखती कररामकिशन ने लूट गई ।।

(प्रेम तत्व)

17.

अंबजा देवी[2]

ओड़म् नाम सबसे बड़ा इससे बड़ा ना कोय ।
जो सुमरण करे ओड़म् का शुद्ध आत्मा होय ।।
धन चाहवे तै वर्ण कर मुक्तिचाहे तो रट राम ।
हाड़ मास का पुतला आवै न किसे काम ।।
फेर चाहे जान की उस ईश्वर का नाम ले ।
सच्चा उसी का नाम है जो बिरले ने पाय ले ।।

(जीवन दर्शन)

---

1. सांग रूपकला जादूखोरी सांगी रामकिशन व्यास पृ० 18
2. सांग अंबजा देवी सांगी अंबजा देवी सांगी लखमीचन्द पृ० 3

8. सत्यवान सावित्री[1]

इस सत्यवान के गैलां चाल दुख भरा करैगी,
सावित्री हो मेरी ग्यान ।।
मैं एक ब्याऊ सुणा ग्यारा मुश्किल पूरा पाटै है
सान सवेरा भी टूक मिले सा दूध खोया बाटै है
भिखा पिये जंगल के बेरा क्यूं कर साटै बाटै है
दौलत की गुजान भिखा क्या कौन बहू के डाटै है
क्यूं सत्यवान भी बाटै है सबै तू तंग करा करैगी,
सावित्री मेरी ग्यान ।।
पूर्व जन्म के बुरे पाप से भिक्खर के बीते मेरे
राजपाट का आनन्द छोड़ के जंगल मैं होगे डेरे
कुछ दुख का कुछ और फिकर दुखकै गात सिमावेरे
इसके भिखारा मैं क्यूंकर साफ नाम होवै तेरे
इस वन मैं बीते बेर क्योंरे तूं करा करैगी,
सावित्री मेरी ग्यान ।।
कंकर पत्थर एक सही है फर्क सबै और घोड़े मैं
पीतल सोना एक सही फरक ईंट और रोड़े मैं
सोना लता क्यार मरोड़ी फायदा नहीं सिकोड़े मैं
दुखियां के सां मिलै नहीं कै काम हंस के जोड़े मैं
जोबन के तोड़े मैं मांगती फिरा करैगी,
सावित्री मेरी ग्यान ।।
।जीवन दर्शन।

---

1. सांग सत्यवान सावित्री सांगी धनपतराम भाट पृ0 9

1

9. वज्रपात कश्मीर

मेरे गोषन मे भरपूर नूर का बाला देखता है
भी कैसे बहू की रात पति ने काला देखता है ।। टेक
रामनाम से पहले बहता ने लिया वैर का
मेरे भाई के हाथों खाया मेरा जहर का
अब भी पै जहर जहर का बाला देखता है
यही वज्र पात की लाश लाश वो बाला देखता है ।।
केस लिया अभा मैं जहर मेरे शुभका है पहच -2
राजकोश केवरी पालेकी वरी होरी पहच -2
बना संगीनाय की पहच पहच का ढाला देखता है
वो अक्ल अभा रहा तारा है वह जाता देखता है ।। ---2
दूर बगावी आप वाप था हुई फिरे यलाल
रैन काले रातों पेर क्यूं भिजा बड़ा क्लाल
कान लिये अरमान ज्यान का घाता देखता है
पाप रही शश है पाव कान का घाता देखता है ।।-3
के रामबुज खिदाई का मेरे बड़ा कहा रवे
तुम्हे तारा बोल करारा आई कांप
क्यूं हुई बंद गुरु अमत सिर्फ मतवाला देखता है
वो अमर नारवींद बड़ उभ का ताला देखता है ।।-4

।सूकी प्रताप ।

---

1. कवि वज्र पात कश्मीर सोंधी अमत सिंह आजाद पृष्ठ 29-30

हट-हट के याद सतावे मैं दिन रात पुकारूं नीलो ।। टेक
अब है कैसी बात तेरी इश्क की तेरे प्रेम कटारी लागी, वो प्रेम
नीलो प्यारी तेरे इश्क की तेरे खिमारी लागी वो तेरे
हट-हट के याद सतावे मैं दिन रात पुकारूं नीलो ।।
इश्क मरीज़ के आके नीलो दिये दवाई नीलो दिये
कब का मैं इन्तज़ार करूं तने कोनया चमन दिखाई
हट-हट के याद सतावें मैं दिन रात पुकारूं नीलो ।। -2
तेरी याद मैं आज रात को नींद तलक भी आई ना आई ना
नीलो प्यारी तेरे बिना कोई चीज़ सुहाई ना सुहाई ना
हट-हट के याद सतावे दिन रात पुकारूं नीलो ।।-3
तेरी याद मैं होग्या चमन आके दर्श दिखादेवो आके
स्वपनसिंह विद्यार्थी आज तू मिठे बोल सुणादे तू मिठे
हट-हट के याद सतावे दिन रात पुकारूं नीलो ।।-4
रागनी कहाके तौर की
साईकिल ते चढ़ दिखाई हुई चमन चकराय गया
रोम रोम मैं भी ना आग्या अब नीलो पर ध्यान गया ।।टेक
चली अकेली जारी है कुरब चमन का आज मिला
ज्यूं राधा वृन्दावन फिरे टोलती श्रीकृष्ण नहीं मिला
कुश्वल बिछड़ा प्यारा ज्यूं फिरे टोलती कुम्हलाता
दमयन्ती के तोड़ अकेली ज्यूं नल राजा गया चला
एक जंगे की ओट ज्यूं कृष्ण धायल मैं भागगया ।।
प्रेम विरुपण ।
0===============================0

"पंचम अध्याय"

प्रमुख बांगड़ कथात्मक गीतों का तात्विक विवेचन

1- "निहालदे"

(अ) "निहालदे" : तात्विक विवेचन

(आ) "साखे" और "पेड़ो" में अन्तर

(इ) "निहालदे" और "राजा ढोल" और ढोलामारू

2- "जैयमल फत्ता"

(अ) "जैमल फत्ता": तात्विक विवेचन

3- "गूगा" (गूगापीर, गूगावीर)

(अ) "गूगा": तात्विक विवेचन

4- "हरफूल जाट जुलाणी का"

(अ) "हरफूल जाट जुलाणी का": तात्विक विवेचन

0----0----0

"पंचम अध्याय"

प्रमुख बांगड़ कथात्मक गीतों का तात्विक विवेचन

लोक गाथाएं लोक जीवन की अभिव्यक्ति के रूप में होती है। अतः इनमें स्थानीय जीवन की अभिव्यक्ति प्रचुर मात्रा में होती है। लोकगाथाएं अति प्राचीन होने के साथ साथ अति आधुनिक भी हो सकती हैं। इनमें लोक-कथा, लोक कहानी एवं लोक गीत तीनों का समन्वय होता है। कुछ लोक गाथाएं संवादात्मक होने के कारण लोक नाट्य के समीपतम होती है इस प्रकार यह लोक साहित्य के विभिन्न विधाओं के तत्वों से समन्वित हैं, यही कारण है कि जिस प्रकार शिष्ट साहित्य में महाकाव्य जीवन की व्यापक अभिव्यक्ति की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है उसी प्रकार लोक की परम्परागत संस्कृति की दृष्टि से लोक- गाथाओं का महत्व बहुत अधिक है।

बांगड़ लोक गाथाओं के रूपात्मक अध्ययन से प्रबन्ध काव्य की रचना और रूप निमार्ण की प्रक्रिया पर प्रकाश पड़ सकता है। यह व्यापक काल और देश के आयाम में परिवर्तित एवं परिवर्दित होती हुई अपने साथ विभिन्न स्थानों की संस्कृतियों को समेटती चलती है। अतः बांगड़ संस्कृति को इस प्रान्त काल या जी जाती से उद्भूत दिखाने में भी इसकी सहायता ली जा सकती है। यह कुछ ऐतिहासिक घटनाओं से भी प्रेरित रहती है। कथा, कहानी के तत्वों से युक्त होने के कारण इनका रचनात्मक एवं सांस्कृति अध्ययन विभिन्न कथात्मक रूढ़ियों के प्रयोग की दृष्टि से भी हो सकता है। इस प्रकार बांगड़ लोक गाथाएं लोक साहित्य के अध्येता के लिए विशिष्ट महत्व-पूर्ण अध्येय सामग्री के रूप में उपलब्ध होती है। बांगड़ कथात्मक गाथाएं काफी संख्या में उपलब्ध हैं इसकी कारण यह है कि यहां

- -

सांग (स्वांग) या लोक नाट्य की परम्परा बड़ी समृद्ध है। यह लोक नाट्य से पृथक रहने पर लोकगाथा के रूप में ही गेय हैं।

बांगड़ कथात्मक गीतों से हम यहां की संस्कृति एवं जनता के कला प्रेम की झलक पा सकते हैं। वस्तुत: यह कथात्मक रूप ही जन जीवन को अधिक व्यापक स्तर पर व्यक्त कर पाती है अत: इनका अध्ययन ही गहराई से अपेक्षित है। परस्तुत अध्याय में बांगड़ कथात्मक गीतों के अध्ययन की गहराई में उतरने का तात्पर्य यह है कि इन लोक गाथाओं की रूपांतरों के साथ साथ व्याख्यात्मक रूप प्रस्तुत किया जा रहा है। और बांगड़ कथात्मक गीतों का तात्विक विवेचन भी प्रस्तुत है।

बांगड़ से प्रमुख एवं महत्वपूर्ण रागों का विवेचनात्मक वर्णन तात्विक विवेचन सहित दिया जा रहा है। प्रमुख बांगड़ लोक राग निम्नलिखित हैं :-

1- निहालदे

2- जैमलफत्ता

3- गूगा "गूगापीर", "गूगावीर", या "जाहरपीर"

4- "हरफूल जाट जुलाणीका"

1- "निहालदे" :-

यह बांगड़ की सर्वाधिक प्रिय लोकगाथा है। प्राचीनकाल में कीचकगढ़ नामक नगर में राजा चकबैन राज्य करते थे। उनका पुत्र मैनपाल युवावस्था में ही स्वर्ग सिधार गया था। :-

गढ़ सादर को सुमर के रंगा करते ब्यान।

मैनपाल राजा भये कीचकगढ़ दरम्यान।

सुलतान, मेनपाल की एक मात्र संतान का पालन पोषण उसके दादा

- -

बेन ने किया। सुलतान की अत्याधिक चंचलता एवं चपलता के दुष्परिणामों से तंग आकर उसके दादा ने सुलतान को देश निकाल दे दिया। भूखा-प्यासा सुलतान इन्द्रगढ़ पहुंचा। सुलतान वहा के राजा कामध्वज के पास अपने सम-वयस्क पुत्र फूलसिंह के साथ रहने लगा एक दिन दोनों मिलकर शिकार करते करते हिरण के पीछे कैलागढ़ के उद्यान में जा पहुंचे-

छोड़ कूदया राज्जा सुलतान का
जा पहुंच्या जिनान्ने बाग
फूल्ले थी बेट्टी महा की
फूल रही था राजकवांर
बेट्टी बोल्ली महा मान की
सुण ले छोड़े आले साफ जवाब
जिन्दगी चाहवै चल्या जा
सिर पै खेल्लै पक्का काल
राज्जा नै छांट बोल्या सब्ज कमाण तैं
सिर पै धर दी पचरंग ढाल

यह दोनों का प्रथम मिलन था। एक दिन दूसरे पर मोहित हो गये। दोनों ने वचन निभाने का प्रण लिया। दोनों के प्रेम की खबर कामध्वज को लगी। तो उसने कैलागढ़ के राजा महा से निहालदे की शादी सुलतान से करने को कहा। निहालदे से शादी करने के लिए सुलतान ने राक्षसों को मारने की शर्त पूर्ण करनी पड़ी :-......और फिर उनकी

- -

शादी हो गई । उनकी शादी पर राज्य भर में सर्वत्र खुशियां मनाई गई । दोनों शादी के बाद अपने प्यार में गलतान रहने लगे । एक दिन फूल सिंह ने निहालदे को देखा और उसके रूप सौन्दर्य पर मर मिटा । उसके हृदय में उत्पन्न पाप ने मित्रता को ताक पर रख दिया और फूल सिंह ने सुलतान को धोखे से मारना चाहा मगर सफल हो नहीं पाया । .... इसके बाद सुलतान ने इन्द्रगढ़ को छोड़ दिया और निहालदे को उसके पीहर कैलागढ भेज दिया । सुलतान को तकदीर नरवर गढ़ ले गई वहां उसने लोगों में आंतक फैलाने वाले शेर को अपनी जान की बाजी पे मार डाला । नरवर-गढ़ का राजा ढोला उसकी बहादुरी पर प्रसन्न हुआ और उसकी राणी मरवण सुलतान को देखकर उसकी ओर मोहित हो गई । परन्तु सुलतान ने उसका मोह भंग कर दिया । और उसका भाई बनकर रहने लगा । जान्नी चोर ने एक दिन मारु को हड़ लेने की सोची परन्तु सुलतान ने उसे पकड़ लिया जिस पर ज्यानी ने सुलतान से पगड़ी बदल यार बनना चाहा । सुलतान जब ज्यानी से पगड़ी बदलने का लगा तो मरवण यूं कहने लगी :-

हाथ जोड़ के बोल्ली मारण
सुण ले भाई साफ जवाब
क्या चोरों की दोस्ती
नहीं होती चोरां की जात
मत बदले जान्नी ते पागड़ी
बरज रही तनै मारु बाहण

परन्तु दोनों पगड़ी बदल यार हो गये । उधर राजा ढाल भी उनके भाई - बहन के पवित्र रिश्ते पर शंका करने लगा । भूपसिंह और धूप सिंह
- -

दो बनजारे माफ को हरण करने आये तब राजा ने उसकी सहायता के लिये असमर्थता प्रकट की तब माफ रोती हुई भाई सुलतान के पास जाके बोली :-

हाथ जोड़ के बोली मारवण
सुण ले भाई साफ जवाब
कद[1]कद जां थी म्हाणा ने
ठा ले गी बिपद[2]की छाल[3]
आ रहा बणजारा गेढ़ां में
होर लेई तेरी माफ बाहुणा
सेड़ सड़ मारे कालड़े
मार उड़ा दी धूल बनात

इतना सुनकर सुलतान के आग लग गई। सुलतान ने अपने पगड़ी बदल यार ज्यानी वीर और गोधू जाट ताईं भी खबर भेज दी । सुलतान ने महादे का सुमरण करके वंदना की :-

शिवजी सुमर्या सुलतान ने
महादेव का धरता ध्यान
तेरे भरोसे गुरुजी मैं फिरूं
बेल्ले की नइया कर दे पार
गोधू[4]मिला दे जाट का
और मिला दे जान्नी सरदार
झूक पड़ी गोधू के काम में
चाल पड़े थे गोधू जाट
सुपना आया जान्नी वीर ने
चाल पड़े जान्नी सरदार

1- कब 2- विपदा 3- झोंका

4- गोधू जाट जानी वीर का साथी था, जिसने कितने ही अवसरों पर सुलतान का साथ दिया ।

इस प्रकार तीनों यार इकट्ठे हो गये :-

आ पहुंचे दोन्नों यार थे
देख रहा राज्जा सुलतान
कोली भाट की गोध्धू जान्नी वोह की
कट्ठे हो गये तीन्नों यार

और इस प्रकार सुलतान के हाथ बनजारे पराजित हो गये। सुलतान की देश निकाले की अवधि भी समाप्त होने को थी। कंवर निहालदे अपने प्रियतम की प्रतीक्षा में अत्यन्त विकलता से कर रही थी। परन्तु नर सुलतान का कहीं आभास न मिल रहा था। एक दिन उसकी एक दासी से ज्ञात हुआ कि कुछ बनजारे नर सुलतान की वीरता की प्रशंसा करते जा रहे हैं। निहालदे ने उन बनजारों से पुछवाया कि नर सुलतान कहां है? बनजारे नर सुलतान से मार खाकर तो आये थे ही वे चिढ़े हुए थे उन्होंने कहा कि सुलतान तो मरवण के प्रेम में गलतान नरवरगढ़ में रह रहा है। अब कभी नहीं आने का। इस समाचार को सुनकर कंवर निहालदे अति दुखी हुई। निहालदे ने मरवण को कटाक्षों से परिपूर्ण पत्र लिखा:-

मेरा पति तने मोह लिया[1] बनाके सारी भोली
तने मैं भली समझूं थ, तूं निकली गजब की गोली
भाई बहिन का नाता करके प्यार कर री से
आशिक दिले जान से होके उसपे मर री से
जवानी में तू पागल होगी अकल तेरी हर रोसे
भाण[2]बणा के तू काम काढरी हरि से ना डर री से
तूं बदी[3] से ना डर री से नागण तू पति मेरे ने मोह ली

1- क्या मैं करना 2- बहिन 3- बुराई

चारण भाट द्वारा मरवण को निहल्दे के पत्र मिले ।

मरवण विचित्र स्थिति में थी । परवान लेकर बाचण लागी :-

कागज लीहुन्हा कुंद की मारवण
बांचवण लागी हरफ कुआर
पहला बंचती कागज में बंदगी
नेक्की बंचती नेक जवहार
नरवरगढ़ उजड़ लिख्या
ढोल्ले ने डसियो काला नाग
रांडज हुइयो साविण कुंद की मारवण
तेरा लड़का मर्यो रत्न कंवार
बाप्पे तैं आपा जाण ले
घर-घर जगत में पड़के आग
एक एक राज्जा के दस दस राणियां
इन बातां का अचरज नांय
डूब्बा पड़ी नल के ढोल के
छात्ती पे राखी सैल जमा
बाज पड़वा तड़के दोज से
दिन तीज्जां का बड़ा त्युहार
जल के मर ज्यां मोल्ला बाग में
जे सत राक्खेगा करतार
योर परवान्ना बांच के
बिदा करो मेरा भरता र

सुलतान मार के महल्लां पहंचा । और मुढ्ढे पै बैठ गया । मार परेशान

-5- -

1- शिला

परेशान था । उसने सुलतान के सामने सुपने के राह बात न्यूं वा लु करी:-

रात ने सोई रांगले महल में
सोन्ने का पिलंग बिछाय
सपने में दीखी कंवर निहालदे
उदां भाट की दीक्खी साथ
मार्‌या कटारा छैंच के
ऐणी[1] चिमक ग्यी परलै के पार[2]
मेरे दे गोड्डै[3] छाल्ली चढ़ गई
पकड़ लिए थे दोन्नों हाथ
मार्‌या कटारा छैंच कैं
ऐणी चिक ग्यी परले पार
लगड़त लगड़त तड़का हुआ
मेरी कटी छिम[4] की पापण रात
थारे कोण कंवर निहालदे
उदां भाट की किसका नाम
इन सपने का भेद बता दे
बूझ रही तेरा माह बाह्मण

इस पर भी सुल्तान खामोश रहा । माह ने दूसरा उपाय सोचा दूसरा परवाना पढ़ा परन्तु सुलतान खामोश रहा कुछ नहीं बोला । माह ने अन्य चिट्ठी निकाल कर उसकी व्याख्या की । सुलतान फेर भी बताणे से इन्कार करता रहा । हार के माह ने कैलागढ़ और इन्द्रगढ़ के भाट बुलाये

- -

1- अणी नोक 2- उस पार 3- घुटना

4- विपदा

भाटा ने देख के सुल्तान की आख्यां में पाणी आग्या । उसने हात्थां के कड़े काढ के भाटा ने दे दिये :-

हाथ जोड़ के बोल्या पोत्ता बैन का
सुण ले भैन्ना साफ जवाब
जिस दिन आया नरवरगढ़ में
कोन्या[1] बताए माद बाप
कान्या बताई कंवर निहाल्दे
महा राज्जा की राजकवार
करै बतीसो आभरण
इन्द बरसै से मेहमल्हार
विछाव किसे में नांह[2] पड़ो
बलना हस्सी सिरजनहार[3]
विछा पड़ी मेरे गात में
छूंट गये घर अर बाप
नहीं पक्के मेरे घर नहीं
उक्त इन्द्रगढ़ किसकिहा जां
सात समन्दर बिच के बसै
बली को मां संदेशा नाव
कूएं डला दे बेट्टी कुछ की
भला करेंगे श्री भगवान

परन्तु अब तो नरवरा ने तुरन्त ही नर सुल्तान को शीघ्र अति शीघ्र निहाल्दे के पास पहुंचने के लिए कहा और अपना घोड़ा उसे दे दिया ।

1- नहीं 2- नहीं 3- रक्षक

नर सुलतान नीले घोड़ पर सवार होकर चला पड़ा । इधर आकग तृतीया की घड़ी बीती जा रही थी । ठीक समय पर कंवर निहा लदे अग्नि की चिता पर बैठी । निहालदे ने स्वंय को सोलहों श्रृंगारों से सुसज्जित किया । रुप संवारा और चिता में बैठने से पहले अपनी एक सहेली से कहने लगी :-

पहले ठंडे पाँ धरया
उदां तैं करती साफ जवाब
बेबे ! जे पीया आवे गर्मी में चाल के
स्यालु[1] ते करिये सजन के वाल
जे प्यास्सा आवे नीर का
सोन्ने का लोट्टा भर दिये पिलाय
जे भक्खा आवे रिक का
खाण्ने ने दिये पूड़ सवाइ[2] ल
जे भक्खा आवे ब्याह का
कैलागढ़ ने दिये खदाय[3]
छोट्टी लाडली[4] बाबा मान के
उसने देंह गे ब्याह
साली सपटी देंहूगी सीठने[5]
गाल्ला बाबल फेरै सिर पै हाथ
लादे लाग्या[6] चिता कै
किसकी देक्खो बाट

अपना दिसौटा पूर्ण करके सुलतान निहालदे के पास जब पहुंचता है । इससे पूर्व निहालदे ने अपने हाथों अग्नि चिता को अग्नि दी । चिता

- -

1- ओढ़णा 2- गेहूं के आटे और गुड़ के पकवान जो तेल या घी में तले जाते हैं ।
3- भेज देना 4- लड़की 5- उलाहने 6- आग लगाना ।

छलक उठी । सभी चौकन्ने हो गये -- कौन आ रहा है ? पल भर में ही नर सुलतान का घोड़ा चिता के पास आ खड़ा हुआ और नर सुलतान ने चिता में कूद कर कंवर निहालदे को बचा लिया । और हाथ जोड़ कै बोल्या :-

जै तूं बाड़े की छींट बैंटियां
मैं लाम्यूं धर्म का बीर
जै बाड़े की लाग्गी बोहड़िया[1]
पक्का लाम्यूं देवर जेठ
जैं तूं से बेट्टी महा की
तेरा आग्गां आला कंत[2]
छूट छाड़ल्या सब्ज कमाण तैं
सिर पै धरी थी पचरंग ढाल
बचन भरे थे ब्याह के
ब्याह के छोड़ही कंवर निहाल
जल मं राणी आहे मत ब जलैं
म्हार कोन्यां काम

इस प्रकार अपना दिसोटा पूर्ण करके सुलतान निहालदे के साथ अपने बाप के राज्य में सुख पूर्वक रहने लगा ।

"निहालदे" लोक गाथा के स्थानों की प्रमाणिकता: के विषय में गन्नौर के पास म्याना, कौचकगढ़, करनाल को केलागढ़ , इन्दरी (करनाल) को इन्दरगढ़ और इन्दरी का पुराना बाग निहालदे का नौलखा बाग बताते है और नरवरगढ़ दूर कहीं दक्षिण में बताया गया है जहां पहुंचने के लिये मरुस्थल के गहरे कओं और नदियों को पार करना पड़ता है ।

1- बहू 2- पति

(अ) "निहालदे": तात्त्विक विवेचन:-

"निहालदे" लोक गाथा का तात्त्विक विवेचन निम्नलिखित है।

1- कथानक:- "निहालदे" का कथानक दो कथाओं का जोड़ है। एक कथा वीर नर सुलतान की है और दूसरी ढोला कांपिल्य मारू के धर्मभाई की है। अत: कथा का उपकारी एवम् प्रेमी भी दानव का कार्य दानव को मारना, चोर और बनजारे को पराजित करना, निहालदे से विवाह एवम् मारू का भात भरना आदि प्रधान कार्य है। इस प्रकार के कथा रूप संसार के अधिकांश भाषाओं के लोक एवम् परिनिष्ठित साहित्य में मिलते हैं। इसमें कोई वीर अपनी अल्पावस्था में ही अपने माता पिता से अलग हो जाता है और कहीं अन्यत्र बड़ा हो जाता है तथा हालातों को पराजित करके स्वंय में समर्थ होता है। बांगड़ की लोकगाथा "निहालदे" इसी का रूप है। इसलिए निहालदे का वीर कामदी वीर होता है न कि त्रासदी वीर। "इसमें कथा शिल्प को इस खूबसूरत ढंग से सजोया है कि प्रणय भावना चरम सीमा तक पहुंचती है तो मारवण का पवित्र भातृ प्रेम का उल्लेख हृदय को सहज ही स्पर्श कर लेता है। वह अज्ञात कथा शिल्पी जिसने इस श्रेष्ठ कलात्मक आख्यान की परिधि में सुकुमारतम अनुभूतियों को समो दिया है - वंदनीय है।"[1]

2- पात्र चरित्र चित्रण:- "निहालदे" में विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति कलात्मकता को स्पष्ट करती हुई प्रतीत होती है। जब सुलतान निहालदे को समय समय देकर जाने लगता है तब उसका प्रस्ताव एक कर्तव्य परायण आदर्श पत्नी का दिखाई देता है। "निहालदे" विरह वेदना से जहां पीड़ित दिखाई देती है उसके साथ साथ उसके परवाने उसके विरह और "सौतिया डाह" का वर्णन असीम सफलता को प्राप्त होता है। वह नरवरगढ़ जाकर पी दर्शन कर सके यह दृश्य हृदय को झंझोड़ डालता है। उसमें त्याग भावना भी चरम सीमा

1- हरियाणा लोकगाथाएँ लेखक - देवी शंकर प्रभाकर पृष्ठ 38

पर है। नर सुलतान प्रेमी एवम् पति तथा धर्मभाई के रूप में अपने चरित्र की छाप छोड़ता है। इसके पात्र मानवीय गुण दोषों का पूर्ण रूप से निरूपण करते हैं। ये अलौकिकता की बजाय मानव मात्र की विशेषताएं एवम् कमजोरियों को दर्शाते हैं। पात्रों में मानवता है - देवत्व नहीं। नायक उत्साही एवम् साहसी पुरुष है। - अलौकिक विभूति नहीं।

।।।- मुहावरे एवम् अति शयोक्तियां :- इसमें " मोरव्यूं बासूं गैरणा," "कालानाग" "फूलम का चांद","जली जबान" आदि अनेक मुहावरों का यथा परिस्थिति बड़ा सुन्दर प्रयोग हुआ है। इसमें शकुनों-अपशकुनों एवम् अति शयोक्तियों का पुट सांस्कृतिक परम्पराओं और घटना की विचित्रता को संवारता है।

।।/- कथानक रूढ़ियां :- इस लोक गाथा में कथानक रूढ़िया भी बहुत सी प्रयुक्त हुई हैं। इसमें निम्न कथानक रूढ़िया हैं।

"ढलती उम्र में पुत्र उत्पन्न होना, बचपन में उदण्डता और देश निकाला, किसी योगी का सन्यासी से भेंट, सात घर से भिक्षा मांगने की शर्त। किसी राजा द्वारा धर्म-पुत्र बनाना, राजा के पुत्र द्वारा ईर्ष्या, किसी अन्य राज्य में सुन्दरी का साक्षात्‌ और प्रेम, किसी अवधि पर अपनी प्रिया के पास लौटने का वचन, प्रत्येक दिन एक व्यक्ति खाने वाला दानव और वीर द्वारा उसकी मृत्यु, धर्म-भाई, पगड़ी बदलना, दी गई अवधि क समाप्ति और उसकी पूर्ति ।, चिता में जलने का उपक्रम, भात भरना आदि आदि।

इस कथानक रूढ़ियों को देखने से स्पष्ट होता है कि इस लोक गाथा में बहुत से तत्व अति प्राचीन है और कुछ नवीन भी। प्रत्यक्ष दर्शन से प्रेम की कथानक रूढ़ि समान्यतः अधिकांश कहानियामें मिलती है।

- -

1/- भाषाशैली :- "निहालदे" की कथा प्रेम और रोमांस की कथा है। इसका गायक श्रृंगार रस का परिपाक कराने के स्थाने पर उसे उच्छृंखल बना देने का प्रयास इसलिए करता है ताकि जोक इस प्रकार के खुले श्रृंगार में विशेष रस ले सकें।

"निहालदे" जोगियों -रा बजाकर (सारंगी) अने अपने तौर-तरीकों से गाई गई है। कथा पूर्व वे भगवान शंकर की आराधना करते हैं। ये लोग इन वीर गाथाओं को" साखा शैली" पर गाते हैं। और निहालदे जन-गाथा को "पैड़ो" के आधार पर। इसकी भाषा सरस , सरल, एवम् सुन्दर है।

(आ) "साखे" और "पैड़ो में" अन्तर :- शैली और शिल्प की दृष्टि से साखे और पैड़ो में काफी अन्तर हैं। देखिए इनमें अन्तर। भूरा बादल की गाथा का एक साखा :-भूरू की माता बोलती सुण भूरा मेरा

यह सोलह सौ पद्‌मिनी तेरे खड़ी चौफेरे
ये देवर देवर कह रही तने मुखड़ा फेरा
तोड़ आादे कांगणा पकड़ो सवेरा

निहालदे का एक पैड़ा :-

हाथ जोड़ के बोल्ली बुद्ध की मारवण
सुन ले भाई साफ जवाब
के बीरां की दोस्ती
नहीं होती बीरां की जात
मत बदले जान्मी ते पागड़ी
बरजं रही तन्ने माहू बाहण

"साखे" तुकान्त होते हैं और "पैड़े" अतुकान्त -दोनों के छन्द में भी

1- इन्कार करना ।

चार से आठ मात्राओं तक का अन्तर होता है। पेड़े का छन्द साखे के छन्द से लगभग ज्यादा होता है। साखा वीर रस प्रधान और पेड़ा करुणा, हास्य, व्यंग्य और वीर रसों की रचना करता है- कथासूत्र को आगे बढ़ता है।

(घ) "निहालदे" और "राजा ढोल" अथवा ढोला मारु:- वैसे तो "निहालदे" और"राजा ढोल" दो भिन्न कथाएँ है परन्तु इन दोनों में समानता के कारण दोनों में गहरा सम्बन्ध है। क्योंकि राजस्थानी" ढोला मारु" यहां बांगर का राजा ढोल है। एक का कथानक कथा का पूर्वार्द्ध में सुल्तान और निहालदे के चारों तरफ रहता है और दूसरे का कथानक उत्तरार्द्ध में ढोला मारु की नायिका मारवणी के समीप होता है। "वास्तविकता तो यह है कि निहालदे गाथा का अनुपम सौन्दर्य वहीं पहुंच कर निखरता है। यदि कथा के इस प्रसंग को अलग कर दिया जाये तो कुछ भी नहीं रह जाता।"[1] यह लोक गाथा जोगियों द्वारा कम गाई जाती है परन्तु लोक रंगमंच पर अभिनीत की जाती रही है। ढोलामारु में मारवणी उसके प्रियतम बाल्य काल से विवाह तक की कहानी है। मारवणी अपने पिता के द्वार पूंगलगढ़ से विरह के आग में सुलगती हुई राजा ढोल के पास अनेका संदेश भेजती है परन्तु रानी कछवाही उनके मार्ग में चट्टान की तरह अड़चनें डालती है। मारवणी के एक संदेश का नमूना :-

आंसू गेरु मोर ज्यों धरमस्तक पर हाथ
सावण-सावण कह गयो, ला दियो बारह मास
छान पुराणी हो गई- लुरकण लाग्यो बांस[2]
क्या तेरे कागज गल गए- क्यों स्याही का ओछ[3]
राणी को भरोसा तेरे नाम का, तेरे नाम की ओट

राजा ढोल की कथा का पूर्वार्द्ध ढोल के बाल्यकाल एवम् विवाह तक

1- हरियाणा लोक गाथाएँ - लेखक - देवीशंकर प्रभाकर पृष्ठ 40

2- आवाज करना।

3- कमी।

चलता है। परन्तु उतरार्द्ध निहालदे के साथ मिलता है।

राजा ढोल का कमजोर और भीरू होना उसके चरित्र को गिराता है। न कि उसके चरित्र को सम्मान की दृष्टि प्रदान करता है इसके ठीक विपरीत वीर सुलतान बहादुरी एवम् पराक्रम का सम्बन्ध है। सुल तान का नरवरगढ का रक्षक होना, मारवण के प्रति भातृ प्रेम को कायम रखने का धैर्य निहालदे को उनके सम्बन्ध पर सन्देह होना औरफिर इन्द्रगढ से सुलतान द्वारा मारू की पुत्री का भात भरना मारवण का धर्म है भाई बनाना यह सब कुद दोनों ने साझा है।

जन गायकों द्वारा राजा ढोल को राजा नल का पुत्र बताना केवल सन्देह पैदा करने के सिवाय कुछ भी नही है। केवल भ्रम मात्र है। इसमें जहाँ वास्तविकता को आधार माना जाये तो यह निरर्थक सी लगती है। यह उनका अपनी दिलचस्पी और सहुलियत का मामला है। यह केवल अपनी गाथाओं को प्रभाव शाली बनाना चाहते है चाहे इसमें वे कितनी ही व्यक्तिगत रूचि के लिए गतियों का समावेश कर जाये।

इस विषय में टैम्पूल जन गायकों को इस भी म से सर्वथा दूर रखने का प्रयतन करते है और उनके अस भ्रम को सर्वथा गलत प्रमाणित करते है :-

"The legend has not as far as I know, any foundation in bhe classics like Raja Nala., Though Dhol is always described as the son of Nals.

...........Bard as a human being Can't resist his temptaion. He even connects noble part of audience with saja one or anoteher" 1

नल दम्यन्ति की पौराणिक गाथा का सम्बन्ध इसके साथ जोड़ना युक्ति संगत नही लगता।

---

1. The legend of the punjab By C.R. Temple VolIII. Page 42.

2- *<u>जैमल फत्ता</u>:-

जोधपुर नरेश महाराजा बैरम देव राज्य करते थे। उनके चार कंवर थे जिनका नाम था- धीर, जयमल, जगमल, तथा चन्दर सिंह। महाराज बैरम देव मृत्यु शैया पर पड़े अपने जीवन की अन्तिम घड़िया गिन रहे हैं। मृत्यु शैय्या पर पड़े महाराज ने कचहरी की ओर पूछा संसार में सर्वप्रिय वस्तु कौन सी है? विद्वान और मन्त्रियों ने "भाई" बताया :-

बैरम देव ने खत लिख्या माल देव पै जाणा
आया काल सूझण लाग्या[1] घर जयमल जाणा
इस परवाणै ने बांच के रे भाई जाये न ढील[2] लाणा।

उनकी रानी रोती है और कहती है कि मुझे किसके सहारे छोड़ रहे हो क्योंकि हमारे पुत्र तो अभी काफी छोटे हैं। इस पर महाराज अपने देश निर्वासित भाई को वापिस बुलाने की कहते हैं और महाराज प्राण त्याग देते हैं। रानी घबरा जाती है :-

राणी कहे सहेलियां राजा के ताहीं
राजा तुम चाल्ये दरगाह ने बांह किसने पकड़ाई
धीर, जगमल, जयमल, चन्दरसिंह से थाणे भाई
बैरम देव राजा कहे राणी के ताहीं
राणी मालपुरे में मालदेव मेरा अंसी भाई[3]
लिख परवाणा भेज दे ले राव बुलाई
लड़के थाणे[4] ते स्याणे बणै को दिन के मांही[5]

परन्तु दुराचारी और बेरहम मालदेव अपने भाई के चारों पुत्रों को

1- अन्तिम समय नजर आना।

2- देर।

3- सगा भाई।

4- नाबालिग।

5- कुछ समय में ही।

को बन्दी बना लेता है। तिस पर उसी का पुत्र निर्मल सिंह दरबार में आकर अपने पिता से अपने ताऊ के पुत्रों और भाईयों पर यह बात न करने की प्रार्थना करता है :-

निर्मल देव अर्ज करे ऐसी नकीजे
बाबुल गऊवां सरवर मत करे गो बरबस दीजे
दूध गऊ का खाइये और दूध पीजे
जिनके बच्चे चले मूल मंहगे बीजे
गोती दर्शन फिर करे हत्या न कीजे
गोती नजर भरां दुवादश लो नरक पतीजे
राज जिन्हा के हा बाबल फिरा चले
अपनी किस्मत के बल भीजे

मालदेव ने निर्मल देव की प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया और उसने अपने सगे भाई राणा देव की सहायता से अपने ताऊ के पुत्रों को अपने पिता से शान्ति पूर्वक छुड़वा लिया और अपने मृत ताऊ बैरम देव का अन्तिम संस्कार किया :-

निर्मल देव अर्ज करे दिल करके भारी
सुणिये भाई राणा दे एक अरज हमारी
इतनी सुण के राणा दे भरा आंसू डारी
हाथी छोड़े झूलते सुदां अम्बारी
छड़िया छोड़ी पालकी ले चढ़ा कटारी
सताब बन्द छवी के दुन्दे में जा क जड़ी कटारी
काढी हिक हिलोल के दे के झटकारी
भाजा राजा मालदेव ले ज्यान प्यारी
भाईया की बन्द छुटाके
ताऊ के लाश की दावण की कर दी तैयारी

1- पेट।

राज माता अपनेचारा पुत्रों को अपने पिता के घर लेजाकर उनका वहां पालन पोषण करती है. उनके जवान होने पर जब जयमल अपने भाइयों को लेकर भाभी (मामा के बेटे की रानी) के साथ फाग खेलने लगे तो उसने कहा " हमारे टुकड़े खाकर हमीं से फाग खेलने लगे" । जैयमल यह व्यंग वाणी सहन नहीं कर सका और अपना राज्य वापिस लेने पहुंचा :-

पके राणी महल में फूलम का बान्द
आंखड़िया रतनालियां[1] जाणों जले चिराग
होंठ सपातल पातले रही बीड़े चाव
दांत बत्तीसी खिल रहे ज्यों बीज अनार
जयमल भर पिचकारी मारता राणी के गात
दूजी मारे चन्दर सिंह मैल खैार दास
सत्तर पिचकारी लागती राणी के गात
गुस्से भरी राणी कहे हट निरभागी[2]
जयमल तूं आया था दिन काटने तनें सूझा फाग
तेरा टुकड़ा खाके भरा पेट आज करे मजाक
जा बसा ले जोधपुर जित बसे काग
बोली मारी राणी नें कंवर तन गई दुसार[3]
बोल्या जयमल राजपूत सुण राणी बात
राणी नानी[4] दादी[5] दो बड़ें पंछ से जग में बास
तेरा धड़ से शीश उतार दूं मामा की लाज
जा बसालूं जोधपुर दूं तनें त्याग
तेरे बरगी कुंबड़ी म्हारे बैंचे साग

जयमल की रानी मालदेव द्वारा अपमानित हुई उसने हरिसिंह दिवान

- -

1- रतन जैसी आंखें ।

2- भाग्यहीन ।

3- हृदय को लग जाना।

4- नानी ।

5- दादी ।

को सहायतार्थ पुकारा । हरिसिंह दिवान जैमल ने रानी की सहायतार्थ भेजा हुआ था । जो " मोतीबाग" में ठहरा हुआ था । :-

शिश बदनी राणी कूकती दीवान पियारा
हरिसिंह म्हारी आण के के कारज सारा
मालदेव बढ़गया महल मैं कोण बरजण हारा[1]
उमर वालिस का ज्यों शंख भ्रबकाऱ्या
कमरां ते लिया सड़ाक दे खाण्डा दुधारा
पांच सौ वाले बाढ़िया चले एक लारा
आते उमर मालदेव आ मायया आरा
मालदेव के सिर पे छेवे तेग ज्यों जले अंगारा
आरते पे काटे राजपूत नर कंवर अठारह
जख्मी हो गये बाढ़ियां दो सौ और बारह
पंचरंग पाग और सेहरा हरिसिंह ने ताड़्या ।

उधर मालदेव भागा और भागते हुए का अभयसिंह ने अंगरखा पकड़ लिया।

ग्राउज[2]पकड़ा अभयसिंह पीस कब्ज लिकाड़ी
उर ने हाथ उठावंतां मारया ने कटारी
मालदेव के सिर पे छेवे तेग ज्यों[3] जले अंगारी
शिश बदनी राणी कूकती मुख तें दे गारी
हरिसिंह मारेसे ने मत मारियों थारे बीच मुरारी
भाजा राजा मालदेव ले जान प्यारी ।

कदम कदम पर जयमल को अपने बाबा मालदेव द्वारा रचे गये षडयन्त्रों का मुकाबला करना पड़ा परन्तु अपनी वीरता से सफल हो गया । फतेह सिंह की बुआ का बेटा जयमल था । जैयमल फत्ता दोनों वीर सेनानी हैं जिन्होंने असीमित दुश्मनों के दांत खट्टे किये । इसी लिए इसका नाम जैयमल फत्ता पड़ा ।

1- रोकने वाला ।
2- अंगरखा ।
3- जिस प्रकार ।

(क) **"जैमल फत्ता : तात्विक विवेचन :-** बागेल की इस लोक गाथा का तात्विक विवेचन इस प्रकार हैं ।

1- **कथानक :-** ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित "जैमलफत्ता" दो वीर भाईयों की वीरता के कथानक में पिरोई गई वीर गाथा है । इसमें युद्ध तथा क्रिया बिम्बों का साक्षात्कार इस प्रकार कराया गया है कि कथानक प्रवाह मई होता जाता है । कथा के पूर्वार्ध में चाचा मालदेव द्वारा रचे गये षड्यन्त्रों का शिकार होना, मालदेव के पुत्र निर्मल देव की सहायता से छुटकारा पाना, पिता का दाहसंस्कार करना, है । और फिर मध्य भाग में माता द्वारा बारा भाईयों का ननिहाले पालन पोषण कथा के उत्तरार्द्ध में भाभी द्वारा फटकार और चाचा के षड्यन्त्रों का मुकाबला तथा वीरता से अपना राज्य प्राप्त करना है ।

11- **पात्र चरित्र चित्रण :-** पात्रों में मालदेव धूर्त मक्कार एवम् निर्दयी इन्सान था या यूं कहिए कि इन्सान की खाल में शैतान भेड़िया था जिसके सामने रिश्तेनाते, पाप पुण्य तथा इन्सानियत का कोई भी महत्व नहीं था । उसके हृदय में मर्यादा भी मूल्यहीन एवम् अस्तीत्व हीन सी दृष्टिगोचर होती है ।

मालदेव षड्यन्त्र कारी और दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति था जिसने अपने भाई के लड़कों को बरबाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।

मालदेव का पुत्र निर्मल सिंह अनुशासन वाला तथा बड़ा आदर्श वादी युवक था । उसका भाई राणा देव भी सही कार्योंमें अपने भाई का हृदय से साथ देता हुआ प्रतीत नजर आता है ।

जैमल और फत्ता अपने अधिकारों को प्राप्त करने, अन्याय के खिलाफ लड़ने वाले वीर थे । और सदेव न्याय का पक्ष लेकर उसको निभाते

- -

निभाते हैं। यह बहादुरी एवम् कर्तव्यपरायणता के प्रतीक है। उनकी माँ त्याग की पूर्णरूपेण मूर्ति है। शिव बदनी जैयमल की पत्नी सच्चे अर्थों में वीरांगना है।

III- मुहावरों का प्रयोग :- छोट सपाल्ला पातले, बीड़ा चाबणा, दांत बतीसी खिल रहे बस जणों बीज अनार, फूल अरण्ड का कागबनना आदि मुहावरों का प्रयोग यथास्थिति सुन्दर एवम् आकर्षक बन पड़ा है।

IV- कथानक रूढ़ियां :- इसमें कथानकरूढ़ियों का भी प्रयोग भी हुआ है। परन्तु अन्य कथात्मक गीतों की तुलना में इनका प्रयोग कम है।

कथा रूप की दृष्टि से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि इसमें सारा झगड़ा राज्य पाट के लिए है। इसलिए हम कह सकते हैं कि यह गाथा जर, जोरू एवम् जमीन युद्ध का संग्रह सा प्रतीत होती है।

V- भाषा शैली :- जहांतक भाषा का प्रश्न है इस लघु वीर कथात्मक गाथा में बांगरू बोली और बांगरू मुहावरों का सरस प्रयोग मधुरता का समावेश करता है।

वीर और श्रृंगार रस की दृष्टि से लोक गाथा अद्वितीय है। संयोग श्रृंगार की मधुर और स्वाभाविक अभिव्यक्ति भी दिखाई पड़ती है। क्योंकि उसमें जयमल की पत्नि के रूप की व्याख्या की गई है।

आल्हा ऊदल की तरह यह जैयमल फत्ता दो भाइयों की वीर एवम् ऐतिहासिक लोक गाथा है।

हरियाणा में इसका गायन भी काफी लोकप्रिय है। यह पंवारा की श्रेणी में आता है।

3- गूगा(गूगापीर, गूगावीर):- मूवर वः

गूगापीर यहां के संस्कृति और सामाजिक जीवन में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है हर मास की कृष्ण-पक्ष की नवमी को गूगापीर के भक्त दूध का दही नहीं जमाते खीर बनाकर खाते हैं। गूगा बीकानेर के राज्य में ददरेड़ा नामक स्थान पर जेवर सिंह नामक चौहान राजपूत और माता का नाम बाछल का पुत्र था बाछल सात जन्मों की बांझ थी गोरखनाथ की कृपा से गूगा का जन्म और उसकी काछल (गूगा की मौसी) को "अर्जुन-सर्जन "नामक दो जुड़वां लड़के पैदा हुये। गूगा का सिरियल से विवाह।

सम्पत्ति के लिये झगड़ा, अर्जुन सर्जन का दिल्ली के बादशाहके सामने चुगली खाना। बादशाह का गूगा पर चढ़ाई करना। युद्ध में गूगा की विजय और अर्जुन सर्जन का मारा जाना। बाछल द्वारा गूगा को - तुमने मेरी बहिन के पुत्रों को मार कर अच्छा नहीं किया तुम मुझे मुंह मत दिखाना। माता की इस बात पर गूगा का धरती मा से प्रार्थना करके समाधिस्थ होना कहा जाता है कि समाधि लेने के लिए ही हाजी रतन नाम के मौलवी ने कलमा पढ़ा और अपने नीले घोड़े समेत धरती में समा गया। गूगे के साथी नरसिंह पांडे, भज्जू चमार, रतन सिंह भंगी, नीला घोड़ा और स्वंय गूगा "पंचपीर" कहलाते हैं। किवंदती है कि गोरखनाथ द्वारा दिये गुगल से ही इन पांचों का जन्म हुआ।

"जाहरपीर" गूगा का एक विशिष्ट नाम है। जन्माष्टमी के अगले दिन ही भादों की नवमीं को इसकी पीरगाथा डेरू के साथ ढेकों पर गाई जाती है। भक्तलोग मस्ती में नांच उठते हैं। इसका पूजा स्थल

- -

गूगा मेड़ी कहलाती है। राजस्थान में भी गूगा मेड़ी प्रसिद्ध है। गूगें की आत्म कथा निम्नरूप में गाई जाती है :-

मेरे गढ़ ददरेड़ो बड़ो शहर हिन्दुवाना
अमर का पोता जेवर सिंह घोहाना।
मरद निछतर छत्तर धारी राणा।
बादशाही सूबा आम खास में थाना।
मदद इलाही कला सवाई मोक्ष में लागी छाई
जाहर पीर मदद अवतारी
जंग जीत पीरी पाई।
कजली बन सूं गोरख आया चोदह सो चेलां संग लाया
आ बागां में डेरा लाया बारहा बरस का सूखा बाग हरीया
फूलो का डोना माली भर के ल्याया कमा बाछल जाए दिखाया
ओघड़ चेला ने जाए अलख जगाया राणी भिक्षा लाई गुरु की रिच्छा
सेवा में बाछल आई
जाहर पीर मरद अवतारी --------जंग जीत पीरी पाई।
बाछलमाता जनमत की बांझ कहावे
पुत्र की खातिर सेवा हित कहलावें।
मेला गोद भरेंगे न्यू सतगुरु समझावें
सेवा सहणी गुरु की करणी खुशी रही बाछल माई।
जाहर पीर मरद अवतारी -------- जंग जीत पीरी पाई।
बारह बरस तक सेवा साधीगहरी।
गोरख नाथ का परचा हरदम हाजरहजूरी
काछल[2] का जोड़ा[3] जिने थी मजबूरी
बाछल का गूगा लिखी अरस ते पीरी
जोड़ा ने बाद विच मंढ़ायो धुन्ध मचायो।
दिल्ली में चुगली खाई
जाहर पीर मरद अवतारी --------जंग जीत पीरी पाई।

1- गूगा की मां 2- बाछल की बहिन 3- काछल के अर्जुन सर्जुन बे दो जुड़वां पुत्र।

गाथा आगे इस प्रकार है । :-

वदृा बादशाह ले ली फौज अमोही
ददरेड़ो छाया नित गुगा सिंह की रोही ।
वदृा बाला"भाणजा" ले ली हाथ सरोही ।
वदृे "हिसाबा" आकर दाना इन्दल कर दिया राही राही ।
जा र पीर मरद अवतारी -----जंग जीत पीरी पाई ।
वदृा भज्जु भाई जिनने लोथड़ा कर दिया ढारा ।
वदृा वीर ब्राह्मण नरसिंह मतवारा ।
वा फत्ते सिंह ने रण में खड्ग सम्भाला ।
वा गुगा जी के गले में भूलि माला ।
वा गुरु गोबिन्द रण जूझा जिनकी बणी रहे चतुराई ।
जाहर पीर मरद अवतारी ------जंग जीत पीरी पाई ।
गुगा जी की मदद पीरपी राणी
समशेर उठाई जागी बामी भुजा भवानी ।
धड़ शीश उडायों जिने वार करो हकानी ।
चौहान गोत्र की कर गयो अमर निशानी ।
गुगा ने सेर बेर जब लिया लोथिजनों की तड़पाई ।
जाहर पीर मरद अवतारी -------जंग जीत पीरी पाई ।
बादशाह के जी पे बहगई कारी ।
लीलों ने दोनों टाप धरी अम्बारी ।
गुगा ने आया लटका नीचे पटका काण कहूँ तेरे तख्त की
तो को कहा माह बादशाह भाई ।
जाहर पीर मरद अवतारी -------जंग जीत पीरी पाई ।

1- लीला : गुगा का ढाड़ा

आगे का अंश इस प्रकार प्रस्तुत है :-

जंग जीत के सिर जोंड़ा का ल्याया ।
इनको बिसवा दे दे ले मेरी बाछल माता ।
गूगा तने बुरी करी ये मेरी सगी भाइण का जाया ।
ददरेड़ा ते सुण के करणा पुरे मे आया ।
अर्जुल्ला[1] पाटी जब लीला संधु समाया[2]।
भूंडा बीच मेड़ी[3] छाई ।
जाहर पीर मरद अवतारी +------जंग जीत पोरी पाई ।

और इस प्रकार गूगा पीर का बहुरंगी स्वरूप यहां जन जीवन की सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक परम्पराओं में पूरी तरह समाया हुआ है गूगापीर व्यक्तित्व ने धार्मिक सहिष्णुता का बेजोड़ उदाहरण प्रस्तुत किया है । दो सांस्कृति धाराओं के सुन्दर संगम के दर्शन यहां होते हैं ।
गूगा का नाम लेकर किया गया संकल्प पूरा न करे तो उसे सांप दिखाई देते है । गूगा के इन नागों का आंतक कितना है ? इसका एक रोचक प्रसंग है एक बार एक जाट ने किसी से पूछा :- क्यों भाई चौधरी गूगापीर बड़ा या भगवान बड़ा ।

उतर मिला :- भाई । बड़ा से उसने तो सब जाणे से पर सांच कह के सांपा ते दुश्मनी कोंण मोल ले[4]।

इस प्रसंग से गूगा पीर की आस्था का पूर्ण रूप से पता चल जाता है । यहां गूगा पीर को प्रसाद के रूप में शक्कर चढ़ाई जाती है ।

- -

1- भूमि ।

2- समा जाना ।

3- वह स्थान जहां पर गूगे की पूजा की जाती है ।

4- हरियाणा लोकगाथाएँ लेखक - देवी शंकर प्रभाकर पृष्ठ 28

हरियाणा में फैली हुई अनेको गुगा की मैड़िया पर गुगा के मेले भादो मास की नवमीं को लाते हैं :-

बोल बाला पांचा पीरों
लागजा धाोकरो जात डोरी तेरी ।

"केवल यही नहीं लोक साहित्य में गुगा पीर इस प्रदेश के एक प्रमुख पात्र है । विवाह, शिशु जन्म और दूसरे समारोह पर गुगा पीर के गीत पहले गाये जाते है । उन्हे जाहर पीर के गीत कहा जाता है"[1]।

वीराजिसकी जग मे रोसनी
सब जपों उसी का नाम
करलो सुबह शाम की बन्दगी
सब सम्पूर्ण हो जां काम,

माता पिता गुरु अपना
भजो धानी का नाम
पीरा का साका गाईयें भाई
भरी सभां के मांह,
ध्यान पनमेश्वर सेती ।

सम्भावना है कि यह सुफियों के प्रभाव के कारण लोकधर्म का अंग बन गई है । जाहर पीर का पूजन हिन्दु और मुसलमान दोनों करते हैं । यह हिन्दु मुस्लिम विश्वासों के सबसे समन्वय की अनोखी उपज के रूप में दृष्टि-गोचर है । जाहर पीर लोकगाथा लम्बी है अत: इसके कुछ अंश ही उपर उद्त किये गये है । उसकी विशिष्टताओं के सम्बन्धा में कुछ धारणा बनाई जा सकती है । बांगड़ में जो लोकगाथा गाई जाती है । वह ऐसी प्रतीत होती है । मानो सही अर्थों में दिवा-स्वप्न हो ।

1- हरियाणा लोकगाथाएं - लेखक देवी शंकर प्रभाकर पृष्ठ - 27

§ब§ "गूगा" § तात्त्विक विवेचन":-

तत्वों की दृष्टि से गूगावीर का साहित्य अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

1- कथानक :- गूगा वीर की कथा में इतिहास और परम्परा दोनों लौकिक एवम् अलौकिक तत्वों का समावेश है। यह दोनों तत्व ऐसे सम्युक्त हो गये हैं। कि इनको पृथक पृथक करना कठिन सा दृष्टिगोचर होता है। इसमें तीन कथाओं का § टेल टार्षप§ का उपयोग हुआ है। प्रथम में सिरियल से विवाह तक, दूसरे रूप में भाई कोहत्या तथा तीसरे रूप में माँ के फटकारने पर धरती में समा जाने का। अन्तिम कथानक इस्लाम के प्रभाव की देन है। सांस्कृति क दृष्टि से यह महत्वपूर्ण तत्व है। ऐसा ज्ञात होता है कि वे "जाहर पीर" बनने के लिए मुसलमान हुए।

2- पात्र चरित्र चित्रण :- "जाहर पीर" गुरू गूगा या गूगावीर जी एक कथात्मक गीत है। जिसमें वीर-रस प्रधान है। यह ऐसा ऐतिहासिक कथावृत है जो इस क्षेत्र में देवता के समान आज भी उसी श्रद्धा से पूजे जाते हैं इनके कथा त्मक वर्णनों में गुरू गोरखनाथ और इनके चमत्कारों की परिपूर्णता है। क्योंकि ऐसी कई घटनायें दृष्टव्य हैं। गूगा की माँ बाछल को जाहर पीर गूगा भी गोरख नाथ की सेवा का ही फलस्वरूप माना जाता है।
अन्य पात्र गूगा की मौसी काछल और उसके पुत्र अर्ज सर्जन है। अर्जन सर्जन का चरित्र ज्यादा अच्छा नहीं है। मुसलमान बादशाह भी भ्रष्ट व्यक्ति हैं।

3- चमत्कारिता :- जन्म से पूर्व ही गूगा अपनी माँ, पिता और नाना को चमत्कारों से प्रभावित करता है। नागों की सहायता से सिरियल से

- -

किरवकरना । अर्जन सर्जन के मारने पर बाछल द्वारा धिक्कारने पर गुगा का भूमि में समा जाना आदि चमत्कार सम्मिलित हैं ।

उनकी करामात से ही इन्ही के साथ सरवर सुलतान, लीला घोड़ा, राजू चमार, और नरसिंह पाण्डे भी उत्पन्न हुए थे । लीला घोड़ा इनकी सवारी था । इन्होंने स्वपन्न में सात समुन्द्र पर रहने वाली सिरियल को उस समय देखा जब वे समुन्द्र को पार कर चुके थे ।

।।/- कथानकरूढ़ियां :- इस संक्षिप्त लोकगाथा में कई कथानक रूढ़ियां प्रयुक्त हुई है । किसी सन्त महात्मा के आशीर्वाद से पुत्र प्राप्ति , करामात से व्यक्तियों या पशु पक्षियों को उत्पन्न करना, स्वपन में प्रिया दर्शन नायक की विजय, नागों का साथ नायक का धरती में समाना । नागों का विवरण तो अथर वेद में भी प्राप्त होता है । अत: जाहर पीर की लोक गाथा में मिथ्य तत्व को देखा जा सकता है ।

।/ सूफी प्रभाव :- इस लोक गाथा में कुछ एक मुहावरों का प्रयाग हुआ है । अधिकांशत: यह लोकगाथा विशेषकर उतरार्द्ध में सूफी प्रभाव से प्रभावित दिखाई देती है । जाहर पीर का अर्थ प्रत्यक्ष रहने वाला पीर माना जाता है । इसका तात्पर्य यही है कि गुगा मरने के बाद भी यह विश्वास बना रहा कि यह जाहिर या प्रत्यक्ष होता है ।

।/।- भाषा शैली :- इस लघुकथात्मक गाथा में सरल भाषा में अभिव्यक्ति की गई है मानस के कई सत्रों की अभिव्यक्ति मिलती है ।

- -

4- "हरफूल जाट जुलाणीका :-

बांगड़ लोक कथात्मक गीतों में वीर रस प्रधानता को प्राप्त होता है इस शैली के "आल्हा", "शाके" और पंवारे आदि है। प्रस्तुत लोक कथात्मक गीत शाकों का ही एक रूप है।

ये साका हर्फूल जाट की जो दुनिया में हुआ मशनाम[1] ।।
अब किस्सा मैं कहूं खुलासा जिसका खास जुलाणी गाम ।।
सबसे पहले इसका जिकरा[2] हमने सुना कान से जाय ।।
हमने गाना सुना और से हरफूल सांग दिया छपवाय ।।

हरफूल जाट स्कूल से दसवीं पास करके फौज में भरती हो गया परन्तु फौज में भी वह अधिक समय तक नही टिक सका। तत्पश्चात् उसने अपनी शादी की बातचीत की परन्तु दुर्भाग्य वंश गैलड़ होने के कारण वहां भी अपमानित होना पड़ा। घर आकर भाईयों से हिस्सा मांगा तो उन्होने भी सगा भाई न होने के कारण लम्बरदार से मिलकर हरफूल को उसका हिस्सा नही दिया। तब कुण्ठित होकर हरफूल जाट ने अपने भाई और गांव के नम्बरदार का कत्ल कर दिया :-

दोनों भाई मारे और वाचा दिया तीसरा मार ।।
मौका पा हरफूल ने बांधा मारा नम्बरदार ।।

हरफूल वहां से झाभी गांव पहुंचा वहां श्री राम ने धोखे से हरफूल को मार डालना चाहा परन्तु हरफूल ने श्री राम को तीन सिपाही और दरोगा का कत्ल कर डाला। जीन्द के महराज ने किशनचन्द दरोगा को व हरफूल को गिरफ्तार करने के लिये भेजा परन्तु हरफूल को मारने के

- -

1- प्रसिद्ध ।
2- वर्णन ।

चक्कर में वह स्वंय मारा गया । मिठू पठान का भी उसे पकड़े जाना और उसका बान्दी के बेटे के साथ हरफूल द्वारा मारा जाना । अब हरफूल का ध्यान धार्मिक हो गया । हरफूल का गुहाणे का कस्था तोड़ना और कसाइयों को मार कर गौ माता की रक्षा की :-

आवाज देई हरफूल ने बूचड़ सुनियो कान लगाय ।।
गौ गहुँ·ाड़े जो लाये मुझको तुरन्त देओ बतलाय ।।
गौ हमको हमारी दे दो पन्द्रह के तुम ले लो बीस ।।
नहीं गौ के बदले में अब यहां पर दूंगा काट तुम्हारा शीश।।

परन्तु इसके प्रत्युतर में कसाइयों ब ने हरफूल सिंह को विषैले शब्दों का प्रयोग करके क्रोधित कर डाला :-

आग लगी हरफूल सिंह को हाथ में ली पिस्तौल उठाय ।।
फैर किया जब बूचड़ पे जम के घाट दिया पहुंचाय ।।
एक को मारा दो को मारा तीन चार को दिया लिटाय ।।
मची खलबली उस हत्ते में सारे बूचड़ गए घबराय ।।

कसाई हरफूल की ओर छुरा लेकर दौड़ने लगे परन्तु हरफूल ने उनको धरतू सुंघा दी :-

छुरा जो ले के चले उधर को उसे हरफूल छोड़ता नाय ।।
जो कोई भाग दरवाजे को वहां कैसु ने दिए सुलाय ।।
बढ गया खून जब हत्थे[1] में सबके रस्से दिए खोल ।।
जुल्म चार हरफूल का बारा गोली का पिस्तौल ।।

- -

1- बूचड़खाना ।

हरफूल जाटने गाय बैल इत्यादि जो बूचड़खाने में बन्धा हुए थे उनको सबको गऊशाला में भिजवा दिया । और :-

मैं बैल सब करके इकट्ठे गौशाला में दिए भिजवाए ।।
कागज लिख हरफूल ने उस हत्थे पै दिया लगाय ।।
और किसी को कुछ ना कहना मैं हरफूल जुलाणी का ।।
कैसू चल दिया गांव सुबारो बट हरफूल सिंह बणी में जाय ।।
धर्म कमाया गो माता का सबकी दी है जान बचाय ।।

बांस गांव में भरतु जाट को मारा । फिर बन्दगी और कैसु रांगड़ से बदला लिया और दोनों का खात्मा किया - हरफूल सिंह जबान का पक्का व्यक्ति था उसने अपना प्रण पूरा किया । चन्द्र सिंह थानेदार को मारा । फिर वह नकली हरफूल से जा टकराया :-

नाम मेरा बदनाम कर दिया तुझको शरम आवती नाय ।।
आज हाथ मुद्दत में आया मैं जमा छूट देऊं पहुंचाय ।।

इस पर नकली हरफूल जो वास्तव में चूहड़ा जाति का था उसके बदन में आग लग गई और माता भवानी का नाम लेकर असली हरफूल पर पिस्तौल से वार कर बैठा परन्तु असली हरफूल उसके वार से चौकन्ना था :-

गोली पार गई छाती में चूहड़ा पड़ा जमी पै जाय ।।
जो नकली हरफूल बना था उसका खटका दिया मिटाय ।।

कहां तो नकली हरफूल असली हरफूल को मारना चाहता था परन्तु असली हरफूल की समझदारी और विवेक के कारण वह (नकली) हरफूल स्वयं उसका शिकार हो गया ।

- -

हरफूल ने मन्सुख थानेदार, फारुख खां आदि को मौत के घाट उतारा । एक दिन बणी में से एक ब्राहम्ण और धानक इस प्रकार वार्तालाप करते जा रहे थे । :-

पर हमतो वीर उसे तब जाणा गऊ माता की जान बचाय ॥
तीन रोज बकर ईद के इसमें झूठ समझता नाय ।।
गऊयें होंगी कत्ल बहुत सी जिन पै छुरी चलाई जाय ।।
रोहतक के बूचड़ खाने में माता हाय-हाय डकराय ।।
जब जानूं हरफूल सिंह को उनकी जान बचावे जाये ।।
दोनों जावें ये बाते करते उनको जरा खबर भी नाय ।।

हरफूल सिंह के कानों में इस बात की भनक पड़ी । वह ब्राहम्ण और धानक को उत्साहित कर अपने साथ ले गया :-

बूचड़ खाने पे जा पहुंचा शंका जिन्हे काल की नाय ।।
गरजा शेर जुलाणी वाला उन दोनों से कहा सुनाय।
बाहम्ण का रहे दरवाजे पै जो भाजो को ले संगवाय ।।
धाणाक का चले मेरे साथ में हर तुम भीतर पहुंचा जाय ।।
तोड़ कबेला दिया शूर हो खाली कस्था दिया करवाय ।।
यह कत्ता तोड़ा हरफूल नेगऊ व भैसों को गया लिवाय।।
दाखिल कर दी गौशाला में गिनती दरज दई करवाय ।
धाणाक बम्मिया मागे विदा वा घर आपणे पहुंचे जाय ।।
धूम मचाई हरियाणे में हिन्दू बहुत खुशी हो जाय ।।
जीन्द रियास्त थर थर कांपे रांगड़ कांपे काप रह जाय ।।
और इस प्रकार:- बूचड़ खाना रोहतक का ईद के ऊपर तोड़ा जाय ।।
रांगड़ चिढ़ गए और भटियारे बाकी रही बदन में नाय।।

- -

खुदाबख्श रांगड़ नम्बरदार और उसके पांच भाईयों ने पंचायत की और उनको हरफूल सिंह के खिलाफ इस प्रकार भड़काया :-

नाक मुसलमानों की काटी उसने डाले जुल्म गुजार[1]।।
चलो घेर कर आज बस्ती में उस पाज्जी को डालों मार ।।

परन्तु हरफूल सिंह चौकन्ना रहता था उसने खुदाबख्श और उसके पांचों भाईयों को मार दिया । रांगड़ बस्ती से अपनी जान बचाकर भागे । परन्तु एक लालची ब्राहम्ण ने थाने में हरफूल सिंह के विषय में एवं स्थान के बारे में खबर दे दी । ब्राहम्णी को पहले रोटी देकर हरफूल सिंह के पास भेज दिया और उसके पीछे से उसकी थाने में सूचना देने चला गया । परन्तु ब्राहम्णी ने हरफूल सिंह को वास्तविकता से अवगत करा दिया । :-

रोटी खाकर फारिग हो गया इतने में पहुंची पुलिस भी आय ।।
ला पिस्तौल उठा केहरी[2] ने दीनो मार ही मार मचाय ।।
थानेदार मार दिया पहले कई सिपाही दिए गिराय ।।
भागी पुलिस बची जो बाकी पीछे फिर के देखा नाय ।।

यहां हरफूल सिंह की दयालुता का साक्षात प्रमाण इस प्रकार मिलता है कि उसने उसी ब्राहम्ण को जान से मारने के लिए छोड़ दिया जिसने उसके खिलाफ शिकायत की थी और उसे पकड़वा कर इनाम हासिल करना चाहता था । यह सब ब्राहम्णी की याचना पर हुआ :-

कहने से ब्राहमणी के उसने ब्राहम्ण को दिया क्षमा कराय ।।
ऐसा जोधा जाट हुआ था वो हरफूल जाट कहलाये ।।
नाम अमर दुनिया में कर गया पंचो सुनलो कान लगाय ।।
आगे केवल रहगई फांसी इससे कम्म चले अब नाय ।।

इस गाथा के कतिपय अंशों को उद्त करके इसकी कुछ विशिष्टाओं का उल्लेख किया गया है ।

1- जुल्म करना ।
2- शेर दिल ।

(अ) "हरफूल जाट जुलाणी का" :-तात्त्विक विवेचन :-

इस लोक गाथा का जो वास्तव में लघु गाथा है का तात्त्विक विवेचन निम्नलिखित तत्वों के आधार पर प्रेषित है ।

I- कथानक :- इस लघु गाथा का कथानक हरफूल जाट की जीवन घटनाओं के साथ जुड़ता हुआ चला जाता है । इसके जीवन वृत की घटनायें ही इस लोक गाथा का मूल स्तम्भ है । इस लोक गाथा के साथ साथ धर्म भाव भी जुड़ा हुआ है ।

II- पात्र चरित्र चित्रण :- यह नायक प्रधान लघु वीर गाथा है जिसमें नायक हरफूल सिंह जाट है जो जुलाणी गांव का रहने वाला है । हरफूल जाट द्वारा अपने दुश्मनों की प्रतिशोधात्मक भावना को कुचल देना, अन्याय के खिलाफ संघर्ष करना दिखाया गया है । इस पात्र की मुख्य धार्मिक भावना इस बात में निहीत दिखाई देती है । कि वह गायों (गऊमाता) का उद्धार करने का अपना परम कर्तव्य पूर्ण करता है प्रत्येक जोखिम उठाकर । इसमें हरफूल की राष्ट्रीय भावना भी राष्ट्र को समर्पित होती है । शेष सभी पात्रों का महत्व गौण सा दिखाई देता है । क्योंकि उस वक्त की सामाजिक व्यवस्था के अनुसार लोग दासता की जंजीरों मे जकड़े हुए थे । स्वंय को आतंकित अनुभव करते थे ।

III- कथानक रूढ़िया एवं मुहावरे :- गैलड़[1] होने के कारण भाईयों के अधिकार न देने पर उनको मारना, दुश्मनों और कसाईयों का सत्यानाश करना आदि कथानक रूढ़िया इसमें दृष्टिगोचर होती है । ऐतिहासिकता का अभाव खटकता रहे । जमाघाट, आग लगना, खलबली मचना, आदि मुहावरों का प्रयोग है

IV- भाषा शैली :- आल्हा संगत पर लिखी गई इस लघु गाथा में सरसता सरलता एवं मधुरता तीनों का संगम है । कई स्थलों पर मनोरंजकता बड़ी ही उत्कृष्ट है ।

1- माता के साथ आने के कारण इसे गैलड़ कहा गया ।

सप्तम अध्याय

<u>बांगड़ लोक कथा साहित्य का अध्ययन</u>

1- §1§ बांगड़ लोक कथा का स्वरूप और महत्व

§1'1§ लोक कथा की परिभाषा

2- लोक कथाओं की परम्परा

3- बांगड़ लोक कथाओं का वर्गीकरण :-

§1§ व्रत तथा त्योहारों सम्बन्धी लोक कथाएं

§2§ देव विषयक कथाएं

§3§ पौराणिक लोक कथाएं

§4§ साहस तथा शौर्य की लोक कथाएं

§5§ चतुराई पूर्ण लोक कथाएं

§6§ उपदेशात्मक लोक कथाएं

§7§ पशु पक्षि सम्बन्धी लोक कथाएं

§8§ बुझौवल

§9§ मनोरंजन प्रधान लोक कथाएं :- हास्य परिहास, मूर्खों की, जाति स्वभाव चित्रण की, ठगों आदि की कथाएं ।

§10§ अलौकिक तत्व से युक्त कथाएं :- परियों, दानवों, भूतप्रेत चुड़ैलों, जादू, इतिहासाश्रित महापुरुषों अथवा साधू सन्तो की कथाएं आदि

§11§ मिथकीय कथाएं

4- बांगड़ लोक कथाएं की विशेषताएं

5- बांगड़ लोक कथाओं के मूल अभिप्राय

6- बागेह लोक कथा मानक रूप

7- बागेह लोक कथाओं के तत्व

8- बागेह लोक कथाओं के वर्ण्य विषय

9- बागेह लोक कथाओं में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग

10- बागेह लोक कथाओं की सामान्य प्रवृत्तियां

11- लोक कथा तथा आधुनिक कथा में अन्तर

12- उपलब्ध बागेह लोक कथाएं उनका विवेचन

0- - - - 0- - - -0

" षष्ठम अध्याय "

बघेली लोक कथा साहित्य का अध्ययन

(1) लोक कथाओं का स्वरूप, महत्व :-

"लोक कथा" शब्द लोक प्रचलित उन कथाओं के लिए प्रयुक्त होता है जो मौखिक परम्परा द्वारा निरन्तर रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होती रहती है। इन कथाओं का जन्म भी मानव के साथ हुआ होगा और उसी प्रकार विकास की परम्परा से चलती हुई यह आज तक जीवित है[1]। पुरानी कथाएँ नया कलेवर धारण करके नये समाज की छाप लेकर नये रूप में प्रकट होती है। और यही नवीनता रूप, रंग और आकार की दृष्टि से अपना एक विशेष स्थान रखती है। इनका प्रधान उद्देश्य अपनी बात श्रोताओं के हृदय तक पहुंचाना है। एतएव लोक कथा जीवनाभिमुख होती है-वांछित जीवन को श्रोताओं के सामने रखना लोक कथा कार का आदर्शोन्मुख स्वभाव होता है। कोई लोक कथा निरुद्देश्य नही होती। मूलतः लोक कथाओं का अभिष्ट ही समाज जीवन का एक नया मनोमय ढांचा बनाना होता है। इसीलिए उसमें समाज मन तथा समाज जीवन की भावनाओं का, विचारों का, सहजात प्रवृत्तियों का उद्घाटन एवम् परितोष स्वाभाविक है। संक्षेप में लोक मानस का तत्व जिसमें विशेषकर हो लोक कथा कही जायेगी।

लोक- कथाएँ नाना रूपों में लोक जीवन को घेरे हुए है। आदि काल से वे हमारे साथ है। देश में सर्वत्र उनका निर्बाध निवास है। मानव के सुख दुख, प्रेम श्रृंगार, वीर भाव और वैर इन सबने खाद बनकर लोक-कथाओं को पुष्ट किया है। रहन सहन, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, पूजा-उपासना, इन सबसे कहानी का ठाठ बनता और बदलता रहता है। कहानी मनुष्य के लिए अपूर्व विश्रान्ति का साधन है। मन के आयास हटाने के लिए कहानी मानव समाज का प्राचीन रसायन है। आज

---

1. फोक टेल्स आफ आल नेशन्स पृ० 5

भी उसकी इस विशेषता और उपयोगिता में अन्तर नहीं पड़ा । मानव के मन जो शाश्वत बाल भाव है उसकी भाषा, उसका साहित्य उसकी भावाभिव्यक्ति कहानी है, संसार का साहित्य कथा-कहानियों से भरा हुआ है । इसी प्रकार लोक जीवन भी कथा कहानियों का भण्डार है । लोक-कथा और साहित्यिक वस्तु का भेद कालान्तर में विविध विकसित हुआ । वस्तुत: लोक-कथा ही समस्त साहित्यिक कथाओं की धात्री (धात्री) है । मूल रूप में लोक और साहित्य एक दूसरे से विरहित थे और उस स्थिति में लोक कथाओं के रूप में ही साहित्य की वस्तुएँ पनपती थीं । विश्व साहित्य में जो आद्य युग प्रवर्तक ग्रन्थ हैं वे लोक कथाओं के लिपिबद्ध करने से विरचित हुए । उदाहरण के लिए जातकों की कहानियाँ ठेठ लोक साहित्य की बूंद पुत्रियाँ हैं, मानो लोक वाटिका के सुरभित पुष्प इन कहानियों के रूप में अभी तक खिल रहे हैं । जातक कहानियों के आरम्भ में वर्तमान वस्तु और अन्त में समाधापरक अंश, उनका सम्बन्ध बुद्ध के जीवन के साथ जोड़ते हैं, किन्तु ये दोनों कहानी के आगन्तुक भाग हैं । वास्तविक कहानी अतीत वस्तु नामक अंश है जो सच्ची लोक कथाएँ हैं । इन कहानीयों में जीवन का समस्त विस्तार अंकित हुआ है । पशु-पक्षी, ग्राम जनपदों के स्त्री पुरुष और नगरी के राजा और मन्त्री सबके लिए कहानी में स्वागत का भाव है । वस्तुत: लोक कथा सबको अपना मानकर जीवित रहती है । उसके लिए त्याज्य कुछ नहीं है । नगर, ग्राम, धनी और निर्धन के जो खुले वर्ग हमने अब कल्पित कर लिये हैं और जिनके तापमान से साहित्य भी अछूता नहीं बचा है उनके लिए लोक साहित्य में और लोक कथा में भी स्थान नहीं है[1] ।

लोक कथा लोक साहित्य का एक प्रमुख अंग है । यह भी कहना अनुचित न होगा कि लोक गीत की अपेक्षा लोक कथा की व्यापकता अधिक है । ऐसे हजारों गीत हैं जिनमें कथाएँ गुम्फित रहती हैं[2] ।

---

1. लोक कथाएं और उनका संग्रह कार्य डा० वासुदेव शरण अग्रवाल "आजकल" का लोक कथा अंक, मई 1954, पृ० 9
2. लोक कथा विज्ञान लेखक श्री चन्द्र जैन पृ० 17

1. लोक कथा की परिभाषा :- लोक कथा की स्पष्ट परिभाषा न देकर विद्वानों ने इसकी विशेषताओं का अधिक उल्लेख किया है। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि लोक कथाओं का अध्ययन कई दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण है यद्यपि इस शब्द के प्रयोग के बारे में विद्वानों में मतभेद रहा है। तथापि लोक कथा शब्द मोटे तौर पर लोक प्रचलित उन कथानकों के लिए व्यवहृत होता रहा है जो मौखिक या लिखित परम्परा से क्रमशः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते रहे हैं।[1]"

हिन्दी साहित्य कोश, भाग एक में लोक कहानियों के विषय में लिखा है कि लोक में प्रचलित और परम्परा से चली आने वाली मूलतः मौखिक रूप में प्रचलित कहानियाँ लोक कहानियाँ कहलाती हैं।

लोक कहानियों के सम्बन्ध में एक मत यह था कि वे मूलतः धर्म गाथाएँ ही हैं। समय के प्रभाव और मूल स्रोत से दूर होकर इन्होंने धर्म गाथाओं के नाम स्थान त्याग दिये हैं। यह मत आज मान्य नहीं है।... लोक कहानी शब्द का प्रयोग कभी कभी अंग्रेजी शब्द "फोकटेल" के पर्यायवाची के रूप में भी होता है। अंग्रेजी में यह शब्द बहुत व्यापक अर्थ रखता है और इसमें अवदान लोक कथा, धर्म गाथा, पशु पक्षियों की कहानियाँ, नीति कथाएँ आदि लोक प्रचलित वार्ताएँ सम्मिलित की जा सकती हैं।

स्टैन्डर्ड डिक्शनरी आफ् फोकलोर में लोक कथा के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा गया है कि "लोक कथा की सुनिश्चित परिभाषा देने का कोई प्रयास नहीं किया गया है। सामान्यतः इस शब्द के अन्तर्गत समस्त परम्परागत आख्यानों और उनके विभेदों को स्वीकृत किया गया है।[2]"

---

1. लोक कथाएँ क्या बताती हैं ? "आजकल" का लोक कथा अंक पृ० 12

2. The Standard Dictionary of Folklore, Mythology & Legend by Funk & Wagnalls.

लोक कथा एक पारिभाषिक प्रयोग भी है । इस विषय में शान्ति निकेतन में विश्व भारती विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कुन्ज बिहारीदास ने लोक कथा को अर्ध स्वप्निल तथा अर्ध वास्तविक बता कर उसे अत्यन्त जीति जागती भाषा में लोगों के सरल विश्वास भिन्न आस्वाद, सामाजिक रीतिरिवाज, दृष्टि-विस्तार और कल्पना के कुलाचों का आख्यान कहा है ।

"Thus a folk tale is half-dreamy and half realistic. It depicts the simple faith, varied taste, social customs, breadth of out look and height of imagination of the people in the most living language."1

हिन्दी साहित्य कोष का सम्पादक अपनी लोक कथा शीर्षक टिप्पणी में लिखता है "कथा शब्द सामान्यतः कहानी का पर्यायवाची है" । इस दृष्टि से तो लोक कथा और लोक कहानी में कोई अन्तर नहीं होगा किन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं है । कथा शब्द प्रयोग में एक विशेष प्रकार की कहानी के लिए आता है । यह कहा जाता है कि रामायण की कथा हो रही है या इस प्रकार सत्यनारायण की कथा, करवा चौथ की कथा आदि । इन प्रयोगों से स्पष्ट होता है कि कथा कोई ऐसी वार्ता है जो किसी के द्वारा कहकर सुनाई जाती है और उसे सुनाने का धार्मिक अभिप्राय: होता है । उसे सुनने वाले को धार्मिक सन्तोष प्राप्त होता है, धर्म लाभ होता है, अन्य कोई मान्यता पूरी होती है या पूरी करने के लिए सुनी जाती है । अतः जो कहानी धार्मिक अभिप्राय: से अनुष्ठान के साथ सुनाने के लिए हो, वह कथा कही जायेगी ।

इन कथाओं के साथ परम्परा जुड़ी हुई होती है और लोक मानस का तत्व इनमें विशेष रूप से क्रियाशील होता है वे लोक कथा कही जायेंगी ।

---

1. A study of Arisson Folk-lore, Chapter, Folk-Tales by Prof.K.B. Das Page 14th 1953 Viswa Bharti; Shanti-Niketan

2- लोक कथाओं की परम्परा :-

अनादिकाल से ही लोक कथा की जन्म भूमि मनुष्य का मुख है तो उसका प्रसार क्षेत्र मनुष्य का कान है। मुंह से निकले वचन जब कथन का रूप धारण कर लेते हैं और जिहवा का रस श्रुति की परम्परा में ढलकर कान की गहराई के माध्यम से मन और हृदय तक पहुंच जाता है तब कथा का आरम्भ होता है। वाणी निराकार है किन्तु कान उसे सुनकर साकारता प्रदान करते हैं। जहां वाणी तथा कान का सम्बन्ध दो मनुष्यों में हुआ वहीं कथा के बीजांकुर उत्पन्न हो जाते हैं।"[1] जितनी प्राचीन विश्व की सृष्टि है उतनी ही पुरानी लोककथाओं की परम्परा है। मानव का जन्म लोक कथा के जन्म के साथ ही हुआ है।"[2]

संसार के विभिन्न देशों में यह लोककथायें मिलती हैं। लोक साहित्य के अध्येताओं ने उनका संग्रह भी किया है तथा विभिन्न दृष्टियों में इनका अध्ययन भी हो चुका है। इन कथाओं के प्राचीनतम रूप संसार के प्राचीनतम साहित्यों अथवा आदिम जातियों के लोक साहित्य में प्राप्त हैं

भारत में लोक कथाओं की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है और भारतवर्ष है इनका सर्जना केन्द्र। संस्कृत वांङ्मय इसका प्रमुख स्रोत रहा है। इसी के सन्दर्भ में प्राप्त परम्परागत साहित्य के आधार पर हम स्रोतों का संक्षिप्त विवेचन कर रहे हैं। :-

वैदिक संहितायें :- सर्व प्रथम वैदिक संहिताओं में हमें कथाओं का उद्गम दिखाई पड़ता है। वैदिक साहित्य कथाओं से भरा पड़ा है. वेदों की

1- हरियाणा का सांस्कृतिक अध्ययन लेखक लोक कथाएं लेखक डा० भीमसिंह पृष्ठ 256

2- लोक कथा विज्ञान लेखक श्री चन्द्र जैन 1977 पृष्ठ 141

एक एक ऋचाओं में सम्पूर्ण कथायें उपलब्ध होती हैं। ऋग्वेद में ऐसे बहुत से सूक्त उपलब्ध होते हैं जिनमें दो या तीन पात्रों में कथनोपकथन पाया जाता है इन सूक्तों को सम्वाद सूक्त कहते हैं।[1] ऋषि शुनः शेप का प्रसिद्ध आख्यान अपालात्रेयी के आदर्श नारी"चरित्र"[2] तथा च्यवन सुकन्या की कथा के सर्वप्रथम दर्शन इसी वेद में होते हैं।[3]

ब्राह्मण ग्रन्थ :- इन ग्रन्थों में कतिपय ऐसे सम्वाद एवं चरित्र आये हैं, जिन्हें हम लोक कहानियों के आदिम वक्ता के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। शतपथ ब्राह्मण में वर्णित पुरुरवा -उर्वशी कथा तथा दध्यङ्ः आथर्वण (दधीचि कृतासुर) कथा नितान्त प्रसिद्ध है।[4] ताण्ड्य ब्राह्मण में भी च्यवन सुकन्या की कथा उपलब्ध होती है।[5] ऐतरेय ब्राह्मण में शुनः शेप आख्यान वर्णित है।[6] शाङ्ख्यान ब्राह्मण में महर्षि कुत्स के वैदिक कालीन महत्व का प्रतिपादन कियागया है।[7]

उपनिषद् :- उपनिषदकाल में आकर कथाओं का कतिपय नया स्वरूप विकसित हो गया था। गार्गी याज्ञवल्क्य मध्य होने वाला सम्वाद कथा कहने या सुनने का ही रूप है। इसी प्रकार सत्यकाम एवं जाबालि के सम्वाद से भी कथाओं का रूप निखर आया है। यम नचिकेता की सुप्रसिद्ध कथा "कठोपनिषद् का मुख्य वर्ण्य विषय है जिसमें नचिकेता में अपनी [illegible] विलक्षण प्रतिभा द्वारा यम के अमर बनने का साधन पूछा था। इसी प्रकार

1- ऋग्वेद 1/24/30 2- ऋग्वेद 8/9/1

3- ऋग्वेद 10/39 4- सतपथ ब्राह्मण 12/5/1

5- ऐतरेय ब्राह्मण 7/3 6- ताण्ड्य ब्राह्मण 14/6/11

7- शाङ्ख्यान ब्राह्मण 5/2

अग्नि और यक्ष की सरस कथा का "केनोपनिषद् में वर्णन पाया जाता है ये सभी कथाएं उपनिषद् काल में आकर लौकिक धरातल पर आ गई हैं ।"[1]

<u>पुराण:-</u> पुराणों में आकर कथाओं का समुचित विकास होने लगा इनमें वैदिक सूत्रों पर आधारित विस्तृत आख्यानों की परम्परा मिलती है । यही कारण यही कारण है कि पौराणिक वाङ्मय लोक कथाओं से परिपूर्ण है अति प्राकृतिक तत्वों की विविधता, रोचक तत्वों का समावेश कथाओं के कथानकों का विकसित रूप तथा चमत्कारिक प्रसंगों की योजना ही इन कथाओं की मुख्य विशेषतायें हैं ।

<u>रामायण और महाभारत :-</u> इन दोनों ग्रन्थों में ही अनेक आख्यान प्राप्त होते हैं परन्तु महाभारत में रामायण की तुलना में इनकी अधिकता विद्यमान है :-

> "चतुर्विंशति साहस्रीं चक्रे भारतसंहिताम् ।
> उपाख्यानैर्विना तावद्भारतं प्रोच्यते बुधैः ।।"[2]

<u>पंचतन्त्र और हितोपदेश:-</u> संस्कृत के दो ग्रन्थ पंचतन्त्र और हितोपदेश नीति कथा के उत्तम रत्न हैं । इनके अतिरिक्त बहुत सी नीतिकथा की पुस्तकें उपलब्ध होती हैं । तृतीय शताब्दी ई० पू० के भरहुत स्तूप पर कई नीति कथाओं के नाम आये हैं ।"[3]

पंचतन्त्र की तुलना में हितोपदेश की भाषा सरल और सुबोध होने के कारण यह अधिक लोकप्रियरहा है ।

1- छान्दोग्य उपनिषद् 4/1/3

2- महाभारत आदि पर्व 1/102

3- मैकडोनल इंडियाज पास्ट पृष्ठ 117

पैशाची, प्राकृत में लिखी गुणाढ्य की "बड्ड कथा" {बृहत् कथा} शुद्ध लोक कहानियों का प्राचीनतम संग्रह है। लोक जीवन की इस अमूल्य निधि की रक्षा के लिये संस्कृत को भी राज सभा का आसन छोड़कर कुछ समय के लिये लोकयात्रा करनी पड़ी थी, जिसका विवरण हमें क्षेमेन्द्र कृत बृहत कथा मंजरी तथा सोमदेव रचित कथा सरितसागर" आदि संस्कृत रूपान्तरों में उपलब्ध हुआ है। वैताल पंचविंशति, सिंहासन द्वात्रिंशिका, शुक सप्तति तथा जातक और जैन कहानियों में लिपिबद्ध परम्परा आज भी हमें अत्यन्त सजीव रूप में प्राप्त है।

इन लोक कथाओं के परम्परा के सम्बन्ध में यही कहना पर्याप्त होगा - "कहानी समस्त वाङ्मय की आत्मा है। मौखिक या लिखित साहित्य का कोई रूप ले लें तो उसके मूल में कोई सूक्ष्म कथा अवश्य मिलेगी यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि मानव की विश्व के व्यापारों के प्रति जो प्रथमाभिव्यक्ति वाचिक या कायिक हुई होगी" वह एक कहानी रही होगी। मैं और तुम इन दो शब्दों में भी एक कहानी है"।[1]

यही दीर्घकाल से चली आने वाली परम्परा हिन्दी साहित्य में आकर विकसित होती रही और इसने सर्वप्रथम लोक कथा के रूप में जन मानस में प्रवेश किया और कालान्तर में शिष्ठ साहित्य के स्वरूप को ग्रहण किया। हिन्दी भाषा कि भिन्न भिन्न भाषाओं में सौराष्ट्री, ब्रज, बुन्देलखण्ड आदि अनेक भाषाओं में लोक कथाओं का संचय हुआ। बांगरू में भी श्री राजा राम शास्त्री ने " हरियाणा की लोक कथायें तथा हरियाणा की अन्य लोक कथाओं का संग्रह किया।

1- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव 1960 पृष्ठ 337

3- बागड़ लोक कथाओं का वर्गीकरण :-

विद्वानों ने लोक कथाओं का वर्गीकरण विभिन्न रूपों में किया है। डा० सत्येन्द्र ने लोक कथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया है :-
§1§ गाथाएं §2§ पशु सम्बन्धी अथवा पंचतंत्रीय §3§ परी की कहानियां §4§ विक्रम की कहानियां §5§ बुझौवल §6§ निरक्षण बुद्धि गर्भित कहानियां §7§ साधु पीरों की कहानियां ।"[1]

डा० कृष्ण देव उपाध्याय ने भोजपुरी लोक कथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया है :-
§1§ उपदेशात्मक §2§ मनोरंजनात्मक §3§ व्रतात्मक §4§ प्रेमात्मक §5§ वर्णनात्मक §6§ सामाजिक ।"[2]

डा० कृष्ण लाल हंस ने लोक कथाओं को निम्नलिखित आठ भागों में विभक्त किया है:-
§1§ धर्म कथाएं §2§ पशु पक्षी के सम्बन्धी कहानियां §3§ परियों और अप्सराओं से सम्बन्धीत कहानियां §4§ जादू की कहानियां §5§ वीरता विषयक कहानियां §6§ साधु फकीरों की कहानियां §7§ ऐतिहासिक कहानियां §8§ विविध कहानियां ।"[3]

डा० सत्या गुप्त ने खड़ी बोली की लोक कथाओं को सात वर्गों में विभाजितकिया है :-
§1§ धार्मिक कथाएं §2§ ऐतिहासिक कथाएं §3§ अलौकिक कथाएं

1- ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा० सत्येन्द्र पृष्ठ 82
2- भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा० कृष्ण देव उपाध्याय पृ० 414
3- निमाड़ी और उसका साहित्य लेखक डा० कृष्ण लाल हंस पृ० 341

§4§ सामाजिक कथाएं §5§ नीति कथाएं §6§ हास्य कथाएं
§7§ पशु पक्षि सम्बन्धी कथाएं ।"[1]

अन्य विद्वानों ने लोक कथाओं को कथानक, पात्र विशिष्ट, उद्देश्य, विशिष्ट साधन आदि के आधार पर ही वर्गीकृत करने का प्रयास किया है ।

परन्तु उपर्युक्त वर्गीकरण को ध्यान में रखते हुये बांगड़ के अध्ययन और सुविधा को आधार मानकर हम उनका वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से करते हैं :-

§1§ व्रत तथा त्योहारों सम्बन्धी लोक कथाएं §2§ देव विषयक कथाएं
§3§ पौराणिक लोक कथाएं §4§ साहस तथा शौर्य की लोक कथाएं
§5§ बहादुरी पूर्ण लोक कथाएं
§6§ उपदेशात्मक लोक कथाएं §7§ पशु पक्षी सम्बन्धी कथाएं
§8§ ख्यावल §9§ मनोरंजन प्रधान लोक कथाएं :- हास्य परिहासपूर्ण मूर्खों की, जाति स्वभाव चित्रण की, तथा ठगों की कथाएं आदि ।
§10§ अलौकिक कथाएं :- परियों की कथाएं, दानवों की कथाएं, भूतप्रेत-चुड़ैलों की कथाएं, जादू की कथाएं , इतिहासाश्रित महापुरूषों अथवा साधु सन्तों की कथाएं ।

उपर्युक्त वर्गों से सम्बद्ध कथाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है :-

§1§ <u>व्रत तथा त्योहारों सम्बन्धी लोक कथायें</u> :- व्रत कथाएं केवल स्त्रियों

1-खड़ी बोली का लोक साहित्य लेखिका डा० सत्या गुप्ता पृष्ठ 177

की ही सम्पति है इन कथाओं में व्रत विशेष का महत्व प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से रचना की जाती है। प्रत्येक कहानी में व्रत विशेष का अनुष्ठान करने वाली किसी कल्पित स्त्री को पात्र मान लिया जाता है और उस कथा के अनुसार व्रत करने वाली को अनेक प्रकार के लाभ तथा व्रत की उपेक्षा करने वाली स्त्री को विशेष प्रकार की हानियां होतीहैं। किसी किसी कथा में पुरूष को भी मुख्य पात्र का स्थान मिलता है व्रत सम्बन्धी इन कथाओं में धर्म के आध्यात्मिक भाव का अभाव मिलता है और इनमें शुद्ध लौकिक दृष्टि से किसी कामना की पूर्ति के लिये अनुष्ठान किया जाता है।

इनमें अशुभ परिणाम का निवारण करने के लिये और शुभ परिणाम को प्राप्त करने के लिए देवी देवताओं को प्रसन्न करने का व्रत परिव्याप्त रहता है। सभी व्रत कथाये जीवन में आशा वादिता का संचार करने वाली होती हैं। और इनके अन्त आर्शिवादात्मक वाक्य में मंगल कामनां निहीत रहती है।-

" अमुक" देवता जिस प्रकार" अमुक" से प्रसन्न हुए उसी प्रकार सबसे हों। और बुरा किसी के साथ न होवे व्रत एवं त्योहारों की सूची इस प्रकार है :-

करवा चौथ, अहोई, सकट चौथ, नाग पंचमी, भैया पांचा, हरतालिका, प्रदोष व्रत, सोमवार व्रत, मंगलवार.व्रत, बुधवार, शुक्रवार व्रत, रविवारव्रत इत्यादि कथाएं।

2- <u>देव विषयक कथाएं</u> :- व्रत एवं त्योहारों के अतिरिक्त देव विषकय कहानियां भी यहां प्रचलित हैं जिनमें "हनुमान जन्म की कहानी", विनायक की कहानी शैमाता, लक्ष्मी, सन्तोषमाता आदि की कहानियां भी प्रचलित हैं।

---

§3§ पौराणिक लोक कथाएं :- नैतिकता को चरितार्थ करने वाली पौराणिक ~~आधार लिये सत्यवादी हरिश्चन्द~~, सत्यवान सावित्री, नल दमयन्ती, राज भरथरी, राजा भोज इत्यादि पौराणिक विषयों के सम्बन्ध में इस प्रदेश के लोगों की ज्ञान पिपासा इन लोक कथाओं के माध्यम से ही शान्त होती है । इसका एक कारण यह भी रहा है कि यहां की जनता अधिकांश अनपढ़ होती थी और यह क्षेत्र पौराणिक स्थली होने के कारण लोगों का इनमें अत्याधिक रुचि लेना स्वाभाविक ही था । राजा भोज, राजा विक्रमादित्य आदि राजा महाराजाओं के किस्से कहानियां आगर में जनप्रिय रहे हैं ।

सत्यावादी हरिश्चन्द्र की कथा से जहां लोगों को हरिश्चन्द तथा रानी तारामती के जीवन का परिचय प्राप्त होता है वही साथ साथ सत्य की पालना करने वालों का साकार रूप भी दृष्टिगोचर होता है और उनके हृदय पर स्पष्ट छाप अंकित होती हैं । सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी आदि कहानियां भी पौराणिक आधार पर हैं ।

§4§ <u>साहस तथा शौर्य की लोक कथाएं</u> :- प्रायः किसी राजा या महाराजा आदि के परिवार के सबसे छोटे भाई या लड़के को महल छोड़के जाना पड़ता है और इन कथाओं में उनकी शूरवीरता का वर्णन होता है । God Helps those who help themselves. वाली कहावत इन कथाओं में पूर्ण रूपेण चरितार्थ होती है । अतः कहानी का नायक अपने साहस एवम् शौर्य पूर्ण कार्यों के प्रतिफल से सुखद अनुभूति प्राप्त करता है वहां श्रोताओं के मनोरंजन के साथ वीर रस का समावेश करने का अपना उद्देश्य पूर्ण करता है ।

- -

§5§ चतुराई पूर्ण लोक कथाएं :- कुछ कथाओं में कुछ जातियों की चालाकी का चित्रण कियागया है । ब नाई, चालाक, धूर्त और दुष्टों का शिरोमणी है । ठाकुर भी कम चालाक नहीं होता परन्तुनाई से उसे भी हार माननी पड़ती है । एक कहानी में नाई किसी ठाकुर के साथ उसकी ससुराल जाता है और अपनी चालाकी से स्वंय भोजन खा लेता है और ठाकुर भूखा मरता है । "मूलचन्द" कहानी में ठाकुर ने नाई की सहायता से बनिये की पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया । चतुराई पूर्ण प्रचलित लोककथाओं में यहां के लोगों की सहज एवम् तीक्ष्ण बुद्धि का लोहा स्वीकार करना ही पड़ता है । अकबर बीरबल के जटिल और विनोदपूर्ण प्रश्न उत्तरों की कथाएं इसकी के अन्तर्गत आती हैं ।

§6§ उपदेशात्मक लोक कथा :- इस वर्ग में आने वाली कथाओं का दोहरा उद्देश्य होता है । एक और तो यह श्रोताओं का मनारंजन करती है । दूसरी ओर इस विनोद शीलता में लिपटी शिक्षा का उपदेश उपदेश भी दृष्टान्त रूप मे उभर आता है और अन्ततोगत्वा यह शिक्षा या उपदेश ही कथा का प्राण बन जाता है । और यही तत्व इन्हे मनोरंजनात्मक कथाओं की अपेक्षा शिक्षात्मक कथाओं के अधिक निकट ले जाता है । पंचतन्त्र का इन कथाओं पर स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है । " डायन पत्नी" की कहानी में उपदेश को बड़े रोचक ढंग से दर्शाया है

§7§ पशु पक्षी सम्बन्धी कथाएं :- पशु पक्षियों की कथाएं इस वर्ग के अन्तर्गत आती है । पशु एवं पक्षि मनुष्य भी अधिक ज्ञानवान हैं और

- -

कभी कभी वे अपनी बुद्धि द्वारा मनुष्य की रक्षा करते हैं और सावधान रहने की शिक्षा भी देते हैं। इन कथाओं के माध्यम से इस प्रदेश की भोली भाली जनता नीति शास्त्रों के मूल रहस्यों का ज्ञान करती है। "हंस और कौवा" "सिंह पठ्ठ गिदड़" आदि अनेक पशु पक्षियों सम्बन्धी कथाएं उपलब्ध होती है जिन पर पंचतन्त्र और हितोपदेश का प्रभाव लक्षित होता है। यह कथाएं राजनीति को समझाने का प्रयास भी करतेहैं। इन कथाओं में बाल मनोभाव को दृष्टि में रखना, उनके आ त्सुक्य की परितृप्ति की प्रमुखता एवं उपदेशात्मकता की प्रवृति को देखते हुए इन्हे पृथक वर्ग में रखना भी आवश्यक है।

§3§ <u>बुझौवल</u> :- ईश्वर की कथाओं में कुछ ऐसी बातों को दिया जाता है जिनकी व्यवहारिक जीवन में परीक्षा ली जाती है यों तो ये बातें चतुराई पूर्ण नीतिकथाओं में रखी जाती है परन्तु कथानक का विकास इन्ही के समाधान के रूप में होता है अत: ये बातें समस्या का रूप धारण कर लेती हैं। और इसी लिये इन्हे समस्यामूलक कथा की संज्ञा प्रदान भी की जा सकती है। इस वर्ग में प्रश्नमूलक कथाओं का वर्णन भी आता है उपर्युक्त दोनों प्रकार की कथाओं को "बुझौवल" नाम ही दिया गया है"।[1] हरियाणवी बुझौवल कहानियों के चार आदर्श रूप दिये गये हैं।- कंजूस साहूकार की कहानी जीवन विज्ञान की कुछ अनुभूत स्थितियों की स्पष्टता देती है। 2- जिनमें शर्त लगाई जाती है 3- जिनमें डाटनों देखकर समाधान किया जाता है 4- निरीक्षण तत्वों से पूर्ण बुझौवल कहानी।[2]

1- ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा० सत्येन्द्र पृष्ठ 477

2- हरियाणवी लोक कहानियां लेखक डा० शंकर लाल यादव हरियाणा संवादविशेषांक 1980 पृष्ठ 31

अकबर बीरबल विनोद में अकबर की अनेक जटिल समस्याओं का विवेकपूर्ण उत्तर बीरबल की हाजिर जवाब बुद्धि का ही कमाल था। जैसे आकाश के तारों की गिन्नती, पृथ्वी का केन्द्र बताना, बैल का दूध आदि।

{७} मनोरंजन पूर्ण लोक कथाएं :- इस वर्ग में उन्हीं कथाओं को स्थान मिलता है जिनका मूल स्वर अलौकिकता लिये हुए होता है। और साथ में मनोरंजन तत्व भी। यद्यपि व्रतों, त्योहारों आदि की लोक कथाओं में मनोरंजन की कमी नहीं होती फिर भी इन कथाओं के उद्देश्य पूर्ति मनोरंजन न होकर अध्यात्मिक होती है। इसके ठीक विपरीत कुछ ऐसी लोक कथाएं होती है जिनमें अलौकिकता, कौतूहल एवम् आश्चर्य जनक परिस्थितियों एवम् वातावरण का उल्लेख कियाजाता है और मनोरंजन प्रधान कथाएं होती है अस्वाभाविक वस्तु वर्णन के लिए भी काफी गुंजाईश रहती है। हास-परिहास, मूर्खों जाति स्वभाव-चित्रण, ठगों आदि की कथाएं इसी के अन्तर्गत आती हैं

हास परिहास पूर्णकथायें :- हा परिहास पूर्ण कथाएं सभी देशों और वर्गों के लोगों में लोक प्रिय है। प्रोफेसर थाम्सन के मतानुसार मूर्खों के बेतुके और बेहूदे कार्यकलाप हर प्रकार के धोखा, चालाकी एवं अश्लीलता पूर्ण स्थितियों का इन लोकप्रिय हास्य कथाओं में चित्रण किया जाता है। इन कथाओं में एक ही नायक को कभी तो बहुत बड़े चालाक व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जाता है। और कभी कभी उसकी बड़ी से बड़ी मूर्खता भी कथा का वर्ण्य विषय बन जाती है। उस व्यक्ति के विषय

- -

में भद्दे से भद्दे और अश्लील प्रसंगों को भी जोड़ दिया जाता है । इनमें से कुछ कथाएं सार्वदेशिकता गुण से युक्त होती हैं और कुछ ऐसी भी कथाएं आज प्रचलित हैं जो तीन चार हजार वर्ष पुरानी है और जिन्होंने विश्व भर का भ्रमण किया है ।"[1] हास-परिहास पूर्ण अधिकांश कथाएं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चालाकी से सम्बद्ध कही जा सकती है ।"[2]

मूर्खों की कथाएं :- बांगरू में मूर्खों का परिहास पूर्ण चित्रण भी लोक कथाओं में दृष्टिगोचर होता है । कई बार तो इन की मूर्खता के कारण किसी मनुष्य की मृत्यु तक भी हो जाती है ।

जाति स्वभाव चित्रण की कथाएं :- जाति स्वभाव चित्रण की कथाओं में एक बनिये की कथा इस प्रकार है- एक कथा में एक बनियें के घर में चोर घुस जाते हैं चोर उसके सिर पर लठ तान के खड़ा हो जाता है परन्तु बनिया आंखों के समक्ष सबकुछ देखकर भी कुछ करने में असमर्थ होता है । अपना बचाव करने के लिए वह नींद व स्वप्न्न देखने का बहाना करता है और कृत्रिम स्वप्न्न में अपने पुत्रों एवं पड़ोसियों को पुकारने लगता है । इस प्रकार अपनी जान बचा लेता है ।

ठगों की कथाएं :- ठगों से सम्बन्धी कथाएं भी इस वर्ग के अन्तर्गत आती है इन कथाओं में ठगों के कौशलपूर्ण कलापों का चित्रण किया जाता है । ये ठग दूसरों को ठगते हैं ।

§10§ अलौकिक तत्व से युक्त कथाएं :- इन वर्ग में उन कथाओं को स्थान दिया गया है जिनके या तो पात्र अलौकिक हैं जैसे -परियां, दानव भूत-प्रेत, चुडैल या पात्रों को लौकिक होते हुए भी उनके कार्यों में पर्याप्त मात्रा में अलौकिकता भरी हुई होती है । - ये पात्र जो कुछ भी कार्य करते हैं उनमें लोकोत्तर चमत्कार रहता है और कभी कभी यह जादू द्वारा

1- दी फोक टेल लेखक स्टिथ थाम्सन पृष्ठ 10

2- दी फोक टेल लेखक स्टिथ थाम्सन पृष्ठ 189

भीअपने कार्य की सिद्धी तथादूसरे के विनाश का कारण बनते हैं ।¹

परियों की कथाएं :- परियाँ की भी आत्माओं की तरह ऐसी ही सत्तायें है जो अपने भौतिक विशिष्टताओं से अभी तक अपने को रहित नहीं कर सकी हैं । ये सामान्य रूप से सौन्दर्य की प्रतीक एवं जोड़ने के लिये मानव जगत के सम्पर्क में आती रहती है । ये कभी कभी अनिष्ट भी करती है परन्तु बहुत ही कम।

दानवों की कथाएं :- दानवों से सम्बन्ध कथाओं में है दिखाया गया है कि भीषण एवं भंयकर दानवों का भी मनुष्य अपनी बुद्धि द्वारा विनाश करता है । प्राय: दानव पुत्री मानव से प्रेम करने लगती है और वही दानव के विनाश का कारण बनती है । दानव के प्राण किसी गुप्त स्थान सुरक्षित होते हैं दाने की कहानी का अन्त देखिए:- एक अच्छा छोड्ड दूं, अर न्यूं करके नाड़्य तोड़्य दी तोता की । दाना मर गया । पक्षी के मरते ही दानव की मृत्यु हो जाती है और मनुष्य निरविघ्न होकर सकुशल घर वापिस लौटता है और दाने की लड़की से विवाह करके सुख पूर्वक रहने लगता है ।

भूतप्रेत चुड़ैलों की कथाएं :- भूतप्रेत चुड़ैलों की कथाओं का भी वर्णन यहां मिलता है ।

जादू की कथाएं :- "जादू की अंगूठी" नामककथा में प्रत्येक वस्तु को अंगूठी से स्पर्श करने पर वह सोने की बन जाना और आंखों पर रगड़ने से आंखोंकी रोशनी वापिस लाना आदि जादू इन कथाओं में दर्शनीय है ।

इतिहास रश्रित महापुरुषों अथवा साधू सन्तों की कथायें :- ऐसी कथाएं भी यहां उपलब्ध हैं । जिनमें उनके चमत्कार के दर्शन हो सकते है ।

1- कनौजी लोक साहित्य लेखक डा० सन्त राम अनिल पृ० 197

।।।मिथकीय कथाएं :- अंग्रेजी में प्रयुक्त मिथ् ग्रीक मुथोस् से व्युत्पन्न है । मुथोस् मौखिक कथा को कहते थे क्योंकि उसका मूल अर्थ "जो कुछ कहा गया हो" था । "मुथोलोजी" या मुथोलोजिया Muthologeo द्वारा भी "मुथोस्" का ही बोध कराया जाता था । हिन्दी में मिथ के स्थान पर "मिथक" शब्द का प्रयोग आरम्भ किया गया है, किन्तु यह देखने का प्रयत्न नहीं हुआ है कि यह शब्द मिथ (Myth) के अर्थ को देने में समर्थ है अथवा नहीं । मिथक "मिथ्" धातु में कुन या वुन प्रत्यय लगाकर ही बनेगा और अर्थ "सहकारी बनने वाला" मिलने वाला, जोड़ा बनाने वाला आदि होगा । मिथ का अर्थ सहकारी बनना, एक साथ मिलाना, मैथुन करना, जोड़ा बनाना, चोट पहुंचाना, जानना आदि आप्टे के संस्कृत शब्दकोश के अनुसार है । अतः "मिथक" का मिथ (Myth) अर्थ ग्रहण करने में कठिनाई अवश्य है । संस्कृत का मिथ्या शब्द असत्यात्मक है । इसमें भी मिथ धातु को बदल लेना अर्थ वाली है । "मिथ्या शब्द को स्वीकृति करने पर एक तो मिथ्या के संस्कारों से कुछ दूर पड़ेगा और अंग्रेजी "मिथ" के समीप पहुंच जायेगा । सम्भावना यह है कि "मिथ्" भारोपीय परिवार की धातु हो जिसमें भारतीय "मिथ्या" एवं ग्रीक "मुथोस्" दोनों के अर्थ को द्योतित करने की क्षमता हो । मिथ्या का असत्यात्मक होना उसकी प्राचीनता का द्योतक है ।[1] ऐसी स्थिती में मिथक के स्थान पर "मिथ्या" का प्रयोग अधिक उपयुक्त है ।

मैरियालीच ने इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है -"मिथ्य किसी पुराकाल की वह कथा है जो यथार्थ घटना के रूप में घटित हुई प्रस्तुत की गई हो तथा जिसमें किसी लोक की सृष्टि सम्बन्धी एवं सांस्कृतिक परम्पराओं, उनके देवताओं, वीरों,[2] सांस्कृतिक प्रवृत्तियों, धार्मिक विश्वासों आदि की व्याख्या की गई है । एक अन्य परिभाषा में कहा

---

1. लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा० एस बी राम आनन्द पृ०49 से उद्धृत ।

2- -- वही---- ।

गया है - ये पुराबिम्ब एक ही प्रकार की अज्ञेय अनुभूतियों का स्थूली भूत रूप है, और ये अनुभूतियाँ व्यक्ति की ही नहीं है अपितु उसके पूर्वजों की है तथा उसको प्रत्येक व्यक्ति की उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती है एवम् उसकी अनुभूतियों को निर्धारित करने में पूर्व-स्थिती का कार्य करती है।" [1]

यह स्पष्ट करता है कि मनोविज्ञान में इसके निष्कर्ष के लिए मानस को आधार माना जिसे फ्रायड ने अचेतन (Unconsious) कहा। परन्तु इसके क्षेत्र का मूल आधार विचार न होकर अनुभूति है क्योंकि मिथक स्वच्छतापूर्वक रचित न होकर विश्वास और अनुभूति की एक विशेष पद्धति है जो ऐतिहासिक क्रम में स्थापित होती है और मानव चेतना पर हावी हो जाती है।

कुछ विद्वानों की परिभाषा के तथ्यों को ध्यान में रखकर ये कहा जा सकता है कि मिथक प्रतीकों से संयुक्त होने से अस्तित्व में आता है अतः इसे लोक कथा के अन्तर्गत स्थान देने में कोई कठिनाई अवश्य उत्पन्न होती है। इसमें सन्देह नहीं कि आदिम मानव द्वारा व्यक्त लोक कथाएँ भी मिथक की प्रक्रिया से ही अस्तित्व में आई होंगी। वस्तुतः आदि मानव भाव से उत्प्रेरित होने पर सभी वस्तुओं को प्रतीकात्मक रूप में ही ग्रहण कर पाता है और यह प्रतीकात्मकता उसके अन्दर चैतन्यवाद (Animism) की आत्मान्य क्षमता के कारण अस्तित्व में आती है। फ्रायड ने इस सम्बन्ध में कहा है - ये जातियाँ सारे जगत को आत्माओं - इष्ट साधक एवं अनिष्ट कर - से परिपूर्ण कर देती है और प्राकृतिक प्रक्रियाओं को इन्हीं देव दानवों से परिचालित

---

1. Archetypal patterns is poetry by Maud Bodkin P.1

मानती है । वे यही विश्वास नहीं करती कि पशु और वनस्पतियाँ ही आत्मयुक्त है । अपितु जड़ वस्तुओं को भी आत्मयुक्त मानती है। "[1]

इस प्रवृत्ति के कारण सूर्य, चन्द्र, वृक्ष आदि सभी किसी आत्मा का रूप होने के कारण प्रतीकात्मक हो उठते है । इसका एक कारण यह है कि आदिम जातियाँ इन आत्माओं का एक दूसरे में प्रवेश भी मान लेती है । वुन्ट का कहना है कि "मनुष्य भी ऐसी आत्माएँ रखता है जो उसके शरीर को छोड़कर दूसरे प्राणियों में प्रवेश कर सकती है , वे आत्माएँ सारी अतिरिक्त क्रियाओं को पूर्ण करती है तथा शरीर से स्वतन्त्र है । मूल रूप में वे आत्माएँ व्यक्ति का प्रतिरूप समझी जाती थी विकास के क्रम में ही वे अपनी भौतिक विशिष्टताओं को छोड़ चली और शुद्ध आत्मा के रूप में रह गई ।"2

यह स्पष्ट है कि लोक कथाएँ इस मूल प्रवृत्ति से रहित नहीं हो सकती । आदि मानव अपनी लोक कथाओं को मिथ्य के रूप में रच सका होगा अतः मिथ्य को लोक कथा का प्राचीनतम रूप मानना चाहिए । कालान्तर में लोक कथाएँ मिथ्य से पृथक होने लगी और उनमें मिथ्य के तत्व कम होने लगे, किन्तु आजतक भी इन कथाओं से मिथ्य बिल्कुल समाप्त नहीं हो सका ।

अंत यह कहना उपयुक्त है कि लोक कथाएँ मिथ्य नहीं है अतः दोनों को अलग अलग रखना ही ठीक होगा किन्तु लोक कथा के अध्ययन करते समय मिथ्यों को भी ध्यान में रखना पड़ेगा क्योंकि दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध अत्यन्त गहरा है ।

1- The basic writings of Sigmund Freud P. 865/866

2- लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा० एन बी राम आनन्द पृ० 50

4- बांगड़ लोक कथाओं की विशेषताएं :-

डा० कृष्ण देव उपाध्याय ने लोक कथाओं की विशेषताओं को आठ विभागों में विभक्त किया है[1]:-

1- प्रेम का अभिन्न पुट

2- अश्लील श्रृंगार का अभाव

3- मानव जीवन की मूल प्रवृत्तियों से निरन्तर साहचर्य ।

4- समृद्धि और मंगल कामना की भावना ।

5- संयोग में अन्त ।

6- रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की मात्रा की प्रधानता ।

7- उत्सुकता की प्रबल भावना ।

8- वर्णन की स्वाभाविकता ।

जिस प्रकार भारतीय संस्कृति की विविधता में भी एकता का तत्व है का बोध होता है । उसी तरह पंजाब, बंगाल, उड़ीसा आदि की लोक कथाओं में स्थानीय भिन्नता से दूर सामान्य तत्वों का विकास उपलब्ध होता है । इसी प्रकार बांगड़ लोक कथाओं में भी उपर्युक्त वर्णित विशेषताएं किसी न किसी रूप में अवश्य ही मिलती हैं ।

हरियाणा लोक कथाओं में प्रेम का अभिन्न पुट तो पास-पड़ोस के क्षेत्रों की लोक कथाओं के समान ही है । परन्तु अश्लीलता का स्तर

1- भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा० कृष्ण देव उपाध्याय पृष्ठ 419

अन्य क्षेत्र की कथाओं से भिन्न मिलता है। श्लील और अश्लील का अन्तर भी स्पष्ट वादिता के कारण कम है कहीं कहीं किसी प्रसंग में अश्लीलता अधिक मिलती है। किसी तथ्य की पुष्टि हेतु दृष्टांत रूप में कही जाने वाली कथाओं की अश्लीलता क्षम्य मानी जाती है। मानव की मूल प्रवृतियों का चित्रण उदाहरणतः "एक लड़का की चालाकी" में धोबी के लोभ, गोपाल का वस्त्र मोह, अश्वारोही की सरलता और बुढ़िया के पुत्री प्रेम का निरूपण मिलता है। अंगिका कथाएं सुनने तथा सुनाने के इस मूलभूत उद्देश्य की पूर्ति करती है कि लोग दूसरों की भूलों को न दोहरायें तथा उनके गुणों से अपने जीवन को ज्योतिर्मय बनायें। ईश्वरीय करूणा, आस्तिकता, कर्मफल तथा पुर्नजन्म आदि मान्यताओं पर अधिक बल मिलता है। यहां महादेव पार्वती की अनुकम्पा विशेष रूप में मिलती है।

अधिकांश कहानियां सुखान्त है। एकाध कहानी दुःखान्त भी मिलती है। उदाहरणार्थ "जेराही ते छिंगीरे ओरे पछीरो," मेंराजा ने अपने दत्तक पुत्र की हत्या की योजना बनाई परन्तु राजा का खुद का लड़का मारा गया हमारी सहानुभूति राजा के पुत्र के साथ रहती है परन्तु दुःख भी होता है। चालाक लड़का की कहानी का अन्त न दुखान्त है और ना ही सुखान्त है बल्कि युक्ति चमत्कार में होता है। विवेचन से पता चलता है कि अंगिका लोक कथाओं में कोई न कोई तत्व का समावेश अवश्य ही रहता है।

5- बांगड़ लोक कथाओं के मूलअभिप्राय :-

लोक कथाओं में अभिप्रायों का विशेषमहत्त्व है । यह इनकी रोचकता बढ़ाते हैं । इनसे ही लोक कथाओं में रोचकता आती है एवम् उनकी सौन्दर्य की अभिवृद्धि होती है । वस्तुतः लोक कथा का अस्तित्व इन अभिप्रायों से ही सिद्ध होता है । अंग्रेजी में अभिप्राय को "मोटिफ" कहते हैं । आज इस शब्द मोटिफ के पर्याय रूप - में मूल अभिप्राय, प्रेरक अभिप्राय, अभिप्राय, कथारूढ़ि आदि अनेक शब्द प्रचलित हैं । डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ही मोटिफ के लिए कथानक रूढ़ि का सर्वप्रथम प्रयोग कियाथा । तथा प्ररूढ़ि एवम् रूढ़ तन्तु शब्दों को अपनाने वाले कन्हैया लाल सहल हैं ।"[1]

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार - अभिप्राय कहानियों के अत्याधिक महत्वपूर्ण ही अंग है उनका कथन है कि ईंट गारे की सहायता से जैसे भवन बनते हैं, वैसे ही भिन्न भिन्न अभिप्रायों की सहायता से कहानियों का रूप सम्पादित होता है ।"[2] डा० श्यामाचरण दुबे का मत है कि अभिप्राय के आधार पर सम्पूर्ण विश्व के लोक तथा साहित्य का विश्लेषण हमें बतलाता है कि मानव के नये अभिप्राय निर्मित करने की शक्ति आश्चर्य जनक रूप से सीमित है । थोड़े से ही अभिप्राय नये नय रूपों में हमे मानव जाति की लोक कथाओं में मिलते हैं ।"[3]

1- लोक कथाओं के कुछ रूढ़ तन्तु (डा० सहल) आमुख ।

2- लोक कथा- अंक आजकल- मई 1954 पृष्ठ 23

3- मानव और संस्कृति डा श्यामाचरण दुबे पृष्ठ 182

श्री स्टिथ थामसन के विचार में "अभिप्राय कथा का लघुत्तम तत्व है जो कि परम्परा में स्थिर रूप से रखने की शक्ति रखता है । इस प्रकार की शक्ति के रखने के लिए उसमें कुछ असाधारणता और अपूर्वता होनी चाहिए । अभिप्राय कथानक के निमार्ण तत्व है । आपने अभिप्रायों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है -

प्रथम- कर्ता-कथाओं में देवता, असाधारण, पशु, आश्चर्यजनक प्राणी, जैसे चुड़ैल, राक्षस, अप्सरा और परंपरित मानव चरित्र जैसे प्रिय सबसे छोटा बच्चा या क्रूर सौतेली मां ।

द्वितीय- कुछेक ऐसी वस्तुएं जो कथा व्यापार में काम आने वाली होती है । जादू वस्तुएं, असाधारण रिवाज, अनोखे विश्वास ।

तृतीय- स्थान कुछ एक घटनाओं का है जिनमें बहुत से अभिप्राय आ जाते है ।

उपर्युक्त वर्गीकरण से पता चलता है कि अभिप्राय कथानक के सभी अंगों को अपने में समेटे हुए है क्योंकि कथानक घटना, चरित्र और कार्य के मेल से बनता है । "अभिप्राय घटना के भी हो सकते है चरित्र के भी और कार्य के भी अभिप्राये कथानक का लोक कथात्मक रूप है । और इसलिए जिस प्रकार कथानक के बिना कथा का अस्तित्व नहीं उसी प्रकार प्रत्येक लोक कथा में किसी न किसी प्रकार का एक या अधिक अभिप्राय उपस्थित रहते हैं ।"[1]

1- लोक साहित्य विज्ञान (डा० सत्येन्द्र) पृ० 274

बागड़ लोक कथाओं में उपलब्ध अभिप्राय (मोटिफ्स) निम्नलिखित हैं :-

x- अमरफल का वर्णन और चिर यौवन की साधना ।

x- धन को पीपल या नीम की जड़ों के नीचे दबा देना ।

x- पशु पक्षियों का मनुष्यों के साथ रहना तथा बातचीत करना ।

x- दानवों का अपने महल में प्रवेश करते ही, "मं मां मानस की गंध आवे से" कहना, दानवों द्वारा अपनी योनि तथा परयोनि-परिवर्तन आदमी को मन्त्र मारकर मक्खी, तथा पत्थर आदि बना देना । उनका जीवन सात समुन्द्र पार के पिंजरे में तोते के भीतर होना आदि

x- जादू की रसीद, सोटे अथवा करनी का वरदान ।

x- रानियों का आसन-पाटी लेकर पड़ जाना ।

x- कल्पथाली का वर्णन ।

x- पगड़ी बदल यार ।

x- वात्सल्य का स्तनों से दूध की धार बहना ।

x- पान का बीड़ा खाना ।

x- बाबा जी के आशीर्वाद मृत्युगत रमणी का जी उठना ।

x- दिशा विशेष में जाने की प्रति निषेध ।

ये अभिप्राय तो नमूने के तौर पर दिये गये हैं बागड़ लोक कथाओं उनकी संख्या सैकड़ों में उपलब्ध होती है ।

6- बांगरू लोक कथा मानक रूप :-

कथा मानक रूपों (Folk Tale Types) का अध्ययन भी कथाओं के सम्बन्ध में आवश्यक प्रतीत होता है इन मानक रूपों से हमें यह सुगमता से ज्ञात हो जाता है कि विभिन्न रूपों में प्रचलित एक कथा का मूल रूप क्या हो सकता है एवम् इसका जन्म स्थान कहां है। जिस प्रकार वाक्य विन्यास भाषा विषयक प्रतिभा का द्योतक कहा गया है उसी प्रकार कथानक रूप कथाकार की अनोखी सूझ के परिचायक है। प्रकार या मानक की परिभाषा देते हुए आर्ने की परम्परा के डा० स्टिथ थामसन लिखते हैं- प्रकार या मानक Type वह परम्परा प्राप्त कथा है जिसका स्वतन्त्र अस्तित्व है। यह एक पूर्ण कथा के रूप में कही जा सकती है और अन्य किसी कथा के साथ बताई जा सकती है। ..... प्रकार निर्धारित करने के हेतु आर्ने ने कथाओं को उनसे आने वाली घटनाओं में विभाजित किया है।"[1]

जिस प्रकार भवन के निर्माण में ईंट पत्थर चूना आदि अनिवार्य है उसी प्रकार बांगरू लोककथाओं के समीक्षात्मक अथवा विश्लेषणात्मक अध्ययन से अभिप्रायों एवं कथानक रूपों की भी विशेष आवश्यकता दृष्टि गोचर होती है।

1- लोक साहित्य विज्ञान लेखक - डा० सत्येन्द्र पृष्ठ 272

7- बागरू लोक कथाओं के तत्व :-

सामान्यतः कथानक, पात्र, चरित्र चित्रण, कथोपकथन {संवाद} भाषा शैली, देशकाल, एवम् उद्देश्य आदि व तत्वों होते हैं। जो कथा की रचना करते हैं। स्थानीय आधार पर इन तत्वों की संख्या कम भी हो जाती है बांगरू लोककथाओं का विवेचन इन तत्वों के आधार पर प्रस्तुत है।

1- कथानक :- बांगरू लोक कथाओं की कथानक मुख्य रूप में पौराणिक ऐतिहासिक, सामाजिक एवम् काल्पनिक { मिथकीय} रूपों में उपलब्ध होते हैं। इनका कथानक सरल एवम् सुगम होता है। और इनकी रचना में क्लिष्टता और जटिलता नहीं होती साथ ही साथ जीवन की उपेक्षा बे भी नहीं मिलती

बांगरू लोक कथाओं के मुख्य वृत विवाह तथा प्रेम की समस्याओं से उत्पन्न होते हैं। विवाह को लोग वरदान समझ कर सौन्दर्य की खोज में भिन्न भिन्न लोकों का भ्रमण करते हैं। सशक्त विवाह प्रचलित थे "बातर नार" में लड़के ने शर्त लगाई और "उरवसी अर राजकुवार" में गंधी की बेटी उर्वशी ने। तोता मैना परम्परा की समस्त कथाएं व स्त्रियों के गुणों तथा अवगुणों के विश्वास पर आधारित है।

- -

II- पात्र :- बांगड़ लोक कथाओं में पात्रों की संख्या भी अधिक रहती है। छोटी कहानी में भी तीन से कम पात्र नहीं मिलते और बड़ी कहानियों में इनकी संख्या पन्द्रह बीस तक पहुंच जाती है। राजा-रंक, धनी -व्यापारी, किसान-पुरोहित, देव-दानव, नर-नारी, भठीयारिण-जादूगरिणी, योगी-भोगी, डोम- डोमनी, जलाद-, सैनिक, मन्त्री, गुरु - शिष्ट आदि पात्र इन कहानियों में अपनी लीलायें दर्शाते है। बड़ी बड़ी लोककथाओं में नायक नायिकाओं के साथ खलनायक, पशु-पक्षि आदि भी पात्र के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं कि इन कथाओं में मानवी विश्व के प्राणी आ जाते हैं।

III- पात्र चरित्र चित्रण:- बांगड़ लोक कथाओं मे चरित्रों का चित्रण बड़े ही स्वाभाविक एवं सरल तरीके से हुआ है। चरित्र चित्रण की मानवीकरण शैली पात्रों को प्रतीक पात्र बनाने मे सहायक सिद्ध होती है। सम्भव है कि ऐसी प्रतीक पात्र रचना के मूल मे यह रहस्य ही मानों अपनी बात को स्वयं न कह कर किसी अन्य के मुह से कहलवाना चाहता होगा। प्रश्न वंश ही कहीं कही प्रधान पात्रों का चरित्रांकण थोड़ा बहुत अवश्य हो पाता है। जैसे "काणो ब्राहम्ण" का तथा "उरवसी अर रजकुंवार" में दोनों के चरित्र की हल्की सी झलक मिलती है। कारण कि इन कथाओं का लक्ष्य समष्टिगत प्रभ का है चरित्र की रंग रेखा के उभार का नहीं है।

- -

11/- कथोपकथन:- बांगिरू लोक कथा में पात्रों का वार्तालाप बड़े ही आकर्षक ढंग में प्राप्त होताहै । संवाद लोक कथाओं में मिलते तो हैपरन्तु उनका अंश बहुत ही कम है । महादेवी पार्वती की वार्ता भी कथाओं में सुनी जाती है । परन्तु उसमें एक रसता है विविधता नहीं । एकाध स्थान पर संवाद कहानी में बाधा उपस्थित करके नई परिस्थितियों को जन्म भी दे देते हैं जैसे "बातर नार" में जब पत्नी ने पति को जुता मारने से रोका तो उसने व्यापार करने की ठानी । " चिड़िया और मुर्गी" की कहानी में बाल सुलभ चंचलता तथा रोचकता से परिपूर्ण संवाद मिलते हैं । "जाड़ा बालका में आदि से अन्त तक दो शेरों का और बाद में शेरा तथा हिरणा का संवाद चलता है । यह कहानी पूर्णतः बोलचाल के गद्य की संवाद शैली में कही गई है ।

1/- भाषा एवं शैली :- बांगिरू लोक कथाएं गद्य के साथ साथ गद्य तथा पद्य की संवाद शैलियों में भी प्राप्त होती है । इसकी शैली को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है ।:-

i- गद्यात्मक ii- पद्यात्मक iii- चम्पू

बांगिरू लोक कथाये मूल रूप में गद्य शैली में प्राप्त होताहै परन्तु गद्य एवं पद्य की शैली में सन्दर्भ कथा पद्यात्मक संवाद शैली के चमत्कार पर ही पुष्पित एवम् पल्लवित होती जान पड़ती है । उदाहरण के लिये यहां एक

- -

सन्दर्भ कथा दी जाती है :-

म्हारै काली बोली रात घटाटोप हुई है

म्हारै सात्वं तारीख थारै कोथ हुई है ?

बटक चांदनी सी रात तारा कोई कोई है

थारै सोलवीं तारीख म्हारै बांथ हुई है ।

इस सन्दर्भ में पहले अत्यन्त संक्षिप्त द्वारा पद्य शैली का प्रयोग कियागया और बाद में कथाकर उनके रहस्य को स्पष्ट करता है । जिन कथाओं में पद्य और गद्य का मिश्रण होता है वह चम्पू शैली की कथाएं कहलाती है ।

कुछ कथाओं के मध्य तथा अन्त में पद्य भी मिलतें हैं । गद्य-पद्य मिश्रित शैली से कहानी में चमत्कार सा आ जाता है । " पदमिन्नी" कहानी में नीति की व्यंजना करने वाला दोहा देखिए:-

गंजा कागा कोतरा बोछी नरकाहोय ।

इन च्यारां ते बोलिये ज्यब हाथ में लीत्तर होय ।

"बेयुया अर बान्दर, तथा रानी मककावली की कहानियों में चम्पू शैली के दर्शन होते हैं ।

पद्यात्मक बागेड़ लोक कथा इस प्रकार है जिसमें गीत कथा मिलती है

- -

निम्नलिखित पद्यात्मक शैली की आंगिक लोक कथा में एक राजा के दो लड़कों में से एक विवाहित था और दूसरे कुमार ने अपने भाई का वध करके जंगल में डाल दिया और भाभी के पूछने पर देवर ने बताया कि वह तो कोई गीदड़ या कुत्ता मरा पड़ा है जबकि वास्तव में वह उसका भाई था । अन्त में भाई को आत्म ग्लानि हुई । गीती कथा इस प्रकार है :-

अपणे छज्जे पे खड़ी ए देखा मुखड़ाऊं
देवर आण्य के द्वार बड़्या मेरे राम ।
और दिनां देवर दोनों आवते,
आज एकला क्यों आया मेरे राम
म्हारा बीरा[1] छत्रधारी बड़ठा खिलाड़ी,
वन में धूम मचाई मेरे राम ।
एक वन चाल्ले दो वन चाल्ले,
ताजे में चील मंडराई मेरे राम
के गादड़ के कुत्ता ए मरया से,
तुम्हने, बांस[2] आवेगी मेरे राम
पल्ला उढ़ाय के देखण लाग्यी
यो मेरी नणद का बीरा मेरे राम
अच्छा हो देवर वंदण कटाइए,
चिता बणाइए मेरे राम ।"[3]

1- भाई 2- दुर्गन्ध

3- हरियाणा लोकगीत संग्रह लेखक मादान हरियाणवी पृष्ठ 129-131, 1962

कहानी का आदि तथा अन्त शैली की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है।
"प्यार दाल का कूप" कहानी डोम-डोमनी के संवाद से शुरू होती है,
"बात में कुंवारा और फौज में नगारा" वाक्य से ही कहानी आरम्भ हो
जाती है"राजा भोज मूलचन्द" इसी का उदाहरण है :-

बात की बात की कुराफात
कोड़ी का धक्का, मच्छर की लात ।
राम बचावे तो बचे नहीं तो बेचने की नहीं आस।
और एक बैल का सीं साढ़े सत्तरा हाथ ।
अब सुणो हमारी बात
एक राजा था, उसं को नाम भोज थो ।

"बात में कुंवारा अर फौज में नगारा" राजा के सात छोरा था । छः ब्याहता
था अर एक कुंवारा ।[1]

कुछ बांगड़ लोक कथाओं के अन्त में पद्य कथन की रीति पाई जाती है :-

दम्मा दाणी उत्तम कहाणी
दम्म पुराणा हरियाणा काणा,
दो बिलाइयां ने कूआ जोड़्या
काग नाक्का तोड़ै गया ।
बिलाई हुक्का दे सैं ...
मूसा की तै टांग टूट गई
बबनियां क गुड़ दे से ।

1- डाक्टर शंकर लाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य
पृष्ठ 369 शीर्षक लोक कथा से उद्धृत । 1960

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि बांगरू की लोककथाएं शैली के तीनों रूपों में उपलब्ध होती है । बांगरू लोक कथाओं की भाषा स्वाभाविक, सरल, सुबोध, एवं शैली सीधी सादी है मुहावरे एवम् कहावतें कहावतों की स्पष्ट छाप इन कथाओं पर अंकित है। मुहावरे एवम् कथाओं का बांगरू लोक कथाओं में समावेश इसी अध्याय के नौ नम्बर शीर्षक में वर्णित है। सभी कथानक स्वाभाविक हैं, भाषा सीधी प्रभावी, भावानुरूप होने के कारण सजीव है । इसी कारण पाठकों के हृदय पटल पर कथाओं का प्रभावी रूप स्थायीत्व ग्रहण कर लेता है ।

मुख्यत: बांगरू लोक कथाओं की भाषा बांगरू ही है परन्तु भाषा में स्थानीय ध्वनि भेद आंचलिक बोली की रंगत का समिश्रण मिलता है ।-

।/।- उद्देश्य :- इनमें सामुहिक मनोरंजन की भावना पाई जाती है। तथा हास्य व्यंग्य के साथ साथ लोक व्यवहार" लोकाचार तथा लोकानुभूति को व्यक्त करना भी इन कथाओं का मुख्य उद्देश्य है । परन्तु, समय समय आज लोक मानस की बुद्धि विकसित होती ही जा रही है । इसलिए इन कथाओं के उद्देश्य में वृद्धि होती ही जा रही है । मनोरंजन के अतिरिक्त कतिपय उद्देश्य ये हैं :-

शिक्षा, राजनीति के सिद्धान्तों को सुगम बनाना, धार्मिक तत्वों का स्पष्टीकरण, प्रतिपाद्य विषय को रोचक बनाना, श्रोताओं को प्रभावित करना आदि ।

- -

8- <u>बांगिक लोक कथाओं के वर्ण्य विषय:-</u>

जिस तरह संसार की परिधि में उपलब्ध प्रत्येक चेतन तथा अचेतन लोक कथा का मुख्य तथा साधारण पात्र बन सकता है उसी प्रकार उसके जीवन की प्रत्येक अवस्था लोक कहानी का वर्ण्य विषय बन सकता है।"[1] मानव एवम् पशु पक्षि के अतिरिक्त देवी देवता, दैत्य दानव, पादप-पुष्प आकाश पाताल निवासी आदि, समस्त कामनाएं, भावनाएं, मानसिक प्रवृतियां आदि लोक कथाओं के वर्ण्य विषयों के अन्तर्गत मानी गई है।"[2] यद्यपि ये अपने अपने देश एवम् प्रदेश की विशेषताओं को व्यक्त करती है तथापि विभिन्न प्रदेशों में मूल वर्तिनी एकता को छोड़ कर आंचलिक विविधता एवम् भिन्नता की मात्रा लोक कथाओं को पहचानने की मुख्य कसौटी है। इस भिन्नता का सम्बन्ध सांस्कृति जीवन की इकाई से होता है जिसका अधिकांश श्रेय प्राकृतिक तथा सामाजिक परिवेश की अखंडता में निहीत है।"[3] "हरियाणा की लोक कथा तथा कहानी से अभिप्राय उत्तर भारत की एक सांस्कृतिइकाई से है, जिसमें बहुत कुछ अनुरूपता तथा काफी निराला पन भी मिलता है। कारण कि वर्तमान राज्य से संस्कृति का प्रसार अधिक क्षेत्र में है और जीवन पद्धति भी अलग स्थानीय आवास, मानवीय तकनीक तथा चिन्तन के विकास का परिणाम है।"[4]

- -

1- लोक कथा विज्ञान लेखक श्रीचन्द्र जैन, 1977 पृ०96

2- - - वही-

3- हरियाणा एक सांस्कृति अध्ययन लेख लोक कथाएं लेखक डा० भीम सिंह पृष्ठ 270

4- - - वही- -

यहां की भौगोलिक परिस्थिति इस बात को स्पष्ट करती है कि यहां बड़े बड़े काछ्ण्ठ थे जहां असंख्य पशु पलते थे गंगा यमुना और सरस्वती नदियां बहती है। और यहां की भूमि कृषि योग्य है। अतः यहां के लोग खेती, पशुपालन तथा ब्याज वाणिज्य धन्धे करते हैं। इस क्षेत्र में दूध दही की परिपूर्णता है। इसी कारण यहां गंगा स्नान से सम्बन्धित लोक कथाएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है।

अतिथि सेवा, परोपकार, पंचायती पन, किसानों की दरिद्रता, सादगी तथा भोलापन और साहूकारों के ब्याज बट्टे और अनुचित लाभ का वर्णन और परचारण, का वातावरण इन लोककहानियों की निजी विशेषताएं है शिव पूजन की प्रथा के अनुसार महादेव- पार्वती की अनुकम्पा तथा विश्वास की भरमार है। राजाओं का जीवन भी जनता के लिए मोहमन की तरह आकर्षक रहा है। पीरों तथा फकीरों की तपश्चर्या और चमत्कारों का प्रभाव कहानियों में झलक उठता है। गौदान तथा ब्राह्मण की पूजा आज भी जीवन का अंग है। मेरी धारणा यह है कि जीवन दर्शन का साक्षात करने वाले जितने चुटकुले तथा दृष्टांत हरियाणा के अंपढ़ लोगों द्वारा बात बात में उद्धृत किए जाते हैं, उतने किदाचित किसी अन्य प्रान्त के लोगों के दैनिक व्यवहार में नही मिलते होंगे। विनोद व्यंग्य तथा हाजिर जवाबी का पुतला बीरबल जहां पैदा हुआ। जाति बिरादरी की भावना मिलती है। परन्तु साम्प्रदायिक कटुता की ध्वनि रंचमात्र भी सुनाई नही पड़ती

1- हरियाणा एक सांस्कृति अध्ययन लेख लोक कथाएं लेखक डा० भीम सिंह पृष्ठ 270

9- बांगड़ लोक कथाओं में मुहावरें एवम् लोकोक्तियों का प्रयोग :-

यहां की लोक कथाओं में स्थानीय मुहावरों तथा लोकोक्तियों की मधुरता यहां के जीवनानुभूति तथा कार्याभ्यास में समाई हुई है । लोक जीवन की सत्यता इतनी स्वाभाविक एवम् संक्षिप्त रूप में व्यक्त करती है जिससे यहां के जीवन दर्शन का सहज अनुमान लगाया जा सकता है । उदाहरणार्थ

"वो ताड़ ग्यो था मल वो तो जाण बावलो ब्हय ग्यो थो । उसका मन मंह त लाडू सा फूटे के ब्हय ग्यो काम । वर घोड़ेवालो रह ग्यो हाथ मसलतो ।"¹

रेखांकित मुहावरों का यहां प्रयोग स्वाभाविक रूप में हुआ है ।

10- बांगड़ लोक कथाओं की सामान्य प्रवृतियां :-

इस प्रदेश में प्राप्त होने वाली कथाओं में पर्याप्त विविधता है । इसमें धर्म की अभिव्यक्ति, शिक्षा तथा मनोरंजन के तत्त्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहते हैं । इन कथाओं में जो सामान्य प्रवृतियां उभरती है उन्हें निम्नांकित प्रकार से दिया जाता है :-

1- लोक कथाओं में बिखरे हुए अभिप्रायों (मोटिफ्स) का वर्णन रुचिकर होता असंगत नहीं होता । वास्तव में उन्ही अभिप्रायों में कथा की आत्मा निवास करती है ।

2- विविध जातियों का स्वाभाविक चित्रण 3- सत्य जीत एवम् झूठ की पराजय 4- अच्छे कर्मोंका श्रेष्ठ फल 5- अन्धविश्वासों का बाहुल्य 6- मानवीय प्रवृतियों का सरल एवम् सहज चित्रण 7- मंगल कामना की भावना 8- भाग्यवाद का आसरा 9- अन्य कृत्यों का बुरा परिणाम । 10- नैतिकता का समावेश, अलौकिकता एवम् कल्पना के प्रति आकांक्षा और अधिकांश पात्र एवम् स्थान सुपरिचित ।

1- हरियाणा की सांस्कृति अध्ययन लेख लोक कथाएं लेखक डा० भीम सिंह पृष्ठ 271 से उद्धृत ।

11- लोक कथा तथा आधुनिक कहानी में अन्तर :-

तात्विक दृष्टि से लोक कथा व आधुनिक कहानी में बहुत अन्तर है वर्तमान कहानी कार कहानी लिखते समय कहानी के भारतीय तथा अभारतीय सभी तत्वों पर ध्यान देकर आयास पूर्वक कुछ विशेष पक्षों पर विशेष बल देकर पाठक पर अभीष्ठ प्रभाण की सृष्टि करना चाहते है। परन्तु लोक कथाकार इन सिद्धान्तों से अपरिचित से रहते हैं।

लोक कथा का कथानक ऐतिहासिक, पौराणिक, काल्पनिक (मिथकीय सभी प्रकार का होता है। धार्मिक भावनाओं तथा सरल मानव के मूल्या परे प्रकाश डालता है। परन्तु आज की कहानियों के समान सामाजिक वैषम्य और राजनीतिक हलचलों से लोककथायें दूर ही रहती हैं, यहां प्रेम और वीरता के भावों की प्रधानता के साथ साथ कथाओं का अन्त प्रायः सुखान्त होता है। जबकि आधुनिक कहानियों का अन्त उलझन पूर्ण होता है।

पात्रों की दृष्टि से लोक कथाओं के पात्र ऐतिहासिक या काल्पनिक राजा रानी ही हुआ करते है इसके साथ ही सेठ- साहूकार और भूतप्रेत को भी उचित महत्व दिया जाता है किन्तु सामान्य जन की वहां प्रायः उपेक्षा हुई है। आधुनिक कहानी का आदर्श ठीक विपरीत हैं। यहां साधारण मनुष्य सर्वोपरि है। संवाद की दृष्टि से लोक कथाओं में कोई विशेष सतर्कता नहीं बरती जाती जबकि आधुनिक कहानी में संवादों की स्वाभाविकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। भाषा और शैली की दृष्टि से लोक कथा में सहज स्वाभाविकता का प्रवाह होता है वहां आधुनिक कहानी में नहीं। लोक कथाओं का प्रधान उद्देश्य मनोरंजन और गौण उद्देश्य शिक्षा देना परन्तु आधुनिक कथाओं का उद्देश्य सामाजिक चेतना जागृत करना हैं।

12- उपलब्ध बागड़ लोक कथाएं एवम् उनका विवेचन :-

(1)

(हांजी- नाजी)

एक बुढ़िया थी । उसके एक बेटा था । वो घणा[1] उत[2] था । जिब वो जवान हो गया तो बुढ़िया नै उसका ब्याह कर दिया । एक दिन बुढ़िया के बेटे नै ससरैड़[3] जाण की सोची । जाण ते पहलां उसकी मां नै कहया "ओडे[4] जाके हांजी-नाजी कहके बोलियो ।" अगले दिन वो अगा ठगा के ससरैड चाल पड़ा । वो दिन छिपणे ते पहला ही गाम में पहुंच गया । उसकी सासू उसते पूछण लागी "क राजी खुशी है ।" वो बोल्या "नाजी ।" सासू दुःखी हो के पूछण लागी - कोई मर गया ? वो बोल्या -हां जी । सासू नै फेर पूछया, "कोई रह भी रहया ?" वो बोल्या "नाजी" ।" इतना सुण के सारे रोवण लागे अर रोंदे रोंदे अपनी सिमधान कै चले गए । सिमधान उन मैं रोंदा देख के कहण लागी,"क्यूं रोओ सो," पर वे रोंदे रोंदे चुप ना होवे अर कहण लागे, "जमाई तो न्यूं कह था अक सारे मरगे ।" सिमधण अपने बेटे का भोलापण समझ गी । वा कहण लागी, "थारा जमाई तो न्युए बोल्या करै उरै तो सब राजी खुशी है ।" सिमधान के जाण के बादबुढ़िया नै अपने बेटे ते पूछया "तैने ओडे जा के के कहया ?" बेटे ने सारी बात अपणी मां ते न्यू की न्यूं बता दी । मां सुण कै कहण लागी,"सत्या नासी तनैं तो सारे के सारे मार दिये थे ।" बेटे ने तुरन्त कहया, "मैंने नी मारे तेरी हांजी- नाजी न मारे ।

(मनोरंजन प्रधान: मूर्खता प्रदर्शन)

1- अधिक　　2- बदमाश

3- ससुराल　　4- वहाँ

{2}

बाप् मर्‌या जग् पड़्लो

एक राजा था । शिकार खेलण् जा [illegible] रह्या था । राह् में गादड़ ि गया । राज्जे ने गोली मारणी चाही । गादड़ बोल्या - महाराज् मनै मत् मारियो । मैं मर्‌ग्यां ते पड़्लो हो जागी । राज्जा कहण् लाग्या - गादड़ तेरे मरण् ते परलो क्यूकर हो जागी । वो बोल्या- महाराज् बाप मर्‌या जग् पड़्लो । राज्जे ने हथियार फांक[1] दिए अर् तप् करण चाल्या गया ।

{उपदेशात्मक}

{3}

बणिया के बड़ो चोर्

एक् बणिया था । उसके बड़ें चोर । बणिया बोल्या बाहणी देखिओ आज आपणे चोर बड़ैं । मैं बोल्लू जूकरे बोलियो । बाहणी बोल्ली आंच्छ्या बाणिया बोल्या बाहणीं, अपणी वा सवा लाख की गूंठी कित[2] धरी से । बाहणी बोल्ली रोले नां करै चोर सुणलैंगें । वे तो मन्नै चोक्कस धर राक्खी से । फेर बी बता ते कित् धरी से । कोठ्ठे में परांत से । वा मार राक्खी से उसके नीच्चै थाली उसके नीच्चै कटोरा, कटोरै के नीच्चै कुल्ही कुल्ही मैं वा गूठ्ठी धरी से । चोरा ने सोच्ची । पहले सवा लाख की गूठ्ठी ठाओं । चोर ने जा के वा कुल्ही उघाड़ी उसमें हाथ दीआ तो बीच्छू लड़ग्या बणिए ने उस कुल्ही में बीच्छू रोक के न धर राख्या था चोर बोल्या- मर ग्या रे मर ग्या । बणिया बोल्या- मेरी गूठ्ठी से आंगली[3] के थूक ला के पहर ले । चोर पत्ते तोड़ गया[4] ।

{जाति विषयक चित्रण}

1- फैंक दिये ।   2- कहां

3- ऊंगली   4- नौ दो ग्यारह हो गया ।

{4}

आन्धा माणस

एक आन्धा माणस गाल मा खड़ा खड़ा मूतण लाग रहा था । उसके साहमी ए एक पत्थर की कोलड़ी पड़ी थी । कोलड़ी उसके आगे एक पड़ी से इसका बेरा आन्धा न कोन्या पाट्या अर आन्धे के मूत की छींट कोलड़ी त टकरा के पाया पै पड़े थी । इतना ए मा गाम के ठोले दारां की गैला उसी गाल में एक थाणेदार बी आग्या । आन्धा नै देख के ठेलेदार कहण लागे अर आन्धा गाल में खड़ा खड़ा मूते से । तन्नै बेरा कोन्या क थाणदार साहब आवै से । आन्धा पहल त औसाण भूलग्या अर फेर अपने पीले पीले दांद काढ़का बोल्या अक इसे झड मा थाणेदार अपनी बूआ का खसम करावै से ।

{मनोरंजन प्रधान}

{5}

एक जाट अर गादड़

जाट था । जाट नै कूकड़ी[1] बोई । कूकड़ी रोज की रोज गादड़ खड़ जांदा । तो जाट कहण लाग्या अपणा ढोर जा कै, कूकड़ी बेरा नी कोण खा जा सै । उसनै के काम्[2] कर्‌या जा के ल्हूक के देख्या के गादड़ कूकड़ी खाण आया । जाट नै उस् के ठेसला[3] मार्‌या । गादड़ गश् पड़्या । पहलेए गादड़ के गैल्ली बच्चे थे, अर गादड़ी थी, तो फेर उस्‌नै { जाट नै} जिस बखत मार्‌या वो गादड़ बोल्या - "भाग जा, मेरी स्याम् सुन्दरी गैलं कलिआं[4] लां कै,[5] राम लाल की दूर्‌णी[6] टूटटी पड़ी कूक्कड़ खा के ।

{पशु पक्षि सम्बन्धी}

1- मकई का भुट्टा 2- क्या 3- मोटा डंडा
4- बच्चे 5- ला कर 6- कमर

[6]

करवा चौथ की कहाणी

सात भाइयां की एक भाण थी । वा करवा चौथ की बरती रही । साती अर भाण कट्ठी रोट्टी खाया करदे । भाण चौथ की बरती रही । भाई बोल्ले अक मां बेब्बे रोट्टी क्यूनां खांदी मां बोल्ली अक बेब्बे आज बरती से च्यांद लिकड़ैगा जिद रोट्टी खागी । एक भाई छेवा लाया दूर सी कुरड़ी पै धेर कै आग ला दी । दो भाईयों नै चादर चढ़ा दी एक नै छरणा चढ़ा दिया एक बोल्या - बेब्बे चांद लिकड़ आया अरग दे ले । अरग दे कै वा साती भाई अर भाण रोट्टी खाण बैठे । पहली बुरकी मैं बाल आया, दूसरी मैं मास्सी आगी तीसरी में राजा के लड़के की खाई आगी । वा अब उठ कै चाल पड़ी बाड़ी बोजी पायां लागु जेड़े राजा का लड़का मर्‌या परयाथ उड़ै पोहचैगी । उसका सर गोड्डा मैं धर कै बैठगी । महादे पारबती आए । पारबती बोल्यी:- महाराज इस जनानी के पास मैं चालांगे । महादेव जी बोल्ले किस किस के दुख निकालैगी । पारबती की हठ ते दोनों उसके धोरै आग्ये । जाकै देख्या ते लड़की के गोड्डा मैं लड़का मरा पड़्या से । पारबती बोल्ली : महाराज इस जनानी के दुख हटवाओ । आप ते सत्त के पैक्केसा । महादेव नै अपनी चिटली अंगली काट कै छिटा लाया वो हर हर करता खड़ा हो लिया । हरे राम हरे राम अक बड़ा सोया । वो अपणे महल मैं पोहचेगें । फेर आया करवे का व्रत । सासू बोल्यी बारी मैं जाए सुहाग खानी के दून की डली, तेल की पली दिया । बान्दी गई अपणे लीया, पोती कर री और सिर धोरही सार पासै खेलता लागरे । देख कै बान्दी उल्टी आग्गी और सारी बात बता दी । सासु जाकै देख्या बहू सासू के पायां आग्गी । बहू के ले । बहुआन जान का किनान जाने । महादेव पारबती ने छिटा ला दिया हर हर करदे खड़े हैं पहले बाई किसै न ना भाईयों पाछे वां सबनै भाईयों ।

(व्रत एवं त्योहार सम्बन्धी)

- -

"सप्तम अध्याय"

प्रकीर्ण साहित्य :-

1- कहावतें (लोकोक्तियाँ)

(अ) बागरू लोकोक्तियों का वर्गीकरण :- (1) अन्ध विश्वास सम्बन्धी

(2) खानपान तथा पहनावा सम्बन्धी (3) आस्तिकता सम्बन्धी

(4) आर्थिक व्यवस्था सम्बन्धी (5) कृषि एवम् पशुपालन सम्बन्धी

(6) तीज, त्योहार एवम् धर्म सम्बन्धी (7) परम्परा वादिता सम्बन्धी

(8) नीति सम्बन्धी (9) जीवन दर्शन सम्बन्धी

(10) विविध लोकोक्तियाँ :- जातिपरक, ऋतु सम्बन्धी, विवाह संस्कार, दाह संस्कार आदि।

(आ) उपलब्ध बागरू लोकोक्तियों की सूची एवम् उनका विवेचन।

2- चुटकुले :- (अ) प्रमुख बागरू चुटकुले

3- मुहावरे :- (अ) मुहावरों और कहावतों मे अन्तर

(आ) जन जीवन का चित्रण

(इ) बागरू मुहावरों का वर्गीकरण :- (1) जाति विषयक.

(2) नीति सम्बन्धी (3) संस्कार एवम् प्रथा सम्बन्धी

(4) समान्य व्यवहार सम्बन्धी (5) कृषि सम्बन्धी

(6) शकुन विचार सम्बन्धी।

(ई) उपलब्ध बागरू मुहावरों की सूचि एवम् उनका विवेचन।

4- पहेलियाँ :- (अ) बागरू पहेलियों का वर्गीकरण (1) खेती सम्बन्धी

(2) भोजन सम्बन्धी (3) घरेलु वस्तु सम्बन्धी (4) प्राणि सम्बन्धी

(5) प्रकृति सम्बन्धी (6) अंग-प्रत्यंग सम्बन्धी

(7) पौराणिक कथा सम्बन्धी (8) अन्य- उल्टी एवम् वैचित्र्य प्रधान।

(आ) उपलब्ध बागरू पहेलियाँ एवम् उनका विवेचन।

5- सूक्तियाँ

(अ) उपलब्ध बागरू सूक्तियों की सूची एवम् उनका विवेचन।

0----0----0

"सप्तम अध्याय"

प्रकीर्ण- साहित्य

चूंकि कहावतें (लोकोक्तियाँ) फुटकलें, मुहावरे, पहेलियाँ, सूक्तियाँ आदि को प्रकीर्ण साहित्य में रखा गया है क्योंकि ये विधाएं प्रायः इसी के अन्तर्गत मानी गई है गई हैं। इस अध्याय में हम इनका बारी-2 से वर्णन कर रहे हैं।

(1) कहावतें (लोकोक्तियाँ):-

"कहावत" शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्द "कथावत" से मानी गई है। टर्नर ने अपने नेपाली कोष में कथावार्ता और डा॰ बाबूराम सक्सेना ने कहावत/का सम्बन्ध कथावार्ता से बताया है। कहावत का अर्थ है -कही हुई बात। "इसके कह+ आवत अर्थात जिसके कहने की एक सुदीर्घ परम्परा हो"[1]।

व्युत्पत्ति- विवेचना के आधार पर चाहे कुछ भी हो परन्तु लोकोक्ति का स्वरूप इस रूप में सही उभरता है - संक्षिप्तता, सारगर्भिता और सजीवता से युक्त जन-2 के कण्ठ पर विराजित प्रसंगानुकूल चुभती हुई उक्ति अन्योक्तियाँ होती है। जिससे कहावत का अभिप्रायः विस्तृत हो जाता है, उक्ति में वर्णित "विशेष में जो सामान्य रहता है उसी सामान्य के अर्थ में उसका चाहे जहाँ उपयोग किया जा सकता है।[2]

कुछ अन्य भाषाओं में कहावत की परिभाषाएं निम्नप्रकार दी गई हैं :-

(i) Proverbs are the daughters of daily experience.
(Dutch)

(ii) Proverbs are so called because they are proved.
(Italian)

(iii) It may be true what some men say, it must be true what all men say.
(English)

कुछ पश्चिम विद्वानों ने कहावतों की निम्न प्रकार परिभाषा कर उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला है :-

(i) A proverbs is the wt of one and wisdom od many
(Lord Russel)

(ii) Femels five words long that on the treched Forfinger of all time spark lefor ever.
(Tennyson)

(iii) A proverb is the interpretation words of the wise.
(Bible)

1- राजस्थानी कहावतें में उद्धृत महावीर प्रसाद का मत।

2- डा॰ वासुदेव शरण अग्रवाल-पृथ्वीपुत्र पृ ।।।

भारतीय विद्वानों की परिभाषायें दृष्टि में रखते हुये लोकोक्ति के विषय में कह सकते हैं कि "लोकोक्तियां लोक मानस की ऐसी संक्षिप्त, विदग्ध तथा लोकप्रिय उक्तियां हैं जिनमें मानवी ज्ञान तथा अनुभव अपने सहज तथा घनीभूत रूप में विद्यमान रहता है। ये ही लोक जीवन की सप्राणता या जिन्दादिली के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

लोकोक्तियों के माध्यम से हम किसी भाषा के बोलने वालों की संस्कृति का सुगमता पूर्वक अध्ययन कर सकते हैं क्योंकि लोकोक्ति ऐसा दर्पण है जो किसी स्थान विशेष अथवा देश-विदेश की संस्कृति का पूर्ण प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है।[1]

साहित्य में लोकोक्तियों का प्रचलन कब से चला आ रहा है निश्चयात्मक नहीं कहा जा सकता। "मानव जीवन की कोई ऐसी गतिविधि नहीं जिन्हें कहावतों के क्षेत्र से बाहर कहा जा सके। इसमें मानव जीवन के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, रुचि अरुचि, ईर्ष्या-लोभ सभी की सूत्र रूप में व्याख्या होती है। जातियों के आचार विचार, रीति रिवाज, मनन चिंतन आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक, संस्कृतिक जीवन सभी की अभिव्यंजना इन कहावतों में होती है। सांसारिक व्यवहार पटुता और सामान्य बुद्धि का जैसा निदर्शन जैसा कहावतों में मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। इनमें जीवन के सत्य बड़ी खूबी से प्रकट होते हैं।[2]

लोकोक्तियां एक दूसरी भाषा में शीघ्रता में इतनी परिपक्वता से सम्मिलित हो जाती है मानों उनका अलग कोई अस्तित्व ना हो।

(अ) <u>बांगरू लोकोक्तियों का वर्गीकरण</u>:- बांगर में वैदिक संस्कृति का प्रभाव जन जीवन पर स्पष्ट रूप से रहा है। भारतीय प्राचीनतम साहित्य में (ऋग्वेद में) इसके बहुत से उदाहरण मिलते हैं। ऋग्वेद की कुछ उक्तियों का अर्थ साम्य बांगर की लोकोक्तियों में देखा जा सकता है। :-

ऋग्वेद	बांगरू लोकोक्ति	अर्थ
न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति 10/95/15	बीरां की केयारी?	औरतों के साथ का मित्रता ?
बहु प्रजस्य पुत्रस्य सुखायो ऽपि सदा विमत 1/117/19	छोरों का भाणजा भूखाए मर्या करे से।	अधिक छोरों का भाणजा भूखा ही रहता है।

1- राजस्थानी कहावतें ले० कन्हैया लाल मिश्र पृष्ठ।
2 कृष्णानन्द लोक वार्ता पत्र संख्या 3, पृ०।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि यहां की संस्कृति में प्राचीन वैदिक संस्कृति सन्निहित है। वर्ण्य विषय के आधारपर बांगरू कहावतों के अनेक वर्ग बनाये जा सकते हैं। परन्तु यहां के सांस्कृतिक मूल तत्वों धर्मनीति, आचार व्यवहार, वेशभूषा, पर्व संस्कार आदि को लक्ष्य करते हुए यहां की लोकोक्तियों के वर्गीकरण को राहुल सांकृत्यायन और डा० जयनारायण वर्मा के वर्गीकरण को आधार माना गया है। :-

(1) अन्धविश्वास सम्बन्धी

(2) खान-पान तथा पहनना सम्बन्धी

(3) आस्तिकता सम्बन्धी

(4) आर्थिक अवस्था सम्बन्धी

(5) कृषि एवम् पशुपालन सम्बन्धी

(6) तीज-व त्यौहार एवम् धर्म भावना सम्बन्धी

(7) परम्परा वादिता सम्बन्धी

(8) नीति सम्बन्धी

(9) जीवन दर्शन सम्बन्धी

(10) विविध लोकोक्तियां

(1) अन्ध विश्वास सम्बन्धी :- "मान्नै त भगवान नां तो पाथर तथा राम बतावै काम किसी के मारै ते" स्पष्ट करती है कि यहां के लोग परमात्मा में अटूट एवम् अन्धविश्वास रखते हैं। क्योंकि यहां की संस्कृति में दीवारों पर भगवान को चित्रित भी किया जाता है। शकुन-अपशकुनों का भी पूरा ख्याल रखते हैं।- सौम सन्ना घर

यहां के लोगों में राम के प्रति आस्था, श्रद्धा एवम् विश्वास झलकता है सामान्य व्यवहार में भी नमस्ते के स्थान पर राम-2 या जयराम जी की" कहते है। अन्ध विश्वास व कुछ शकुन विचारों के उदाहरण देखिए :-

छींकत न्हाइये, छींकत खाइए, छींकत पर द्वार ना जाइए

(II) छत्तरपती नन्दी भाई, से० मसाणी मे या

(III) एकबुवकी याद की बाकी अबाद की

----

(2) <u>खान पान तथा पहनना:-</u> "खीर खाया टो ब्राह्मण राजी, बाणिया राजी मूली है जाट राबड़ी ते राजी, कायस्थ राजी पूरी ते, "कहावतें विभिन्न जातियों खाने को पूर्णतया स्पष्ट करती है" और उनकी सात्त्विक वृत्ति। सात्त्विक भोजन की एक अन्य लोकोक्ति:-
कुबाया खीर खा कर देवता भला मान्ने। श्राद्ध आने पर ब्राह्मणों की प्रसन्नता एक लोकोक्ति के माध्यम से:- आए कनागत लागी आस बाह्मण कूदें नौ-2 हाथ, गए कनागत भागी आस, बाह्मण रोवें हार-2 हाथ।

यहां की वेशभूषा में वैदिक संस्कृति की झलक भी स्पष्ट झलकती है:- मोटा खाणा अर मोटा पहरणा, दोलड़े का राछा से बोट्य वाहे फिरणा, बाप के हर बेट्टो गूदड़ी लपेटा आदि।

(3) <u>आस्तिकता:-</u> आस्तिकता इसी बात से झलकती है कि काम भी भगवान का नाम लेकर आरम्भ करते हैं- ले राम का नां कभी करेगा राम और करले सो काम अर भजले सो राम। निर्गुण राम की ओर संकेत करते हैं जो कण-2 में व्याप्त हैं सगुण एवम् निर्गुण भक्ति दोनों के मिश्रित भाव "रुक्मणी का राम हिमाती" में विद्यमान है और आन्धा की माक्खी राम उड़ावै यानि यहां दोनों ही प्रकार की भक्ति हृदयांकित हैं।

(4) आर्थिक अवस्था:- "साईं इतना दीजिए जां में कुटम्ब समाय, आपना भूखा रहूं साधु ना भूखा जाय" यह उक्ति के लोगों के सन्तोष एवम् तृप्ति की परिचायक है। दोहरे यहां प्रचलित कहवतों के माध्यम से रुपया पैसा तो हाथ का मैल हो से, जितना करिये लागा लूखा उतणाए खाजा दीरै सुरसो। धन दौलत को अधिक महत्व नहीं देते है और कंजूसी में भी विश्वास नहीं रखते धन- दौलत को सम्मान अवश्य देते है क्योंकि उसके बेरि गुजारा जो नहीं चलता और उसके बिना गांव की शोभा नहीं बनती-धन बाणिये का अर शोभा गाम की

(4) <u>कृषि एवम् पशुपालन:-</u> इस वर्ग के अन्दर हल, बैल जोताई, बोआई खोद, कटाई, फसल आदि की लोकोक्तियां आता है। कृषि की कहावतें कृषिशास्त्र का कार्य करती है। इनमें शुद्ध तथ्य कथन का डौल रहता है। दब के वाह ते रज के खा, खेती कमा ते सेती, दोहिया राज- अवस्था नाज ओत घोड़ा द्वारा राज तथा बैलों से अधिक अनाज होता है।

पशुपालन यहां के लोगों की मुख्य रुचि है क्योंकि यहां दूध-घी प्राप्त होता है। इन सबके उपरान्त वैदिक संस्कृति का मुख्य अंग है। कहा जाता है कि जिसके घर काली उसकी रोज दिवाली। "गधे आले ढाई दिन" गधेका नाम नन्दराम, कुम्हार कहे ते गधे पै ना चढ़े, ट्के की हाण्डी कुतियां की जात-पाई, भैंसवा सिखाई ते पाड़वा आई आदि अन्य जानवरों की कहावतें है। कृषि एवम् पशुपालन इनकी अभिव्यंजना इन लोकोक्तियों के माध्यम से सुन्दर बन पड़ी है।

(6) <u>तीज त्योहार एवम् धर्म भावना सम्बन्धी</u> :- असामान्य धर्म भावों का इनमें समावेश होता है। एक कहावत में हरि भजन का उपदेश दिया गया है। कर ले साँच काम ना भूले साँवराम। और "मान्ने ते राम नां ते पाथर" भावना से मूर्ति देवत्व को प्राप्त करती है।

यहां तीज नामक त्योहार के उपरान्त त्योहारों की झड़ी सी लग जाती है :- "आई तीज बखेरगी बीज" कहावत से फागुण तक अधिकांश त्योहार अपना-2 रंग तथा खुशियाँ दे जाते हैं :- काच्ची अमली गदराई सामण में बुढ्ढी लुगाई मस्ताई फागण में और फिर अन्त "आई होली भर ले गई झोलली" अर्थात होली के बाद त्योहारों की संख्या गौण मात्र रह जाती है। "त्योहारों में भारतीय संस्कृति की एकता की परम्परा प्राचीन है जिसका मूल उद्गम आर्यों की संस्कृति ही है।"[1]

(7) <u>परमरावादिता सम्बन्धी</u>:- " बड्डी बहू नै काठी कार, सारी ब/ उतरी उससे पार में प्राचीन परम्परा का समर्थन स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होता है। माँ बाप की प्रभावी सन्तान पूर्ण रूपेण नहीं तो आंशिक अवश्य ही होती है। - घा मैं पूत पिता पै घोड़ा घणा नहीं ते थोड़ा-थोड़ा। अपनत्व की परम्परा वादी भावनाएँ- " नोंह आंगलियां ते दूर कोन्या हों" और गां न्यारों की बहू छिकारों की। यहां की परम्परा अन्य लोकोक्तियों के माध्यम से :- बालक्ष राह का वहै फेर क्यां नां हो
बैठवा भाइयां मैंह चाहे बैर क्यांनां हो
पीवणा कुआ का चाहे दूर प क्यूं नां हो

1- हरियाणवी लोकोक्तियों की सांस्कृति अध्ययन लेखक- डा० जयनारायण वर्मा पृष्ठ 37

(8) <u>नीति सम्बन्धी</u> :- शिष्टाचार सम्बन्धी तथा नीति, शिक्षा एवं भावना की अनेक लोकोक्तियां उपलब्ध हैं जिनसे मनुष्य को कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान होता है :- गुड़ ना दे तै गुड़ किसी बात कह दे ।[1] नीतिनुसार सज्जन की मित्रता श्रेयस्कर होती है:- घर का दुश्मन पड़ोसी भेड़े" । साम, दाम, दण्ड और भेद चारों नीतियों के सम्बन्धित लोकोक्तियां भी देखिए :-

हाथ्यां सुलझै उतने दांत क्यूं लावै (साम)
दाम बणावै काम (दाम)
करते गैल्यां कीये पाप पुन तै डरीये (दण्ड)
घर का भेद लंका ए ढहावै (भेद)

शिक्षा और भाषा के भावों को देखिए :- "विद्या कण्ठ की, दाम गांठ के" तथा "के ये देखो कुदरत के खेल पढ़े फारसी बेचैं तेल" और "काला अक्षर (अक्सर) भैंस बराबर" । इसके साथ साथ यहां के लोगों की स्पष्टवादिता "साफ कहना (कहणा) और सुखी रहणा" "हिसाब तै बाप बेटे का हो से" व्यवहारिकता "चोर नै कैमारै चोर की मां नै मारै" राज्य तै बाज्य भली"। "शिष्टाचार तथा व्यवहार में यह बात अत्यन्त महत्व पूर्ण है कि लड़ाई झगड़े के मूल तत्वों को समाप्त कर देना चाहिये ।[2]

(9) <u>जीवन-दर्शन सम्बन्धी</u> :- "सब आपणे भागां का खा से", "चौंच दी जिसनै वो चुग्गा भी देगा", "करजा तै आले जन्मां मैं भी चुकाणा पड़े से भाई" क्रमशः भाग्यवाद, आशावाद एवं पुर्नजन्म में विश्वास यहां के जीवन दर्शन की भावनाओं को साकार करता है । यहां के जीवन दर्शन में वीतराग, आध्यात्मिक बल एवं सच्चाई की प्रधानता भी चित्रित है :- आप मरया जग परलै, महलां वाला रोवै छपर वाला सोवै, आत्मा सो परमात्मा, सांच नै आंच किते धोकोण्या आदि ।

(10) <u>विविधता</u>:- उपरोक्त वर्गीकरण के अलावा यहां अनेक प्रकार की

1- हरियाणवी लोकोक्तियों का सांस्कृतिक अध्ययन : लेखक डा॰ जयनारायण वर्मा, पृ॰ 46
2- " " " " वही " " " " पृ॰ 48

विविध लोकोक्तियां उपलब्ध होती हैं। मनु जी की वर्ण व्यवस्था के अनुसार जातियों को चार वर्णों में विभाजित किया गया है। इस क्षेत्र में सभी जातियां रहती हैं। लोकोक्तियों के माध्यम से उनकी विशेषताओं का वर्णन बड़ा रुचिकर है :-

1- बाराह् बाहमण बाराह् बाट
बाणियां के पिसाब में बीच्छू पैदा हों से
जाट का अर पाथर के बाट का के भरोसा
ओच्छा खाती, लाम्बा लुहार, ऊँचा ताणी करै चमार

प्राकृति के परिवर्तन में ऋतुओं के योगदान की लोकोक्तियां :- सामण के बान्हे ने हरया ए हरया दिखै, दूबली ने दो मांह" जाड्डा मांह मां पांह का जाड्डा सीली पाणि का।

विवाह संस्कारों की लोकोक्तियों का महत्व भी कम नहीं है :- आज्जया बेटी ले ले फेरे, बड्डी बहू ह बड्डे भाग, छोटा बन्दड़ा घणा सुहाग। यहां पुनः विवाह, गान्धर्व विवाह का प्रचलन भी है :- तेरी मेरी राज्जी तै के करैगा काज्जी" अर्थात मियां बीबी राजी हों तो अन्य कुछ भी नहीं कर सकता। "बाड्डे पूंक फेरे" भी इसी का उदाहरण है।

दाह संस्कार आदि लोकोक्तियों से स्पष्ट होता है कि यहां मुर्दों को जलाते हैं दफनाते नहीं" अड्डे के मुरदे बाड्डे जले, उड्डे के मरदे उड्डे जलैं। यहां मृत्यु के बाद तेरह दिन का शोक मनाया जाता है" जाट मर्या जिब जाणिये जब तेहरायी हो ले। अतः यहां के संस्कार वैदिक परम्परा-नुरूप होता है।

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि यहां की संस्कृति में धार्मिक, आस्था, स्पष्टवादिता, परस्पर सहयोग की भावना, उच्च आदर्शों एवं सादे जीवन

के विचार के स्रोत है। जिस पर अन्य संस्कृतियों का प्रभाव नगण्य रहा है। कुरुक्षेत्र में यहां की संस्कृति वैदिक तथा उत्तर वैदिक संस्कृति का ही विकसित रूप है। क्योंकि यहां की परम्परा आर्यों से प्राचीन वरीयकी विचारों की एक जीवन्त संस्कृति है।

आ) उपलब्ध बांगड़ लोकोक्तियों की सूची एवं उनका विवेचन:-

1- आई तीज बिखेरगी बीज- तीज अन्य त्यौहारों का संदेश वाहक है।

(तीज त्यौहार सम्बन्धी)

2- अरे भाई के तेरे बाल कोड़ कोढ से - अपनी करनी का फल प्रत्यक्ष आता है भाई तेरे आगे ही आ ज्यागी (व्यवहार सम्बन्धी)

3- आई होली भर लेगी झोली- होली के उपरान्त त्यौहार कम हो जाते हैं।

(तीज त्यौहार सम्बन्धी)

4- अटक्या बाणिया, दे उधार- फंसा बनिया उधार दे देता है।

(नीति सम्बन्धी)

5- आम्मी, पाच्छे नीम तलै - निरर्थक तर्क दोहराना (शिष्टाचार सम्बन्धी)

6- आंधळ्या की माक्खी राम उड़ावे- निर्बल के बल राम (आस्तिकता)

7- आगी रोटी, अंगड़ बुलावा - कम वस्तु खाने वाले अधिक (झूठा दिखावा)

8- आप मरया जग परले- आप मरने पर जग प्रलय हो जाता है।

(जीवन दर्शन सम्बन्धी)

9- ऊंत का न पूत का- बेकार। (परम्परावादिता)

10- ऊंट के गल में बूंट - अनमेल वस्तु (विवाह संस्कार सम्बन्धी)

11- ऐसे करम कढ़े दादी पोते का मुंह देखले- भाग्यहीन (भाग्यवादिता)

12- एक डार ते झण्ड की टालै - दुष्ट व्यक्ति की सहानुभूति।

(व्यवहार सम्बन्धी)

13- ऊंट ते बरड़ावते एक लद्दया करें।- बेपरवाह (पशुपालन सम्बन्धी)

14- कान्धा में आला अर में साला सैठा ही करे से।- दोनों ही दुःखदायी

(नीति सम्बन्धी)

15- कढ़िया ब्याह ले पाऊँगी रामरा- स्थानीय विशेषता (मनोरंजन सम्बन्धी)

16- कागी सिंगार करेगी जतणे मेला बिछड़ जायेगा।- समय पर कार्य न करना

(मनोरंजन सम्बन्धी)

17- किसे तो बुआ जाण ने होरी थी किसे फूफा लेण आग्या - दोनों की सहमति ।- (मनोरंजन सम्बन्धी)

18- के जाणे गेहूं ना रहणा नू कानूं - जिद्दी (स्वाभिमान सम्बन्धी)

19- काक्का कहे कूणाकाकड़ी दे से - चापलूसी करना व्यर्थ है । (झूठी आदर्श वादिता)

20- कीड़ी ने कण, हाथी ने मण- सामर्थ्यानुसार सबको भोजन मिलता है। (पशु सम्बन्धी)

21- खूंटे की ताण बाछड़ू कूददा करें - पक्ष बलवान होना । (शक्ति सम्बन्धी)

22- खाकण पीकण ने मामो और कूटण ने हरदास- खावे करे कोई भरे कोई । (व्यवहार सम्बन्धी)

23- खेती खसमां सेती- खेती मालिक के सहारे होती है (कृषि सम्बन्धी)

24- खा के सोज्या अर मार के भाज ज्या।- मनमर्जी की करना । (व्यवहार सम्बन्धी)

25- खेत का डरावा खा ना खाण दे ।- बन्दर घुड़की (व्यवहार सम्बन्धी)

26- गाज्जा बेटटी लेले फेरे यो मरग्या ते और भौरे- पुनर्विवाह (विवाह संस्कार)

27- काला अक्षर भैंस बराबर - अनपढ़ व्यक्ति (शिक्षा सम्बन्धी)

28- कुल्हाड़ी काघा भरज्या पर जबान काघा नहीं भर सकता- कहे हुये वचनों की कटुता अधिक खलती है। (व्यवहार सम्बन्धी)

29- करते गैलुय करिए पाप पुन ते डरिये- दुष्ट के साथ दुष्टता करो। (दण्ड नीति सम्बन्धी)

30- गुदड़िया मरकोल छूत करे जकाई-शर्म करने वाला नुकसान मे रहता है। आदर्श वादिता)

31- गंडे ते गंडीरी मीठी गुड़ ते मीठा लाला- साला सर्वप्रिय ।
भाई ते भतीजा सब त प्यारा साला ।। (रिश्ता सम्बन्धी)

32- गां की भैंस तले भैंस की गा तले ।- आर्थिक स्थिति की व्यंजना
(शिष्टताचार सम्बन्धी)

33- गोबर में लठ मारे छींटा कोट- बुराई को दबाना ही अच्छा है।
(शिष्टाचार सम्बन्धी)

34- गधे आले चार दिन - अल्प समय की परख ।(परा. पालन सम्बन्धी)

35- गा ब्याणे की बहू ठिकाणे की ।- खानदानी (परम्परावादिता सम्बन्धी)

36- गुड़ खा गुलियाणी का परहेज- कोरा दिखावा (आदर्शवादिता सम्बन्धी)

37- घर ते जल्या पर मुस्सयां के बाहब होंगी- अभिशाप का वरदान होना।
(शिष्टाचार सम्बन्धी)

38- घणी स्याणी, दो बे बूग औरण्या करे - आवश्यकता से अधिक
चतुर हास्य का उपादान । (व्यवहार सम्बन्धी)

39- घी अर धी ने बाहे अन्धेरे में देखले - सुन्दरता छिपती नहीं ।
(वास्तविकता सम्बन्धी)

40- चोपड़ी अर दो द दो ।- स्थिति का दुगना लाभ उठाना ।
(परिस्थिति सम्बन्धी)

41- चांदढी से ते चुग्गा बी देगा- प्रभु सबका पालन पोषण करता है ।
(भाग्यवादिता सम्बन्धी)

42- जिसने राम दे छात पाड़ के दे- परमात्मा की दया से सब कुछ होता है।
(अन्ध विश्वास सम्बन्धी)

43- जाट गंजा न दे भेल्ली दे दे- कम की बजाय अधिक दे देना ।
(जाति परख सम्बन्धी)

44- जिसे गीत उसी ए बाकली - जैसा काम वैसा दाम (व्यवहार सम्बन्धी)

45- जड़े जाट- उड़ै ठाठ- जाट समृद्धि का सूचक है (जाति परख)

46- जाट कहता सरमा ज्या पर लड़ता नासरमा के- व्यवहार कुशलहीनता परन्तु युद्ध कुशल। (जाति परक)

47- छोटे-छोटे लड़े बोझा का छा- दो बलवानों की लड़ाई में निर्बल का नुकसान। (क्रीड़ा सम्बन्धी)

48- बहात विद्या, पंचत खेती- बिना अभ्यास से खेती मेहनत की होती है। (परिश्रम सम्बन्धी)

49- जाओ लाखों, रहो लाख - गौरव की रक्षा करना। (नीति सम्बन्धी)

50- बैर नै बैर मारै- विषस्य विषमौषधम्। (नीति सम्बन्धी)

51- दादी बांधी बांधी चिटोले दोता चिटोले बख्स दे - नीयत में अन्तर (परम्परा वादिता)

52- दादी मरी पोती आई वोहे तीन के तीन- गिणती पूरी रखना। (परम्परा वादिता)

53- दुनिया कहती आई, ऊंत की जूत दवाई होसै- कुट दण्ड से मानता है। (नीति सम्बन्धी)

54- जाट मरया जिब जाणिए जिब तेरहवी होले- जब तेरहवी होजै- तब ही मर हुआ समझो। (मृत्यु संस्कार)

55- कांड एक फेरै- जंगल में विवाह। (गन्धर्व विवाह)

56- जोरा किसका गोरा- जिसकी लाठी उसकी भैंस। (उत्तम स्वास्थ्य सम्बन्धी)

57- ठाडडे का सिर पे के राह- शक्ति शाली का सब कुछ है। (शारीरिक शक्ति)

58- जाड़ा माह का ना पोह का जाड़ा सीली बाल का -सर्दी तो किसी मास विशेष की नहीं बल्कि शीत लहरों से होती है। (ऋतु सम्बन्धी)

59- दूबली नै दो साढ़- दुर्बल को दो आषाढ़। (ऋतु सम्बन्धी)

60- धर्म की जड़ सदा हरी- धर्माचरण व्यक्ति फलता फूलता है (आस्तिकता)

61- दो ते माटी के भी भूंड़े - एकता में शक्ति होती है । (नीति सम्बन्धी)

62- नानी खसम करे दोहता दंड भरे- करे कोई भरे (व्यवहार सम्बन्धी)

63- नाईयां की जनेत में सारे ठाकर- सभी गैर जुम्मेवार (झूठा दिखावा)

64- नानी क्वांरी मर गई धेवती नां बान उठाहे- बड़े शील छोटे दम्भी ।
(शिष्टचार सम्बन्धी)

65- नांगी बूच्ची, सभ तै ऊंची- निर्लज्ज शर्महीन होती है ।
व्यवहार सम्बन्धी)

66- तीज्यां केस्से कटुटटें से- आनन्द में गुजर रहा समय (तीज त्योहार सम्बन्धी)

67- पड़ोसी देखकाय कमाणा, हार देखकै खाणा- पड़ोसी को देख कर कमाई। और अपने हालात के अनुसार खर्च करना । (परिस्थिति सम्बन्धी)

68- पैसा गांठ का, हथियार हाथका- वक्त पर का सामान काम आता है ।
(नीति सम्बन्धी)

69- पाच्या बोझ की ताकत हो से दूणा खाओ थड़ी अटका में । सबर का फल मीठा होता है । (सहनशीलता)

70- पाणी का पादा अर आवै- बुरे कार्य छिपते नहीं ।
(नीति सम्बन्धी)

71- पैसा हत्था का मैल हो सै- धन दौलत आती जाती रहती है ।
(भाग्य वादिता)

72- फली का के मोल हो सै- मजबूरी का प्रदर्शन अधिक होता है । मजबूरी की कीमत नही होती । (परिस्थिति)

73- फूहड़ चाल्ले नौ घर हाल्ले- मूर्खता का प्रदर्शन अधिक होता है ।
(शिष्टाचार सम्बन्धी)

74- बैल कदे रस ले नहीं सकता- गधे के देसी पान नै । बन्दर के जाणे अदरक का स्वाद । (अनुभव हीनता)

75- बेहमाता के आंकड़े लेख ना हले -विधाता के लेख अटल ।
(अन्ध विश्वास)

76- भूखों के जात्य कोन्या होती- अधिक भूखा जाति पाती का विचार नहीं करता । (व्यवहार सम्बन्धी)

77- मरद मुछाला बलध सिंगाला- मर्द और बैल की विशेषताएं

(कृषि सम्बन्धी)

78- किसानां पहुंणा जाणे ना और मेहणा दोनों होया- दिखावा अधिक

(शिक्षा सम्बन्धी)

79- मुठी पड़ पड़ मेरी पैड़ टोहया करेंगी- जब चिड़िया चुग गई खेत फिर पछताये क्या होत।

(व्यवहार सम्बन्धी)

80- ये देखो कुदरत के खेल पढे फारसी बेचे तेल- परमात्मा की लीला।

(आस्तिकता सम्बन्धी)

81- मूरखां के काटड़े प जामां करें- सतर्कता गुणकारी होती है।

(परम्परा वादिता)

82- सूसू लै, तै सुसरी प अच्छी हो लै- कपट इन्कार कठोर होता है।

(व्यवहार सम्बन्धी)

83- हाथ्यां तै के नोंह दूर हों सै- अपने निकट सम्बन्धी को दूर नहीं किया जा सकता।

(परम्परा वादिता)

84- हीम्मत का राम हिम्मती- हिम्मते मरदां, मददे खुदा।

(आस्तिकता)

85- हाण्डी का छोह बरोल्ली पै- बलवान के प्रति क्रोध को दुर्बल पर जाहिर करना।

(व्यवहार सम्बन्धी)

86- हीणे की बीर सब की भाभी- ठाडे की लुगाई सब की दादी + निर्बल को सभी तंग करते हैं।

(शक्ति सम्बन्धी)

87- शेरां के पिड़े में बकरया के बाढ़ की ताक- शक्ति शाली का भय रहता है।

(शक्ति सम्बन्धी)

88- ब्याह के गीत कैसारे साच्चे होया करैं- सारा प्रदर्शन सत्य नहीं होता।

(विवाह संस्कार)

89- मार आगै भूत भी नाचै- मार के भय से भूत भी नाचता है।

(दण्ड नीति सम्बन्धी)

90- हार विवहार में के सरम- आहार और व्यवहार में क्या शर्म ?

(नीति सम्बन्धी)

2- चुटकुले :-

जैसा कि इस शब्द विशेष से ही साफ दृष्टिगोचर होता है कि किसी भी महाकाय वस्तु के छोटे छोटे अंश ही चुटकला की श्रेणी में आते हैं। लोक कथा और लोक कहानी जैसे सरस विषय चुटकलों की मदद से अधिक ही ग्राह्य बन जाते हैं। बड़ी 2 कहानियाँ और कथाओं के मध्य प्रासंगिक कथा के रूप में छोटे2 किस्से कह कहे का भी वर्णन मिलता है। जिन्हें "चुटकला" संज्ञा प्रदान करना ही उपयुक्त नजर आता है। जैसा प्राय: कहानियों में एक रसता और लम्बाई में नीरसता को दूर करके उसकी अभिवृद्धि करना होता है। साथ इन चुटकुले अपने आप में स्वतन्त्र एवम् पूर्णता लिये होते हैं।

चुटकुलों की अभिव्यंजना इंगित आदि होती है। लोक साहित्य में इनका प्रचलन काफी प्राप्त होता है। "चुटकुलों में अश्लीलता का पुट अधिक मिलता है। हास्य रस और वीभत्स रस की निष्पत्ति ही चुटकुलों के प्रयोग का अभिप्राय होता है। वस्तु चुटकुलों को किसी भी साहित्य का विदूषक कहा जा सकता है।"1

प्रकीर्ण साहित्य की इस विधा में मनोरंजन के साथ 2 हास्य परिहास, व्यंग्य आदि की प्रधानता होती है। चुटकुलों का मुख्य उद्देश्य आनन्द एवम् सुख प्रदान करना होता है। अतिरिक्त की व्यापकता होने के साथ इनमें स्थानीय लोगों का

1- लोक साहित्य लेखक डा0 जगदम्बा प्रसाद पाण्डेय पृ0 219

व्यक्तित्व उनकी वेशभूषा, रहन सहन, खान पान तथा शिक्षा स्तर का प्रतिबिम्ब भी झलकता है । बागर के लोगों का सीधा सादा एवम् भोला चरित्र इनके माध्यम से देखिये:-

एक जाट अपने बाप ने घणा स्याणा समझे था । एक बै एक नाई की दुकान पर जाके बोल्या अरे नाई के तनैं कदी गधे की हजामत बनाई सै । नाई का बी उसका गुरु निकड़ा और बोल्या-कदे बनाई ते कोन्या पर ले बैठ तावलो सी कुर्सी पै एब बना के देखूंगा ।

* * *

एक कुल्फी बेचन वाला एक बै एक गाँव मैं गया । बड़ते ही एक चौधरी से टकराग्या जो हाथ मैं डंडा लेरया था चौधरी ने डंडा मार के पूछ्या झमियार के से - अक रे के लेरया सै इसमैं ? झमियार हाथ जोड़कर बोल्या चौधरी एक डंडा और दाब के मार दे ते बस फिर कुछ भी कोन्या सै ।

उक्त उदाहरणों से यहाँ के लोगों की निश्छलता एवम् भोलेपन की बात प्रमाणित हो जाती है । अधिकतर चुटकुले जाट, ब्राह्मण नाई, बनिया आदि के मिलेंगे ।

चुटकलों की भाषा सरल, सरस तथा स्थानीयता के शब्दों के प्रभाव में रहती है । बड़े ही स्वाभाविक ढंग से वर्णित होते हैं वाचिक चुटकले ।

---

(4) प्रमुख वागिक चुटकले

1- मूलचन्द का गाम जाना

एक बै मूलचन्द ने गाम जाणा था । उसने सोची आज ते रेल में जाणा चाहिए टेशण पै चाल्या गया, उडे जाके बाबू जी ने बोला बाबू जी मने एक ते टिकट दे दे अर एक बीड़ियां बंडल बाबू जी बोला- यहां बीड़ी नहीं मिलती टिकट कहां का लेगा । मूलचन्द बोला छौसा के मामा के गाम का दे दे । बाबू जी -मने के बेरा छौसा का मामा का कोंन सा गाम है । मूलचन्द बोला छोह में मतना आवे वोहे गाम से यो जित मैं ब्याह राख्या सू । बाबू जी बोला- मुझे क्या मालूम तुम कहां ब्याह रहे हो ? मूलचन्द बोला- नां तू बंडल राखता नां तनै गाम का बेरा तू बाबू जी किस साले ने बणा दिया ।

(वीभत्स रस)

2- दो पैसे की दही :-

कचहरिया में एक देहाती ने दो पैसे की दही लै ली । खाण लाग्या ते उसमें एक माक्खी लिकड़ी । देहाती ने उसकी शिकायत की दुकानदार बोला- भाई दो पैसे की दही में से माक्खी ए लिकड़ैगी इसमें हाथी क्यूं कर लिकड़े ?

(व्यंग्य: वीभत्स रस)

3- हरिया बिचारा :

हरिया बिचारा सीदा छोरा था । एक दिन उसका बाप मरग्या । हरिया रोवण लाग्या । गाम के आड़ पड़ोस के लोग लुगाई आये अर हरिया ने समझाण लागगे । दो चार बूढ्ढे ठेरे कहण लागगे, "बेटा फिकर मत करे हम भी तेरे बाप समान से चुप होजा । साल छः महीना पाछे हरिया की मां भी मरगी तो पड़ोस की कुछ बुढ़िया आ कहण लागगी, "बेटा तू क्यूं रोरा से हम भी तेरी मां के बराबर सैं । कुछ दिन पाछे उस निरभाग की बहू भी चलती बणी । हरिया इकले दे दे के जोर जोर से रोण लागगा, पर इबके उस बिचारे ने समझाण कोई नहीं आया ।

(भोलापन: हास्य रस)

- -

4- बस का सफर :-

एक आदमी बस में सफर करता था । जहां उस आदमी ने उतरना था, उड़ै बस कोन्या रुकी तो वा आदमी छोह से में आके बोल्या, अरै कंडक्टर सीटी दे देना । कंडक्टर भी कुछ नखरे बाज सा ही था बोल्या, "तेरे के बाप की सीटी सै जो दे दूं, पीसे ला राक्खे सैं ।

[सरलता: हास्य रस]

5- भैंसे का दूध:-

एक गाम में एक बामन और बामनी थे । उनके एक भैंस थी ठाडी सी बामन रात ने ही भैंस का न्यार कर क दे करै थी और तड़काव वक्त सै ही दूध काढ़ ले करै था । एक दिन सारराज ने एक मजाक कर दिया । बामनी तो भैंस के न्यार करै जैसे ही गई, सारोज ने भैंस खोल के अपना भैंसा बांध दिया उड़े न्यार पै । जिब तड़की बामनी ढोरे से में दूध काढ़न आई, तो भैंसा न्यार पै खाये खड़ा जुगाली करता था । बामनी ले बाल्टी अर बैठगी भैंसे तले । उसने थनों के हाथ लाया तो उड़ै थन होते तो पावते भी । भैंसे ने पां कलोटे कोन्या ठाया । बामनी सोचन लागगी कित चाले गये आज थन । बेरा ना कैसे थन एक जगह चिपकगे । बामनी के छोरे का नाम था मुरली बामनी ने हांक मारी, "ओ मुरली के बाबा ।" वा बोला, के सै ।" बामनी बोली, मुरली के बाबा के बताऊ आज तो भैंस के थनों का पिण्ड बनगा" । बामन खड़ा होके आया अर उसने आगे पीछे घूमके देखा तो, वा तो भैंसा खसम खड़ा रहा था ।" अरे निर्भाग आज तो भैंसे देवता का ही दूध काढ़ लै ।

[व्यंग्य: वीभत्स रस]

- -

§6§

बैल बोटम
=======

एक बर एक जाट का छोरा पैंट घालर लत्ता लाया अर आकै अपने बाबू ते कहण लाग्या, बाबू इबकै मै बेलबोटम बणवांगा ।" बाबू बूझण लाग्या अक बैल बोटम किसी एक हो से ।" छोरा बोल्या, "बाबू या सुली हो से इसै ऐं चौड़े चौड़े पांचे हो सैं उसके सारे के हवा लागती रह सै, अर उसमैं उठने बैठने का भी आराम रह सै । उसका बाबू बोला, उत के पट्ठे फिर क्यूं बैल बोटम बणावै से अपनी मां का पेटी कोट ही डाट लिया करियें ।"

§जातिपरक- हास्यरस§

§7§

जाट के ठाठ
==========

एक जाट चौधरी बस में चढ़ा बस में बड़ी भीड़ थी चौ० ने बैठण खातर जगह कोन्या मिली । एक दो स्टेण्ड पर सवारी उतरी तो चौ० ने सीट मिलगी बैठण खातर एक बाबू धोरे थोड़ी देर पाछे कंडक्टर आगा टिकट देण ने । कंडक्टर ने बूझी कित से बैठे सो चौ० साहब चौ० ने कही "आड़े से ही बैठा सूं ।" एक और बाबू जो चौ० के साथ ही कशमीरी गेट चढ़ा था फोरन बोल्या, "पर चौ० साहब आप चढ़े तो कश्मीरी गेट से थे, और कह रहे हो कि दरिया गंज से बैठया सूं" जाट चौ० हसता हुआ बोल्या चढ़ा तो मैं भी थारे ही गेल्या था पर कलन्डर ने बैठन की बूझी तो आड़े से सूं उआर से खड़ा आरा था । बाबु जी चौ० की अकल देखके हंस पड़े और बोले देखा कण्डक्टर साहब ये है जाट के ठाठ ।

§ जातिपरक - हास्यरस §

- -

1- भेजना ।

{8}

लाला जी का शौच

एक बै एक लाला जी वक्त ते जंगल में चला गया । लाला जी स्वभाव से डरपोक था । अंधेरे में पांव रिपट[2] गया । अर एक खड्डे में पड़ग्या सांझ की एक एक भेड़ भी पड़ी थी । बनिया को दे ठोकर अ भेड़ ने करी बां .....

लाला बोल्या हम तेरे बेटा बेटी तूं म्हारी मां ।

{जातिपरक -हास्यरस}

{9}

होटल का खाणा

एक बै कई देहाती शहर में चले गये भूख लाग्यी ते एक होटल में बड़ गये । पूछण लाग्ये अक भाई सब्जी रोटी कैसी दी ? होटल मालीक ने जवाब दिया 25 पीसे रोटी अर सब्जी मुफ्त देहाती बोले ते भाई सब्जी सब्जी दे दे । रोटी ते अपनी ले रहे सां ? फेर सब्जी के बाद उन्हे कुछ मिठाई भी खा ली नौकर पूछन लाग्या जी होटल के टोटल का बिल लाऊं । देहाती एक दूसरे कानी देखन लाग्ये । पर बोले ले आ भई । ऊं ते हम ठीक रहे सें । पर तेरे हाथ की न नाटांगा । प्लेट में होटल वाला बिल लाया । ते चार टूकड़करके उसने भी खाग्ये ।

{भोलापन} हास्यरस}

{10}

छोरे का पाजामा

एक बै धूसर छोरै कुछ आदमी आये इतने में उसका छोरा भी स्कूल क ते आ ग्या । धूसर कहन लाग्या अक बेटे ते पाजामा पहर रहया से भैंस ने बांध दे । थोड़ी देर पाछे धूसर फेर कहन लाग्या अक बेटे ते पाजामा पहर रहया से अर ते दाना ले आ । लड़का ले आया । थाडी देर पाछे धूसर फेर बोल्या अक बेटे ते पाजामा पहर रहया से एक हूक्का भर ले । लड़का बोल्या बाबू पाजामा के हुआ यो तो कुकरम सै र ले इसते आ तैं पहर लें ।

{सादा स्वभाव: हास्य रस }

- -

1- बहकै टूटी 2- फिसलना ।

> मुहावरे :-

"मुहावरा किसी बोली या भाषा में प्रयुक्त होने वाले वे अपूर्ण वाक्य खंड है जो अपनी उपस्थिति से समस्त वाक्य को सबल, सतेज और रोचक बना देते हैं। मुहावरा लोकोक्ति के समान अपने में पूर्ण नहीं होता वह वाक्यांश होता है और उसकी सार्थकता वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही होती है। उसका व्यवहार स्वतन्त्र रूप से नहीं किया जा सकता। वह सदैव अपने मूलरूप में प्रयुक्त होता है शब्द में परिवर्तन करने से अर्थों में भी परिवर्तन हो जाता है। संसार में मनुष्य ने अपने लोक व्यवहार में जिन जिन वस्तुओं और विचारों को बहुत कौतूहल से देखा- समझा और बार बार उनका अनुभव किया उन्हीं को शब्दों में बांधा है वही मुहावरे कहलाते हैं।"[1]

भाषा शास्त्रीयों के अनुसार मुहावरों की उत्पत्ति का कारण है मानव की प्रयत्न लाघव प्रियता। वह छोटे से छोटे शब्दों में अपने को व्यक्त करना चाहता है। मनुष्य स्वभाव से रहस्यात्मक प्रिय भी है। वह कुछ गोपनीय कहने का आदी भी है। इसी से साधारण शब्दों में न कहकर भिन्न भावों में प्रयोग करता है मुहावरे सदा गद्यात्मक होते हैं तथा बहुत लघु होते हैं।

जिस प्रकार लोकोक्तियाँ 'कहावतें' यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है उसी अनुपात में मुहावरों का भी प्रयोग होता है। मुहावरा शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ होता है -परस्पर बातचीत, उत्तर करना अर्थात भावों की व्याख्या करना, एक दूसरे से सवाल, सवाल

---

1. खड़ी बोली का लोक साहित्य लेखिका डा. सत्या गुप्ता

~~कक~~ जवाब करना है। उदाहरणार्थ :- "लठ हाणा" मुहावरा है क्योंकि इसमें "हाणा" शब्द अपने साधारण अर्थ में न आकर लाक्षणिक अर्थ में आया है। लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध प्रयोग का प्रतीक है।

मुहावरों की उपयोगिता भाषागत है। इसका प्रयोग भाषा को प्रभावशाली बनाने में पूर्ण सहायता करता है। प्रायः मुहावरों का प्रयोग सरलता, प्रभावोत्पादकता एवं विचारों की स्पष्टता के लिये होता है। मुहावरों का प्रयोग - ~~[illegible]~~, ~~[illegible]~~ हास्य, व्यंग्य, विचारों की स्पष्टता सरलता, चमत्कार, मनोरंजन, आत्मीयता, लघिमा, आदि उद्देश्यों की पूर्ति करने में समर्थ होता है।

(अ) <u>मुहावरों और कहावतों में अन्तर</u> :- मुहावरे वाक्यांश होते हैं। वाक्य नहीं, जब कि कहावतें पूर्ण वाक्य रूप होती हैं। मुहावरे एक कार्य व्यापार है जब कि लोकोक्ति एक प्रकार का व्यवहारिक एवं नैतिक कथन है। मुहावरा लाक्षणिक प्रयोग है और लोकोक्ति एक अप्रस्तुत प्रयोग। अर्थ की दृष्टि से मुहावरा अपूर्ण होता है परन्तु लोकोक्ति पूर्ण। लोकोक्तियों में कम से कम दो शब्द अनिवार्य हैं जब कि मुहावरे में एक ही क्रिया से काम चल जाता है जैसे मरना। सभी लोकोक्तियों का समावेश लोकोक्ति अलंकार में होता है परन्तु मुहावरों पर यह नियम लागू नहीं होता है। इस प्रकार लोकोक्तियों में समान भावधारा एवं अनुभव के दर्शन होते हैं ~~[illegible]~~ परन्तु मुहावरों में नहीं।

(आ) <u>बांगरू मुहावरों में जनजीवन का चित्रण</u>:- डा० उपाध्याय के अनुसार- मुहावरों में जनता के जीवन की झांकी देखने को मिलती है।

सामाजिक प्रथाओं, रूढ़ियों और परम्पराओं का इनमें उल्लेख पाया जाता है जन साधारण की आर्थिक दशा का चित्रण भी इनमें उपलब्ध होता है। भारतीय इतिहास की अनेक टूटी हुई तथा बिखरी हुई कड़ियां इनकी सहायता से जोड़ी जाती हैं। भारतीय लोक संस्कृति का सजीव स्वरूप इनमें दिखाई पड़ता है। विभिन्न जातियों के विशेषताओं पर इनके द्वारा प्रकाश पड़ता है।[1] बांगरू मुहावरों का खुलकर प्रयोग करना नितान्त स्वाभाविक सा लगता है। बांगर के कार्य विषय को ध्यान में रख कर मुहावरों का वर्गीकरण करना अधिक समीचीन तथा वैज्ञानिक होगा।

(ह) <u>बांगरू मुहावरों का वर्गीकरण</u> :- बांगरू में प्राप्त मुहावरों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-

(1) जाति विषयक सम्बन्धी

(2) संस्कार एवं प्रथा सम्बन्धी

(3) नीति सम्बन्धी

(4) सामान्य व्यवहार ज्ञान सम्बन्धी

(5) कृषि सम्बन्धी

(6) शकुन विचार सम्बन्धी

मुहावरे विस्तृत तथ्य को थोड़े में कहने में समर्थ हैं। वे चुस्त, अर्थवाही तथा परिणाम ग्राहक भी हैं।

(1) <u>जाति विषयक</u>:- इन मुहावरों में जाति प्रथा तथा समाज का दर्शन होता है। "जाट भैंसी दे दे गण्डा मां दे, जाट की गुद गुदी। बणिये का मरना। सुनारा आगै सूई बेचणा।

1- लोक साहित्य की भूमिका : लेखक डा० कृष्ण देव उपाध्याय
पृ० 203

(2) संस्कार एवं प्रथा सम्बन्धी :- पीले हाथ करना, भात भरना, पाणी देना, कूड़े में घी भरना आदि मुहावरों में संस्कार एवं प्रथाओं का सही रूप में उल्लेख मिलता है।

(3) नीति सम्बन्धी :- ये लोग पवित्र तथा नैतिक जीवन में अधिक विश्वास करते हैं। बुरी बातों के परिणाम भी बुरे होते हैं ऐसी उनकी धारणा है।- आल में कालेबेरकाड़ बोणा, जिसा बोवै उसा काटै।

(4) सामाजिक व्यवहार ज्ञान सम्बन्धी :- इनकी दृष्टि में कई घरों के मेहमान को अन्तत: भूखा ही विपदा का सामना करना ही पड़ता है।- घणी मासियां का भाणजा भूखा मरणा।

समाज में कभी 2 योग्य स्थिति के अनुसार रूप में व्यवहार करना भी पड़ता है। शठ के साथ अधिक शठ होना भी पड़ता है - सेरं ने सवा सेर मिल्यां सरै से। " उत का गुरू जूत।"

सज्जन के साथ सज्जनता का व्यवहार करना पड़ता है - गरीबां नै ते राम भी घणां दु:ख दे से।

(5) कृषि सम्बन्धी :- "ब्याही दगा दे जा पर बाही ना दे" (खेती) से कृषि की महत्ता स्पष्ट होती है। इससे सम्बन्धित अन्य मुहावरे- मरद ज्वान का बैल कान्धे का, मरद मुच्छाला बैल सिंगाला।

(6) शकुन विचार सम्बन्धी :- हथेली खुजाणा, पैर खुजाणा आदि मुहावरे शकुन विचार के आधारित हैं।" मांग भरना आदि में भावों की सुन्दरता की अभिव्यंजना है।

बांगरू मुहावरों में चित्रण एवं जीवन दर्शन की छाप उनके जन-मानस में अंकित है। इन मुहावरों में यहां के जीवन दर्शन की छाप साकार रूप से दिखाई देती है, उदाहरणार्थ :-

दिल में धीरज धार पिया ना
सोच करे अब ज्यादा
होणी होके रहे क्यूं कहे बात बेफायदा ।

और एक अन्य मुहावरे में चित्रण देखिये :-

बोवै पेड़ बबूल के आम कड़े तै खा ।

बांगरू लोक कथाओं में तो इन मुहावरों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में एवं बड़ा ही सजीव एवं रोचक उपलब्ध होता है। लोक कथाओं में मुहावरों का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग बना पड़ा है :-

उदाहरणार्थ:-
इतनी सुण कै राजा कै आग लाग गई ।
राज्जा सिर पीट्टण लाग ग्यो ।
अब बड़ा छलवाई ना क्या सक्यो,
ले तेरी कये गुदड़ी सै ।
हमने छोड्य दे, हम भ तेरी कालीगा ।
इसमें आग लाग गई, "सिर पीटणा लाग गयो"

"कये गुदड़ी", "कालीगा", आदि बांगरू के सार्थक मुहावरों को प्रयुक्त किया गया है। एक अन्य उदाहरण देखिये जिसमें "आण बावला", लाडू ना फूटणा" हाथ मसलना" आदि मुहावरों का प्रयोग सार्थक है। वो ताऊ ग्यो था पर वो आण बावला बण ग्या था। उसका मन मई तः लाडू ना फूटे कै बण ग्या काम। अर छोड़ा बाला रह ग्या हाथ मसलता।

भाषा की दृष्टि से बांगरू मुहावरे बड़े सुस्पष्ट एवं लौकिक जीवन से मौलिकता के उद्भाषित दिखाई देते हैं।

[घ] उपलब्ध यौगिक मुहावरे एवं उनका विवेचन

1- अगो मोड़ - शक्ति शाली : अक्कल ते ते माया धारी, दूसरे अगो मोड़ ककारी ।

[सामान्य व्यवहार]

2- आम खिलाके बोय है : आम खिलाके हुआ सर मेरा पार तिरछ कर राम भी जा ।

[सामान्य व्यवहार]

3- आधी भैस वह है बरसा - वे सिवाय चलना : [सामान्य व्यवहार]

4- आंसू टपना - प्यार करना : मोरजी बन के आंसू टपल्यू तेरे नाचना की आस भरी ।

[सामान्य व्यवहार]

5- आप माटी पीटना - अपना नुकसान करना : अपने सिर पे पाप चढ़ावे आप पीट सो माटी ।

[सामान्य व्यवहार]

6- इज्जत पर माटी गेरना - मान घटाना : तो किसी बेटी अपने बापकी इज्जत पे माटी गेरे है ।

[गुप्त]

7- उल्टे खूंटे गाड़ना - रुकावट डालना : पूर्ज के प्रस्ताव डालर उल्टे खूंटे गाड़ दिये ।

[सामान्य व्यवहार]

8- उल ने कौरा - दुष्ट के लिए दुष्टता : मामला कई हजारा के था हलता छर छोरा, के बुढ़िया रोड़ को लौ का ने भी कौरा ।

[नीति सम्बन्धी]

9- ओढ़ा लेना - अहसान करना : ओढ़ा ले ते काल जीतव की चोरी सिर धर दे ।

[सामान्य व्यवहार]

10- ओली सोली बात - उलटी बात : सोना मे रुपोरी बदली सुन ओली सोली बात ।

[सामान्य व्यवहार]

11- कठुआई होना - विपदा आना : ले कर माफज कहूं आ गया ते उसकी कठुआई हो ।

[सामान्य व्यवहार]

12- करम की रेखा मुड़ो सकना - दुर्भाग्य का बढ़ना : करम की रेख कामड़ी सरकती सुमित्रा की धाविनी आंख फड़कती ।

[लोक वार्ता]

13-कमुला काम हैसौर -पूरा होना : सारा काम कमुला हो गया सा गया करतार ।

(शिकारी)

14- कान्यां का भरणा- पूर्ण : खेंचुर हाथ का कुंगौर पर कान्यां का भर लेन दे ।

(ऋणी)

15- कालर कौरे बैठणा-खाली बैठणा: क्वी पति ले कमकी में पुथी बैठी कालर कौरी

(सामान्य व्यवहार)

16- खाज्दुर बजाणा- खुशामद करना : तेरा मैरा खाज्दुर बजे और मुश्किल मा तेरू ।

(सामान्य व्यवहार)

17-खिंड खिंड होणा- अलग अलग होना: खिंड खिंड होकर राज रहे ना ताज खबर ला गैर ।

(सामान्य व्यवहार)

18- गादडु आला पैरा- निर्बलता : स्वाभिमान रहक जीवन मा कु सौराशी का पैरा बचके कु है मुश्किल निकरु या गादडु आला पैरा । (नीति सम्बन्धी)

19- गाला होणा- नाश होना : जिन्दगानी का गाला हो जा सब तरियां ही काला होईगा ।

(दुःख)

20- गिरकाया-सुन्दरता का दिखावा : बिना पति हूनी से न्यूं कसे गिरका रहो से ।

(शिकायती)

21-गोलो लाठी होणा :- हार जिताना : उद्दामसिंह और भरतपुर के गोलो लाठी हुई का ना ।

(नीति सम्बन्धी)

22- छाजो छलणा-नाश करना: बिना सिपाही मैरे छार है का रहो छाजो से ।

(सामान्य व्यवहार)

23- चाला करणा - विस्मय एवं भय मिश्रित कार्य करना : इन तै तो बच कै न्हों रहे ते चाला करदे दिन मैं ।
[सामान्य व्यवहार]

24- चौथे मैं नींद होणा - अधिक गहरा : घर की बताई बालक चौथे मैं नींद हो
[नीति सम्बन्धी]

25- छाती के बटन खोलणा - दयालु होणा : राजाजाट ने दान दिया छाती के बटन खोलकर दिये ।
[सामान्य व्यवहार]

26- जाट की गुदगुदी बणिये का मरणा - एक की हंसी और दूसरे की मृत्यु
[जाति विषयक]

27- जाट भैंसी दे दे गंडा ना दे - व्यवहार अनभिज्ञ [जाति विषयक]

28- जाट रे जाट तेरे मन मैं गुदगुदी मैं हाथी - निर्धनता [जाति विषयक]

29- जाट हरा जब जाणिये की पुराणी बात - निरुत्साहित [जाति विषयक]

30- जी नै आड़ा होणा - दुःख होणा : इन बातां का ख्याल छोड़ दे ना होज्या जी नै आड़ा से ।
[सामान्य व्यवहार]

31- जीभ का लाड़ा होणा - विशेष चटोरा मनुष्य : मिले हरामी माल खाण नैं जीभ के लाड़े हुंगे से ।
[सामान्य व्यवहार]

32- झीरम झीर होणा - अति निर्धन : कदे झीरम झीर रहे था कोन्या पिसा खाणे का ।
[निर्धनता]

33- ढोलो दे दे बुलाणा - खारे से बुलाणा : हाई थी सुनारी प्यारी ढोलो दे दे बुलावण लाग्यो ।
[सामान्य व्यवहार]

34- टूम ठेकरी - आभूषण [व्यवहार]

35- दूका ढेरी होणा - नाश होणा : ना जाण्या ते कटटर लाम्बी होज्या दूका ढेरी
[सामान्य]

36- ढलती फिरती छाया - नश्वर : आवागमन ख्याल की लागी ढलती फिरती छाया
[जीवन दर्शन]

37- ततैया भिर्यां तै घर नहीं चालै - बैरै धरे बिना काम नहीं चलता
[नीति सम्बन्धी]

38- ताज बताणा- गुजारा करना : भीड़ पड़ी मैं ताज बतादे सेट मुश्किल सारी।
[सामान्य व्यवहारी]

39- तिवाला आणा- चक्कर आना : इ गाते पड़ी तिवाला सारी छूटी छूट गई।
[विरहणी]

40- थोथी करणा- बिगड़ना [सामान्य व्यवहारी]

41- दांत निकलणा- दुखना : [सामान्य व्यवहारी]

42- दमोड़ पाटणा - बहुत शोर करना [सामान्य व्यवहारी]

43- दही का बिलोणा- मक्का देना [सामान्य व्यवहारी]

44- दुबलो नै दो साढ़ - कमजोरी मैं कमजोरी आना [सामान्य व्यवहारी]

45- दूबली की सौ सात की बाकी- अधिकारी की डाट भी सहनी पड़ती है।
[नीति सम्बन्धी]

46- दूबरे की थाली मैं घी छणा लागा: दूसरे का भाग्य अधिक दिखना।
[नीति सम्बन्धी]

47- दो माथा का भानजा भूखा मरणा- दो नावों के सवार
[नीति सम्बन्धी]

48- धाप न आना- सन्तुष्टि न होना [सामान्य व्यवहारी]

49- नागी के घर नागी लिकै धर मैं टांगी - जब धन वाला धन को सम्भाल कर रखता है। [सामान्य व्यवहारी]

50- नागी के नाहवै के निचोड़ै - खाली हाथ [सामान्य व्यवहारी]

51- नई ? दुबली चलता चलता कूदे- दिखावा करना। [सामान्य व्यवहारी]

52- नई नौ दिन पुराणी सौ दिन - प्राचीनता अच्छी होती है। [नीति]

53- नाक कटणा - अभिमान टूटना [सामान्य व्यवहारी]

54- नम्बरदारी मैं पाथर पड़णा- छिकार होना [सामान्य व्यवहारी]

55- नाथ घालणा – काबू में करना : कितने दिन हो गये भाभी तेरे धोरे नाथ घलाये ने । (सामान्य व्यवहार)

56- नानी खसम करे दोला खड़ भरे – करे कोई भरे कोई (नीति)

57- नेकी नौ कोस बदी सौ कोस – बुराई जल्दी फैली है (नीति)

58- पांच जणे परमेसर – पंचों में भगवान मानना (नीति)

59- फूंक पाड़ना – नुकसान करना (सामान्य व्यवहार)

60- पां भारी होणा – गर्भवती होणा (संस्कार सम्बन्धी)

61- पापी के मन में ढूम का डाहा – अपराधी का शंकित होणा (सामान्य)

62- फूल के पालणे में खिलावणा – सौभाग्य का प्रतीक (संस्कार सम्बन्धी)

63- फूले न पायड़ी पटाक से बहू का पहुँ-चसकता है (संस्कार)

64- पैरां का गुनागार – विवाहित (संस्कार सम्बन्धी)

65- बागड़ का डांगर – अक्खड़ (प्राचीनता)

66- बकरी दूध तो देगी पर मींगण कर के – काम तो करना परन्तु एक बार मना करके । (नीति)

67- बकरे की माँ के दिन कैर मनावेगी – अवश्यम्भावी आपत्ति (नीति)

68- बगल में छोरा गाम में ढिंढोरा – पास में होकर पर न दिखना (नीति)

69- बट्टे बाढ़णा – बदला लेना (नीति)

70- बन्दरां में भेली फेंकना – कलह करवाना (सामान्य)

71- बखे पेल न घर न खेत – आलस्य काम व्यर्थ होता है (कृषि सम्बन्धी)

72- बावलो बूच – मूर्ख (सामान्य व्यवहार)

73- बणिया बस में करणा – मजाक से कहना (जाति विशेष)

74- बावन तोले पाव रत्ती – पूर्ण रूप से : आज सबूती रत्ती रत्ती हूँ बावन तोले पाव रत्ती हूँ । (नीति)

75- दिल्ली आला दा-अचूक निशाना: पुरनमल की ज्यान है आर दिल्ली वाला दा से । [नीति]

76- बेढ़ब भाईयाँ का पाछे बैर हो-सम्बन्धियों को भान्ति रखना । [नीति]

77- खोटे पेड़ बबूल के आम कड़े ते खा --बुरे काम का बुरा नतीजा [नीति]

78- भगत की तो राम रुखाले- भगवान पर भरोसा [भक्ति आस्तिकता]

79- स्यालो दगा दे जा पर साड़ी ना दे-खेती साथ देती है । [कृषि]

80- भैंह के आगे बिनौला का भाव- मूर्ख को रत्न की क्या पहचान [सामान्य

81- अगली रांड छटाई बिना-लालची [सामान्य]

82- मर्द ज्वान का बैल कांधे का -पक्का होणा [कृषि]

83- मर्द मुकलावा ते बैल सिंगाला-परीक्षा के चिन्ह [कृषि सम्बन्धी]

84- कुत्ता के बसे होते तो मिल हो होवेंगे - दुष्ट से कुछ मुण्टला कहेंगे [परम्परा

85- ओका किसा हेरा-उजाड़ू घर [घर]

86- रांड नखुली होना-बुराई उजाड़ करना [सामान्य]

87- राम के घर में दे है अन्धेर नाहि- न्याय अवश्य मिलेगा चाहे देर से

[आस्तिकता] [आस्तिकता]

88- राम रमे ना आना-भगवान का अवतार [पौराणिक]

89 राम रमी देना -मरते समय [पौराणिक]

90- लड्डू पेड़ा-साधारण व्यक्ति [सामान्य]

91- लाठी पर छुप करवाना- कुछ वस्तु के लिए उतारू होना [सामान्यव्यवहारी

92- सांच ने आंच नहीं -सत्य की जीत होती है [नीति]

93- बीज कुआरे रोकर नहीं बनता-अवश्य परिश्रम न से पैदा नहीं होता ।

[कृषि]

94- मार पै कूदना- अधिक तेज करना : [सामान्य व्यवहारी]

95- साख बांधना - पैठ जमाना : गरीब रौ राम साथ दे साख गांठण वर करै धन री छाव । [सामान्य व्यवहार]

96- साट सति कूणा: धुल उड़ाणा : सिर ऊपर उण धूल पड़ी सै सारी साट गमी सति । [सामान्य व्यवहार]

97- सीढ़े लाई का कटे नाद का - झूठ़ों पर प्रयोग होता है । [सामान्य व्यवहार]

98- सुनारां आगे सुई बेचणा - समझदार के आगे चालाकी दिखाणा ।
[प्रकृति चित्रण]

99- सूर्यां रो पैंड काटे़ जाके- बिना सम्भाल के हानि होती है । [व्यवहार]

100- सौंपो न होणा - होश में न होणा : धन भंग उगने तब रहणगेरी धूँ ना सै सौंपी है । [सामान्य व्यवहार]

101- सोवन शरीर - सुन्दर : पैठ का कूटी में जाडदार सोवन शरीर हूर ।
[सामान्य व्यवहार]

102- हलो हलाई गावड़ी सुणाई मैहर होर - हार बार मिली पोत री पावणा ।
[सामान्य व्यवहार]

103- हाथा री हणिया ध हाथा ओट री सैं स्वाभाविकता [प्रकृति चित्रण]

104- हिम्मतवार हिमाली हाथ- परिश्रमी हर समय दाम बनेहर है ।
[सामान्य व्यवहार]

105- हेत करणा- प्यार करणा: लखमीचन्द रौ हेत ताकता करतार जाणिए हेत नाचता, जदकिसन नै हेत ताकता सब मा करिये जार । [सामान्य व्यवहार]

106- होका पाणी बन्द करणा- सामाजिक बहिष्कार । [सामान्य व्यवहार]

107- होणी हो के रहणा- अवश्यम्भावी । होणी हवै रहै मिनख क्यूँ करत ही वे कायदा । [जीवन दर्शन]

108- हौम करते हाथ जलणा- परोपकार में हानि उठाना [सामान्य व्यवहार]

4- पहेलियाँ :-

मानव की गुत्थी सुलझाने की प्रवृत्ति और उसके समाधान से प्राप्त आनन्द की अनुभूति अतिप्राचीन काल से ही उसमें रही है और उसी के फलस्वरूप अस्तित्व में आई है। यह बौद्धिकता से सम्बन्ध रखती है अतः इसका विकास गीतों के परवर्ती ही हो सकता है"।[1]

इनकी प्राचीनता के विषय में कुछ भी कहना मुश्किल सा प्रतीत होता है, डा० कृष्ण देव उपाध्याय ने निम्न मंत्र को पहेली की रूप में माना है।[2]

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादाः,
द्वे शीर्षे सप्त हस्ता सो अस्य,
त्रिधा बद्धो वृष भो, रोर वीति,
महादेव मर्त्यां आवी वेश।

यह उपर्युक्त मंत्र कृपा निश्चय ही पहेली है। इस प्रकार पहेलियों का विकास प्रत्येक युग में होता गया। संस्कृत शब्द "प्रहेलिका" का ध्वनि परिवर्तन हिन्दी में पहेली बन गया। इस का अर्थ "विषम अवस्था या"उलझन्‌" होता है,। हिन्दी की बोलियों में इसे बुन्देली और ब्रज में "फाल" या फाली" आदरणा कहते हैं। इस प्रदेश एवं इसके सीमावर्ती प्रान्त राजस्थान में पहेलियों का प्रचलन प्रचुर मात्रा में हो रहा है। अपने समय में अमीर खुसरों की पहेलियाँ लोक प्रियता के शिखर पर रही और हिन्दी में अपनी छाप छोड़ गईं। परन्तु पहेलियों के इतिहास की तिथि निर्धारित करने में हम असमर्थ रहे और परन्तु इनकी प्राचीनता से नकारा नहीं जा सकता। अमीर खुसरों की पहेलियाँ खड़ी बोली में हैं और खड़ी बोली को विकास के राह पर लाने में ब्रज का विशेष योगदान रहा है।

1- लोक साहित्य का अध्ययन :- लेखक डा० एस.बी.राम अनन्त पृ. 70
2- लोक साहित्य की भूमिका लेखक डा० कृष्ण देव उपाध्याय पृ० 207

साहित्यिक भाषा में "पूछो पूछो एक पहेली ......", का तरीका अपनाया जाता है परन्तु बागड़ में "काली आख्या में" के तो मेरी काली का फल बता नहीं तो .... खाली स्थान का अर्थ कोई ना कोई मजाक प्रयोग करना होता है, :- उदाहरणार्थ :- माटी का मटोगर घडू लोले का घडू जेवर ।

के तो मेरी काली का फल बता,
ना ते तेरी मां का लाग्यूं देवर ।।

पहेली का स्वयं नाम पहेली है । देखिये एक अन्य उदाहरण :-

गैल अगोऊ मारये किन्दी, चाल चाले अलबेली ।
जिसका लोग तमासा देखें, उसका नाम पहेली ।।
(लदद्दू)

बागड़ी (फाली " पर गहन विचार करने और अपने चहुं ओर के वातावरण की परख करें तो ऐसा आभास होता है मानो इनकी पकड़ से कोई विषय बच नहीं पाया है । पूर्व से रेलगाड़ी ही वर्णित नहीं है, यहाँ तक ऋतु आदि को भी अपने शब्दों की परिधि में बान्ध रखा है :- "परणी देवर रोज किये ब्याह के लगाया जेठ"- (पीलू) अर्थात वर्ष के बारह मासों में से जेठ के महीने में जालों के पील लगती है ।

अ-) <u>बागड़ी पहेलियों का क्रम वर्गीकरण</u> :- "फालियों " की इस विविधता के कारण इनको कुछ सुनिश्चित वर्गों में बांट देना सामान्यतः कठिन है परन्तु अध्ययन की ही सुविधा के लिये इनका वर्गीकरण करना आवश्यक हो जाता है, बागड़ी पहेलियों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जाता है :-

---

(1) खेती सम्बन्धी	(5) प्रकृति सम्बन्धी
(2) भोजन सम्बन्धी	(6) अंग प्रत्यंग सम्बन्धी
(3) प्राणी सम्बन्धी	(7) पौराणिक कथा सम्बन्धी
(4) घरेलू वस्तु सम्बन्धी	(8) अन्य

1) <u>खेती सम्बन्धी</u> :- इस वर्ग की पहेलियों में खेती से सम्बद्ध उसके उपकरणों एवं फसलों आदि से सम्बन्धित "पहेली" पूछी जाती है।

उदाहरणार्थ :- छोटा सा छोरा पेट फिराई (गेहूँ)

ii- छोटी सी छोरी के सिर में घड़ा,
हाथ बाबू गोदी ले ले, हाथ बाबू गोदी ले ले। (गुड़ की भेली)

(2) <u>भोजन सम्बन्धी</u> :- हर प्रकार के अनाज, फल, शाक सब्जी और हर प्रकार के व्यंजनों को इनमें स्थान मिलता है। उदाहरणार्थ :-

i- घेरदार घाघरा, झूमर दार कुर्ती।
ii- गई थी बाजार में, धागेदार कुर्ती। (मिर्च)

ii- छोटा सा छोहरा तिलक बिना चाले नहीं। (उड़द)

iii- खोली खिलाड़ी, बब्बर पूंछ,
खा ले खा नहीं दादी से पूछ। (मूली)

3) <u>घरेलू वस्तु सम्बन्धी</u> :-

घरों में प्रयोग होने वाली समस्त वस्तुएं इस वर्ग के अन्तर्गत आ जाती हैं, उदाहरणार्थ:-

i- छोटी सी छोड़ी बड़ी लगाम।
चाल मेरी छोड़ी अगले गाम।। (सुई)

---

ii- मोटा सा आला, कीड़ियाँ का भूया । {दियासलाई}

iii- छोटी सी छोहरी लाल बाई नाम ।
छदगी आकाश मैं, हेर ल्याई गाम ।। {आग}

{4}- प्राणी जगत सम्बन्धी:- इस वर्ग में मनुष्य, पशु पक्षी, कीड़े मकोड़े- सभी का वर्णन रहता है । उदाहरणार्थ :-

i- छोटी सी मीमणी, राज्जा सागै जीमणी । {मक्खी}

ii- हम तण्क मणाक तुम थोड बड़े ।
हम ढोल बजा तुम रो पड़े ।। {मच्छर}

{5}- प्रकृति सम्बन्धी :- प्रकृति से सम्बन्धित आकाश, तारे, सूर्य, चन्द्रमा वर्षा, बिजली, नदी, दिन रात महीना, वर्ष, कुआ, फुल आदि का वर्णन इसी वर्ग से सम्बन्धित है । उदाहरणार्थ:-

i- यहाँ नहीं वहाँ नहीं लन्दन के बाजार नहीं ।
छीलो तो छिलका नहीं, खाओ तो गुठली नहीं ।। {ओले}

ii- मै लेण गई थी तने, तै लेय लई मैंने ।
तै छोड़ दे मने, मैं ले जाऊं तने ।। {पानी}

{6} अंग प्रत्यंग सम्बन्धी:- आँख, कान, हाथ, पैर आदि सभी शरीर के अंग प्रत्यंगों का उल्लेख इसी वर्ग के अन्तर्गत आता है । उदाहरणार्थ:-

i- छोटा सा आला, कीड़ियाँ का भूया । {मुँह}

{7}- पौराणिक कथा सम्बन्धी:- यहाँ की एक पौराणिक पहेली जिसमें मकर ध्वज और हनुमान की पौराणिक गाथा कही गई है । जब तक यह पौराणिक सूत्र स्पष्ट नहीं हो जाता है तब तक यह पहेली नहीं सुलझती ।[1]

हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य :- लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ० 438

पौराणिक कथाओं पर कई पहेलियां प्राप्त है। उदाहरणार्थ-

आप क्वांरा बाप क्वांरा और क्वांरी महतारी।

पुत्र पिता ने गोद लिया रहस्य देखो न वेदाचारी।

(४) अन्य- इस वर्ग में उन पहेलियों को रखा जाता है जिनका वर्णन ऊपर के वर्गों में नहीं हुआ है। यहां पहेलियों का एक अन्य रूप "उल्टी पहेलियां" भी मिलता है। इन पहेलियों में एक प्रकार की समस्या रखी जाती है और उसका समाधान पहेली के रूप में करना होता है। उदाहरणार्थ- पहेली पूछने वाला समस्या उपस्थित करेगा " हाथी पर से बैल फेंक दे." । और आप इस चिन्ता में न पड़े कि यह कार्य कितना दुसाध्य होगा। केवल इतना कह देने भर से काम चल जायेगा।-

झाड़ में कड़ला बोल्या, जामें बोलया छाली।

हाथी पर के बैल फैंक दी, देखो मरद की छाती।।

और जब थाली को बांट बताने की समस्या हो तो आप इस प्रकार थाली को पांव लगा सकेंगे-

गेहूं पाके जौ पाके चनों ने थाली टांट।

देखो रे नगरी के लोगों थाली वाले बांट।।

समस्या तो यहां तक आ सकती है कि "कुएं से बहू निकाल दे" और आप को चाहे कुए में झांकने भर से डर लगता है। कुंए में जाए और डुबकी लगाये बिना बहू को निकालने की विधि यों है:- "सरड़ सरड़ सांप जा,

निकड़ बहू तेरा बाप जा।

पहेलियों के उक्त उपर्युक्त विश्लेषण से यह साफ हो जाता है कि बागड़ पहेलियों में बुद्धि कौशलता, वैचित्र्य, व्यंग, रोचकता, चमत्कार, उत्सुकता और भाव प्रवणता-सभी का समावेश हो जाता है और इनमें ज्ञान विषयक शुष्कता का कहीं नाम भी नहीं है। इसी से इन "फालियों" का महत्व साहित्य की दृष्टि से उच्चतर होता है।

(ख) बांगरू में उपलब्ध कुछ फालियां (पहेलियां) एवम् उनका विवेचन

(1)

काला कुत्ता कूंए में सोय, कूंए की मेवा खाय ।

लाट साहब का हुक्म आया, भाज्या भाज्या जाय ।।

(रेलगाड़ी : परिवहन का साधन)

(2)

सांप बरगी पडूया गांठला दही बरगा भेस[3] ।

बलाणा हो तो बता नहीं छोड़ म्हारा देस ।।

(हसंली= एक गले का आभूषण : अं-प्रत्यंग सम्बन्धी)

(3)

धरती का बीज बिन मारे रोवै ।

कसम तेरे बाप की, जो बिन बताए सोवै ।।

(प्याज: भोजन सम्बन्धी)

(4)

टकी[4] थी तो फूटटी नहीं टुकड़ होगे चार ।

बलिस होगी ठेकरी बातर करे विचार ।।

(आठ आने का सिक्का: राशि)

(5)

आगे बाले, पाछे बाले, बाले झमग ।

सारा दिन बालता रहे, दूरी एक पग ।।

(किवाड़: घरेलु वस्तु सम्बन्धी)

(6)

बीददी चादर बार किनारे ।

चलगी बहड़ी दिल्ली दो बाजार ।।

(सूर्य- चन्द्= नक्षत्र- प्रकृति सम्बन्धी)

---

(1) जैसा (2) गांठ वाला (3) वेश (4) गिरी)

(7)

छोटी सी चिमदी चिम-चिम करे ।
लाख हाथों का काम करे ।।

(सूई : घरेलू वस्तु सम्बन्धी)

(8)

मखमल की थैली में सोने के बीज ।
खाओ मत खाओ, आगे की चीज ।।

(मिर्च : भोजन सम्बन्धी)

(9)

एक किले में चोर बसे हैं, सबका मुंह है काला ।
पूंछ पकड़ के आग लगादी, होगया बड़ा उजाला ।।

(माचिस : घरेलू वस्तु सम्बन्धी)

(10)

बाखरे में डाकरा, बाखरे में टीकड़े[1] ।
बता तो बता, नहीं गाम ते लीकडे[2] ।।

(आम: भोजन सम्बन्धी)

(11)

घेर घिराली[3], आंट अंटाली[4] पोरी पोरी में रस ।
बता तो बता नहीं रुपए दे दे दस ।।

(जलेबी: भोजन सम्बन्धी)

(12)

पहाड़ों ते आये झूले ।
ही टोपी लाल झूले ।।

(हरी मिर्च : भोजन सम्बन्धी)

(13)

काला कम्बल कूदना जाली ।
एक बन्द के दो दो डाली ।।

(तारा: घरेलू वस्तु सम्बन्धी)

---

(1) रोटी (2) बाहर जा (3) घुमावदार (4) चक्करी दार

(14)

भूस के महल में लकड़ी का महल ।
लकड़ी के महल में, मिश्री का महल
मिश्री के महल में, पाणी का तालाब ।।

(कच्चा नारियल: फली सम्बन्धी)

(15)

आंगा ऊंचा पाछा नीचा ।
घर घर होंडे रखाम्मी लुच्चा ।।

(कुत्ता : प्राणी सम्बन्धी)

(16)

आरू जाऊं बाहर जाऊं ।
लीड़ियां लटकाए जाऊं ।।

(ताला: घरेलू वस्तु सम्बन्धी)

(17)

पांच जणां ने बान्धया भरोटा ।
धरया गाले के मांह
तुतकणी ने दिया धक्का ।
गया कुए के मांह ।।

(रोटी खाने की प्रकिया : अंग प्रत्यंग सम्बन्धी)

(18)

पां पकड़ के जोड़या छैल ।
कमर पकड़ के दिया धकेल ।।

(जूता: प्रयोगात्मक वस्तु)

(19)

धोड़ा है पर घास नहीं खान्दा ।
छड़ा है करे ते गिड़ा गिड़ी[2] जान्दा ।।

---

(1) जीभ (2) गिर-2 जाता है ।

(20)

हरी थी मनभरी थी, नौलाख मोती जड़ी थी ।

राजा जी के बाग में, दुशाला ओढ़या खड़ी थी ।।

(मकई: कृषि सम्बन्धी)

(21)

सांझ होगा ते पैदा हो, आधी रात नै जुवान ।

तड़का होगा तै मरज्या, डार होज्या मुसान[1] ।।

(ओस: प्रकृति सम्बन्धी)

(22)

चार ड्राइवर एक असवारी ।

पाछै पाछै जनता सारी ।।

(मुर्दा: प्राणी सम्बन्धी)

(23)

नुहा दिया धुवा दिया ।

गुल्बे[2] मार के सुवा दिया ।।

(गुंथ्या हुआ आटा : भोजन सम्बन्धी)

(24)

दबी आवे दबी जावै

(ईन्टः घरेलू वस्तु सम्बन्धी)

(25)

राण्ड की राण्ड कोलै[3] खड़ी फूलै ।

(रोटी: भोजन सम्बन्धी)

(26)

जोहड़ मांह ते लिकड़ के फदक्कू ।

चार कूतड़ उसके अर एक से मूंह ।।

(हुक्का: घरेलू वस्तु सम्बन्धी)

---

(1) शमशान (2) थपेड़े (3) किनारे

(27)

जाण्डी पर त कबोला लार दे :

कविया जाण्डी कविया पान ।

उतर कबोला काढू कान ।।

(उल्टी पहेली)

(28)

छोटी सी आली मोतियां की जाली ।

(दान्त: प्राणि सम्बन्धी)

(20)

वार बासण[1] रस के भरे ।

बिना कापरा[2] मूढ़े पड़ ।।

(थन: प्राणि सम्बन्धी)

(30)

छोटी सी ओट सारे गाम ने ले ओट ।

(नीन्द)

(31)

बावा सोवै साल मांह ।

पाँ पसारे गाल माहे ।।

(दीपक)

(32)

बड़ रे बाड़ तेरी पाणी में जड़ ।

तेरे सीकर में आग -तेरे ओ रहे लाग ।।

(हुक्का)

(
- -

(1) मटका (2) ढक्कण)

5- <u>सूक्तियां:-</u>

सूक्ति (सु+ उक्ति) दो शब्दों के मेल से बनता है। सु का अर्थ है अच्छा और उक्ति का, कहा जाना या कथन होता है। अस्तु अच्छी प्रकार से कथनीय उक्ति ही सूक्ति है। सूक्ति का दूसरा नाम सुभाषित भी है। वैसे सूक्तियां अच्छी कहावतें होती हैं जिनका जन साधारण के मानस पटल पर अनुकरणीय प्रभाव पड़ता है क्योंकि इनमें सद्भाव आद्यान्त ओत-प्रोत होते हैं। जो श्रोता एवं पाठक को अनायास ही आनन्द विभोर कर देते हैं यह सूक्तियां अवश्य ही किसी आप्त पुरुष की प्रांजल शब्द-कलिका होती हैं। ऐसी वे वचन हैं जो "हितं च मनोहारी" की कल्पना को साक्षात प्रकट करते हैं।[1] लोक साहित्यक सूक्तियों के रचयिता घाघ, भड्डरी, सहपा तथा सहदेवा आदि की सूक्तियां बांगरू में मिलती हैं। घाघ ने तो छत्तीस किस्म के बेवकूफों की व्याख्या की है।[2]

I पहर धाधाऊ हल्लो जोते सुल्गे[3] पहर गालम्बे।
कह घाघा जी तीन चूतिया[4] सिर पै बोझ अरगावे।।

II- चिंउटी ले अण्डे चली, चिड़िया न्हावे धूल।
शादी कहे भाडली, बरखा हो भरपूर।।

III- सुक्कर वाली बादली, रहे शनीचर छाय।
कह सहदेवा सुन भाडली, बिना बरसे ना जाये।।

इनके अतिरिक्त सैंकड़ों सूक्तियां प्रचलित हैं जिनमें उपरोक्त सूक्तिकारों की तरह उनके नाम नहीं हैं - सौ कोतकी, एक रोहतकी।

II- जण हाले जवासा हाले, पर जोधा पीपल कदे ना हाले।

III- बालू की भीत, पछीत का पाणी। ओछे की संगत, सदाही हाणी।।

IV - घर का बलाणा, आन्धी में दीवा लाणा से।

V- सीख उसको दीजिए जिसको सीख सुहाए।
बन्दरों को क्या सीख दे घर बयीये का जाय।।

(ब) उपलब्ध वांगिक सूक्तियाँ एवम् उनका विवेचन

(1)

ओउम् नाम सब ते बड़ा उससे बड़ा ना कोय ।
जो उसका समरण करे शुद्ध आत्मा होगय ।।

(निर्गुण ब्रह्म में आस्था)

(2)

चिन्ता लागी से बुरी, काम करे से दो ।
के तो जी ते मारदे के बेमारी मरज हो ।।

(प्रीत की रीत)

(3)

भोरा लोभी फूल कली- कली रस ले
कांटा लाग्या परेम का तड़प-तड़फ जी दे ।।

(भ्रमर गीत कीकारका)

(4)

चलो सखी उस देश में, जहाँ किसन का राज ।
पाणी भरे दरशण करे एक पन्थ दो काज ।।

(प्रभु मिलन की आस)

(5)

प्यार बिन संसार में होती नहीं प्रीत ।
जिनकी सांची चितड़ी कोन्या होती उनकी जीत ।।

(भ्रमर गीत की व्याख्या)

(6)

चलो सखी उस देश में जहाँ बसे ब्रज राज ।
गोरस बेचत हरी मिले एक पंथ दो काज ।।

(प्रभु दर्शन की प्यास)

----

(7)

भगतजनों का लाज राख है सच्चे भगवान ।
तू मालिक भरमंड का तेरे नीचे बसे जहान् ।।

(निर्गुण ब्रह्म में आस्था)

(8)

नित ठिकाणे राखले लिया करें सुख राम ।
जिब धन होज्या पास में करे धर्म के काम ।।

(जीवन दर्शन)

(9)

माह बबका ब जेठ सिआल, साठ पछ्व नाल ।
सैदा कहे भाडली, बरखा गई पाताल ।

(असामायिक ऋतु परिवर्तन अनिष्ट कर)

(10)

दार तिरिया से लेखा मांगे, भू सुकड़ाई सावे ।
कह घाघा जी तीन बूतियां, उठाल गई हिक बकड़ेने रोवें ।।

(तीन मूर्खों का वर्णन)

(11)

पछ्वा चले सबादली, पछ्वा चले नरोलै ।
सहदेव कहे भाडली, बरखा गई कित बौड़ ।।

(वर्षा की सम्भावना)

(12)

सहदेव कहे सुन भाडली जेठ गालियां मत रो ।
जो सावन पंचक गले, नाहिब संवत हो ।।

(पंचक पांच अनिष्ट नक्षत्र)

1- मूर्ख (2) शुद्ध (3) किस ओर

" अष्टम अध्याय "

==============

बांगर लोक साहित्य में मानव संस्कृति

1· भू - भाग

2· नदियाँ

3· कृषि, वनस्पति एवम् जीव जन्तु

4· उद्योग धन्धे

5· पुरातात्विक क्षेत्र

6· ऐतिहासिक एवम् धार्मिक स्थानों का सांस्कृतिक महत्व :-

[1] कुरुक्षेत्र [2] पृथूदक [3] थानेसर [4] करनाल [5] कैथल [6] आदि कल्पु [7] पानीपत [8] जीन्द [9] रामरा [10] कलायत [11] सर्पदमन [12] सोनीपत [13] रोहतक [14] अन्य - नागमा, खापड़ा, लदाण, का भौरी, धमताज साहब, नरवाणा, कैरवां आदि का संक्षिप्त वर्णन ।

7· प्रमुख परम्पराएँ :-

[1] शैव परम्परा [2] नाथ परम्परा :- सिद्ध नाथों की योग चेतना [3] सन्त परम्परा - सन्तों का ज्ञान रहस्य [4] प्रशासन परम्परा [5] सैन्य परम्परा ।

8· सामान्य जीवन :-

[1] गाँव एवम् गाँव का स्वरूप [2] पनघट [3] घर - गृहस्थी [4] चौपाल [5] भोजन [6] वेश भूषा [7] आभूषण [8] शृंगार प्रसाधन [9] मनोरंजन [10] सामाजिक मेल मिलाप [11] अभिवादन और आशीर्वाद [12] अतिथि सत्कार ।

9· लोक विश्वास :-

[1] देवता- उपदेवता [2] चाँद और सूरज [3] धरती माता [4] गंगा जमना [5] राम और कृष्ण [6] भैरव [7] गूगा पीर [8] देवी की पूजा [9] पंच - पीर और सन्त महात्मा [10] पीपल, तुलसी, कुआँ, जोहड़ आदि [11] जन - जागरण [12] [illegible] [13] भूत प्रेत [14] शुभ चिन्ह 'जन्त्र' मन्त्र, तन्त्र और जादू टोने टोटके [16] शुभाशुभ स्वप्न [17] शकुन विचार ।

अष्टम अध्याय

बांगर लोक साहित्य में मानव संस्कृति

व्यक्ति के जीवन के सभी क्रिया कलाप तथा परस्पर एवम् वैयक्तिक निष्ठा-नैतिकता की बागडोर अपने हाथ में लेकर चलने वाला जो तत्व है, संस्कृति उसी का नाम है ।[1]

अब तक पिछले अध्यायों में बांगर लोक साहित्य की तात्विक समीक्षा की गई है । इस अध्याय में प्रादेशिक संस्कृति पर विचार प्रेषित है । इस प्रदेश की संस्कृति का स्थान भी भारतीय संस्कृति में अन्य प्रदेशों की तरह गौरवशाली स्थान है । मनुष्य के परस्पर भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक आदि स्थानों एवम् विचार धारा के सम्बन्ध ही उसकी संस्कृति को रूप प्रदान करते हैं । "संस्कृति वह पल्लवित कुसुम है जिसका जन जीवन की भूमि पर निर्माण होता है, उसकी पंखुड़ियाँ होती हैं जन जन के मन, बुद्धि एवम् आचरण में निहित तत्व । सम्पूर्ण लोक की सौन्दर्यानुभूतियों के मधुर सौरभ से यह पुष्प सुगन्धित है । एक ओर यह पुष्प जहाँ सहयोग, सत्कार, बन्धुभाव एवम् सहृदयता के मधु रस से परिपूर्ण है वहाँ दूसरी ओर रस्म रिवाज, लोकाचार, विश्वास की भीनी सुगन्धी से भी महका हुआ है । सहज सरल भोलापन एवम् निष्कपटता से भरा पूरा इसका देहाती रूप अपने आप में अनुपम है ।"[2]

और लोक संस्कृति के सम्बन्ध में डा० सत्येन्द्र के विचार महत्वपूर्ण हैं-प्रत्येक प्रकार का उत्पादन, प्रजनन, धर्म अर्थोपार्जन के साधन, जादू टोने, तंत्र मंत्र, जीवन चर्या के साधन, विलास वस्तुएं तथा प्रणालियां कला कौशल सभी का सम्बन्ध संस्कृति से है ।[3]

---

1. लोक साहित्य और पावरी भाषा — लेखक डा० एन०बी० चौधरी — पृ० 163
2. लोक साहित्य और पावरी भाषा — " " " " — पृ० 163
3. लोक साहित्य विज्ञान — लेखक डा० सत्येन्द्र — पृ० 463

अब इन्हीं बातों का सम्पर्क एवं सम्बन्ध आर्य संस्कृति से यहाँ की संस्कृति की प्राचीनता का आभास इसी से प्राप्त है कि वैदिक वाङ्मय के लगभग सारे उत्तरार्ध का सृजन इसी ब्रह्म देश में हुआ । इसलिये इसको ब्रह्मर्षियों का देश कहा गया । [1]

"एष ब्रह्मर्षि देशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः ।

यही पवित्र धरती उस समय ब्रह्मा की उत्तरवेदी के नाम से प्रख्यात थी, बाद में यह महाराज कुरु के नाम पर कुरुक्षेत्र कहलायी । [2] हमारी संस्कृति का आधार आज भी वैदिक संस्कृति को पुष्टि करता है । वैदिक संस्कृति में मनुष्य के कार्य विभाजन के रूपों को चार विभागों में विभक्त किया गया है:- [3]

ब्राह्मणो स्य मुखमासीद् बाहुराजन्यः कृत ।
उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ।।

यह प्रदेश पशुओं के पालने में अधिक महत्व रखता है । यहाँ प्रचलित इसकी प्रसिद्ध कहावत :- देशाँ में देश हरयाणा जित दूध दही का खाना । "इस बात की पुष्टि करती है । वैदिक संस्कृति में गाय, बैल, भैंस, घोड़ा आदि ग्राम्य पशु पालने का विधान है :- [4] माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानामृतस्य नाभिः ।
प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ।।

पारीवारिक जनों के परस्पर के व्यवहारार्थ वेद कहता है :- [5]

अनुव्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः ।
जायापत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ।
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा
सम्यञ्च, स्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया: ।।

वैदिक संस्कृति की एक और विशेषता पुर्नजन्म का सिद्धान्त है । श्रीमद्भगवद् गीता में श्री कृष्ण भगवान ने कहा है:- [6]

वासांसि जीर्णानि यथाविहाय नवानी गृह्णाति नरो पराणि ।
तथाशरीराणी विहाय जीर्णान्य नानी संयाति नवीन देही ।।

~~1• मनुस्मृति अध्याय 2 श्लोक 12~~
2• वामन पुराण अध्याय 22 श्लोक 22
3• वेद अध्याय । श्लोक 78
4• ऋग्वेद 8-101-15
5• अथर्व कां• 3-30-2 से 3
6• गीता अध्याय 2 श्लोक 22

उपर्युक्त विवरण यहाँ की संस्कृति की पुष्टि करता है क्योंकि आज भी यहाँ की संस्कृति वैदिक संस्कृति पर आधारित है । महाभारत में तो इसके पर्वों प्रदेशों, शासकों तथा यहाँ के जन जीवन की चर्चा आई है । इसके अतिरिक्त पाली तथा संस्कृत के अनेक ग्रन्थों में भी इसके सम्बन्ध में अनेक विवरण मिले है । गुप्त युग में रचित सुप्रसिद्ध भाण, "पादताड़ितकम्" में भी बड़े रोचक ढंग से हरियाणा के मशहूर नगर रोहतक के मृदंगियों, यौधेयों तथा बांगडू (बांगर) गीतों आदि का उल्लेख मिलता है:-[1] "अये न खलु रौहितकीये मार्दंगिके कविय पन यौधेयों वैन कर्णाक्यणीयमान: एव बलमालम्बितकुटम्बरो ।"

बांगर लोक संस्कृति यमुना को पार करके कहीं कहीं गंगा के पश्चिमी तट को भी छू लेती है । सांस्कृतिक इकाई के रूप में और उसके विस्तार को जानने में हम निम्न इसके अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों का विवरण कर रहे हैं :-

1. भू भाग :- हरियाणा को सामान्यत: बांगर की संज्ञा प्रदान की जाती रही है । बांगर का अर्थ है-:-उर्ध्व भूमि अर्थात ऐसी भूमि जो उभरी हुई हो । कदाचित् यमुना के खादर प्रदेश के मुकाबले में इस प्रदेश को बांगर की संज्ञा मिली ।

यहाँ सं. 1917 में एक भीषण अकाल भी पड़ा उसे "सतरह" का "काल" कहा जिसका वर्णन एक अकाल गीत में इस प्रकार है:-[2]

पड़ते अकाल जुलाहे मरे और बीच में मरे तेली
उतरते अकाल बनिये मरे, रुपये की रहगी धेली ।
चना चिरोंजी हो गया, अर गेहूँ होगे दाख
सतरह भी ऐसा पड़ा, चालीसा का बाप ।।

2. नदियाँ :- इस प्रदेश की नदियों में सरस्वती, दृषद्वती तथा आपगा ऋग्वेद की लोक विदित नदियाँ हैं । महाभारत तथा पुराणों में कई और नदियों के नाम आते हैं :-[3]

सरस्वती नदी पुण्या तथा वैतरणी नदी ।
आपगा च महापुण्या गंगा मन्दाकिनी नदी ।।
मधुस्रवा अम्लुनदी कौशिकी पापनाशिनी ।
दृषद्वती महापुण्या तथा हिरण्वती नदी ।।

---

1. भाण-पादताड़ितकम् पृ. 12
2. हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य लेखक डा० शंकर लाल यादव पृ. 464
3. वामन पुराण अ० 39/6-8

जैसे वैतरणी, आपगा, मन्दाकिनी, मधुस्रवा, वासुनदी, अम्म, कौशिकी, मार्कण्डु, हिरण्यवन्ती आदि । वैतरणी वर्तमान चैतन है । मत्स्य पुराण के अनुसार[1] :- गंगा कनखले पुण्या, कुरुक्षेत्रे सरस्वती" इस प्रदेश में सरस्वती का अस्तित्व रहा है । गंगा यमुना और सरस्वती भारतीय संस्कृति का प्रतीक रही हैं । सरस्वती का अस्तित्व यहाँ काफी समय तक रहा । पौराणिक विश्वासानुसार सरस्वती की सहायक नदियाँ भी थी जिनके नाम उपर दिये गये हैं । इनमें से दृषद्वती तथा आपगा अब भी वर्षा ऋतु में बहती है । दृषद्वती आज भी चौतंग या राखी नदी ही है और आपगा कुरुक्षेत्र के पास । मार्कण्डा - मारकण्डी नदी आज भी मौजूद है ।

3. <u>कृषि, वनस्पति एवम् खनिज</u> :- प्राचीन काल से यह प्रदेश गहरे वनों से व्याप्त प्राप्त था । यहाँ पर महाराजा कुरु ने स्वर्णिम हल चलाया था। प्राचीन काल में भी इस क्षेत्र की फसलों का वर्णन मिलता है-वनस्पतियों का भी ।[2]

यहाँ नीम, पीपल, बरगद, कीकर, जामुन, शीशम, तेन्दु, जाल, कैर, बेरी आदि वृक्ष प्रचुर मात्रा में खेतों एवम् नहरों तथा सड़कों के दोनों ओर दिखाई देते हैं ।

कपास, गन्ना, गेहूँ, चना, बाजरा, जौ मुख्य फसलें हैं । यह कहना गलत नहीं होगा कि गेहूँ के मामले में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में इस भूमि का सहयोग सदा सराहनीय रहा है । मूंग, उड़द, तोरिया, तिल, सरसों तथा विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ उत्पन्न करने में भी यह क्षेत्र पीछे नहीं है ।

विरकान नामक तत्व इन गहरे जंगलों की भूमि में पाया जाता था जिसका रंग सुनहरी होता था । परन्तु अब नौसादर काफी मात्रा में यहाँ होता है ।

4. <u>उद्योग धन्धे</u> :- गुड़, खाण्डसारी, चमड़ा उद्योग, तन्तु उद्योग, खाद्य तेलों के साबुन बनाने सम्बन्धी उद्योग, ग्रामीण घाणी तेल, मिट्टी के बर्तन आदि ग्रामोद्योग भी विकसित हुए हैं ।

---

1. मत्स्य पुराण

2. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया खण्ड 13 पृ. 145

सूती वस्त्र उद्योग, कागज, चीनी, कृषि उपकरण, मशीनी औजार, साईकल एवं साईकल संयन्त्र, बिजली का सामान, होजरी, सिलाई की मशीनें बनाना आदि उद्योग चल रहे हैं।

अम्बाला, रोहतक, करनाल, सोनीपत, पानीपत, यमुनानगर, कैथल, नरवाना आदि में औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्रों में विभिन्न काम धन्धों का प्रशिक्षण देने की सुविधाएं प्राप्त हैं।

5. <u>पुरातात्विक वैभव:-</u> पुरातात्विक वैभव के भण्डार के कारण यह प्रदेश भारत का प्राचीनतम सांस्कृतिक केन्द्र है। इसमें खुदाई तथा अन्य प्रयासों से पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के अवशेषों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:-

पाषाणकालीन अवशेषों में यहाँ पूर्व पाषाण और नव पाषाण दोनों कालों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। परन्तु उनके विषय में निश्चित नहीं हो पाया है। इतना ही कहा जा सकता है कि नव पाषाण काल के अवशेष सम्भवतः काश्मीर से प्राप्त बुर्जहोम संस्कृति व कांगड़ा घाटी की संस्कृति से सम्बन्ध रखते हों।

जीन्द, हिसार, रोहतक में ताम्रयुगीन ताम्बे और पत्थर के हथियार प्राप्त हुए हैं। कीमती पत्थर, ताम्बे तथा मिट्टी के मनके भी।

हड़प्पा संस्कृति के आगमन एवं ह्रास जीन्द के समीप राखीगढ़ी से प्राप्त जेवर, शंख, मिट्टी की चूड़ियाँ, चमक पत्थर की छुरियाँ, ताम्बे एवं पत्थर के हथियार, मिट्टी के खिलौने, इत्यादि बताते हैं।

कुलोध, पेहोवा, पानीपत, असन्ध,जीन्द्रोसकोदी आदि स्थानों से प्राप्त धूसर रंग के चित्रित बर्तनों को पुरातत्व वेत्ता द्वारा ईसा से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहाँ एक अज्ञात नामक नवीन संस्कृति का आगमन बताते हैं।

"यौधेयगण की जय" आदि विजय के चिन्हांकित सिक्के यौधेय काल की पुष्टि करते हैं जो रोहतक तथा नौरंगाबाद से मिले हैं। गुप्त वर्धन कालीन मिट्टी एवं पत्थर की सुन्दर मूर्तियों के अवशेष रोहतक, पेहोवा, थानेसर से और सिक्के

निशायक से मिलते है ।

पूर्व मध्यकाल में यह प्रतिहार साम्राज्य का अंग था । इस काल के राजाओं के शिलालेख, अनेक पत्थर की मूर्तियाँ । तोमर वंश व चौहानों के सिक्के भी प्राप्त हुए है - रोहतक, पेहोवा एवम् पानीपत में । उत्तरकालीन किले, मस्जिदें, मकबरे और बाग आज भी है ।

6. ऐतिहासिक एवम् धार्मिक स्थानों का सांस्कृतिक महत्व :- यहाँ बहने वाली सरस्वती तीरों पर ही वैदिक {वैदिक} वाङ्मय का सृजन ऋषि-मुनियों के द्वारा हुआ । भगवान शंकर, उनके पुत्र कार्तिकेय, कपिल, मनु इत्यादि को यह स्थान प्रिय रहा । महाभारत के पात्रों का यह स्थान धर्म-अधर्म के मध्य फैसला करने वाला कुरुक्षेत्र भी यहीं है :-[1]

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥

यह सन्देश भगवान कृष्ण ने गीता में इसी धर्मभूमि मानकर कहा है ।

{1.} कुरुक्षेत्र :- भगवान विष्णु के वरदानानुसार महाराजा कुरु के नाम पर इसका नाम कुरुक्षेत्र पड़ा । इसके पूर्व यह स्थान ब्रह्मर्षि देश कहलाया । वामनपुराण में इस विषय में एक कथा भी उपलब्ध है ।[2] इसका नाम भृगुक्षेत्र भी है क्योंकि प्राचीन प्राचीनकाल में भृगुऋषि ने इस प्रदेश में यज्ञों का आयोजन किया था । महाराजा कुरु ने कृषि के लिए यहाँ सोने का हल चलाया था । भगवान शिव से वृषभ और यमराज से महिष लेकर खेती आरम्भ की । देवराज इन्द्र ने प्रश्न किया:- राजन् क्या कर रहे हो? राजा ने उत्तर दिया:-[3]

राजा प्रवोचू सुकर्म तपः सत्यं क्षमां दयाम् ।
कृषाभि शौचं दानं च योगं च ब्रह्म चारिताम् ॥

अर्थात अष्टांग धर्म, तप, सत्य, क्षमा, दया, शौच, दान, योग तथा ब्रह्मचर्य के लिए भूमि तैयार की गई है और महाराजा कुरु के त्याग पर इसका नाम कुरुक्षेत्र

---

1. गीता अध्याय 1 श्लोक 1

2. वामन पुराण अध्याय 22 पृष्ठ 22

3. वामन पुराण अध्याय 22 पृष्ठ 23

पड़ा। ऐसा विश्वास है कि यहाँ आने पर सब पापों से मुक्ति मिल जाती है :-[1]

कुरुक्षेत्रं गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम् ।
इत्येवं वाच मुत्सृज्य सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥

संनिहितसर, ब्रह्म सरोवर, बाणगंगा, ज्योतिसर, भूतिसर आदि मुख्य तीर्थ हैं :-[2]

रन्तुकादौजसं चापि पावनाख्य चतुर्मुखम् ।
सरः संनिहितं प्रोक्तं ब्रह्मणा पूर्वमेव तु ॥
विश्वेश्वरादस्थिपुरं तथा कन्या जरद्गवी ।
यावदोघवती प्रोक्ता तावत् संनिहितं सरः ॥
विश्वेश्वराद् देववरात् पावनी च सरस्वती ।
सरः संनिहितं प्रोक्तं समन्तार्धयोजनम् ॥

थानेसर, ज्योतिसर, कालेसर, ब्रह्मसर में ही स्थित थे और संनिहितसर और ब्रह्मसर दो प्रसिद्ध सरोवर थे। ब्रह्मसर को ही आजकल कुरुक्षेत्र कहा जाता है। सूर्य ग्रहण पर यहाँ विशाल मेला लगता है और इस भूखण्ड की सीमाएँ कुरुक्षेत्र की 48 कोस की परिक्रमा, जो "रत्न यक्ष तीर्थ" से आरम्भ होती है। और इस प्रकार 360 तीर्थों की परिक्रमा का लाभ देती है। यह "रत्न-यक्ष तीर्थ" कुरुक्षेत्र से पीपली जाने वाली सड़क पर एक मील दूरी पर एक पवित्र सरोवर है। यहाँ स्वामी कार्तिकेय तथा रत्न यक्ष का मन्दिर है।

(2). <u>पृथूदक (पेहोवा)</u> :- पेहवा पृथूदक (पृथु + उदक अर्थात पृथु का सरोवर) का अपभ्रंश है। पुराणों में भी इसका वर्णन मिलता है :-[3]

पुण्यमाहुः कुरुक्षेत्रं कुरुक्षेत्रात् सरस्वती ।
सरस्वत्याश्च तीर्थानि तीर्थेभ्यश्च पृथूदकम् ॥

---

1. महाभारत वनपर्व तीर्थयात्रा 83-2
2. वामन पुराण अ0 22 श्लोक 51,53,55
3. पद्म पुराण स्वर्ग - 27

कुरुक्षेत्र बड़ा पुण्यमय है, किन्तु कुरुक्षेत्र से भी अधिक पुण्यमयी सरस्वती है। सरस्वती से भी उसके तटवर्ती तीर्थ पवित्र है और उनसे भी अधिक पृथूदक पुण्यमय है। महाराज पृथु ने यहाँ मन्दिर बनवाया जिसका नाम पृथ्वीश्वर का मन्दिर है। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को यदि कृत्तिका नक्षत्र हो तो वारुणी योग होता है। इस दिन इस पर तेल और सिन्दूर चढ़ाया जाता है। धन, अन्न तथा पुत्रों की वृद्धि का माहात्म्य है। चतुर्मुख महादेव का मन्दिर और अष्टधातु की हनुमान जी की मूर्ति दर्शनीय है। अमावस्या को श्राद्ध तर्पण और पिण्ड दान भी करते है।

[3] थानेसर :-

"स्थाणीश्वर" मन्दिर की यहाँ स्थापना की गई। स्थाणीश्वर यानि शिव का स्थान। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग राजा हर्ष के शासन काल में यहाँ आया - उसने यहाँ की समृद्धि एवम् शासनकाल का इतिहास में अच्छा वर्णन किया[1]। सांस्कृतिक दृष्टि से भी इस स्थान का काफी महत्व है। राजा हर्ष भी संस्कृत के विद्वान थे-उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना भी की थी। यहाँ का मन्दिर शिव का प्राचीनतम मन्दिर है। धार्मिक शिक्षा एवम् व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है। निःसन्देह ही धार्मिक परम्परा ने थानेसर को उत्तरी भारत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने में अत्याधिक सहायता प्रदान की है।

[4] करनाल:-

कुन्ती के पुत्र कर्ण और महाभारत के प्रसिद्ध एवम् दानी योद्धा की राजधानी थी। यहाँ पर कर्ण नामक एक तालाब [सरोवर] है। जो महाभारत काल का माना जाता है।

[5] कैथल :-

इसे पौराणिक कपिस्थल तथा हनुमान जी का जन्म स्थान बताया जाता है। यहाँ के सरस्वती तटों पर मान्स तीर्थ, विष्णुतीर्थ, सप्त-ऋषि कुण्ड, वासुकि तीर्थ है। आपगा, मान्स तीर्थ, वासुकि यक्ष, एवं अन्य आदि तीर्थ कैथल के आसपास है।

[6] आदि फल्गु :- करनाल जिले में फरल गाँव के समीप इस स्थान का पिण्ड -

---

1.

दान की दृष्टि से काफी महत्व है। पिण्ड दान हमारी संस्कृति का मुख्य अंग है। सोमवती अमावस को यहाँ स्नान किया जाता है।

[7]. पानीपत:- प्राचीन कुरुक्षेत्र की सीमा के साथ लगता हुआ पानीपत का ऐतिहासिक दृष्टिकोण काफी समय से चला आ रहा है। पानीपत में कई ऐतिहासिक लड़ाईयाँ लड़ी गई। कहते हैं कि ईसा पूर्व 707 में श्री महाराजा पाण्डपाणी ने बसाया था। महाभारत में पाण्डवों को मिलने वाले पाँच पतों [ग्रामों] में से एक यह भी है। यह सूफी सन्तों का केन्द्र रहा है। सुप्रसिद्ध उर्दू शायर "हाली" का जन्म स्थान भी यही है।

[8] जीन्द :- जीन्द में भूतेश्वर नाथ [शिव] का मन्दिर है इसी इर्द-गिर्द नीचे पानी में कमल के फूल दृष्टिगोचर होते है। इसी में रामहृद, पिण्डतारक तथा कपिलयक्ष तीर्थ हैं। जीन्द राज्य की राजधानी भी यही था। सोमवती अमावस्या को पिण्ड तारक तीर्थ पर मेला लगता है। यह पिण्डारा के नाम से भी प्रसिद्ध है :- कड़े एटे धूले बाबू पाओंगे पिण्डारा के मैंमे माई। उक्ति बड़ी प्रचलित है। यह जीन्द से चार किलोमीटर दूरी पर है यहाँ के सरोवर के घाट प्रायः पक्के है। सोमवती मावस को पितृ तर्पण करने का माहात्म्य माना जाता है।

[9] राम-ह्रदय [राम रा] :- यह जीन्द जिले का पवित्र एवम् प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ पर परशुराम ने यज्ञ किये इसीलिये इसका नाम राम-ह्रद [परशुराम का तालाब] पड़ा। यहाँ के घाट पक्के.... यहाँ मन्दिर और धर्मशालाएं भी हैं। अमावस्या को भी यहाँ मेला भरता है।

[10] कलायत- कलायत:- जीन्द जिले के इस प्राचीन नगर में कपिल मुनि तीर्थ और कपिलेश्वर महादेव का धार्मिक एवम् प्राचीन दर्शनीय मन्दिर है।

यह मन्दिर विशेष प्रकार की ईंटों से बनाया गया है । इसमें लोकहीं भी चूना नहीं लगाया है । ऐसा कहा जाता है कि महाराजा शालि-वाहन ने इसे बनवाया था । उनके समय का बना हुआ एक रूप का कुआं भी है ।

{11} सर्पदमन {सफीदों} :- जीन्द जिले के इस नगर में महाराजा जनमेजय ने यज्ञ करवाये थे । इस स्थान पर मृत्यु पाने वाले की अस्थियों को गङ्गा, हरिद्वारादि स्थानों पर प्रवाहित नहीं किया जाता है । पौराणिक मता-नुसार यह मुक्ति क्षेत्र है ।[1]

{12} सोनीपत :- पाण्डवों को दिए जाने वाले पांच गांवों में से सोनीपत भी एक है । आजकल सोनीपत पूर्ण जिले के रूप में विद्यमान है । इसके आस-पास के इलाकों में सूर्य, यक्ष, यक्षिणी आदि शिव एवं उनके वाहन नन्दी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं । यहाँ के प्राचीन खण्डरातत से ऐसा आभास होता है कि यह किसी जमाने में एक वैभव शाली नगर था ।

{13} रोहतक :- शिवजी पुत्र कार्तिकेय ने इसे बसाया था । महाभारत में नकुल दिग्विजय में भी इसका उल्लेख मिलता है[2]:-

"कार्तिकेयस्यदयितं रोहीतकमुपाद्रवत" प्राचीनकाल में रोहेड़ा जंगल काटकर इसे बसाया गया । इसके उत्तर में खोखरा कोट नामक प्रसिद्ध खेड़ा है । यौधेय काल में भी यह प्रसिद्ध नगर था । इसी नगर के समीप महाभारत के युद्ध में दुर्योधन की सेना के पड़ाव भी थे । इसके पश्चिम में प्राचीन गोकर्ण है । गोकर्णेश्वर महादेव का मन्दिर भी है तथा पास में ही अजादे का रैन बसेरा नामक एक मुगलकालीन स्थान है । इसके पास 2 किलो-मीटर की दूरी पर अस्थल बोहर नामक नाथ सम्प्रदाय वालों का {महन्तों}

1• वाराह पुराण पृ0 7।

2• महाभारत सभापर्व अ0 32

का एक बहुत बड़ा एवम् प्राचीन मठ भी है । यह आयुर्वैदिक शिक्षा प्रसार का प्रमुख केन्द्र भी है । यहाँ पर भक्त फुम्मन की समाधि पर अखण्ड ज्योति जल रही है ।

[14] <u>अन्य:-</u> नागमा में गंगा जी का मेला, आण्डा गाँव में शिवजी का मेला लदाण में बाबा गैबी का मेला, कन भौरी में कटी देवी के नाम से दोनों नवरात्रों में बहुत भारी मेला लगता है ।

कहते हैं कि धमताण साहब [जीन्द] में गुरु गोबिन्द सिंह ने अंग्रेजों से युद्ध करते समय सफर के दौरान इस स्थान पर कुछ समय दम [आराम] लिया जिससे इस गाँव को दमदमा साहब और फिर धमताण साहब कहने लगे ।

नरवाना को पहले नरवाणा कहते थे क्योंकि रांगड़ नाम की यहाँ रहने वाली जाति मरने मारने पर उतारू रहती थी । बेलरखां [जीन्द] गाँव के विषय में यह प्रचलित है :-

बेलरागढ़ा ने बेलरखां राख्या,
फेर जा बसा बलाल ।
भाद्दू कह बेलरखां म्हारा,
फेर चौपड़ा धत्तरवाल ॥

7. <u>प्रमुख परम्पराएँ</u> :-

शैव, नाथ एवम् सन्त परम्पराओं का सम्बन्ध इस प्रदेश से रहा है । सारा का सारा प्रदेश धार्मिक स्थली रहा है । इसके अलावा प्रशासन और सैन्य परम्परा की ओर भी नौजवानों का रुझान रहा है । इन परम्पराओं का उल्लेख हम यहाँ बारी बारी कर रहे हैं :-

[1] <u>शैव परम्परा</u> :- शिवजी महाराज के साथ इन निवासियों का अटूट सम्बन्ध रहा है । यहाँ के प्रत्येक गाँव में शंकर भगवान का मन्दिर मिलेगा और "हर हर

बम लहरी " का उच्चारण भी लोगों की जबान पर थिरकता मिलेगा - इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जनमानस में शिव सर्वाधिक लोकप्रिय इष्ट रहे हैं । प्राचीन प्राप्त मुद्राओं पर शिवजी महाराज अपने नन्दी के साथ खड़े हैं । यही इस तथ्य की पुष्टि करते हैं । यहाँ के लोग शिवशंकर भगवान के अनन्य भक्त हैं । स्थाणीश्वर का स्थाणुशिव मन्दिर, रोहतक का गोकर्ण शिवालय, जीन्द का भूतेश्वर मन्दिर आदि ऐसे ही प्राचीन मन्दिर माने जाते हैं । बांगर की उत्पत्ति हम "भांगर" से मानते हैं जिसका सम्बन्ध भांग के क्षेत्र से है और भांग शंकर को अतिप्रिय रही है :-

भांग रगड़ के पिया करूँ मैं कुण्डी सोटे वाला हूँ
तू राजा की राजकुमारी मैं जबर भरोटे वाला हूँ

पार्वती शक्ति का प्रतीक मानी गई है । क्योंकि उमा-शंकर के वामांग आई थी । यहाँ के लोगों में शिवजी के प्रति अटूट श्रद्धा एवम् भक्ति का एक प्रमाण यह भी है कि श्रावण तथा फाल्गुन की शिवरात्रि को लोग हरिद्वार से पैदल गंगा जल लाते हैं और शिवालय में चढ़ाते हैं जिन्हें कांवर (कावड़) कहा जाता है ।

रोहतक नगर को शिव पुत्र कार्तिकेय का ही माना गया है कार्तिकेय देवताओं के सेनापति हुए[1] । उनके वाहन मयूर को लोगों के मकानों पर प्रतीकात्मक रूप में आज भी देखा जा सकता है । .... गौरा की लाला ... तेरी जय जय । के माध्यम से गणेश जी की पूजा भी यहाँ होती है । शिवजी की पूजा का मुख्य कारण यह भी है उनका वाहन श्वेत वृषभ है जिसका वर्णन कालीदास के रघुवंश में इस प्रकार मिलता है[2]:-

कैलास गौरे वृष आरू रुक्षो पादार्पणानुग्रह: पूत पृष्ठ: ।
अवेहि मां किंकर अष्ट मूर्ते कुम्भोदर नाम निकुम्भ मित्रम् ॥

यहाँ की नस्ल के बैल कैलास पर्वत के समान श्वेत होते हैं और

---

1. वाराह पुराण विशेषांक कल्याण पृ० 72
2. रघुवंश लेखक कालीदास पृ० 11

भोले शंकर है .... कैलाशों के वासी ।

[2] <u>नाथ परम्परा</u>:- नाथ सम्प्रदाय "आदिनाथ स्वयं शिव है और मूलतः समग्र नाथ सम्प्रदाय शैव है ।" आचार्य हजारी प्रसादद्विवेदी अपनी पुस्तक नाथ सम्प्रदाय में ऐसा लिखते है।[1] इस प्रकार शिव पूजक भावना के कारण नाथ सम्प्रदाय हरियाणा में अविच्छिन्न रूप से पनपता रहा है । प्रमाणित बारह शाखाओं में से गोरख नाथ ने छः पंथ छांट लिये । सरस्वती नदी के तट पर स्थित पेहोवा में बारह पंथ धर्म प्रचार के लिए इकट्ठे होते थे। इसका वर्णन मस्तनाथ चरित्र में इस प्रकार मिलता है :-

ठुला बारह पंथ का रहा बहुत गम्भीर ।
एक सहस्त्र योगी जमे, नदी सरस्वती तीर ।।

मस्तनाथ जीवन चरित्र में इस बात की पुष्टि मिलती है कि पागल पंथ के प्रवर्तक चौरंगी नाथ [पूरन भगत] ने रोहतक के ग्राम बोहर में बारह वर्ष घोर तपस्या की :-

एक समय सिद्ध चौरंगी आये बोहर ग्राम अगी । और यहाँ के रमणीय , सुघन जंगल की शोभा तथा मयूरों को देखकर कहा गया :-

बारह वर्ष यहाँ तप करूँ , पार ब्रह्म का ध्यान धरूँ ।
सिद्धि शिरोमणी नाथ चौरंगी महा कठिन तप किन्हा जी ।।

चौरंगी नाथ की तपस्या से बोहर नाथ परम्परा का गढ़ एवम् मठ बन गया । इनके शिष्यों की निरन्तर वृद्धि होती गई । यहाँ की जोगी जाति का आदि पुरूष चौरंगी नाथ था ।

नरमाई के शिष्य अपने नाम के आगे "नाथ" जोड़ने लगे । यहाँ की नाथ परम्परा की आई पंथ परम्परा की प्रसिद्धि का श्रेय बाबा मस्त नाथ को ही जाता है । ये बारह वर्ष तक अडाईं रूप में रहे ।

---

1. नाथ सम्प्रदाय :- लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ0 28

कान चीर कर मुद्रा धारण करने पर योगी " कनफटा " कहलाते हैं इनसे पूर्व औघड़ ।

> अभय दान दीना गुरु नाथा, शिष्य नवायो गुरु पद माथा ।।
> द्वादश वर्ष लों औघड़ राख्या, सेवा टहल परम रस चाखा ।।
> नगर पेहवा कान फड़ाए, फेर दरसनी नाथ कहलाए ।।
> सत्तरा सै अठासी सम्वत् चीरा, मस्तनाथ ने लीना चीरा ।।

मस्त नाथ ने भी बोहर में बारह वर्ष तक तपस्या की । मस्तनाथ के गुरु भाई ने कोटा [जीन्द] में तपस्या की । योगी, जोगी की तरह यह वैरागी जाति भी बन गई जिसका अर्थ वैराग्य लेने से है ।

बौद्धों का उद्धृत ? प्रभाव नाथ सम्प्रदाये के कारण हरियाणा को पदाक्रान्त न कर सका । क्यों कि बौद्धों की अपेक्षा यहाँ लोक मानस नाथ सम्प्रदाये से अधिक निकट रहा । नाथ सम्प्रदाये के आदि प्रवर्तक शिव यहाँ के उपास्य देव भी बहुत कुछ नाथ सम्प्रदाय के कारण रहे । यहाँ के खान पान में निरामिषता तथा सत्याचारणता की भावना नाथ सिद्धों के अक्षय प्रभाव के कारण सुस्थिर रही । आर्य समाज का प्रभाव भी यहाँ नाथ परम्परा की धार्मिक भावना के कारण पड़ा । नाथ सम्प्रदाय का संस्कृत के प्रचार में योगदान रहा है । साधुओं के जटा जूट से देखकर शिव के अवतार का भ्रम होने लगता है । वैरागी भभूति के गुणगान करते थे । वैराग्य में हरिभजन, ज्ञान और साधुसंगति को आधार माना है :-

> दुनियाँ में रे बाबा नहीं रे गुजारा किसी ढब से
> घर में रहे तो ऐसे जोगी, बन में रहे विपत का भोगी
> माँगे भीख बतावें लोभी त्यागी बना मैं क्या अब से
> दुनिया में रे बाबा . . .

<u>सिद्ध नाथों की योग चेतना</u> :- चौरासी सिद्धों ने अज्ञान के सदाचार पक्ष को पुनः मौलिकता एवम् जीवन दान दिया । उन्होंने हठ योग को मान्यता दी

" अलख जगाने की प्रवृति भिक्षाटन के समय आज भी ग्राम -2 मे अल्हड़ ध्वनि सुनाई दे सकती है[1] :-

किस रम ग्या जोगी मढ़ी रे तेरो सूनी
जोगी करै मढ़ी की रखस्या
मांग्य खुवावै उसने भिक्स्या
कूण करैगा वा की परिखस्या
जल गई लाकड़ी बुझ गयी धूणी
किस रमग्या जोगी मढ़ी रे तेरी सूनी ।

नाथ परम्परा को बौद्ध परम्परा की अन्तिम कड़ी माना जाता है । इस प्रदेश के जन-2 करुणा, दया, अहिन्सा के प्रति लगाव से ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ बौद्धों का भी प्रभाव रहा । बुद्ध की तरह ये लोग शरणागत पशु पक्षि की रक्षा करना अपना धर्म नही समझते बल्कि उनकी सेवा कार्य हृदय से करते है[2] :- नानक दुखिया सब संसार अर्थात " दुनियाँ ते फूक्याँ का घर से " कहकर दुःख वाद के दर्शन को भी स्वीकारा है :-

आगाँ मैं दुःख से कोंपा मैं दुःख से
पेड़ कटै जद डालियाँ मैं दुःख से
न्यू मत जाणै ए बेबे . . . . .
तालाँ मैं दुःख से ए कलियाँ मैं दुःख से
ताल सूखे जब मछियाँ मै दुःख से
न्यू मत जाणै ए बेबे . . .

[3] सन्त परम्परा :- अर्थात भक्ति काल से पहले यहाँ नाथ पन्थी साधु सन्तों की वाणियाँ काफी जन प्रिय रही । उसी परम्परा के सहारे यहाँ सन्त कवियों ने कबीर और नानक की भक्ति परम्परा को प्रवाहित किया । यहाँ की सन्त परम्परा का पहला नाम धन्ना जाट आता है :- " धन्य धन्ना के भगत को,
जिन्हो बीज अंकुर भयो " ।

---

1. हरियाणा संवाद पत्रिका नवम्बर 80 पृ0 40
2. हरियाणा संवाद पत्रिका नवम्बर 80 पृ0 41

सन्त गरीबदास, सन्त जैतराम, सन्त नितानन्द, सन्त निश्चलदास, सन्तसदे दास आदि सन्त परम्परा के प्रमुख कवि हुए । हरियाणवी समाज पर उनके सदाचार एवं वाणियों का प्रभाव अंकित रहा है:-

सन्तों का वचन - रहस्य :- सतगुरु के सम्मुख निर्गुण और सगुण ब्रह्म को मिथ्या घोषित किया गया है और कई बार उन्हें ही ब्रह्म ठहराया है:-

सरत पुरुष सतगुरु रहो, और न कोई ब्रह्म ।
सरगुण निरगुण दोय जो, माया के है भरम ।।
और ब्रह्म सब भरम है, जाकूं करिये दूर ।
सतगुरु दिन दयाल का, जिस देखोगे नूर ।।

कबीर दास की "बागर बीच कबीरी" वाली उक्ति इसी भूमि में साकार होती है । क्योंकि यहाँ सन्तों के सत्संग, भक्तों के कीर्तन और शब्दों, भजनों और हरजस गीतों के माध्यम से हरि भक्ति की प्रेरणा जन जन में फूंकने का प्रयत्न करती है । उदाहरण के लिए मानव जीवन के लिए "चरखे" का प्रतीक प्रयुक्त करते हुए उनकी निम्न उद्बोधन परक पंक्तियाँ साधारण ग्राम वासी पुरुष को ही नहीं गाँव की स्त्री को भी सुबोध एवम् सरल मालूम पड़ती है :-

चरखा अजब अमोला रे, बड़े भाग से पाया ।
चरखा पड़ा पड़ा घुन आया, काते क्यूं ना री ।।
बिन काते तेरो होगी कुवारो माने क्यूं ना री ।।

अभिमानी नर के माध्यम से मनुष्य को हरि भजन की स्मृति कराने का भी सहज एवम् सरल भाव से दर्शाया गया है :-

भजन करे ने अभिमानी, काया तेरी हुई रे पुराणी ।
राम रटे ना अभिमानी, चादर तेरी हुई रे पुराणी ।
नौ दस मासां बनते हो गये, बाहो ए जगत में आई ।
काया तेरी हुई रे पुराणी ।

कबीर की पुत्री कमाली ने ज्ञान दृष्टि की सरल लोकवाणी में एक रहस्य के भीतर मकड़ी के तन्तु जाल की भान्ति समावेश किये हुए है :-

कहती कमाली कबीरा जी की बाली
वासमें नित आवनी जावनी
भजन करे ने अभिमानी । ... काया तेरी ....

[4] प्रशासन परम्परा :- यह क्षेत्र सदैव वीरों की जननी रहा है-इतिहास इस बात का गवाह है । यह क्षेत्र गणतन्त्र प्रणाली पंचायत पद्धति पर चलता आया है । सभी गणों व खापों का अधिपति या विशेष नेता होने के कारण गणेश का दूसरा नाम "विनायक" पड़ गया :[1]

विनायकः कर्मविघ्नसिद्ध्यर्थं विनियोजितः
गणानामाधिपत्ये च रुद्रेण ब्रह्मणा च ॥

इसी प्रकार गणराज्य की स्थापना शिवजी महाराज ने आदि सृष्टिकाल में देवताओं की सहायता से की । यही गणराज्य उनके पुत्र विनायक गणेश जी एवं कार्तिकेय की परम्परा से मिला । इस भू-भाग में "सर्व खाप पंचायत" नाम का सुदृढ़ संगठन रहा है । इतिहास के पृष्ठ इसकी बहादुरी लिखने में पीछे नहीं हटे ।

तैमूरों ने इस प्रदेश को रौंध देना चाहा परन्तु यहाँ के वीरों ने जिसका संचालन सर्व खाप पंचायत कर रही थी ने तैमूरों पर हर हर महादेव का शक्तिदायक उच्चारण करते हुए असहनीय आक्रमण किए इसमें यहाँ की वीरांगनाओं ने भी कन्धे से कन्धा मिलाकर वीरों का साथ दिया है । पानीपत, मेरठ मुजफ्फर नगर, सहारनपुर, हरिद्वार तक पंचायत सेना ने तैमूरों के पाँव नहीं जमने दिये । यहाँ के लोगों में सर्व खाप पंचायत के प्रति अटूट विश्वास रहा है । सर्वखाप पंचायत में सभी सम्प्रदायों और बिरादरियों के लोग सम्मिलित रहते है ।

---

1. याज्ञवल्क्यस्मृति आचाराध्याय श्लोक 27।

महर्षि पाणिनि जी ने -"निवास चितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च"[1] सूत्र में निकाय शब्द की सिद्धि की है और "संघे चानौत्तराधर्ये"[2] सूत्र का अर्थ निकाय शब्दसे ग्रहण होना बताया है-जिसका अर्थ "भाईचारा" माना और इसी अर्थ का निकाय शब्द का अर्थ यौधेयों के गणराज्य में भी होता था । राजनैतिक संघों तथा गणों के लिए ही निकाय शब्द का प्रयोग हुआ है "भद्र निकाय" लेखवाली मिट्टी की मोहर भी यही सिद्ध करती है ।[3] इसी प्रदेश में स्थित अपने बृहस्पति, कात्यायन और नारद ने गणों के परम्परागत विधानों का संकलन किया । जब सारे देश में गण व्यवस्था का ह्रास हो चुका था तब भी यहाँ यौधेयों का अपना यौधेयगण विद्यमान था ।"यौधेय गणस्य जयः" उनकी मुद्राओं पर आज भी मिलते हैं - प्रमाण के रूप में ।[4] यौधेयों की सबसे प्राचीन मुद्राओं पर शिव अपने वाहन नन्दी के साथ खड़े हैं ।[5] शिव को यौधेयों ने गण-व्यवस्था का प्रतीक माना है क्योंकि उनके पुत्र गणेश को गणपति कहा गया है । और कार्तिकेय भी गण व्यवस्था के समर्थक माने जाते हैं । क्योंकि उनका वाहन मयूर चिन्ह भी उनकी पताका पर अंकित रहता था । कुमार कार्तिकेय तथा यौधेयो के झण्डों का चिन्ह मयूर ही था । इसीलिए महाभारत काल में ही यौधेयों का नाम "मयूरक" पड़ गया था ।[6]

तत्र युद्धं महच्चासीत्, शूरैर्मत्तमयूरकैः ।
मरुभूमि [मयूर भूमि] सः कार्त्स्न्येन तथैव
बहुधान्यकम् ॥

विदेशी शासन काल में भी यह गणराज्य का स्वरूप थोड़ा थोड़ा कायम रहा । आजादी के पश्चात् सरकार ने गाँव की पंचायत, खण्ड पंचायत समिति और जिला परिषद् निर्वाचित की जाने लगी । यहाँ की पंचायत परम्परा अन्य प्रान्तों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ और स्थापित रही । पंचायतों

---

1. अष्टाध्यायी पाणिनीजी 3/3/41
2. अष्टाध्यायी पाणिनीजी 3/3/42
3. यह मोहर गुरुकुल झज्जर [हरि. रा.] के संग्रहालय में सुरक्षित है ।
4. प्राचीन खण्डहरों से प्राप्त मोहरें, मुद्राएँ जो आजकल गुरुकुल झज्जर [हरियाणा] के संग्रहालय में विद्यमान हैं ।
5. ...... वही ... . ।
6. महाभारत सभा अ0 32

ने यहाँ के जन जीवन की सभी क्रियाओं में निर्णायक शक्ति का कार्य किया है:-[1]

वेद में कहा गया है :- समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम् ।

समानं मन्त्रम् भिमंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

यहाँ की परम्परा इस भित्ति पर पूर्णतः सफल रही । पंचायत प्रणाली आज भी हमारे प्रान्त में है । [

[5] <u>सैन्य परम्परा</u> :- यहाँ के नौजवानों को सेना में भर्ती होने का चाव सदा से ही रहा है जो वर्तमान में भी कायम है । वीरत्व इस धरती के लिए कोई नई चीज नहीं है, इसकी एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पृष्ठभूमि है ।[2] इस प्रदेश के वीरों के लिए मनुस्मृति में भी कहा गया है :-[3] कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पंचालाः शूरसेनकाः" सेना में भर्ती होने का यहाँ के नौजवानों में चाव देखिए:-"

होलो न फौज में भरती बाहर खड़े रंगरूट

भरती होलो रे बाहर खड़े रंगरूट

वीरगाथा काल की वर्णित क्षत्राणियों की भान्ति यहाँ वीरांगनाएँ अपने पतियों को रण में जूझने की खातिर प्रेरित कर उन्हें फौज में भरती होने के लिए कहती है :-

पिया भरती होले पट जा छत्तरापन का तोल

जरमन में जाके लड़िये अपने माँ बापाँ का नाँ करिये

ले तोपाँ के आगे अड़िए अपनी छाती ने दे खोल .... पिया..

दोनों सेनाओं के मध्य भगवान श्री कृष्ण का कुरुक्षेत्र में दिया गया उपदेश यहाँ के जीवन पर पूर्णतया चरितार्थ होता है:-[4]

यदृच्छया चोपन्नं स्वर्गद्वारम पावृतम् ।

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ।

---

1. वेद पृ० 15
2. हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन लेखक देवी शंकर प्रभाकर पृ० 56
3. मनुस्मृति अ० 2 श्लोक 19
4. गीता अ० 2 श्लोक 32

"हे पार्थ । अपने आप प्राप्त हुए और खुले हुए स्वर्ग द्वार सदृश इस प्रकार के युद्ध तो भाग्यवान क्षत्रिय ही पाते हैं ।"

मरणे पै धुर सुरग मिलेगा
जीवण पै धरती को मेहमां
इस खातर मैं कहूँ ख़ुया हो
लडू निसचै दुसमन ने सहमां ।[1]

उपरोक्त युक्ति को यहाँ के स्त्री और पुरुष दोनों ही इस बात को चरितार्थ करते हैं । ऐसा लगता है कि उनके रग रग में वीरता का रक्त संचार करता है :-

जा बालम योह तेरो ज्वानी पूँजी मां धरती की ।
रही भूगा फ़ूक मैरो बो तन्ने विदा करती की ।।

पत्नि अपने पति को देश की खातिर भेजने को उद्यत रहती ही है-और वे स्वंय भी युद्ध में जाने को तैयार रहती हैं :-

युद्ध मैं गैल्याँ चाल्लूँगी
जो म्हारी धरती नै ताक्कै दबडूँगी उस दैड नै
बालम मैं गैल्याँ चाल्लूँगी ।

महाभारत से पहले भी सरस्वती के पावन तट पर महाराजा भूमंधाता और भरत जैसे चक्रवर्ति नरेशों ने राजसूय यज्ञ और अश्वमेघ यज्ञों की रचना की[2] :-

तत्रैव भरतो राजा चक्रवर्ती महायशाः ।
विंशतिः सप्त चाष्टौ च हयमेधानिपाहरत् ।।

उनका स्मृति चिन्ह आज का पेहवा जो पृथूदक का अपभ्रंश है। यहाँ

---

1 हरियाणवी गीता गीता लेखक श्री नानक चन्द शर्मा पृ० 40
2. महाभारत वनपर्व अ० 90 श्लोक 8

पृथूदक से बढ़कर और कोई तीर्थ नहीं है :-

पृथूदकात् पुण्यतमं नान्यत् तीर्थं नरोत्तम ।

यहाँ युद्ध देवता कार्तिकेय का मन्दिर है । समस्त भारत में यह एक ही है । और महाभारत के पश्चात् भी यहाँ के बहादुरों ने आक्रमणकारियों को छठी का दूध याद दिला दिया ।

यौधेय गण का विशाल तथा शक्तिशाली गणराज्य ही तो था जिसके भय से सिकन्दर महान भी आगे बढ़ने से अपने कुन्द नहीं कर सका था । वही यौधेय 25 वर्ष तक विक्रमादित्य के साम्राज्य वाद एवम् विस्तारवाद के खिलाफ लड़े । क्योंकि वे गणराज्य के पुजारी थे । राजा हर्ष ने एक सुदृढ़ और सुगठित शासन साम्राज्य की बुनियाद डाली थी । वह भारत का स्वर्ण युग था । इसी सबल स्वर्ण परम्परा पर खड़ी है -यहाँ की सैनिक संस्कृति ।

यहाँ के शिवालय इस बात का प्रमाण है कि यहाँ के वीर शिव और शक्ति [उमा] के उपासक है । वे बहादुर अपने दुश्मनों के दाँत खट्टे करने का हौसला रखते है क्योंकि युद्ध देवता इनका उपास्य देव रहा है । यहीं पानीपत और तरावड़ी के निर्णायक युद्ध हुए । "हर हर महादेव" और " जय भवानी" का जयघोष करते करते यहाँ के वीर जवान दुश्मन से जाकर टकराने में तनिक भी आगे नहीं मानते । जोगी एवम् भाट्टों से गाया गया वीरता से भरा हुआ यह गीत देखिये :- भूरे को माँ बोलती सुण भूरा मेरा

तोड़ बगादो कंगणा पकड़ो समसेरा

अपणे बैरी के दल्याँ में ब्याह होज्या तेरा

भाज्या होग्या भारता तलवारा फेरा

सैर गढ़ा के पकड़िए तूं रहा भौंरा

तूं औढ़े ने चूदड़ी मने दे दे घोरा

मैं पडू दलाँ में टूट के मार ढांडू टेरा ।

1• महाभारत वनपर्व तीर्थ यात्रा पर्व 83/14

समय के ज्वार-भाटे ने कितने ही साम्राज्यों का उत्थान पतन किया । परन्तु यहाँ की संस्कृति और सामाजिक परम्पराएँ सदैव कायम रही । यद्यपि उसके बदले में यहाँ के वीरों ने इसकी कीमत भी चुकानी पड़ी । परन्तु कभी हार नही मानी । 1857 की महान क्रान्ति का सूत्रपात भी यहाँ के वीरों ने किया । पिछले महायुद्धों में भी यहाँ के वीर सैनानियों ने दुश्मन की तबाही कर डाली । किसे कभी भुलाया जा सकता है ? प्रथम महायुद्ध में छः नम्बर की जाट पल्टन का एक भी जवान पीछे नही हटा सभी वीरगति को प्राप्त हुए :-

बैरी ने गोला गडुयाजा फटा अम्बर मैं
गर्द मैं सिपाही भाजे रोहटी छोड़गये ल
लगर मैं

है उन वीरां का के जीते जिनके बालक छः नम्बर मैं

1962 में चीन के साथ तथा 1965 और 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में भी यहाँ के वीरों ने दुश्मनों को धरती सुँघा दी । डोगरार्ड के ऐतिहासिक प्रसिद्ध युद्ध में यहाँ की जाट पल्टन ने पराक्रम के चिर स्मरणीय मान दण्ड स्थापित किए :-

हरद मेरे हिन्दोस्तान की जड़ै ऊंचा से पाकिस्तान की
भेजदे पति ने ए बेबे पति भरतार का काम हो से
देश के ऊपर कट के मरज्या असली का जाम हो से
करजा ए कुरबानी माँ बापां का नाम हो से ..हरद मेरे

आज भी यह प्रदेश सैनिक सेवाओं में अग्रणी है । यहाँ गाँवों में फौजी की बड़ी इज्जत करते है । एक बहू (फौजी की पत्नि) अपनी सासू से कहती है । जिसमें वह अपने पति फौजी की याद में किस प्रकार विभिन्न वस्तुओं का सहारा लेकर उसे याद करती है और अपनी सास का चित्रण है

इस प्रकार कहती है :-

सास री ! भादूया सा दामण सिमां,
चक्कर काटटै कली कली ।
सास री ! बहुया सा कुड़ता सिमां,
जेबां मैं राखूं टैम घड़ी ।
बहू ! तूं तो साच बता,
कै करैगी टैम घड़ी ।
सास री ! मैं फौजी की नार,
हर दम चाहिए टैम घड़ी ।

माँ बाप और भाभी की बहू अपने फौजी बेटे एवम् पति को फौजी की वर्दी में देखकर गर्व से छाती चौड़ी कर लेते हैं । यहाँ के वीर सैनिकों के विषय में यही कहना उपयुक्त होगा :-

जब छोरे[1] मैं भरके दांत भींच के वीर सलोले निकड़ैंगे ।
द दुश्मन की हस्ती मिट जागी, जालम टोहे[2] नहीं पावैंगे ।।

8. <u>सामान्य जीवन</u> :- जीवन में गृहस्थाश्रम प्रमुख होता है । गृहस्थ का धर्म है कि वह अहिंसा, सत्यवचन, परिश्रम, सभी जीवों पर दया, क्षमा व यथाशक्ति दान आदि आचरणों का पालन करे । वह दिन के विभाजन के अनुसार कार्य करे ।

उक्त पंक्तियां इस क्षेत्र के स्त्री पुरुष दोनों पर साकार होती है क्योंकि यहाँ के लोग परिश्रमी और कर्मठ है । स्त्री पुरुष घर हो, चाहे खेत खलिहान हो कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य में जुटे रहते हैं । यहाँ की औरतें सम्पूर्ण रूप से स्वतन्त्र एवम् मेहनती है अर्थात सच्चे मायनों में अर्धांग्नी है जैसे की शिव-पार्वती । यहाँ के दिन रात के चौबीस घन्टों को पुरुषों ने अपने ही तरीके से आठ पहरों

पहरों,

1. क्रोध में
2. ढूंढे हुए

में विभाजित किया है और उन्हीं के आधार पर यहाँ के लोगों की दिनचर्या है[1]।

x1x पहर का तड़का :- सूर्योदय से एक पहर पूर्व "पहर के तड़के" में ही गाँवों की स्त्रियाँ जागकर चक्की की घेर घुमेर ध्वनि के साथ कोई गीत अथवा भजन गुन गुनाने लगती है। तत्पश्चात् घर की झाड़ू, बुहारी और फिर दूध बिलोती है :-

गजर गजर दूध बिलोवे जाटणी तेरा बेटा रोवै ।।
रोवै से तो रोवण दे, मन्ने दूध बिलोण दे ।।

इस उक्ति से साफ जाहिर है कि जाटणी यहाँ औरत का प्रतीक है। जो बालकों के रोने की बजाय समय पर काम करना अधिक जरूरी समझती है। उधर पुरुष भी इसी अवधि में अपने पशुओं को चारा आदि डालकर उन पर वात्सल्य भरा हाथ फेरता है। फिर हुक्का पीता है। शौचादि से निवृत होकर बैलों के साथ खेत में जाता है औरत पति की सेवा करती है:-

बखत उठ के धनदा करले,
और पति ने नुहा[2] के न्हाले।

x2x दिन लिकड़े :- सूर्योदय होने पर स्त्रियाँ सिर पर बर्तन लेकर कुएँ पर जाती हुई दिखाई देंगी। इसी वर्ग के गीतों में उनके पानी भरने का वर्णन देखिए:-

पाणी ल्यावण जा रही
है री मेरी सासड़ राणी
सात ज्यों का साथ ...... आदि।

पाणी के बाद "कलेवार" की रोटी बना के बच्चों को खिला पिला के खेत की तैयारी में लीन-वहाँ वाली पाली अपने खेत में पहले से ही गये हुए होते है वहाँ खेत में जाती है।

---

1. हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन लेखक श्री देवीशंकर प्रभाकर पृ० 78
2. स्नान करवाना ।

(iii) कलेवार :- गृहिणी हाली - पाली की रोटी लेकर वहाँ पहुँचती है, पाली खेत के आस पास किसी कणी अथवा जोहड़ी में पशु आदि चराता है। वहाँ उनको खाना खिला कर गृहिणी खेत में स्वयं भी कार्य करने लगती है।

(iv) दोपहरा :- गृहिणी के इस समय "कलेवार" के कार्यों की पुनरावृत्ति होती है। इसे दोपहरी की रोटी (LUNCH) कहा जाता है।

(v) दिन ढले :- सूर्यास्त से पूर्व गृहिणी घर आकर रात्रि का भोजन का प्रबन्ध करती है। यह समय गाँवों में काफी गहमा-गहमी का होता है। बहुएँ लड़कियाँ कुए पर पानी भरने जाती है। यद्यपि बहुत से गाँवों में नल लग गये हैं परन्तु पीने का पानी कुए से लाया जाता है। इसे गोधूलि का समय भी कहते हैं। पुरुष घर लौटकर गाय, भैंस, बैल आदि के चारे का प्रबन्ध करता है। दूध दुहने का समय भी यही है।

(vi) दिन छिपे :- सूर्यास्त होने पर रोटी बनाई एवम् खाई जाती है। सर्दियों में प्राय: बाजरे की खिचड़ी बनाई जाती है। राबड़ी भी गर्मी में बनाई जाती है। रात्रि का बचा हुआ भोजन अगले दिन "कलेवार" (breakfast) में काम आता है।

(vii) पहर रात- खा पीकर किसी के दरवाजे में या चौपाल में बातों एवम् हुक्के के दौर चलते हैं। हंसी खुशी के दौर, कभी कभी भजन, आल्हादि का प्रोग्राम भी होता है। गृहिणी दिन के शेष घरेलू कार्यों को पूर्ण करती है।

(viii) आधी रात :- कई बार बातों ही बातों में आधी रात गुजर जाती है। फिर सो जाते हैं - अगले दिन की प्रक्रिया के लिए।

परन्तु समय परिवर्तन के साथ साथ रहन सहन के तौर तरीकों में काफी परिवर्तन आ गया है। शिक्षा के प्रसार के कारण पालियों की संख्या में

गौणता आ गई है । ट्रैक्टरों के प्रयोग और खादों के अधिक प्रयोग के कारण खेती को उन्नत तरीकों से किया जाता है । सामूहिक खेती का एवम् सामूहिक परिवार का जोर शनै शनै खत्म होता जा रहा है । वैश्य लोग अपनी खेती सिरमे पर दे देते हैं । जिनके पास ज़मीन नहीं है वे दिहाड़ी पर कार्य करते हैं । औरतें घर का काम करने के बाद घर में चरखा कातती हैं - सिलाई करती हैं या अन्य आमदनी का कोई काम करती हैं - क्योंकि मंहगाई का जमाना आ गया है । कहीं कहीं स्त्रियाँ दरी खेस आदि बुनने का कार्य करती हैं । ब्राह्मण नौकरी करते हैं या पूजा पाठ का कार्य । अधिकतर लोगों का ध्यान नौकरी की तरफ ही रहता है ।

{1} <u>गाँव एवम् गाँव का स्वरूप:-</u> यहाँ के गाँवों में कहीं कहीं अधिक और कहीं कहीं कम दूरी है । यह सब प्रकृति पर आधारित है । यहाँ के गाँवों में "शिवालय" दूर से ही दिखाई दे जाता है ; आजकल कच्चे मकानों का स्थान शनै शनै पक्के मकानों का रूप धारण कर रहे हैं । परन्तु गाँवों का मूलरूप जिसमें मन्दिर, तालाब और गाँव बनी अवश्य मिलती है । गाँवों में पानी के लिये कुआ या कुएं या पानी के नलके मिलते हैं । उनके आसपास का दृश्य को रमणीक बना देते हैं । पशुओं के लिए भी पानी का प्रबन्ध अलग उसी कुएं पर होता है ।

{2} <u>पनघट</u> :- गाँव के तालाब के पास आपको कुआ नजर आयेगा । तालाब से निकली मिट्टी से तालाब पर ही गूगा मैड़ी, भैरव या शितला माता दि की मढ़ी बनी हुई दिखाई देगी । और तालाब के चारों ओर पाल । सीढ़ियों के समीप "जोहड़ की बहू" कहलाने वाला पत्थर मिलेगा ।

सन्ध्या के समय पनघट का दृश्य अद्भुत होता है । नव वधूएं, नव यौवनाएँ एवम् औरतें अपने पूरे साज श्रृंगार से युक्त, गीत गाती हुई पानी भरने जाती हैं । भड़कीला दामन, फूल सितारों का ओढ़णा, गले में सोने की कण्ठी, हाथों पर

पर लटकता चान्दी का भारी नाड़ा, पाँवों में बाजणी मोटी कड़ियाँ, छुणक वाली झांझर आदि अनेक आभूषण पहने सिर पर घड़ा टोकणी लिये जाती है - पनघट की ओर :-

मेरे सिर पै घड़ा टोकणी [1]
मैं ले कुए की पणिहार [2] री
रास्ते मैं साजन भेंट ग्यो [3]
तेरे मरियो मो जो बीर [4] री

x x x x

मेरे सिर पै घड़ा टोकणी
मेरे हाथाँ मैं नेजू डोल [5]
मैं पतली सी कामणी [6] ।

x x x x

साजन पिणपणियाँ कैसे जाऊं खोले दोए नैनाँ

सरोवर के साथ ही गितवाड़े शुरू हो जाते हैं । जहाँ पर प्रायः प्रत्येक परिवार का स्थान होता है - उपले आदि बनाने का, पशु आदि बांधने का । इन गितवाड़ों के चारों तरफ काँटे का ढेर बना दिया जाता है । परन्तु आजकल इनकी संख्या कम होती जा रही है । यहीं पर बिटोड़ा भी लगाया जाता है ।

(3) घर-गृहस्थी :- "बालक मैं परमेस्सर सम्भै सुखा स्याम गुण गाणा ।" यहाँ गृहस्थी का प्रथम सूत्र यही माना गया है । यहाँ पति-पत्नि मिलकर जीवननैया के खेवनहार रहते हैं । बच्चे बड़े होने पर बच्चों की शादियाँ, मकान बनवाने आदि पर खर्च कर दिया जाता है । घर इस तरीके से बनाया जाता है कि उसमें

---

1. लोटा और पीतल का बड़ा बर्तन ।
2. पनिहार
3. मिल गई
4. भाई
5. रस्सी और डोल
6. सुन्दर नव-यौवना

अनाज डालने की कोठरी [कमरा] हो । बाहर लोगों [मेहमानों] के लिये बैठने का साफ सुथरा स्थान हो कमरा या दरवाजा । मकानों पर मोर, दिवारों आदि पर "स्वस्तिक" आदि के चिन्ह भी प्राप्त हो सकते हैं । गृहस्थी का एक दृश्य पति-पत्नि के मजाक भरे शब्दों के माध्यम से देखिए :-

मीठो लागै मनै बाजरे की राबड़ी[1] रे
दळ चाक्की तै डाळी पे गेरी
लो लगा दई लाकड़ी रे । मीठो लागै ......
रांधि स्थै थाली मैं घाल्यो[2]
ऊपर आ गई पापड़ी रे । मीठो लागै .....
आप खूब[3] खटिया पर सूती[4]
नींद सतावै बाकड़ी रे । मीठो लागै ......

[4] चौपाल [परस] :- पक्की और मजबूत इमारत जो प्रायः अन्य मकानों के मुकाबले गाँव में साफ सुथरी और ऊँची नजर आए ... चौपाल कहलाती है । काफी खुली जगह में इसका निर्माण किया जाता है । इसमें पलंग, कुर्सियाँ, रेडियो, अखबार आदि होते हैं । आने वालों के लिए यही स्थान होता है । यह गाँव का सार्वजनिक स्थान होता है- यहाँ गाँव के बुर्जुर्ग बैठते हैं, हुक्का गुड़ गुड़ाते हैं । जाड़े की रातों में "धूर" लगता है और गीत, संगीत, भजन, किस्से, आल्हा, किस्से- कहानी आदि हँसी मजाक का प्रोग्राम रहता है । ताश चौपड़ आदि भी खेले जाते हैं ।

सरकार ने कई गाँवों में हरिजन चौपाल का निर्माण करवाया है । उनके आर्थिक एवं सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने का सरकार का पूर्ण प्रयास जारी है । ... इस प्रकार गाँवों में चौपाल परस्पर प्यार का प्रतीक है ।

---

1. लस्सी और बाजरे के आटा द्वारा खमीर उठाकर तैयार किया गया पेय पदार्थ ।
2. डालो
3. खा पी के
4. सोई

{5} भोजन :- "देसाँ मैं देस हरियाणा, जित दूध दही का खाणा" इस प्रदेश के लिए यह उक्ति बिल्कुल सही है । यह उक्ति यहाँ के खान पान पर पूरा प्रकाश डालती है । जो यहाँ के सात्विक एवम् पौष्टिक भोजन की प्रवृत्ति को सिद्ध करती है । गर्मी में चावल दाल की खिचड़ी बनती है जिसे देसी घी के दूध और दही के साथ खाया जाता है । खिचड़ी के लिए यह प्रसिद्ध है :-

" खिचड़ी तेरे चार यार - दही, पापड़, घी, अचार । "

इसमें वर्णित पापड़ को छोड़कर यहाँ पूरी लागू होती है यानि चरितार्थ होती है । सर्दी में चावल की जगह बाजरे की खिचड़ी बनती है । जिसे "गोज्जी"[1] के साथ खाने में आनन्द आता है । रबड़ी {राबड़ी} यहाँ का विशेष पेय पदार्थ है इसे दूध या दही के साथ मिलाकर खाया जाता है । सर्दी में घी के मेथी, गोन्द आदि के शक्तिवर्द्धक लड्डू बनाये जा जाते है । यहाँ ऋतु अनुसार चने, सरसों का साग, चौलिये को कढ़ी, घीया तोरी आदि खेतों की सब्जी उपलब्ध होती है । अब भी यहाँ के लोग दूध पीना अधिक पसन्द करते हैं । वैसे चाय के प्रचलन के प्रभाव से यह क्षेत्र भी नही बचा है । परन्तु चाय का प्रभाव अन्य प्रान्तों की अपेक्षा हरियाणा में बहुत कम है । और यहाँ के गाँवों में इसका प्रभाव बहुत ही कम है ।

मेलों आदि में यहाँ के लोग लड्डू जलेबी आदि मिठाईयाँ खुश होकर खाते हैं । वैसे खान पान परिस्थितियाँ और समयानुसार बदलता रहता है ।

{6} वेश भूषा {पहरावा} :- वस्त्र व्यवहार के तीन कारण होते है - अलंकरण, शालीनता तथा शारीरिक रक्षा । इनमें मुख्य अलंकरण -मानव सस्कृ

---

1. दो भाग लस्सी और एक भाग दूध का मिश्रण ।

का मुख्य उपयोग यौन-आकर्षण के लिए करता है । यहाँ पुरुष धोती, कुर्ता या कमीज, सिर पर खण्ड़वा [पगड़ी] कमर में दुपट्टा और पाँवों में जूती ये पाँच सामान्य परिधान हैं । आज भी हम विविधता के होते हुए भी किसी न किसी रूप में इन पाँचों परिधानों को धारण किये हुए देख सकते हैं । इन पाँच पोशाकों का सर्वप्रथम वर्णन ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कवि नरोत्तम ने यूँ किया[1] :-

सीस पगा न झगा तन मे प्रभु । जाने को अहि कहि गामा ।
धोती फटी सी, लटी दुपटी अरु पाँव उपानह की नहीं सामा ।।

बागड़ में स्त्री और मर्द के पहरावे का समान रूप यूँ देखिए :-

तेरी धोती सजी रे मेरी साड़ी सजी
तेरी धोती पै मेरो जान जायेगो
कमा कैकर मत मार मेरे लग जायेगी ।

स्त्रियाँ अवस्थानुसार, घाघरा दामन, सिलवार, जम्फर चुन्नी आदि का प्रयोग करती हैं । बागड़ की स्त्रियों को सुन्दर पहरावे का बड़ा चाव रहता है । उसकी ऐसी भावना एक लोक गीत के माध्यम से देखिए:-

ऊँचोपड़ी कूट सिलाती पहरन खातर ल्यादे
ले तेरे बस की बात नहीं तो म्हारे घरां छन्दा दे
बाग बेच दे बिठ्या बेच दे मन्नै रम्घोल[2] छड़ा[3] दे
ले तेरे बस की बात नहीं तो म्हारे घरां छन्दा दे
बैल बेच दे भैंसबेच दे साड़ी, जम्फर ल्यादे
ले तेरे बस की बात नहीं तो म्हारे घरां छन्दा दे
नोहरा बेच दे महल बेच दे मोटर कार मंगा दे
ले तेरे बस की बात नहीं तो म्हारे घरां छन्दा दे

एक अन्य लोक गीत देखिए उसमें

---

1. सुदामा चरित लेखक श्री नरोत्तम कवि पृ॰ 26
2. भेज दे
3. पाँव का छड़े वाला जेवर ।

वर्णित बांगर की औरत की अभिलाषा :-[1]

मेरा दामण[2] सिमादे, ओ नणदो के बीरा[3]
तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं
तन्नै न्यूं दूंगी[4] पै राखूं ओ नणदो के बीरा ।
मेरी कुड़ती[5] सिमा दे, ओ नणदो के बीरा
तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं
तन्नै न्यूं छाती पै राखूं, ओ नणदो के बीरा ।
मेरा ओढ़णा[6] मंगा दे, ओ नणदो के बीरा
तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं
तन्नै न्यूं घूंट पै राखूं, ओ नणदो के बीरा ।

(7) आभूषण :- स्त्री मनोविज्ञान के पारखी वात्सायन ने काम सूत्र में लिखा है कि बालिकाएं पुष्प, सुगन्ध आदि से, प्रौढ़ायें आभूषणों से प्रसन्न होती है । महिलाओं के शीर्षाभूषण, कर्णाभूषण, नासिकाभूषण, कराभूषण आदि अलग 2 होते है । इसलिये हर परिवार अपने पूरे सामर्थ्यानुसार गहणे बनवाता है क्योंकि महिलाओं के आभूषणों से ही किसी परिवार की समृद्धि आमतौर पर आंकी जाती है । आभूषणों का विवरण निम्न लिखित है:-

(I) शिर्षाभूषण :- फूल, सिंगार पट्टी, बेसर, तागा, बोरला, टीक्का आदि ।
(II) कर्णाभूषण :- कर्ण फूल, बाली, टोप्स आदि ।
(III) नासिका भूषण :- नाथ, कोका, लौंग आदि ।
(IV) कराभूषण :- अंगूठी, कंगनी, पौंची, छन्न आदि ।
(V) पदमाभूषण :- पायली, फूल पायली, पाजेब, कैल कड़े आदि ।

---

1. हरियाणा के लोक गीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ०78-79
2. लहंगा विशेष
3. भाई
4. कटि
5. कुरता
6. ओढनी

×।/।× गले के आभूषण :- हँसला, हँसली, गलश्री, कण्ठी, जंजीर, हार, गुलीबन्द आदि ।

×।/।।× अन्य आभूषण :- कठला, तागड़ी, नाड़ा आदि ।

देखिये कुछ आभूषणों का बागड़ लोक गीत के माध्यम से मनोहारी वर्णन :-

भूरा 2 माथा रे बागरी, यो टीका कढ़े सजाया रे बागरी
हाय मरग्या मोदो ठाले रे बागरी
भूरे 2 पैर रै बागरी, यो बाजना कढ़े सजाई रे बागरी
हाय मरग्या गोदो ठाले रे बागरी ।

बिन्दी, नाथ, पाजेब, कंगनी आदि आभूषणों का सौन्दर्य मयी वर्णन एक अन्य लोकगीत से बोल में इस प्रकार चित्रित है :-

बिन्दो लाई माथे पै चाला लटका नाथ पै
पायां मैं पाजेब पहरी , कंगनी[1] सजरी हाथां मैं

शीर्षाभूषण का एक अन्य लोक गीत के माध्यम से काफी आकर्षक एवं मनभावना वर्णन देखिये :-

मेरा बोरला[2] ग्यां दे, ओ नणदी के बीरा
तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं, तन्नै न्यूं
तन्नै न्यूं माथे पै राखूं, ओ नणदी के बीरा ।

(8) <u>श्रृंगार प्रसाधन</u> :- औरतें आंखों में काजल या सुरमा, हाथों में चूड़ियां आदि श्रृंगारिक वस्तुओं का प्रयोग भी करती है जिसकी पुष्टि निम्नलिखित लोकगीतों से भी होती है :-

मोटे 2 नैन बागरी यो सुरमा कढ़े सजाया रे बागरी
भरमा 2 छाती बागरी या बोडी कढ़े सजाई रे बागरी
भूरे 2 हाथ बागरी या छल्ली कढ़े सजाई रे बागरी

आधुनिक फैशन का उदाहरण :-

---

1. हाथ का आभूषण ।
2. माथेका आभूषण ।

अतर सेन्ट की शी-शी ले लो बालों में रमाओ खूब ।
नई पालिश और पोडर सुर्खी, होठों पे रचाओ खूब ।।

(9) मनोरंजन :- चौपड़, ताश, शतरंज आदि खेलों में यहाँ के लोग रुचि रखते हैं। पहले जहाँ सांग के अधिक शौकिन (शौकीन) थे अब थोड़ा थोड़ा रूझानफिल्मों की ओर भी होने लगा है। तीज-त्यौहारों पर सामूहिक गीतों के साथ 2 नृत्य भी होता है। इसके अलावा रेडियो, ट्रांजिस्टर आदि भी मनोरंजन के साधन हैं। बीन - बांसुरी के स्वरों और घुंघरू की थाप तथा घुंघरूओं की झन्कार की धुन का आनन्द - बीन बांसुरी के साथ नृत्यों के माध्यम से उठाया जाता है। देखिए एक नमूना :-

सवेरा बीन बजा दे रे,
नच[2] दे काला नाग ।
सवेरा बीन बजा दे रे,
नाचूंगी तेरे साथ ।।

(10) सामाजिक मेल मिलाप :- अधिकतर आपसी मेल मिलाप जातिय आधार पर है। यों अन्य जाति वालों से मेल मिलाप रहता है। किसी विशेष कार्य से ही दूसरे के घरों में जाते हैं। अन्यथा तो अपने अपने कार्यों में ही यहाँ के लोग व्यस्त रहते हैं।

(11) अभिवादन एवम् आर्शीवाद :- यहाँ बड़ों का अभिवादन और छोटों को आर्शिवाद दिया जाता है। बराबरी के दो व्यक्ति मिलते हैं तो ....राम 2 जयराम जी की, नमस्कार, नमस्ते, जय शंकर की आदि कहते हैं। अभिवादन

---

1. नाखूनों की पालिश ।
2. नृत्य करने दे ।

के समय दाहिने हाथ मिलाये जाते हैं । स्त्रियाँ सामान्यतः बड़ों के पैरों को दबाकर अभिवादन करती है जिसके एवज में उन्हें आशीर्वाद मिलता है:- "सुहागन हो- सात पूत की माँ हो" आदि ।

(12) अतिथि सत्कार :- घर आये अतिथि को देखकर प्रगाढ़ालिंगन करना, अतिथि रूप में आये शत्रु को भी मंगलकामना करते हैं । यहाँ के अतिथि सत्कार की परम्परागत विशेषताएँ हैं । गृहस्वामी कर्जदार होते हुए भी आतिथ्य परम्परा निभाने की पूर्ण रूप से चेष्टा करता है । अतिथि के खान पान एवम् रहने के प्रबन्ध में कोई कमी नहीं आने देता :-

वोह उसने अपणे घरां[1] ले गयो
दरवाजा में पलंग बिछवा दियो
म्हाज ने ताता[2] पाणी न्हवा दियो
अर रसोई दई चढ़वा ।

9 लोक विश्वास :- यहाँ के लोगों की सरलता एवम् निश्छलता यहाँ के लोक विश्वासों में स्पष्ट झलकती है । इनके सर्वप्रिय उपास्य देव हैं - भोले भण्डारी शंकर जिनके अन्य नाम हैं - शंभु, महादेव, नीलकण्ठ आदि ।

(1) देवता -उप देवता :- प्राचीन भारतीय परम्परानुसार यहाँ भी प्रतीक पूजा के विविध रूप हैं, जिनके प्रति इन लोगों की आस्था है । उनका विवरण इस प्रकार है :-

(क) भूमिया (भैया) प्रत्येक गाँव में होता है । गाँव के बाहर इसकी मढ़ी बनी होती है । ऐसा विश्वास है कि सर्वप्रथम गाँव बसा तो जिसके बाद पहले पुरखे के देहान्त पर भूमिया या भैया की मढ़ी बनाई जाती है । त्योहार हो या विवाह शादी स्त्रियाँ भूमिया पर दीपक जला कर

---

1. घर
2. गर्म

सोरणी [प्रसाद] बाटँती है और स्तुति गान करती है :-

ऊँची तेरो खाई, ऊँचा नीचा कोट ,
दाणा करे, बाबा भूमिया की ओट ।

छठ्ठू घटी और देई धाम को इसको पूजा अवश्य ही की जाती है :-

सिर तेरै चोरा • ••• के भैया
कोई जोड़ी रही अड़ लाग ।
गल तेरै कण्ठी •••• के भैया
कोई जोड़ी रही अड़ लाग ।

भैया या भूमिया यहाँ की ग्राम्य-संस्कृति का सुन्दर प्रतीक है :-

पाँच पतासे पानाँ का बिड़ला ले भैयाँ पै जाइयो जी ।
जिस डालो म्हारा भैया बैठा वाह डाली झुक जाइयो जी ।।

[2] चान्द और सूरज :- प्रातः काल सूर्य को जल चढ़ाकर अर्घ अर्पित किया जाता है । करवा चौथ आदि व्रतों को औरतें चन्द्रमा को भी जल चढ़ाकर अर्घ अर्पित करती है :- "मैं मन कोरो राणी - ले चन्द्रमा पाणी ।"
और सूर्य के लिए :- सूरज देवता जगमग जगमग लोली के असवार ।
जल म्हारे हाथ मैं धर्म पुण्य के दातार ।।

[3] धरती माता :- प्रातःकाल उठकर धरती को "पुकारने की प्रथा" आज भी विद्यमान है :- "धरती माता तूँ बड़ी तेरे तै बड़े भगवान" । अखाड़े मैं कुश्ती लड़ने वाले पहलवान पहले धरती को ही प्रणाम करते है । "होई" या "स्यायो" धरती माता का ही प्रतीक है ।

[4] गंगा जमना :- गंगा, जमना नदियों मै स्नान करने का बड़ा माहात्म्य माना जाता है । यहाँ का सबसे बड़ा स्नान पर्व ति कार्तिक पूर्णिमा को गंगा

किनारे होता है । गंगा मैया की सौंह जमना मैया की सौंह खाई जाती है । मीरां ने भी तो यही कहा है :-

चलो मन गंगा जमना तीर ।

गंगा जमना निरमल पाणी, सीतल होत सरीर ।।

[5] राम और कृष्ण :- यहाँ राम राम, जैराम जी की आदि उचारण [उच्चारण] काफी लोकप्रिय है । श्री कृष्ण की लीला का भी यह क्षेत्र क्रीड़ास्थल रहा है । विश्व प्रसिद्ध गीता उपदेश यहीं दिया गया था । यहाँ के लोग राम और कृष्ण के पर्यायवाची शब्दों पर अपने पुत्रों का नाम रखने में आनन्द समझते हैं ।

राम और लक्ष्मण दशरथ के बेटे दोनूं बन खण्ड जाय,

हेरी कोय राम मिले भगवान ।

और कृष्ण का बांगरू में मोहक रूप का चित्रण देखिए:-

देखो मदन मोहन की प्रीत, भजन पर बैना लटके ।

सखी री उनके सिर पै मोर मुकुट, कानों में कुण्डल कैसे दमकें ।।

[6] भैरव :- भैरव की पूजा किसी पेड़, पत्थर पर सिन्दूर और तेल चढ़ाकर की जाती है । वैसे सिन्दूर और तेल चढ़ाकर कार्तिकेय की पूजा भी की जाती है परन्तु उसका पेहवा में एक मन्दिर है ।

[7] गूगा पीर :- जाहरपीर "गूगापीर" की छड़ी का गीत गाकर इसकी भादों की नौमी को पूजा की जाती है = जो गूगा नौमी कहलाती है ।

[8] देवी की पूजा :- देवी की पूजा नौ माताओं के रूप में की जाती है । इसके मन्दिर कई स्थानों पर हैं । जोत जगा जलाकर इनकी पूजा की जाती है क्योंकि [जोत माता] देवी का प्रतीक है ।

{9} पंच पीर और संत महात्मा :- भक्तिकाल में यहाँ संत कवियों की परम्परा के कारण यहाँ के स्थानों पर सूफी धारा का प्रभाव पड़ा । वे फक्कड़ और फकीर परिवेश में पीरों के रूप में पूजे जाने लगे । उनकी समाधि या दरगाह पर मीर पंथ, लाल चुनरी, नारियल, नीला कपड़ा, बताशे, फूल आदि सामग्री चढ़ाई जाती है ।

सन्त महात्माओं की मढ़ी बनाई जाती है और उनकी पूजा की जाती है :- नरवाणा, कैलखाँ आदि स्थानों पर बाबा गैबो की समाधि बनी हुई है ।

{10} पीपल, तुलसी, कुआँ तथा जोहड़ आदि :- स्त्रियाँ तुलसी को जल चढ़ाती हैं । मरणासन्न व्यक्ति के मुख में गंगा जल के साथ तुलसी के पत्ते डाले जाते हैं - प्रत्येक प्रकार के चरणामृत डाले जाते हैं । इसकी स्तुति इस प्रकार है :- तुलसाँ महारानी नमो नमो: ।

हर की पटरानी नमो नमो: ।।

सोमवार को पीपल सींचना, चावल, गुड़, रोली और ताजा दूध चढ़ाया जाता है । इसकी पूजा सुख-समृद्धि पाने के लिए की जाती है । हिन्दू धर्म शास्त्रों में इसकी महिमा का वर्णन मिलता है ।

कुआ भी देई देवताओं की तरह पूजा {धोका} जाता है । जच्चा शुद्ध जलवे " का काम यहाँ करती है । जोत भी जलाई जाती है । कार्तिक मास में जोहड़ की विशेष बड़ी महिमा रहती है क्योंकि इस पूरे मास में सौभाग्यवती स्त्रियाँ और कन्याएँ मुँह अन्धेरे स्नान करने जाती हैं । नहाने से पूर्व वे सरोवर से मिट्टी निकालती हैं । उसका ढेर लगाती हैं, जो ढेर पथवारी कहलाता है :-

---

पथवारी खोल किवाड़ी, बाहर खड़ी तेरोसींचा वालो ।
है के लेहरी से सोंचन वालो ? के मागे से सोंचन वालो ?
अन्न धन मांगे सोंचन वालो, गोद भतीजा कनूवा जैसा ।

"जोहड़ की बडू" के पास ही पथवारी की स्थापना होती है । दीपक जलाकर उसका पूजन किया जाता है ।

(1) जन-जागरण :- आर्य समाजी सुधारवादी आन्दोलन के कारण स्थान 2 पर यहाँ गुरुकुलों की स्थापना हुई । ये गुरुकुल जन जागरण के स्तम्भ बने । अस्पृश्यता के खण्डन से दलित वर्ग में आत्म विश्वास पैदा हुआ । आडम्बर, पाखण्ड और अन्ध विश्वासों के खण्डन का कार्य भजनिकों ने अपने भजनों में किया जिससे यहाँ के लोगों में वैदिक संस्कृति के प्रति अनुराग उत्पन्न हुआ और साथ में ये लोग आत्मविश्वासी तथा प्रगतिवादी भी होने लगे :-

विद्या पढ़ो, पढ़ाओ, आपस में प्रीति बढ़ाओ
सुधर जाये सब औलाद ।· विद्या बिना···

(2) ग्रहण :- लोक विश्वास है कि ग्रहण के अवसर पर चाहे वह सूर्य ग्रहण हो या चन्द्र ग्रहण कोई भी कार्य करना श्रेयस्कर नहीं है । ग्रहण वाले दिन लोग पवित्र सरोवर या नदी पर स्नान करना अच्छा समझते हैं । औरतें भजन गाती हैं । गर्भवती स्त्रियाँ ग्रहण लगे हुए चान्द या सूरज को नहीं देखती । "सतनजा"[1] नीची जाति के मांगने वालों को दिया जाता है । ताम्बे के पैसे भी दान में देना अधिक पुण्यकारी समझा जाता है परन्तु अब उनका प्रचलन नहीं रहा ।

कांसी की थाली या जल के भरे कटोरे में ग्रहण का प्रतिबिम्ब देखते हैं । सीसे के(शीशे) टुकड़े को घिसकर अथवा उस पर कालस लगाकर भी ग्रहण देखा जा सकता है ।

1· सात अनाजों का मिश्रण ।

(13) भूत-प्रेत :- बरगद, पीपल, जाल, बेरी, श्मशान तथा कुछ निर्जन भवन एवं स्थानों को भूत प्रेत तथा चुड़ैल का निवास माना जाता है। यह क्षेत्र भी इन मान्यताओं से अछूता नहीं है। भूतों के आकार और उनके स्वरूप के सम्बन्ध में सामान्यतः यही धारणा है कि उनके पंजे पीछे और ऐड़ियाँ आगे, उनके शरीर की छाया ज़मीन पर नहीं पड़ती। झाड़ फूंक कर मन्त्रों द्वारा भूतों और चुड़ैलों के दुष्प्रभाव को दूर करते हैं। भोपे (स्यानें) या सैयद के शरीर में मृतात्मा का आह्वान कराया जाता है। उसका शरीर काँपने लगता है। तब मृत आत्मा के सगे सम्बन्धी उसके माध्यम से बातें करते हैं। मिर्चों की धूनी देकर या चमड़ी जलाकर उसकी दुर्गन्ध से तांत्रिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए प्रेत से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न करते हैं। चौराहे को भी प्रत्यक्ष शक्ति (उतार) का प्रभावित स्थान माना जाता है।

(14) शुभ चिन्ह :- प्रत्येक संस्कार और शुभ अवसर पर स्वास्तिक यानि "सतिया" अपना विशिष्ट स्थान रखता है। कहीं हल्दी, कहीं आटे, कहीं गोबर का सतिया शुभ कर्मानुसार बनाया जाता है। इसके अलावा गेरू के थापे, बन्दनवार आदि चिन्हों का भी प्रयोग किया जाता है क्योंकि इन्हें शुभ माना जाता है :-

सासू तो गुढ़गो खिलोया
नणदल तो धरी सतिया

विवाह आदि के शुभअवसरों पर भाई बिरादरी के घरों पर भी गेरू के सात 2 थापे लगाये जाते हैं। बारात की विदाई के समय "समधन" अपने "समधी" की छाती और पीठ पर मेहन्दी के थापे लगाती है। बन्दनवार पुत्र जन्म के अवसर पर घर के द्वार पर आम के पत्तों की लगाई जाती है।

(15) जन्त्र, मन्त्र, तन्त्र और जादू टोने टोटके :- यहाँ इनका प्रचलन भी है।

इनकी मान्यता दो रूपों में मानी जाती है । एक हित की कामना के लिए दूसरी अहित कामना के लिए ।

उदाहरणार्थ-आँखें दुःखने पर "चोब" उतारने के टोटके, बेरी के सात पत्ते और सात आटे की गोलियाँ सींक से बान्ध कर आँखों के समक्ष सात बार उतारी जाती है फिर उन्हें छप्पर में टाँग दिया जाता है । इस टोटके से आँखों की लाली उतर जाती है । इस प्रकार से अनेक दुविधाओं के लिए अनेक टोटके यहाँ प्रचलित है ।

[6] शुभाशुभ स्वप्न :- स्वप्न में घटी घटनाओं के घटित होने तथा उनके सद्-असद् फल मानने के सम्बन्ध में पर्याप्त आस्था रखी जाती है । अर्धरात्रि के पश्चात् देखे गये स्वप्न सत्य समझे जाते हैं । फल, फूल, जल आदि, राज-महल में भोजन, पान, दही-चावल, मोती, दीपक, सर्प, मछली, हाथी, हंस, कुआ, सुन्दरी का स्वप्न शुभ माना जाता है । भूआ, भिखारी, बानर, बोट्टा, शूकर, भैंस, कुत्ता, नेवला, मृत गाय, पक्षी, मकान का गिरना, छत से गिरना आदि स्वप्न अशुभ माने जाते हैं ।

[7] शकुन विचार :- परम्परागत तत्त्वों में विश्वास तथा शकुन विचार, सामाजिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण तत्त्व कहा जा सकता है । इनका चित्रण लोक गीतों में मिलता है । शकुन, अपशकुन सम्बन्धी सामान्य धारणाएँ जो यहाँ श्रद्धा एवम् गूढ़ विश्वास, धार्मिक उपचार तथा प्रथाओं में सम्मिलित किये गये हैं । उदाहरण स्वरूप देखिए :-

एक मृग दूजा साल, बोट्टे चढ़या मिले गुवाल ।
तीन कोस तक जाए तेली, तो मौत सिराणे पर खेलो ।।

शकुन देखकर ही बहुत से लोग नया कार्य आरम्भ करते हैं । या यात्रा पर रवाना होते हैं । यदि यात्रा के दौरान मार्ग में एकाकी हिरण, दो सर्प मिले और भैंस पर चढ़ा हुआ चरवाह [ग्वाला] मिले तो यात्रा के शकुन अच्छे नहीं हैं । यदि उस यात्रा के तीन कोस तक तेली मिल जाए तो समझो मृत्यु सिर पर खेल रही है । इसी प्रकार उपलों की बेल, ईंधन, गोरा चमार अच्छा नहीं माना जाता ।

ठरह

इसके विपरीत किसी उद्देश्य विशेष के लिए जाते हुए पुरुष के सम्मुख यदि हिरण और हिरणी वामांगि काट जाए तो अच्छे शकुन माने जाते हैं। सामने से पनिहारी का भरे हुए दो कलश लेकर आना शुभ शकुन कहा जाता है। एक दोहे में जनता के शकुन इस प्रकार लोकगीत में कहे गए हैं :-

कागा मिरगा दाहिने बाएं हो सियार हो।
गई सम्पत्ति बहुरे जो गरुड़ सामने हो ।।

रात्रि में काग और दिन में शृगाल का बोलना, कुत्ते का रोना भावी हितकारी नहीं माना जाता। रात्रि में तारों का टूटना मृत्यु का सूचक माना जाता है। कोटलरी नामक पक्षी का बाईं ओर बोलना अच्छा नहीं माना जाता है :-

अब तो घर से निकरया गमन भेर जुआन
हो गया सांझ[1] ब्रमाण[2] गमन भेर जुआन
बाम्में[3] बोली कोटलरी, दाहणे बोल्या काग।

सगाई अथवा लग्न वाले नाई, ब्राह्मण को नमकीन वस्तु नहीं खिलाते। ऐसा विश्वास है कि ऐसी चीजें खिलाने से सम्बन्ध मधुर नहीं रहते। अंकों में तीन और तेरह को अशुभ माना जाता है "तीन तेरह होना" अकुशलता का सूचक है ....और सात अंक को उससे कम अशुभ माना जाता है।

दक्षिण दिशा में चूल्हे का मुंह नहीं बनाया जाता, सोने वाला दक्षिण की ओर पैर करके नहीं सोता। इन शकुनों को भी शुभ नहीं माना जाता है। यात्रा के समय छींक का प्रभाव भी अशुभ और शुभ दोनों रूपों में माना जाता है :-

छींकत खाइए छींकत न्हाइए।
पर छींकत पर घरे[4] ना जाइए ।।

तेल उधार लेना अगले जन्म में दासता उपलब्धी का प्रतीक एवं द्योतक

---

1. शुभ शकुन।
2. अशुभ शकुन।
3. बाईं ओर।
4. दूसरे का घर।

माना गया है :- "के मन्ने तेरे काले तिल चाब राखे सैं ?"

किसान की कटाई और बुवाई "कुछ बावणी सुक्कर लावणी" के अनुसार क्रियाशील होती है। बैलों से अमावस्या के रोज काम नही लेते। दुधारु पशु को शनिवार को क्रय - विक्रय नही किया जाता। शकुन और अपशकुनों के कुछ अन्य उदाहरण निम्नलिखित है :-

शुभ शकुन :- पानी भरा घड़ा,[1] मेहत्तर, गौ दर्शन, दही अथवा चांदी का सिक्का, आंखे फड़कना, हथेली खुजलाणा, कौए का मुन्डेरे[2] पर बोलना, सधवा दर्शन, दूब दर्शन, हस्त दर्शन आदि।

अपशकुन :- खाली घड़ा, काली बिल्ली, सूअरों का मिलना आदि।

0 ====== 0

---

1. मटका।

2. मकान का छज्जा।

"नवम् अध्याय"

बांगरू लोक साहित्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

1- **रस परिपाक :-**

(1) वात्सल्य रस

(2) श्रृंगार रस :-

i- संयोग श्रृंगार - नख-शिख छटा, रूप सौन्दर्य, प्रेम-क्रीड़ा आदि ।

ii-वियोग श्रृंगार - पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण-विप्रलम्भ आदि ।

(3) करुण रस

(4) वीर रस

(5) हास्य रस

(6) रौद्र रस

(7) भयानक रस

(8) वीभत्स रस

(9) अद्भुत रस

(10) शान्त रस

(11) भक्ति रस

2- बांगरू लोकगीतों में अलंकार विधान ।

3- बांगरू लोकगीतों में छन्द।

4- बांगरू लोकगीतों में तुक एवं लय।

5- बांगरू लोकगीतों में स्वाभाविकता और मार्मिकता।

6- बांगरू लोकगीतों में दार्शनिक चिन्तन ।

7- बांगरू लोकगीतों में क्षण भंगुरता ।

8- बांगरू लोकगीतों मे नारी चित्रण ।

9- बांगरू लोकगीतों में प्रकृति चित्रण ।

10- बांगरू लोकगीतों में राष्ट्रीयभावना।

11- अनुपलब्ध बांगरू लोकगीत एवम् उनका विवेचन।

0=-=-=-0-=-=0

-नवम् अध्याय-

बांगरू लोक साहित्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन

गीत ही लोक साहित्य का मुख्य अंग है क्योंकि जीवन को सरसता प्रदान करने में लोकगीतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । गीत ही विरह की आगको शीतलता प्रदान करते हैं । गीतों में -सरस राग रति रंग - की तन्मयता विद्यमान रहती है । इसका मूल है ··· भाव । मानव हृदय भावों की जन्म भूमि है हमारे हृदय में छाया चित्रों के समान सहस्त्रों भावों समय समय पर उद्बुद्ध होतेरहते हैं । हृदय से पैदा होने वाले ये भाव व्यवहार रूप में उत्पन्न होते हैं तात्विक दृष्टि से वे हृदय में निवास करते है और हृदय में सोये रहते हैं । उस समय भाव सुसुप्त भावों की संज्ञा से पुकारा जाता है । और जब ये कारण से जागृत होते हैं तब ये स्थायी भावों से जाने जाते है । विश्वनाथ की परिभाषा में - निर्विकारात्मक चिते भावः प्रथम प्रक्रिया अर्थात निर्विकार चित में उत्पन्न होने वाली प्रथम क्रिया को भाव कहते है । और ये स्थायी भाव रस रूप में परिणत होते हैं । इस सिद्धान्त का मूल सूत्र भरत का प्रसिद्ध सूत्र हैं - विभानुभाव व्यभिचारी-संयोगात् रस निष्पति अर्थात विभाव अनुभाव संचारी भावों के संयोग से रस निष्पति होती है अर्थात स्थायी भाव ही रस कहलाता है ।

जहां तक बांगरू लोक कवियों का प्रश्न है, वे प्रकृति के विशाल प्रांगण में नीले अकाश की विस्तृत पवित्र छाया में, उनके जीवन के साथ साथ उनका काव्य पनपता रहा, जिसे उन्होने आडम्बर रहित सीधे साधे शब्दों में अभिव्यक्त किया । हमारे लोक कवि ने न तो छन्द शास्त्र का ध्यान रखा और ना ही अलंकारों को

- -

बलात् भरने का प्रयत्न किया उसे यदि जरूरत रही तो सिर्फ भाव की, लेखनी, स्वर लहरी और मादकता की, जो प्रचुर मात्रा में ग्रामीण गीतों में दिखाई देती है लोक कवि के अपने स्वयं के अलंकार होते हैं अपनी शब्द योजना होती है और उसके साथ साथ अपने मुहावरे और अपनी गति और ताल है। उसके लोकगीतों में आदिमानव से लेकर आधुनिकतम सृष्टि की संस्कृति उसके उतार चढ़ाव, उत्कर्ष-अपकर्ष आदि का इतिहास बोलता हुआ सा प्रतीत होतीहैं। उसके गीतों में ही जो भाव उद्भव होते हैं वे असाधारण और उनमें शीतलता ठीक के हिम के समान होती है और उनमें भी ठीक वैसी ही बर्फीली हुआ करती है।

लोकगीत सृजनकर्ता किसी विशेष विषय, रस, छन्द अलंकार आदि की जंजीरों में बन्धा कर रचना अपनी नहीं करता। भावातिरेक में उसके हृदय से जो भाव फूट पड़ते हैं वही झरनों की कल-कल के साथ स्वर मिलाकर वातावरण में बिखर जाते हैं। उनमेंस्वतः रस-निष्पति हो जाती है, अलंकारों की छटा परिलक्षित होती है, भावों का स्रोत उमड़ पड़ता है।

लोक साहित्य को पूर्णरूपेण लाभान्वित करता है "किसी देश के शिष्ट साहित्य से पूर्णतया परिचित होने के लिए उसके लोकसाहित्य का अध्ययन अति आवश्यक है। शिष्ट साहित्य का लोक साहित्य से घनिष्ट सम्बन्ध है वास्तविक बात तो यह है कि शिष्ट साहित्य ही लोक साहित्य का ही विकसित, संस्कृत तथा परिमार्जित रूप है"[1]।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के अनुशीलन के लोक साहित्य का रूप स्पष्ट तया प्रतीत होता है। हिन्दी के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक

- -

1- हिन्दी साहित्य का वृह इतिहास - लेखक राहुल सांकृत्यायन
सम्पादकीय भाग 16, पृष्ठ 3

का काव्य लोक साहित्य काअमिट छाप को लिए हुए हैं। "हिन्दी" भाषा जन्म से लोक भाषा रही है और संस्कृति के साहित्यिक उत्तराधिकारी से भी अधिक उसे लोक मेधा का अधिकार मिला है। हिन्दी में अपने साहित्य के लिए जो प्रेरणाएं प्राप्त की हैं वे अधिकांशत: लोक-सम्पर्क से ही की है"।[1] इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि " हिन्दी साहित्य के सम्यक् अनुशीलन के लिए लोक साहित्य की पृष्ठभूमि से परिचत होना आवश्यक है। यही लोक साहित्य संकलन का साहित्यिक दृष्टिकोण से लाभ है औ अभिजात साहित्य के लिए उसकी उपादेयता"।[2]

इससे स्पष्ट है कि लोकगीतों मे सरसता और माधुर्य का अजस्त्र स्रोत विद्यमान है। पर उन सभी को लिपिबद्ध लोकगीतों की सीमित संख्याओं में उतारा जाना सम्भव नहीं। अत: लिपिबद्ध लोकगीतों के आधार पर लोकगीतों की काव्यात्मक विशिष्टता का सम्यक् विश्लेषण और मूल्यांकन सम्भव नहीं।

बांगड़ लोकगीत काव्य सौष्ठव में किसी अन्य भाषा अथवा बोली के लोकगीतो से हीन नही हैं लोक साहित्य के मानदण्ड से उसके काव्यसौष्ठव के पक्ष सबल है। यहां बांगड़ लोक साहित्य का काव्यशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। :-

1- <u>रस परिपाक :-</u> सरसता लोग क

सरसता लोक गीत की सर्वप्रिय विशेषता है। प्रत्येक गीत रस से आप्लावित हैं। बांगड़ लोकगीतों में थोड़ी बहुत मात्रा में प्राय: सभी रसों की अभिव्यंजना हुई है, परन्तु प्रधानता श्रृंगार, वीर एवं करूण रस ही है।

§1§ <u>वात्सल्य रस :-</u> वात्सल्य रस का चित्रण बांगड़ लोकगीतो में बड़ी ही

1- बृज लोक साहित्य का अध्ययन लेखक डा० सत्येन्द्र पृष्ठ 566

2- कुलई लोक साहित्य लेखक पदम चन्द काश्यप पृष्ठ 178

विदग्धतापूर्वक किया है। बांगरू के लोक गीत में लव-कुश के जन्म के अवसर पर वात्सल्य की बड़ी ही मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। सीतामाता की हर्ष, उत्साह, भय, चिन्ता आदि भावनायें माता के नैसर्गिक प्रेम की अभिव्यक्ति करती है :-

सिया मन में रही घबराय
लवकुश बन में हुए।
आज इस बन में जो सासू होती
देती दिवले[1] जलाए। ..लवकुश बन में हुए
आज इस बन में ननदल जो होती
लेती सतीये[2] धराए।..लवकुश बन में हुए
आज इस बन में पंडत जो होता
लेता हवन कराए।.. लवकुश बन में हुए

(2) श्रृंगार रस :- श्रृंगार रस का स्थायी भाव "रति" है। -नायक नायिका में परस्पर प्रीती। नायक विषयक, रीति के लिये नायिका और नायिका विषयक रति के लिये नायक "रति" का भाव आलम्बन है। उनके हाव भाव उद्दीपन का कार्य करते हैं। श्रृंगार के मुख्य दो भेद हैं :-

I- संयोग श्रृंगार

II- वियोग श्रृंगार

I- संयोग श्रृंगार :- इसके अन्तर्गत प्रेमी नायक तथा नायिका के परस्पर मिलन नख-शिख आदि के बहाने रूप चित्रण और उनकी प्रेम क्रीड़ा आदि का वर्णन आता है बांगरू लोकगीतों में हर प्रकार के नमूने मिलते हैं।

1- दीपक।

2- स्वास्तिक।

(i) नख-शिख छटा :- नायक नायिका की पायलों की झंकार पर मोहित हो जाता है और पानी पीने के बहाने उससे प्रेमालाप करना चाहता है :-

मैं तो दूर टांडे ते आया परी
तेरी सुण कै छमक[1] बाजे की
थोड़ा सा नीर पिलादे परी
मैं तो प्यासा मरूं सूं नीर का

जुल्फों का वर्णन देखिए :-

वे जुल्फें जाल का फन्दा बनाना किससे सीखे हो ।
बहाना करके बागों का छुपे छुपे मालण के जाते हो ।।

प्रेमिका के बालों पर ही मुग्ध हो जाता है । ठीक उसी प्रकार की नायिका भी नायक की मस्त चाल पर मोहित हो जाती है :-

राजा जी तेरी चाल सरूप
ज्यूं हाथी झूमै गाल[2] मैं
राजा जी तेरी बोल सरूप
ज्यूं पपिहा बोल्या रेल का

(ii) रूप सौन्दर्य:- यौवनागमन पर नायिका अपने रूप सौन्दर्य की ओर इतनी सजग हो जाती है कि उसे चेतना नहीं प्रत्युत जड़ भी अपनी ओर आकर्षित होता है । रूप यौवन सम्पन्ना सुन्दरी की सुन्दरता के मूक चित्रण का वर्णन देखिए :-

मेरे गोरे बदन पे रंग बरसै
हेरी बागों मे जाऊं तो माली ललचै ।
वो तो पत्तों पे पड़्या पड़्या नींबू मटकै
मेरे गोरे बदन पै रंग बरसै
हेरी तालों मैं जाऊं तो धोबी ललचै
वो तो पट्टे पै पड़्या-2 सोटा मटकै ।।..मेरे..

- -

1- आवाज ।
2- गली ।

गोरी के रूप सौन्दर्य पर ललचाने की अभिव्यंजना बड़ी ही आकर्षक बन पड़ी है :-

हेरी कुओं पै जाऊ तो गस्ती ललचै
वो तो ढकिया पै पड़्या-2 लोटा मटकै । .. गोरे..
हेरी रसोई में जाऊं तो पंडत ललचै
वो तो चकले पै पड़्या पड़्या बेलण मटकै । ..गोरे..
हेरी सेजां जाऊं तो राजा ललचै
वो तो सेजां पै पड़्या पड़्या तकिया मटकै ।..गोरे ..

(iii) <u>प्रेम क्रीड़ा</u> :- प्रेम संसार में कितने ही बहाने होते है । कभी नायिका का तो कभी नायक का घर की नई दुल्हन से दुल्हे राजा मिलने को आतुर है परन्तु नायिका उसे बड़ी चतुराई से समझा देती है और ऐसे समय मिलने को कहती है जिस समय उनकी प्रेम क्रीड़ा में कोई व्यवधान न पड़े :-

आधी रात चले आइयो मेरे बालमां
सोवै नणद अर सास
पतले जी राजा ...... ।

एक अन्य उदाहरण में नायक... नायिका के लिये खेतों में बरसता बादल ही उद्दीपन का कार्य करता है ।...

बरसण लाग्या रे हालिड़ो बादला
ऊंचे तो चढ़के गोरी छणे देखले
गोरी बल्द के टाल ।.. बरसण लाग्या
कितसीकै बोऊए गोरी छण बाजरा
कितसीक बोऊंए जुवार । .. बरसण लाग्या

1- हाली ।

2- कहां कहां ।

प्रेयसी का नायक को उत्तर :-

थाळियाँ में बोइये रे हाळिड़ा बाजरा
डहरी[2] में बोइयो जुवार ।...बरसण लाग्या
किसायक जाम्या हाळिड़ा बाजरा
किसीक जामी जुवार । ...बरसण लाग्या

प्रेमी:-

समाजू[3] तो जाम्या गोरी हण बाजरा
लाम्बी कडं[4] की जुवार ।...बरसण लाग्या

(2) वियोग श्रृंगार (विप्रलम्भ श्रृंगार) :- प्रेम की तीव्रता में दोनों का मिलन न हो सकने की अवस्था का विप्रलम्भ श्रृंगार कहते हैं । इसकी भी कई अवस्थाएं हैं :- (i) पूर्वराग, (ii) मान, (iii) प्रवास (iv) करुण यहां रति स्थायी भाव है ।

(i) पूर्वराग :- इसमें मिलन के पूर्व की स्थिति का चित्रण हुआ करता है आंखे चार हुई कि तड़पन ...मीठी-2 जलन, हल्का-2 विरह जो लगातार मिलन-पथ की ओर अग्रसर करती है - शुरु हो जाती है । प्रेयसी या प्रेमी के ख्यालों में खोये रहना । उसके रूप सौन्दर्य पर ही मन का लगा रहना ....बस इतना ही पूर्व राग है । पूर्व राग का चित्र वस्तुतः रति की पुष्टि के निमित्त ही हुआ करता है । जिसकी चरम परिणति मिलन अथवा चिर-विरह है । इसे संयोग अथवा वियोग के मध्य की अवस्था भी कहा जा सकता है । अथवा इसे इन

1- थल स्थल ।
2- दल-दल ।
3- समुद्र की तरह गहरा ।
4- चरी ।

क्रमश

दोनों में से किसी एक के अन्तरगत रखा जा सकता है । :-

तेरी रे कुआं उंची नीची पाल
जिंह बढ़ नधियां ठाड़ी जल भरें
एक छंट मधियां पाणिड़ा पिलाय
प्यासा मरे से ए पंछी दूर का
ते तो वो पाना माह भोत सरूप
बोड़ कंवारारबैरी क्यूं रइया
याणी[1] के मरगे मादर -बाप[2]
भाइयां भरोसे कंवारा रह गया
ते तो हे नधिया भोत सरूप
बोड कंवारी ए बैरणे[3] क्यूं रह गई

नायिका कहती है कि प्रेमी जोड़ी का गुजरात तक बढ़े वंश का नही मिला तब नायक कहता है कि तेरी जोड़ी का चम्पे बाग में है । जिसे नायिका भी स्वीकार करती है तब नायक पुन: कहता है :-

ते तो ए नधिया भोत क नदाण,
चलते मुसाफिर कैसी दोस्ती ?
ते तो ए नधियां भोत सरूप,
थाल ए पढ़ुंगा में दे बैरण ले चलूं ।
पढ्या मे पाना माह तैल फुलेल,
नार पराई और गजबी नां चलै ।

1- बच्चा (कम आयु का) ।

2- मां-बाप ।

3- शत्रु ।

(ई) मान:- नायक-नायिका सामने आस पास है - संयोग क्रीड़ा में तल्लीन अथवा उससे पूर्व का वैसे ही अभिनय के बहाने मान... और वह भी क्षणिक। इसकी समाप्ति पर पुनर्मिलन....वही क्रीड़ा हास विलास ...शायद पहले से भी ज्यादा। अत: इसे प्रेम क्रीड़ा का अंग मानना ही उचित है। राधा कृष्ण के पौराणिक मान का चित्रण निम्नलिखित गीत में द्रष्टव्यहै:-

ए जी जित बांट्ये[1] औली भर फूल, उड़े[2] पड़ सारे हो भगवान।
ए जी बरसे से मेह, बाहर भीजे[3] रहे एकले जी भगवान ।।
ए जी म्हारे बौतरे पग ना देय, लीप्या-पोत्यां[4] उपड़े जी भगवान।
ए जी इतनी सी सुण कै नै, किसन महलां ते उतरे जी भगवान।
ए जी एक चणां दोय दाल, दले पाच्छे ना मिलें जी भगवान।
ए जी एक दही दूजे दूध फटे पाच्छे नां मिलै जी भगवान।
ए जी एक चणां दूजी दाल पिसे पाच्छे रलमिलें जी भगवान।
ए जी एक दही दूजे दूध, बिलोये पाच्छे रल मिलें जी भगवान।
ए जी एक पुरुष दूजी नार, मनाये पाच्छे मन मिलें जी भगवान
ए जी रोवै राधे जार-बेजार, आंसू गेरे मोर ज्यूं भगवान।
ए जी राधा रूठें बारम्बार, किसन रूठे नां सरे जी भगवान।

यहां राधा कृष्ण सामान्य नायक नायिका के प्रतीक हैं। नायक किसी भी हालत में नायिका का रूठ जाना सहन नहीं कर सकता। "मान" अथवा रूठा सामान्य प्रेम क्रीड़ा मात्र है। कहीं कहीं ऋतु जनित शारीरिक या स्वाभाविक अतृप्ति भी ऐसही ही तीव्रता का रूप धारण

1- वितरित करना।
2- वहां ।
3- भीगना।
4- साफ सुथरा करना।

कर लेती है । बसन्त का महीनों में जड़ जंगम सभी ने विशेष उन्माद दृष्टिगोचर होता है । चाहे जवानी हो चाहे बुढ़ापा :-

कूदी ए लुगाई मस्ताई फागण में
काची कंवली अगदराई सावण[1] में
बिन घाले मस्ताई फागण में
कहियो रहबे री उस सुसरे मेरे ने
कर मुकलावा ले जा फागण में
कहियो रे उस बहुत प्यारी ने
पांच बरस गम[2] कर पीहर में
कहियो री उस जेठ मेरे ने
कर मुकलावा ले जा फागण में

यहां सावण और फागण एक जैसी तासीर रखते हैं । गोरी पीहर में रहना नही चाहती उसे वहां रहने को मजबूर किया जाता है। कि श नवीन प्रस्फुटित कपोलो सी जवानी के भावों की अभिव्यक्ति है ।

(ii) प्रवास :- प्रवास जनित विरह का चित्रण भी लोक साहित्य में अधिक सुन्दर और स्वाभाविक है । यहां एक एक स्थिति का मार्मिक चित्रण मिलता है । नायक नौकरी पर जाने के लिये पत्नी से विदा मांगता है परन्तु वह अपने मुंह से पति को जाने के लिए नही कहना चाहती इसीलिये कि वह उसे अपने पास ही देखना चाहती है :-

रे गोरी कहदे जाण की -
पत्नि उतर देती है :- जाण की कहेगी तेरी माय
ओ पिया मैं तो कहूं ना मूल[3] भी ।
कैरै[4] थम नौकर लाग्गे थे बूझ[5] कै ।

- -

1- सावण और फागुण एक जैसा ।

2- सबर कर ।

3- बिल्कुल भी

4- क्या

5- पूछकर ।

एक प्रोषित पति का की स्थिति कितनी दयनीय है । न तो बेचारी को सुसराल में कोई सहारा और न मायके में ही सुख :-

किस का पिस्सूं पीसना,

री सासड़ किसके खिलाऊ नन्दलाल ।

री मन्ने किसके भरोसे छोड़ गया ।

एक तो सुसराल में चैन नहीं है तो बेचारी मायके चली जाती है परन्तु यहां उसकी भाभी व्यंग बाणों से बींधती है । यहां एक सान्तवना उसे अवश्य है कि उसकी मां सुख दुःख पूछती रहती है :-

भाभी ताने मारदी, म्हारा गया नणदोई पर देश

छाती पै छलेवा छोड़ गया ।

बाहर ते मायड़ आ गई, ए बेट्टी किसने बोल्ले बोल ।

ऐ बेट्टी साची साच बतादे, तेरा गया दी जमाई परदेश ।

छाती पैछलेवा छोड़गया ।

पति नहीं आये पत्नि को भारी चिन्ता हो रही है । वह अपने भाग्य को कोसती है :-

हाथ की रेख देखण आले

देख मेरे ये भाग निराले

परदेसी ने यू के कर्या

हो आये ना बालमा ।

मन हो जैसा वातावरण भी हृदय को वैसा ही स्पर्श करता है -

- -

अनुकूल परिस्थितियों में अनुकूल एव प्रतिकूल प्रतिस्थितियों में प्रतिकूल। प्रियतम के साथ होने पर सांझ की फुहारें सुखद एवं सुन्दर और मन को भली लगती है। परन्तु प्रियतम की जुदाई में अग्नि के समान-

गगन बरसे छिमे बिजली रे, पड़े बुँदिया लो प्यारी रे।
सामरा बरसा लो प्यारी रे।
कहां गया बाग का माली रे लगा गया आम्ब की डाली
कहां गया सेज का रसिया रे, लगागया एक सा तकिया रे
सामरा बरसा लो प्यारी रे।

"बाग का माली" यौवन प्रहरी के लिये" सेज का रसिया" जीवन साथी के लिये " आम्ब की डाली" नायिका के लिये " एकसा तकिया" अर्थात दोनों का एक दूसरे का सम्बल (सहारा) की उपमा कितनी सुन्दर और सार्थक बन पड़ी है।

चान्दनी राजा बिन मोरे किस काम, चांदनी सइयां बिन मेरे किसकाम
चान्दनी नीबूं के बुलइया परदेस।
जब रे चान्दनी बागों मे आई, चान्दनी नीबूं के बुलइया परदेस
जबरे चान्दनी तालो मे आई, चान्दना आरी के पिलइया परदेस
जबरे चान्दनी सेजो मे आई, चान्दनी जीवन के रखइया परदेस

- -

प्रियतम के बिना चान्दनी भी महत्वहीन एवं कान्तिहीन लगती है। बाग है यहां सौन्दर्योद्यान तथा ताल है -प्रेम सरोवर।

आखिरकार नायिका अपने प्रियतम की जुदाई में इतनी पागल हो जाती है कि उसके अपने कोई खबर नहीं पाती - सावन की रिमझिम और चान्दनी दोनों आग लगाने लगती है - देह में तो आखिर में वह विधवा होना पसन्द करती है। - हे बिजली वहां जाकर गिर जहां परदेस में मेरा पिया है। ताकि मुझे विधवा होने का सन्तोष तो हो जाए क्योंकि वह तो बड़ा जालिम हो गया सुनता ही नहीं है।

§।।/§ करुणविप्रलम्भ :- करुण विप्रलम्भ के उदाहरण भी बांगरू लोकगीतों में कम नहीं है। बाल विवाह की प्रथा के कारण समवय शीलता के अभाव में बालपति के साथ उसका यौवन श्रृंगार मुरझा जाता है। अभिव्यक्ति की मार्मिकता और भावों की सुकुमारता देखिए!-

> रत्न कटोरीही जले रे
> बीरा कोई चूल्हे जले रे कसार[2]।
>
> खूंट में ते गोरी जले
>
> जाके याणा हो भरतार।
>
> रे मेरी बावली मल्हार।
>
> याणे[3] के बालम के ना जांगी ... .।

1- हरियाणा के लोक गीत सांस्कृति मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृष्ठ 3।

2- खाण्ड मिश्रित भुना हुआ आटा।

3- अल्पायु।

एक अन्य दृश्य जिसमें नायिका झूले पर से गिर जाती है तो प्रेमी घबरा जाता है । वह मूर्छित पड़ी नायिका के मुंह से दो शब्द सुनने को व्याकुल हो जाता है । यहां भी देखा जाये तो स्थायी भाव शोक नही है । "रत्ति " है :-

आई से- सामण्यारी तीज
पड़या ए झूला चम्पे बाग मे
झूले थी मिरगा नेणी नार!
झोटे तो देवे साहब बाग में,
चाले थी पिरवा-पिछवा पोन[2] बाग में ।
आया झिकोला मरवण टै पड़ी,
पड़ती के होगे पीले दान्त जी
मुख जरदाई[3] बैरण छा गई-एक बर
एक बर मुखड़े ते बोल जी
बोल थे साहब गोरी ते बाग में ।

सावण के महीने में तीज के त्योहार पर नायिका झूले में झूलती हुई जिसकी आंखे मृग जैसी खूबसूरत थी, झूलते झूलते तेज झूलने के कारण गिर पड़ी और हवा के तीव्र झोंके उसे गिराने सहायक सिद्ध होते हैं । जिस पर नायक बड़ा दुःखी एवं असहाय सा प्रतीत होता है ।

इस गीत में नायक की कल्पना भी अधिक बलवती हो उठी है । उसे पूरी आशा है कि उसकी गोरी को होश आ जायेगा और उसका पुनर्मिलन अवश्य ही होगा । लार्ड ब्राउनिंग को भी एक कविता में { ऐवलिन होप } में ठीक इसी प्रकार आशा होती है कि उसकी प्रेमिका जी उठेगी उसका पुनर्मिलन होगा तो यहां भी नायक पूर्ण आशा वादी है ।क्षणिक मात्र कष्ट तो अवश्य है ।

- -

1- हिरण जैसी आंखों वाली औरत ।

2- हवा ।

3- पीला होना ।

§3§ करुण रस :- करुणा की प्रतिमूर्ति नारी की शोकविह्वलता आंखों में आसूं और कंठ से मधुर ध्वनी निकलती देखकर वस्तुत: निश्चय कर पाना कठिन है कि वह सुखाया शोकसंतप्त है। वस्तुत: सुख दु:ख सभी को समभाव से स्वीकार कर लेने वाली लोकगीतों की नारी अपनी विवशता में भी आकर्षक है। नारी हृदय पर मुख्य रूप से तीन अवसरों में विशेष आघात लगता है। - विदाई, वियोग तथा वैधव्य। एक बांगरू लोकगीत में वैधव्य को प्राप्त होने वाली नारी की करुणा का आसूं बहाना और भाग्य को कोसने का चित्रण इस प्रकार है। :-

कोए पी-पी पपैया है बैरी बोलता
कोए बोले से पीऊ-पीऊ के बोल
तूं मत बोले रै पपैया[1] बैरी नीम मैं
कोए सामण के महिने आवैं तीजड़ी[2]
कोएसबके प तीजां का चा §व§[3]
तू मत . . . .

बैटी के लिये घर में किसके लिए हृदय में क्या स्थान होता है इसकी मार्मिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत पंक्तियों में की जा रही है बैटी अब पराये घर को जा रही है। यह सोच कर पिता के हृदय का जैसे बान्धा टूट पड़ता है जिस लाडली को उसने आजकल सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ सुख सुविधायें प्रदान करने का उद्योग किया था वह आज पराई होने जा रही है। मालूम नहीं उसका वैन लाडली को अधिष्ठ आनन्द दे पायेगा या नहीं। इन सारी बातों में मग्न उनकी चेतना जैसे निष्क्रय रहती है क्योंकि उसकी लाडली को बाबल के मंण्डेरे की चिड़िया के समान थी जो आज उड़ के जा रही है।

- -

1- पपीहा।
2- तीज का पर्व।
3- हरियाणवी में शब्दांत में "व" नहीं बोला जाता जैसे भा §भाव§ इसी प्रकार चाह §चाव§ ।

गीत की अभिव्यक्ति इस प्रकार है :-

ले रे बाबुला आपणां में चला सजन के देस रे
भाइयां नें दिए महल-दुमहले हमें दिया परदेस रे
काहे को ब्याही बिदेस रे लखी बाबल मेरे
हम हैं रे बाबल मंडेरे की चिड़िया[1]
कंकरी मारे उड़ जाँयें रे लखी बाबल मेरे

पति के वियोग में नारी की आन्तरिक वेदना ऐसी असह्य हो जाती है कि उसके चेहरे के लाली समाप्त हो जाती है। उसका नहाना धोना आदि सब छुट जाता है। और अपने घर वाले ऐसे लगते है मानों उस पर अत्याचार कर रहे हों। करुण रस की निम्नलिखित पंक्तियों में उसकी करुणा मयी अन्तर्वेदना इस प्रकार है :-

जिस दिन रे है पिया नौकर सिधरग्या[2] रही चेहरे पे लालीकोन्या
म्हारे घर का नें जुल्म करे में उस मौके पे घाल्यी[3] कोन्या
छोटा देवर लेण नें आया मेरी माता समझावण लागी
सोच समझ के रहिए है बेटी घर पे तेरे भरतार[4] कोन्या।..जिस दिन
जुसे नलके में न्हाया करती वाहे नल की धार कोन्या
सात समुन्द्रा पार उतरगे आठे नणद का बीर कोन्या।.. जिस दिन
जोणसे कमरे सोया करदी आलर तकिए तैयार कोन्या
सात समुन्द्रा पार उतरगे आठे नणद का बीर कोन्या। ..जिस दिन

1- मुंडेर पर बैठी चिड़ियां।
2- चला गया।
3- भेजना।
4- पति।

(4) वीर रस :-

(क) बागड़ लोक में वीर रस की अत्यन्त प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। भारत पर चीन के आक्रमण के समय यहां का लोकमानस वीर रस से परिपूरित हो उठा। यहां के लोग धड़ाधड़ भरती होने लगे एक नवयुवक अपनी प्रियतमा को कहता है :-

> प्यारी दे वरदान मैं सूं भारत की सन्तान।
> देखूं चीन की किलकार जाके कर दूं मारो मार।
> ओमपती मैं करके दिखाऊ काम हिन्द मैं,
> सबसे ऊंचाकर दूंगा मेरा नाम हिन्द में।
> चीन में कर दूं हिन्द का राज, चीनी क्यों रहे मोहताज।
> संयोग मेरा विचार जाके करदूं मारो मार।।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बागड़ लोकगीतों में वात्सल्य, श्रृंगार करुण, और वीररस का बड़ी ही सशक्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति हो गई है उपर्युक्त रसों के अतिरिक्त अन्य शास्त्रीय रसों के उदाहरण भी बहुत संख्या में लोकगीतों में उपलब्ध हैं। अन्य रसों से सम्बन्धित कुछ उदाहरण भी बागड़ लोकगीतों में प्रस्तुत हैं।

(5) हास्य रस :-

लोकजीवन के उन्मुक्त वातावरण में हास्य को बहुत महत्त्व दिया गया है। हर खुशी के मौके पर लोकमानस उन्मुक्त भाव से अपने मन का उद्गार प्रगट करता है। जन्म विवाह पर हास्य रसों सम्बन्धी गीत गाये जाते है जिनमें मस्ती और जिन्दा दिल की तरंगें हिलोरें लेती हैं।

- -

प्रकार
परन्तु रास्ते में चलते हुए व्यक्ति से (प्रियतम) से इस प्रकार की कामना की गई है जिससे हास्य रस स्पष्ट रूप में झलकता है :-

सर पे तेरे बंटा टोकणी हाथ में नेजू डोल ए
ए सखी राही छोड़ बटेऊ बात्था पानी प्यादे मह तसाया

लाडूड्डुआ की मेरी हैली बणवा दे गुलदाणे की नीम भरा दे
जलेबीयां की उसकी झांकी लावा दे पुरिया की उसकी छात दवा दे
जब चालू तेरी गैल हो बटेऊ ।...सर पे तेरे बंटा

(6) रौद्र रस :- बागड़ लोकगीतों में रौद्रभाव की अभिव्यक्ति यथास्थान प्रधानता दी गई है प्रत्येक युग में अत्याचार की श्रृंखलाओं में आबद्ध ग्राम्य जनता के विवश मनोभाव गीतों के संसार में अपनी शक्ति का स्रोत ढूढते रहे है । सदियां की मुगलों और अंग्रेजी की गुलामी भी इन पर अधिक कुछ अधिक मानसिक प्रभाव नही डाल सकी । गुदड़ी के इन लालों ने सिर कटाना सिखा है सिर झुकाना नही सिखा । इनके आदर्श हकिकत और हरिश्चन्द्र आज भी इनके गीतों में जीवीत है जो शक्ति देते हैं :-

सहणे पडते कष्ट अपार,
लोगो धर्म निभाणे मे ।।
हकीकतराय उमर थी याणी,
धर्म पर होई थी वीर कुर्बानी
अपण तन-मन दिया था वार
मगन रहे शीस कटाणे मे ।। सहणे . .....

- -

{7} <u>भयानक रस</u> :- बांगड़ लोकगीतों में मानव भाव की अभिव्यक्ति अत्यन्त सहज स्वाभाविक रूप में ही है। सरल हृदय वाली ग्रामीण नारियां अपने हृदय के भाव को बिना किसी आवरण के बाहर निकाल देने में किसी तरह का संकोच नहीं बरतती। बादल के गरजने पर बिजली के कड़कने पर तथा अन्य प्राकृतिक विपत्तियों के समय कोमल हृदय नारी कितना व्याकुल हो जाती है इस सम्बन्ध में बांगड़ लोकगीत की विरहिणी नायिका आकाश में उमड़ रही घटाये और मेघाच्छन के कारण अकेला भयभीत हो रही है। विकल हो तड़प उठती है :-

क्यूं जीया कीर्ट घटा माह उमड़ी कीर्ट बरसणहारा।
क्यूं जीया आगम घटा माह उमड़ी पाहम बरसण हार।
क्यूं जीया काले तो अ उड़द बढेर के, उठ गए परदेस।
क्यूं जीया काली तो घटा ए डरावणी धोली बरसण हार।

{8} वीभत्स रस :- बांगड़ लोकगीतों में उन सभी भावों की अभिव्यक्ति को स्थान मिला है जिनका अस्तित्व पाया जाता है। लोक जीवन जुगुप्सा भाव से भरा पड़ा है अतः समाज की रूचिकर नीतियों के प्रति परिवार के अप्रिय सम्बन्धों के प्रति व्यक्तियों की अपरिकृत रुचियों के प्रति लोक गीतों में सर्वत्र एक घृणात्मक भाव काव्यंजना देखने को मिलती है। जिस प्रकार बाती की कटोरी में घी धीरे धीरे जलता है और चुल्हे में कसार धीरे धीर भुनता है उसी प्रकार बाल पति की पत्नी अपने दुःख में जलती रहती है। उसके हृदय वेग और यौवनतरंग इस विधवावस्था से झुलसते रहते हैं :-

रत्न कटोरी घीजले रे बीरा कोई चूल्हे जले रे कसार।
घूंट में गोरी जले जाके बांट[1] हो भरतार॥

1- बाल पति।

§9§ अद्भुत रस :- बांगरु लोक गीतोंमें अद्भुत रस को भी उचित महत्व दिया गया है । लोक मानस में अप्राकृतिक तत्वों के अटूट श्रद्धा होती है व अस्वाभाविक और अप्राकृतिक के प्रति उत्पन्न यह आकर्षक उनके जीवन में विस्मयोत्पादक तथ्यों का संचालन करता है । एक बांगरु लोकगीत में प्रिय गमन से एक रात पूर्व पत्नी विचित्र प्रकार के दीपक से रोशनी करती दृष्टिगोचर होती है :-

होआ तो मैं तेल घणा रो
मोटी सै बात
आज सज्जण घर पाहुणा रों
दीआ बलयो सारी रात ।

§10§ शान्त रस:- बांगरु लोकगीतों में शान्त रस की सुन्दर अभिव्यक्ति प्राप्त होती है । जीवन और जगत के दुःखो से दुःखी होकर भावुक लोक मानस अलौकिक सत्ता के प्रति चाहे अनचाहे आकृष्ट हो ही उठता है । संसार की असारता और क्षणभंगुरता से निर्लिप्त होकर वह वैराग्य के सोपानो पर क्रमशः आरोहन करता हुआ दिखाई देता है ।

इक करै तो कर हर से लावै तो लौ लाया कर
पीवो तो पी प्रेम रस, खा तो गम खाया कर ।।
तजै तो तजतिरस्ना ने राखै तो राख सरम को
पढ़ै तो ले गीतो पढ़ सीखै तो योग करम को
सोवै तो सो सेज मोक्ष पर मेटै तो मेट भरम को
छोड़ै तो पाप छोड़ दे, मानै तो मान धरम को
करै तो जप तप दान यग्य अतिथियो पर छाया कर
पीवै तो .... ।

- -

§11§ भक्ति रस :- आध्यात्म प्रधान बागड़ लोकमानस ने हर काल और हर परिस्थितियों में सगुण और निर्गुण ईश्वर के प्रति श्रद्धा- विश्वास को बनाये रखा है । यदि हम यह कहें कि लोक जीवन में हर कार्य इसी ईश्वर आस्था को केन्द्र में रखकर चालित और सम्पादित होता रहा है । अति युक्ति न होगी । इस क्षेत्र में प्रचलित एक लोकगीत में भक्ति रस का प्रबन्ध संचार प्रस्तुत है :-

राम अर लछमन दसरथ के बेटे
दोनू बणखंड जायं
हेरी कोए राम मिले भगवान ।
एक बण चाल्ये दो बण चाल्ये
तीजे बण लग गई प्यास
है री कोए ----------।

छोट्टे छोट्टे छोहरे गऊ ए चरावें
पानीड़ा पिलाओ नंन्दलाल
है री कोए ----------।
नां कोए कुंवा नां कोए जोहड़
नां कोए सरवर ताल
है री कोए ----------।

उपर्युक्त रसों के उदाहरण क्रम से जो गीत प्रस्तुत किये गये है उनसे यह बात साफ हो जाती है कि उनमें रसों की शास्त्रीय व्यंजना के स्थान पर स्वाभाविकता, सरलता और सादगी को प्रधानता दी गई हैं। अत: इन गीतों के काव्यसौष्ठव की तुलना शिष्ट साहित्य से करना इनके साथ अन्याय होगा । तुलना करने पर निश्चय ही इनमें गाम्भीर्य का अभाव मिलेगा परन्तु इनकी पूर्ति लोकमानस के हृदय की सादगी की छाप से हो जाती है ।

2- बांगड़ लोक गीतों में अलंकार विधान:-

अलंकारों का महत्व जितना काव्य क्षेत्र में है उतना लोकगीतों में नहीं है । अलंकारों का काव्य की आत्मा बतलाया गया है । "न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितानम् ।- भामह काव्यालंकार ।

इसी प्रकार अन्य संस्कृत आचार्यों ने काव्य में अलंकार की प्रधानता को स्थान दिया है । इसके विपरित अनेक आचार्यों ने काव्य में अलंकार की अप्रधानता निर्दिष्टता करते हुए अपने अपने मतों का प्रति पादन किया है ।

परन्तु समस्त मत-मतान्तरों पर दृष्टिपात करते हुए निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अलंकारों के द्वारा कविता के मूल सौन्दर्य की अभि वृद्धि होती है और रसोद्रेक सहायता मिलती है । कविता की तरह लोकगीतों में भी मानव हृदय की कोमल भावनाओं की अभिव्यंजना रहती है जहाँ कविता में हृदय गत भावना की एक विशिष्ट नियम निर्दिष्ट अभिव्यक्ति प्रणाली होती है वहाँ लोकगीतों में हृदय के उद्गार सर्वथा मुक्त रूप में विचरण करते हैं । कविता की सरिता नियमों के कृत्रिम बांधों के सहारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवाहित होती है वहाँ लोकगीत पहाड़ी झरने की तरह स्वछन्द वेग और उन्मुक्त तरंगों में मचलते हुए सारे संसार को अपने स्वरों में बांध लेते है । इसी लिये कविता में जो बाह्य और आन्तर नियम जो लक्षित होता है वह लोकगीत में नहीं । कविता में अलंकारों की प्रयास पूर्ण योजना उपलब्ध होती है परन्तु लोकगीतों में उसका नितान्त अभाव रहता है । लोकगीतकार गीत के निमार्ण के समय केवल भाव-प्रेरणा से उद्वेलित होता है - भाषा,छन्द, अलंकार पर उसका किंचित भी ध्यान नही रहता । जबकि इनकी ॥ उपेक्षा नहीं कर सकता । अनुभूति पक्षकी तुलना मे वह कविता

- -

के समकक्ष गहराई और व्यापकता से मुक्त होती है । यही कारण है कि लोक गीतों में अनेक प्रकार के अलंकारों अप्रयासित योजना उपलब्ध होती है ।

अब हम लोकगीतों में प्रमा प्राप्त होने वाले अलंकारों का विवेचन कर रहे हैं । लोकगीतों में शब्दालंकार की अपेक्षा अर्थालंकार के उदाहरण अधिक संख्या में प्राप्त होते हैं । प्राय: रूपक और उपमा का बाहुल्य दिखाई देता है । बांगरू लोक गीतों में अलंकारों के नमूने :-

§1§ अनुप्रास-अलंकार :- जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक से अधिक बार आवृति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है । प्रस्तुत पद में "ट" की एक से अधिक बार आवृति हुई है :-

टोटे मोटे खोटे में, कोय बिरला दिन काटे से ।
हो आदम देह में, विपत्त पड़े जिन के बेरा पाटे से ।।

बांगरू लोकगीत में छेकानुप्रास का एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

आई बरात तेरी देहली पै मां बाजां की आवाज सुणे रे ।
सब कोई राजी हो रे खुशी दिलां में छाई रे ।।

§2§ यमक अलंकार :- जहाँ एक शब्द दुबारा प्रयुक्त हो और उसका अर्थ भिन्न हो वहाँ यमक अलंकार होता है । "दीवा इसी रूप में प्रयुक्त हुआ है जिससे दो भिन्न भिन्न अर्थ स्पष्ट होते हैं :-

दीवा के मरा दीवा के मरा गाल्या लोहरे तो कैमरा,
जाल्या कोयला जे ।
दीवा नामेरा रै दीवा नामेरा गाल्या लोहरे दीवा दस मरा,
जाल्या कोयला ब जे ।

- -

{iii} श्लेष अलंकार:- बांगड़ लोक गीत की निम्न पंक्तियों में श्लेष अलंकार की शोभा दृष्टव्य है :-

बीर बान्नी घर की बान्नी

"यहां "बान्नी" शब्द और त और शोभादो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है जो श्लेष अलंकार का उदाहरण है ।

{ii} उपमा अलंकार :- जहां उपमेय और उपमान का सादृश्य समकक्ष हो वहां उपमा अलंकार होता है । प्रस्तुत पंक्तियों में औरत की आंखों की सुन्दरता की उपमा हिरणी की आंखों से दी गई है ।:-

झूल्लै थी मिरगा नैनी नार,

झोटे[1] तो देवै साहब बाग में।

{i} उदाहरण अलंकार:- उदाहरण अलंकार का भी प्रयोग बांगड़ लोकगीतों में सुन्दर तरीके से प्राप्त होता है एक गीत में प्रवासी प्रेमी के वियोग में उसकी मनोवेदना और पीड़ा को अग्नि के समान कष्टप्रद बताया है :-

परदेशी की प्रीत की कोए ना करियो होड़[2]।

कागजों की आग ज्यों गया सिलगती छोड़ ।।

यहां प्रेमिका आग की भांति सुलग रही है जो हृदय की विरह का उदाहरण है ।

{iv} रूपक अलंकार:- जहां सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान का आरोप किया जावें रूपक अलंकार है ।:-

सासू तै बीरा चूल्है की आग ननद भादों की बिजली जी

सौ{सु}रा तै बीरा काला सा नाग देवर सांप सपोलिया[3] जी

राजा तै बीरा मेहन्दी का पेड़ कदी रचै कदी ना रचै जी

- -

1- झूले ।

2- मुकाबला ।

3- सांप का छोटा बच्चा ।

(1/ii) विभावना अलंकार :- यहां विपरीत कारण द्वारा कार्य की उत्पत्ति का वर्णन हुआ है । जब उसकी जवानी को उसके प्रियतम की आवश्यकता थी वह उसके पास नहीं थे परन्तु जब जवानी ढलने लगी तब प्रियतम का आना विपरीत कारण बनता है । :-

जब साज्जन ए परदेस गए, मस्ताणा फागण क्यूं आया ।
जब सारा फागण बीत गया, तैं घर मैं साज्जन क्यूं आया ॥

(1/iii) प्रतीक अलंकार :- यहां गीतों में अनेक प्रतीकों को स्थान दिया गया है यहां शरीर के लिये "चरखा" तथा आत्मा केे लिये "छली" प्रतीक प्रयुक्त हुआ है । :-

"चरखा" अजब अमोला रे, बड़े भाग से पाया ।
चरखा पड़ा 2 टूट आया काते क्यूं ना री ।।
जिन कात्ते तेरी होगी कुंवारी माने क्यू ना री ।।
तेरा "छली"[1] जब राजी होई कात कात दूंलावै ।

(ix) उल्लेख अलंकार :- जब कार्य -विषय का अनेक प्रकार से वर्णन किया जाये तब उल्लेख अलंकार होता है । यहां विधवा का अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है अत: उल्लेख अलंकार है :-

कोए सारी सहेली है सींगर[2] झूलती
कोए विधवा ले बैठ्यी से उदास
तूं मत बोले रे पपैया बैरी नीम मैं
कोए सारी सहेली है बेब्बे[3] गावती
कोए विधवा ले बैठ्यी से उदास
तू मत बोले रे पपैया बैरी नीम मैं

1- पति ।
2- श्रृंगार करना ।
3- बहिन ।

3- बागड़ लोकगीतों में छन्द :-

छन्द के विषय में कुछ विशेष तथ्य स्मरणीय है । सामान्यतः अभिव्यक्ति दो प्रकार की होती है - गद्यात्मक एवं पद्यात्मक गद्य सर्वथा वर्ण, मात्रा, यति और गति के नियमों से मुक्त करता है । जबकि पद्य में प्रत्येक शब्द योजना निर्दिष्ट नियमों के अनुसार होती है । यही नियमित शब्द योजना छन्द कहलाती है । सम्पूर्ण सृष्टि छन्दोमयी है । सृष्टि के छन्द स्पन्दन युक्त आवेग की प्रथम मानवा अभिव्यक्ति कविता और संगीत रूप में भी हुई होगी ।

कविता के क्षेत्र में छन्द योजना अत्यन्त प्राचीन है । किन्तु यह भी स्मरणीय है कि युग और उससे प्रभावित मनःस्थिति को अभिव्यक्ति प्रदान करने के उद्देश्य के छन्दों के स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है । नये छन्दों का आविष्कार कवि की क्षमता का परिचायक है क्योंकि भावनाएं अपने प्रकाशन के लिए उपयुक्त माध्यम खोज ही लेती है । युग एवं प्रवृत्तियों के अनुसार छन्दों का उत्थान पतन होता है ।

छन्द का अर्थ है - आह्लादन । काव्य में आह्लादमयी सम्मोहिनी शक्ति का उद्भावक छन्द है । भरत मुनि ने भी सम्पूर्ण वांग मयै" को छन्दयुक्त कहा है । किन्तु यह भी स्मरणीय है कि विचारकों का एक वर्ग जहां छन्द के अनिवार्यता का समर्थक है वहां दूसरा विरोधी ।

जो छन्द हीन काव्य है वह रसहीन हो जाता है । कभी कभी अनुरूप छन्दों के अभावों में भावनाओं का वेग निर्बन्ध होकर निर्धारित सीमा का अतिक्रमण कर देता है और छन्दमुक्त काव्य की सृष्टि होती है ।

- -

भाव स्वतन्त्रय की दृष्टि से छन्दों के अनिवार्यता का विरोध अपेक्षित सा है । यही कारण है कि लोकगीतों में निश्चित विधान का अभाव है । कहीं -2 छन्दों का समावेश लक्षित भी होता है तो वहां नियमों की शिथिलता रहती है । लोकगीतों में कुछ ऐसे छन्दों का प्रयोग प्राप्त होता है जो वर्णित एवं मात्रक छन्दो के अन्तर्गत नहीं आते । केवल लय पर आधारित होकर चलते हैं । इस प्रकार के छन्दों में यहां दोहा, चौबेला, रागनी आदि की क गणना आती है ।

संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत भाव व्यंजना और छन्द में सामंजस्य पाया जाता है । लोकगीतों में भी भावव्यंजना और छन्दों के सामंजस्य प्रयास दिखाई देता है । यह छन्द मुख्य रूप से ताल और लय पर आधारित होते हैं । ग्रामीण स्त्रियों के स्वरों का आरोह-अवरोह द्वारा विशेष प्रकार की लय का निमार्ण करके ढंग से गीतों का गायन करती हैं । कि कहीं भी गति भंग या गति बोध नहीं दिखाई देता । जीवन के गम्भीर पक्ष की अभिव्यक्ति के लिए लम्बे लम्बे छन्द संसार के प्रति अनासक्ति एवं विराग के भावों में निर्गुण छन्द साहस और वीरता के उदात्त भावें के प्रकाशन के लिए आल्हा छन्द का प्रयाग किया जाता है ।

अत: लोकगीतों में उपलब्ध छन्दों का कोई निश्चित स्वरूप नहीं है । एक ही छन्द में अनेक रूप दिखाई देते हैं । यही कारण है कि लोकगीतों में कोई छन्द विधान नहीं पाया जाता । इन गीतों में छन्द नहीं केवल लय होती है ।

- -

4- बांगिक लोक गीतों में तुक और लय :-

तुक के प्रयोग से कविता स्मरण में मदद मिलती है और श्रुति सुखद भी हो जाती है । इसीलिये प्राचीन हिन्द कवियों द्वारा तुकान्त कविता लिखी गई । तुक कविता का एक जरूरी अंग और सौन्दर्य वृद्धि करने वाला बन गया है । अब भी तुकान्त प्रवृति पाई जाती है । बांगिक लोकगीतों में भी तुकान्त पाये जाते हैं । परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इनमें तुक के नियमों का पूर्ण रूप से निवार्ह किया जाता है । कभी कभी एक ही गीत में कुछ स्थलों में तो तुक रहती है और कुछ में उसका अभाव :- कंथ मनावण आया मेरी साथण

ओ चलो क्यूं न राज ।
चाल गोरी पर आपणे जी,
बागा बंगला छिवादों मेरे माफ जी।
रहदों न राज, चांद सूरज
सौंही आरथा मेरे माफ जी ।

कई बार उसी शब्द को गीत में दोहरा लिया जाता है :-

एक छोटी जेनारे[1] ते आई
उसके दादा ने रे से बुलाई

गीतों में प्राय: अन्त में आने वाली पंक्तियां दोहरा ली जाती है क्योंकि इससे गीतों की लय में मधुरता और सरसता आती है और तुकान्त भी यथास्थान स्थिरता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैं ।

- -

1- जेवनार ।

ब बांगड़ लोकगीतों में अन्त में आने वाली पंक्तियों की दोहराई के अनेकों उदाहरण मिलते हैं :-

किसियां[1] आना है न्योंदियां[2] किसयां के घर जाय
यो बनवाड़ा है न्योंदिया ।
सिरी राम आनां है न्योंदिया घर राम जीके है जाय
यो बनवाड़ा है न्योंदिया ।
खंडवा[3] बान्धो हैं लटपटी पल्ले छोडे[4] दो च्यार
यो बनवाड़ा है न्योंदियां ।

ये तुक नितान्त स्वाभाविक हैं इनके जुटाने के लिये किसी प्रकार का प्रयास नहीं किया गया है वस्तुत: लय ही इन गीतों का मौलिक गुण है । जब औरते सामूहिक रूप में किसी गीत को लय पूर्वक ह्रस्व को दीर्घ, दीर्घ को ह्रस्व ...और कम अक्षरों की पंक्ति को स्वाभाविक रूप में पूरा कर लेती है तो ...तो उनके गीतों का लय युक्त उचारण उस गीत में रस संचार कर देता है । शुष्क से शुष्क गीतों में लय द्वारा रस गगरी उडेल दी जाती है । गीतों में लय का अत्याधिक महत्व है । लय की अनुभूति को सुनने पर हो सकती है । गीतों में लय की विशेषता के कारण ही पं० राम नरेश त्रिपाठी ने कहा है कि-- लोकगीतों में छन्द नहीं केवल लय है ।

बांगड़ लोकगीतों में बालगीतोंमें आं आं आं आं, सांगों में अर र र र र अर र र र तथा इसी प्रकार भाजों की अपनी एक विशेष लय बड़ी आनन्दमयी और मन्त्र मुग्धमयी होती है -मिठास घोलनेवाली ।

1- किसी दूल्हे को ।
2- निमन्त्रण दिया गया है ।
3- पगड़ी ।
4- सिरा ।

5- बांगरू लोकगीतों में स्वाभाविकता और मार्मिकता :-

लोकगीतों में सामान्य जन सरलतम जीवन की विभिन्न अनुभूतियों की जो स्वाभाविक एवम् मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है वह अन्यत्र कठिन है। सीधी और स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानव हृदय पर शाश्वत प्रभाव डाले बगैर नहीं रह सकती। अनुभूति और अभिव्यक्ति का एक दूसरे में वरण ही लोकगीत का प्रधान तत्व है। जो संवेदन शील मानव को वाद विवाद से दूर रसोद बोध की चरमावस्था तक पहुंचा देती है।

यह तो सर्वमान्य सिद्धान्त है कि काव्य की लोकप्रियता उसमें निहित भावनात्मक उत्कर्ष पर निर्भर करता है क्योंकि काव्य के तीन मूलभूत भाव तत्वों भाव, कल्पना और बुद्धि में भाव को ही सर्वोपरि माना गया है।

बांगरू लोकगीतों में भी स्वाभाविक भाव व्यंजना द्वारा मर्म स्पर्शी प्रभाव की उपलब्धी होती है। जीवन का सुख दुःख इन गीतों में अपनी सम्पूर्ण संवेदना के साथ अवतीर्ण हुआ है। बांगरू लोककाव्य में अनेक स्वाभाविक वर्णन नितान्त स्वाभाविक शैली में प्राप्त होते है। मनोभावों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति की छटा निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है :-

तीजों का त्योहार सखी है,
सब बदल रही बाणा[1]।
मैं निकली बिचली गैल[2]
जेठानी मार दिया ताना।
जिनका पति बसे परदेस
है से जीन ऐसे मरना।

पति के परदेस जाने पर पत्नि उससे मिलने के लिए आतातुर होती है और उसका मार्मिक चित्रण बड़े ही स्वाभाविक ढंग से किया गया है।

1- पहनावा।
2- साथ ।

एक अन्य बांगरू लोकगीत में वियोग का चित्रण उसके पति के प्रवास के कारण बड़ा ही हृदय स्पर्शी बन पड़ा है ।:-

के दलिये का लागगा सास मनै भावतां कोन्या
ऐ पति गये परदेश मेरा जी लागतया कोन्या
ए ठा के जेवड़ी ठा के दराती मै हुई खेत की राही
ए जबर भरोठा बान्ध लिया मेरी थर थर कांपै जाड़ी ।...के दलिया

वियोगनी को भड़काने के लिए वर्षा की बुन्दे तेलबिन्दुओं का कार्य करती है उसे प्राकृतिक दृश्य बिल्कुल भी नही सुहाता क्योंकि उसके प्रियतम नहीं है ।-

रे गगन गरजे, झिमके बिजली,
पड़े बुन्दिया भरै क्यारी
सबै बिरहा की प्यारी
कहा गए सेज के रसिया ?
लगा गए बाग केमाली ?
लगा गए पकसी डाली ।
रे गगन गरजे, झिमके[1] बिजली ।

प्रियतम के बिना उसकी सेज सुनी पड़ी है इस यौवन के उपवन का माली प्रेम का बिरवा लगा कर मुझे अकेली छोड़ कर ना जाने किधर चला गया । उसका पति नौकरी के लिये विदेश गया हुआ है उसके इस असहनीय मर्म की व्याख्या बड़ी स्वाभाविक सी लक्षित होती है ।

1- चमकना ।

6- दार्शनिक चिन्तन :-

यहां के लोकगीतों में दार्शनिक चिन्तन की अभिव्यक्ति बड़ी श्रेष्ठ और स्वाभाविक सी की गई है।

यह संसार चक्कर सुख दुःख पूर्ण है। जब जीव काम क्रोध मोह, लोभ अहंकार आदि का परित्याग करता है तभी उसका बन्धन छुटता है यह तथ्य बांगरू लोक मानस को अभिव्यक्त करने वाले निम्नलिखित लोकगीत में मिलता है :-

इस संसा चक्कर में फंस के
बड़ा दुःख हो से
मन चित बुद्ध अहंकार ये चारों अंतकरण
कुछ हो से
हो इन झगड़ों से दूर जीव ने मुश्किल ते
सुख हो से
जीव आत्मा का इस देह करमां ते संगठन से।

इस एक अन्य बांगरू लोकगीत में जीवन दर्शन की छाप बड़ी सार्थक सी झलकती होती हुई दिखाई देती है :-

दुनियां मे रे बाबा नहीं रे गुजारा[1] किसी ढब ते
घर मे रहे तो कैसा जोगी बन में रहे बिपत का भोगी
मागें भीख बतावै लोभी त्यागी कहा गया कब ते
दुनियां मे रे ....
बोल ते बावल बतावै नां बोलू ते गरभीय[2] रहा
करे खुसांमदे[3] हार गया है डर रै म्हारे डर ते
दुनिया में रे ---.... ....

1- तरीका।
2- गर्वीला।
3- खुशामद।

7- बांगर लोकगीतों में अध्यात्म भंगुरता :-

निर्गुण भक्ति के अनुसार शरीर पांच तत्वों का मिश्रण है जो मृत्योपरान्त उन्हीं में समावेश कर जाता है। संसार का प्रत्येक पदार्थ नश्वर है, केवल आत्मा अनश्वर है .... अजर और अमर । एक बांगर लोकगीत की पंक्तियां :-

मिट्ठी के मांह मिट्टी मिल गई बबल मिलगी पवन पवन के मांह
किसका रहे हवाल माली, कोन्या फूल चमन के मांह
दीपक में ते निकल रोशनी, धूमा धार तैल जलग्या ।
पांचा में से एक निकल कर बेरा ना किलके रल गया ।

सगुण भक्ति का एक साकार सा उदाहरण जिसमें ब्रह्मा-विष्णु महेश त्रिशक्ति का अवतार तीनों गुणों सत्तो रजओं तथा तमों गुणों का वर्णन किया गया है ।

सिरष्टी खातर रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण, मैल मिलाए
काम क्रोध स्वरूप अंहकार ते बिरह्मा भी घबराए
विष्णु कहने लो बिरह्मा से, रव क्यूं ढील लाई ।
पूरन ध्यान दिया ईश्वर ने सिरष्टी खातर भाई .... टेक
व्याकुल होकर दो गुण तब दिए सरीर बनाना चाहे
सतगुण ते अहंकार ने तजके सिव के दरसन पाए
रोकर सिवजी कहन लो मेरी देह किस लिये बनाई .. टेक

और इसके अतिरिक्त बांगर लोकगीतों में क्षणभंगुरता विषयक अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं ।

1- देर

8- बांगड़ लोकगीतों में नारी चित्रण :-

नारी जीवन की गहराइयां, मानव जीवन में उत्पन्न सुख दुःख की लहरों में हर्ष की अपेक्षा अवसाद का स्वर आदि की स्वाभाविक अभिव्यक्ति की गई है । ऐसा प्रतीत होता है कि मानों लोकगीत के अज्ञात रचयिताओं ने जगत के कोने -2 में बिखरे अवसाद का कण-कण सहज कर अपनी वाणी का रूप संवारा है ।

बांगड़ लोकगीतों में सरल स्वभाव, सादा तथा कठोर जीवन का इतिहास साक्षी है । अर्धांगिनी शब्द का सार्थक साक्षात्कार बांगड़ लोकगीतों में नारी दर्शन से प्राप्त होता है :-

"शूरवीर और चतर पुरस कदे[1] मोटा ना होणे का,
जिसके घर मै पति भरता नार, कदे टोटा ना रहणे का ।"

यानि कर्मयोगी और चुस्त व्यक्ति को आप कभी मोटा नहीं पायेंगे और पतिव्रत धर्मपालन करने वाली औरत के घर में गरीबी प्रवेश नहीं कर सकती ।

बांगड़ लोकगीतों में गृह कलह की निन्दा निम्नलिखित पंक्तियों में दर्शाई गई है :-

घर की राड़[2] पड़ोसी देखें कितनी बुरी लियाकत से ।
म्हारी तेरी क्या ताकत से रावण से बण्ये बिगड़ों री मां ।।
पंपापुर में रीछ राज हुए जिसने जाने सारा जगत ।
एक पूत घर बार का प्यारा दूसरा हो ग्या सारी अंत ।।

1- कभी ।
2- कलह ।

नणद भावज के प्रेम का खूबसूरत स्वाभाविक चित्रण लोकगीतों के माध्यम से कितना सरस एवं मधुर बन पड़ा है। ननद अपनी भावज का मन बहलाती है और उसकी बलाएं लेती है। दोनों परस्पर के मेल जोल से घर का कार्य करती हैं। भावज कहती है। कि ए नणदल उठ चल मुझे अपने स्वसुर का सरोवर तो दिखादे क्योंकि मुझे वहां से पानी लाना है। तालाब नहीं आता और दिखाई भी नहीं देता। फिर तालाब नजर आने पर नणद तालाब दिखा देती है औ स्वंय दातुन करने लग जाती है :-

उठरी नणदल पाणी नै चाल,
सरवर दिखा दे अपणे बाप का
चाल री नणदल कोस पचास
सरवर ना आया तेरे बाप का
वा दीखे री भावज ऊंची नीची पाल
वो दीखे सरवर मेरे बाप का
तुम ते री भावज घड़ा डुबोय[1]
मै कहं दातण हरियल डाल[2] की।

इन पंक्तियों में वास्तिवकता, सरलता, और मनोविनोद के साथ साथ पारिवारिक जीवन की साकार झांकी प्रस्तुत की गई है। जब बातों बातों में सास बहूं के विचारों में विरोधाभास झलकने लगता है बहूं की व्यगात्मक बातें सुनकर लड़का अपनी मां का अपमान समझ कर उसे अपनी मायके भेजने को तत्पर होता है तो मां की दूर दृर्शिता परिस्थितियों को सम्भालती है :-

ब्यान्है ते बेटा दिया रे बिड़ार, ब्यान्है ते घालो धन नै बाप कै।।
बेटा या धन[3] जन्मैगी पूत, बेल बधैगी[4] तेरे बाप की ।।

1- घड़ा भरना । 2- वृक्ष का नाम।
3- पत्नि । 4- वंश परम्परा की वृद्धि ।

क्योंकि वह गृह लक्ष्मी है । इसकी कोख से उत्पन्न पुत्र रत्न से तुम्हारे पिता की वंश वृद्धि होगी ।

नारी की आन्तरिक पीड़ा उसकी आंखों के माध्यम सेबाहर आती है -असहनीय सी । "तुम ते चाले नौकरी म्हारो कोण रुखाळो[1]" पति के प्रदेश प्रस्थान पर नारी की कसक एवम् पीड़ा का सम्बन्ध सुन्दर चित्रण में दर्शाया गया है । क्योंकि उसके बाद उसका अपना कौन है:-

जिनका पति बसे परदेस,
है से जीना ऐसे मरना ।

निर्धनता रूपी अभिशाप ग्रसित एक गृहिणी की दीनावस्था में भूख से तड़पते हुए अपने हृदय के भावों की अभिव्यक्ति कितनी मर्म स्पर्शी बन पड़ी है, जब वह अपने लाल को अन्तिम लोरी देती है :-

दूधो कियां पियाऊं ओ लाल ?
तन्ने कियां जियाऊं ओ लाल ?
दूध कठै अब तन मे म्हारे
मरणो सूझे जियड़ो हारे
अब तक आसा कदे ना होई
पेट बल्यो पर कदे ना रोई
अब तो चूल्हे चढ़े ना दाल ।
दूध कियां[2] पियाऊं ओ लाल ?

स्तनों का दूध सूखना, सहनशीलता का बान्धटूटना, भोजन का स्वपन बनना आदि व्यवस्थाओं में मातृत्व छूट कर रह जाता है । नारी जीवन का गरीबी से संघर्ष का कितना हृदय स्पर्शी चित्रण है ।

1- रुखवाला ।

2- कैसे ।

9- बांगरू लोकगीतों में प्राकृतिक चित्रण :-

बांगरू लोकगीतों में प्राकृतिक प्रतीक, अप्रस्तुत एवम् बिम्ब विधानों का कहीं कहीं चित्रण मिलता है चाहे वह प्राकृतिक चांद सितारे, वर्षा बादल इत्यादि रूप हो चाहे अप्राकृतिक कृषक के अपने उपकरण हों उनका वर्णन इन लोकगीतों में मिल जाता है। प्राकृतिक चित्रण इन गीतों में मिलने का कारण यह है कि प्राकृतिक सुषमा ग्रामीणों के लिए मात्र वर्णन की वस्तुएं ही नहीं है बल्कि वह उनकी चिर-परिचितअभिन्न सहचरी भी है। प्राकृतिक के भीतर वे बसते है और उनके भीतर प्राकृतिक का आवास है। मानवीकरण का एक उदाहरण बादलों के माध्यम से :-

एक होड़े वाला छैल बादलां की छाए छांए छां जा।
तेरे होड़े की पकड़ी लगाम ल गैल तेरे चालूंगी।
मेरे हार में सवास्ण मार तेने रै मैंकादूंगी।
तेरी माता बुझे बात बेटा रै उदासी क्यूं खड़ा।
माता हाथां में गुठी आज समुन्द्र मैहे दे पड़ी। ...एक होड़े

निम्नलिखित चित्र ध्वनी गीत में झूलने वाली कन्याओं के बारे आभूषण और सोलह श्रृगार की विचित्र छटा पर मोहीत होने वाले गीत का संगीतमय एवं मनोहारी बिम्भ प्रस्तुत है।:-

नान्ही नान्हीं बुंदिया मीहा[1] बरस रह्या जी
हां जी कोए[2] च्यारू दिसा पड़े से फुहार
हां जी कोए सामण आया सुहा सुहावणा जी।

1- मेहा।
2- गाने में हां का आं, है का ए हो जाता है।

आलम्बन उद्दीपन, मानवीकरण तथा अन्य चेष्टाओं का वर्णन आगेह

लोकगीतों में उल्लेखनीय है । सावन के गीतों में काली डरावनी घटाओं के उठने और सफेद घटाओं के बरसने का ऋतु विज्ञान सम्बन्धी उल्लेखनीय है । पश्चिम में उठने वाली घटायें जो दूधियां अथवा तीतरपंखी रंग की होती है जहां वहां बरसात की झड़ी लगाती है " बरसाण लाग्यी रै काली बादलो॥ काली घटाओं के बरसने का भी उल्लेख है किन्तु दूधियारे रंग के बादल वर्षा का अचूक लक्षण सिद्ध होते हैं । काली घटा विरह का उदीपन रूप प्रस्तुत है :-

क्यूं जी कोयल काली घटा डरपावणीं[1]
धौली[2]बरसण -हार ।
क्यूं जी कोय, किंघट घटा माह उमगी ।
किधांट[3]बरसणहार ।
क्यूंजी कोय आगमैं[5] घटा माह उमगीं[4]
पाछ्यमैं बरसणहार ।
क्यूं जी कोय, काले तै उद्ध अबेर के
उठ गए परदेस ।
क्यूंजी कोय, आंवण आंवण[7] माह कह रह्या
ला दिए बारौ[8] साल
क्यूं जी थारे छप्पर पुराणे[9] माह हो गए
लड़कण लाग्ये बांस ।
क्यूं जी थारे, उद्ध पुराणें ॥पक्के॥ हो गए
सूकण लाग्यी बेल
क्यूं जी थारी बोरी पुराणीं माह हो गई
ढुलकण लाग्या रूप ।

- -

1- डरावणी 2- सफेद 3- किस दिशा में 4- उठी
5- पूर्व दिशा 6- पश्चिम दिशा 7- आगमन 8- बारह वर्ष
9- छप्पर पुराने ।

बेले सूखने लगी यहां यह बेबबःरी देहवल्ल री अप्रस्तुत विधान का रूप है । प्राकृतिक चित्रण में " इमली" में लक्षणा है :-

बूढी ए लुगाई मस्ताई फागण मे ।
काची अंबली गदराई सामण मे ।
बिन छाला मस्ताई फागण मे
कहियो री उस सुसर मेरे ने ।
कर मकुलावा ले जा फागण मे ।
कहियो रे उस बहुआ म्हारी ने
पांव बरस गय छट 2 पीहर मे ।

यहां नवीनओं, नववधुओं तथा किशोरियोंकी कि रूप माधुरी ओर संकेत करती है । चन्ने और गेहूं से भरे खेत तथा जमना तट की निर्मल जलधारा का प्रवाहबसन्त बहार की मादकता के प्रतीक है :-

दिल्ली तेरे गोरे रे खड़ या चणे का खेत
जमना जी के कांठै पै लहुया गीहूं का खेत ।·

कृषक के उपकरण और प्राकृतिक मेलजोल का विधान निम्नलिखित है ।:-

खेत काटती जाए अनमोल दराती लोहे की, ओएजी ---2
सर -सर सर- सर हवा चले और खेत मेरा लहरायें
छर-छर- छर-छर चले दराती कट काट गिराये ।
खेत काटती जाए अनमोल ----------------।
आसमान में सूरज चमके धूप पड़े मदमाती ।
टप टप टप टप गिरे पसीने फिर भी चले दराती ।
खेत काटती --- जाये अनमोल ---------- ।

।- सावण और फागुण एक जैसी तासीर रखते हों ।

10- बांगरू लोकगीतों में राष्ट्रीय भावना:-

यहां के जनमानस में सदैव से ही राष्ट्रीय भावना कूंक -2 कर भरी हुई है । राष्ट्र की भावना का यहां सर्वोत्कृष्ट स्थान है । निम्नलिखित आल्हा बन्दना से राष्ट्रीय भावना का विशुद्ध स्वरूप एवम् सांस्कृतिक एकता का साकार चित्रण किया गया है जिसे सुनकर मनुष्य तन्मय हो जाता है ।

जय जय जननी, सब दुःख हरणी तारण तरणी पालनहार
शरण पड़या सूं माता तेरी नैय्या मेरी लगादे पार
पूरब सुमरू कामच्छा नै उत्तर सुमरू श्रीकेदार
पच्छम सुमरू विंध्यवासिनी, दक्खन रामेश्वर सरकार
धौल गिरी की सुमर भवानी और बेलोम सारदा ध्याय
मैय्या सुमरूं गढ़ मेरठ की कलकत्ते की काली माय
चन्डी सुमरूं काश्मीर की जो भक्तां की करे सहाय
दुरगे सुमरूं वाहिनी दाहिणी भुजा विराजे आय ।

अंग्रेजी के प्रति इसकी विरोधीभावना का रूख ठीक रामधारी सिंह दिनकर के "हिमालय" का ही रूप नजर आता है जिसके माध्यम से ही उन्होंने देशवासियों में चेतना का संचार किया है कि वे दासता के बन्धनों को तोड़ दे :-

हम हरियाणे के छोरे से देश धरम पे मिटणा जाणे
अब तो सुत्ते[1] जाग पड़े अब तेक सोय लाम्बा ताणे
हम देखें जोर जुल्म ते तरियां[2] इब रोब करेगा
या तो अपणे घर नै जाग्या या बिन मांगी मौत मरेगा ।

1- सोना ।

2- प्रकार ।

राष्ट्रीय भावनासे अतिप्रीत एक अन्य गीत का स्वभाविक चित्रण बन पड़ा है :-

कभी दुनिया में ....¹हम डरया नही करते
जिनको है नही मरना आता उनको हर कोई त्रास दिखाता
भारत के वीर डरया नही करते . ....कभी दुनिया में ....
मौत से डरया करें वे पापी, जिन्होने पाप करे हो काफी
माफी याचना वीर करया नही करते ...कभी दुनिया में...

यहां के अनेक गीतों में देशप्रेम देश भक्ति एवम् वीरता का चित्रण मिलता है। एक अपाहिज अपने देश पर जान कुर्बान करने को किस तरह व्याकुल रहता है।-

भारत के भाग्य तूं, सोता क्यों जागता तूं
खेलो वा फाग तूं, भारत के भाग्य तूं

यहा जोगी, भाट्ट, सारंगीवाले गली-2 कूचे-2 में राष्ट्रीय भावना से भरे हुए गीत गाते रहे हैं :- एक नमूना :-

आज मातृभूमि को दुःखी देख भारत के वीर भड़क उठे
देश धरम जाति खात्तर घरबार बाल कुनबे छूटे
वा जालिम जगह याद आवे जड़े भगतसिंह फांसी टहे
आज मेरी आख्यां में पाणी आग्या देख के भारत का दीण

अंग्रेजों के प्रति यहां की औरतों की विरोधी भावना का एक तुलनात्मक राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाला लोकगीत :-

हे म्हारे अंगरेजों की छोहडी रहवै आंकी बंगला में
हे म्हारे देस की छोहरी डोब दी इस दुरपे दांती ने
हे अंगरेजों के छोहरे पीवै दूध गिलासां में
हे म्हारे छोहरे डोब दिए खाट्टी लास्सी ब नै।

1- कोई नाम।

चीन व पाकिस्तानों के साथ युद्धों में भी राष्ट्रप्रेम व बहादुरी के गीतों के माध्यम से नौजवानों को प्रेरित किया जाता रहा है :-

कर देश की रक्षा बाल लाल मेरी सजधज के
अरि दल में सीमाएं तेरी, चारों ओर से आके घेरी
क्या इसका नही ख्याल....लाल मेरे सज धज के
जिस दिन के लिये तने दूध पिलाया वो आज लाडले आया ।
करके दिखा कमाल लाल मेरे सजधज के ।

नन्ही सी बालिका का हृदय भरी राष्ट्रप्रेम वह अपने देश के लिए लड़ने को आतुर रहती है :-

मैं चीन से लड़ने जाऊंगी मानूं ना मेरी मां ।
मैं भी दो हाथ दिखाऊंगी, मानू ना मेरी मां ।।

और एक अन्य गीत :-

देश की रक्षा करन खात्तर मरते देश दिवाणे
आज वीर बलवान यहां पर जाते है पहचाने
रखनी है लाज देश का चलो भाई सीमाए पर -----

राष्ट्र को समर्पित राष्ट्रीय भावना :-

गर्दन नीची कर ले हो हो जयहिन्द की माला घालूं
वैदिक धर्म निभाऊं हो होपति भरता नार कहाऊं
सुसरे की धोती धोऊं और सासू के पैर दबाऊं। ..गर्दन बनीची
पति को देश की रक्षा खातिर भेजू सेना मैं
और मैं भी देश सेवा खातिर जान अपणी कुर्बान करूं। ..गर्दन नीची

अभिलाषा

छैल मैल्ला[1] जांग्यी बाजणा दे मेरा नाड़ा[2] (3)[3]
नाड़ा मेरा भारी दूर का जाणां... मै छैल मैल्यां (3)

दामण मेरा भारी दूर का जाणां ....मै छैल मैल्यां

चुनरी मेरी भारी दूर का जाणां ... .मै छैल मैल्या
गठड़ी मेरी भारी दूर का जाणां ..... मै छैल मैल्यां
पायल मेरी भारी दूर का जाणा .... मै छैल मैल्यां
जूती मेरी भारी दूर का जाणां ... मै छैल मैल्या
मै छैल मैल्या जांग्यी बाजणा दे मेरा नाड़ा ।

(श्रृंगार रस)

2. बाभ्न श्रृंगार

हे सासू बढ़िया सी मंगा दे साड़ी
मै चक्कर काटूं[4] छड़ी छड़ी ।
हरिया 2 कब्जा मंगा दे
हाथ के मंगा दे टैम घड़ी[5] ।

हे बहूवड़ मेरा लाल गया परदेस
किस ते मांगूं मै टैम घड़ी ।
हे री सासड़ बंगला तिलियां किवाड़[6]
भजन करूं मै तो बहू बड़ूं[7] ।

(श्रृंगार रस)

1- साथ । 2- चिमनी । 3- तीन बार आवृत्ति के लिए ।
2- नाचना । 5. समय बताने वाली घड़ी । 6. घास फूंस के तिनकों द्वारा बनी हुई । 7. मस ऋतु का समय उल्लास और नृत्य का है परन्तु श्रृंगार के प्रसाधन न होने पर तो वैरागी हो जाना ही अच्छा है ।

3- तेरा तालीसासू

एक पतली बहू कामणी है वा देख काम डबरावे सैं ।
उसकी सासू तेरा ताली है वा बाधी राम जमावे से ।
गोरी तुम सोवा हम पिस्सां रै हमने गैरे[1] भौरी[2] आवे से ।
मेरी सासू तेरी ताली[3] है बादकी कावाल पढवाने से ।
वा जुती पहर के चाली है छोरा में सूसरा सिखाया से ।
न हूं सोवे छोरा पिस्से हो थोरे घर में नया सलीका[4] से ।
तूं चाली जा बदमास रांड क्यूं घर की हवा उड़ावे से ।
बहू किस्सा चाहे छोरा पिस्सा रै कून बखत पै पिवावे से

(हास्य रस)

4- तकरार

पेटी खोल दिखा हो पेटी में के ले रखा है ।
पेटी नहीं खुलेगी रै पेटी में नार दूसरी से ।
मैं तेरी के लागूं सूं हो ब्याही से नार दूसरी ।
तूं मेरी बेब्बे लागे से ै ब्याही से नारदसूरी
बालक मामा केहगें हो कदे भात भरण नै नाटे से । पेटी खोल
मैं तरा करूंगी आरता हो कदे पाटडें पर तेबल उतर जा नै
तूं मेरी गोरीलागी छटूंगा नार दूसरी रै ।
पेटी जब खुलेगी रै पेटी मैं सूट रेशमी पावें सैं । ... पेटी खोल

(हास्य रस)

1- पक्ष 2- अधिक ।
3- परेशान करने वाली ।
4- तरीका ।

5. कन्द का दामण

है मेरा कन्धा का दामण भारया है
चुन्दड़ी पै पाट रहया वाला
नोकर म्याद का बीर छोरियों लागि ना जीया
है कद की दूखूं नाट महल में आये ना पिया ।
है मैं दूसर लेके आई नैगा में झाल रही स्याई
नीर पाटता आवे छोरियो डटता ना हिया ।
है दे कद की देखूं नाट आए ना पिया ।
है तीजां का त्योहरा बड़ा भारी
गावैं गीत सखी सारी क्यूकर गावै गीत जीया
कद की देखूं नाट महल में आवे ना पिया ।
है लाता ना जाया केले जैसा मोरा
वो देखा जोगा छोरा वो क्यूंकर न्यारा होया
मैं कद की देखूं नाट आये ना पिया ।

(वियोग श्रृंगार रस)

6- सौन्दर्य

बाग में पोसत की डाली है कोय ले गया काढ़ गिरी ने
जब न रे बाग में जावण लाग्या फूल चमेली का चमकण लाग्या
कदे तै नैरण तोड़ सूंघा करता है कोय ले गया दूर मेरी ने
बाग में पोस की डाली.....
जब रे रसोई में जावण लाग्या चमटा रे पलटा चमकण लाग्या
कदे ते मैरण ढील जमाया करती कोय ले गया दूर मेरी ने
बाग में पोस्त की डाली ....

(श्रृंगार रस)

- -

7- आभरण श्रृंगार

मेरी पतली कमर, नारा छुब्बो दार लाठ्यौं
छुब्बो दार लाठ्यौं जी· करेली दार लाइयो
मेरी पतली ·· ····
अजी तुम शहर बरेली जाठ्यौं· अच्छा सा सुरमा लाठ्यौं
लाइयौं अपने हाथ नाड़ा छुब्बे दार लाइयौं
मेरी पतली ········· ।
अजी तुम शहर बनारस जाइयौं अच्छी सी साड़ी लाइयौं
बंधाइयौं अपने हाथ नाड़ा छब्बेदार लाइयौं
मेरी पतली ········।
तुम मथुरा जी जाइयो, अरे मिठे पेड़ा लाठ्यौं
खवाइयौं अपने हाथ, नाड़ा छुब्बेदार लाइयौं
मेरी पतली ·· ·· ।

(श्रृंगार रस)

8- भाव वैचित्र्य

बाजरा बुआ दयूंगी· तन्ने बैठा दूंगी रखवाल
चायें ने कूं ल्यूंगी कडे ग्वाई सारी रात
डरदा डरदा न्यूं बोलै ढोलकी बजाई सारी रात
बिजवाळी तन्ने बिठा दयूंगी रखवाल
चाये ने कू लयुंगी कडे ग्वाई सारी रात
डरदा 2 न्यूं नाचे ढोलकी बजाई सारी रात

(हास्य रस)

9. जीत लिया भरतार

हे हन्टा का जम्फर ल्याई, हे मिन्टा की ल्याई सिलवार
चान्दी का कच्छा ल्याई, हे पीतल की ल्याई कलियाग
साबे की बोडी ल्याई, हे मन्ने देखे सारा संसार
तास्से की ढक्नी ल्याई, हे मेरे खेलण आये भरतार
बोले पै दहला मार्‍या हे मन्ने जीत लिया भरतार ।
छोरे में बैठकर रोया रे कोय मत ब्याहियों स्यासणा नार
छोरियां में बैठकर मैं हंसी हे मन्ने जीत लिया भरतार
गोरी हट पै बाजी लागे रे मेरा और कड़े था ध्यान
बेगां पै बाछा मारयां हे मन्ने जीत लिया भरतार ।

(हास्य रस)

10- पढ़न वाली नार

पढ़न वाली कमाल सै मूह अटपट सा लाल सै
हलवा पूरी खा जाईये
गर्म पसीना ले लागे म्हारे रंग महल में आ जाईये ।
फेल होने से डरिये मत ना
परचा फस्ट लवा देंगे ।
काढ़े मास्टर ने नार पहला नम्बर ल्यो देंगे
म्हारे रंग महल में आ जाइये ।
अब कालेज में पढ़न जिआर जा ।
सोवी छंतारा मत करीये
आप पाढ्जा कदे छोरिया ने
थंडा महल का ताज गर्म कर करिये
म्हारे रंग महल में आ जाइये ।

(श्रृंगार रस)

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

"11"

उपालंभ-गीत

जब[1] साजन ए परदेस गए, मस्तान्नां फागण क्यूं आया ।
जब सारा फगाण बीत गया, तै[2] घर मै[3] साजन क्यूं आया ।
छम छम नाचैं सब नरनारी, मै क्यूं बैठी दुखां की मारी ।
मेरै मन मैं जब भवा कौर, तै चान्द का चांदणा क्यूं आया ।
इब पीया आया, जी खिल्या नां जब जी आया पी मिल्या नां ।
साजन बिन जोबन क्यूं आया, जोबन बिन साजन क्यूं आया ।
मन की तै अरथी कंधी पडूयी, आख्यां मै लागी हाय झड़ी ।
जब मेरै मन का फल सूख्या[4], लजमारया फागण क्यूं आया ।

(विप्रलंभ श्रृंगार)

12

भारत का शेर

भारत के भाग्य तू, सोता क्यूं जाग तू ।
भारत की एक बहादुर बेटी लक्ष्मीबाई झांसी
उलट पुलट किया कतल सांडरस वीर भगत चढ़े फांसी,
खेल वो फाग तू, भारत के भाग्य तू,
इस कोनै से उस कोनै तक हूई दुनिया मै हलचल,
कलकता देखा पेशावर जा लिया पेशावर से काबुल,
नेता सुभाष तू, भारत के भाग्य तू ।

(वीर रस)

1- जब 2- तुम 3- मे 4- सूख गया ।

§13§

विरह की आग

उसे फिर मिलादो सखियो जो काल मिला था बाग में,
मै इसे जल्दी बुझाऊ जल गैर के मै जलूं विरह की आग में।

वो छला मेरे मन में भागया बहम लगा के कड़ै खिार गया,
वह परदेसी हद कर गया मै उसी के विराग में ।।

मै उसकी वो मेरा साजन होगा दो शरीरा का एक मन होगा,
जणे वो कद सी दिन होगा खेलूंगी होली फागण में ।।

काया में कर सुले उठे, ज्यों तपता जेठ बबूल उठे,
मेरे इसे ठठूले उठे जणु बिस कमलावे नाग में ।।

§वियोग श्रृंगार§

§14§

शरम

लिखी पढ़ी लड़की के किस्मत मै कमी बताई
पढ़ रही सोलह जमात मै, हाली लाग के ब्याही
रोटटी ले के गई खेत मैह ब जाणु नां खेत की राही
किसके आगै जिकर करुं ऐ मेरी सगी नणद का भाई
ठ्योले-ठ्योले फिर भरमती मै बहोत हणी शरमाई
सांटे[1] मारूये दो ऐ चार मे सुबक सुबक[2] के रोई --लिखी पढ़ी लड़की---
मतरणा जुलम करे हो हाली गुण गावणिया कोन्या
मै तो टोहलू छैल दूसरा तने ब्याहणिया कोन्या
पन्दरा सोलह जमात पढ़ रहा भाणा मन्ने उसके साला छोली
हालीबौल्या मन्ने छोड़ खिारग्यी याद करे कोनयां..ब लिखी पढ़ी लड़

§श्रृंगार रस§

1- रस्सा 2- अधिक रोना ।

(15)

याणा बालम

पिया मारे मतणा काच्चे हो बांस की पोरी
पिया मैं मर ज्यागीं --[1]--तुम्हारी
गोरा बेसख मरज्या होरी सौलग्न की तैयारी
ओड़ पहर पाणी नै चाल्यी रस्ते मैं सोख सुनारी--पिया मारे मतणा--
बेब्बे बालम याणा[2] किस पै डाट लाई
तेरै याणा लाग्गै राखै से चार लुगाई
दो हातका राखै से द दो सोख सुनारी--पिया मारे मतणा--

(हास्य रस)

(16)

करणी भरणी

कच्चा धागा नकली मणियां झूठी राम सुमरणी
किसी की निंदा किसी की चुगली कैंची जैब कतरणी
ओ अभिमानी तेरे जुल्म तै कांपण लागी धरती
जैसी करणी वैसी भरणी फेर भगवान के करै ।

वायदा करके भूल गया तू अटल वचन पै रहा नहीं
सदा कुसंग के साथ फिरा कदे सत्संग मां ग्या नहीं
ए नर बेईमान तेरा भी ठिया[3] ठिकाणा नहीं ।
जिस दिल के भीतर दया नहीं वो भगवान के करै ।।

(जीवन दर्शन)

- -

1- कोई नाम 2- अल्प आयु का 3- निवास स्थान ।

उपसंहार

परम्परा से अनुश्रुत जन जन में व्याप्त बागेश्वर लोक साहित्य सबल एवम् समृद्ध है । इसकी विभिन्न विधाओं में लोकगीत, कथात्मक गीत सांग परक गीत, प्रकीर्ण साहित्य- कहावतें, पहेलियां, चुटकुले, सूक्तियां आदि का समावेश है ।

बागेश्वर लोकगीतों को आठ वर्गों में -संस्कारगीत, ऋतुगीत, देवीदेवता-व्रत एवम् त्योहारों के गीत, कृषिगीत, बालगीत, क्रियागीत राजनीति सम्बन्धी तथा विभिन्न विविध गीतों में विभक्त किया जा सकता है । अन्य अवसरों एवम् विषयों से सम्बन्ध गीतों की तुलना में यहां संस्कार गीतों की विपुल राशि विद्यमान है और काव्यत्व की दृष्टि से भी इनकी विशेष महत्ता है । बागेश्वर लोकगीतों में "जीवन के प्रमुख संस्कारों, पर्वोत्सवों धार्मिक अनुष्ठानों, ऋतुओं, व्यवसायों अथवा आजीविका के साधनों और उत्पन्न मानसिक भौतिक प्रतिक्रियाओं का चित्रण हुआ है । पारिवारिक सम्बन्धों का स्वरूप एवं दिशा बोध भी इनमें केन्द्रित हुआ है । प्रादेशिक समाज के व्यवहार, आचार विचार, नीति-अनीति तथा जीवन दर्शन पर भी गहरा प्रकाश डालने वाली सामग्री इनमें अन्वेषणीय है । पुरुष और नारी मनोविज्ञान के संकेतों की भी लोकगीतों में कमी नहीं है कहीं पर तो स्वच्छन्द प्रेम के वर्णन श्लीलता की सीमा का उल्लंघन करते प्रतीत होते हैं । मन के भावों के दुराव को यहां अश्लील माना जाता है । भीतर वाले अथवा अन्त:करण की बात कहने में संकोच क्या करना ? स्पष्टोक्ति के द्वारा अश्लील भी श्लील हो जाता है । नारी श्रृंगार, मान विरह, आशा, आकांक्षा, चाव, भाव, राग द्वेष, वस्त्राभूषण प्रेम आदि का परिचय इन गीतों में सहज ही सुलभ हो जाता है।नीति,

- -

भक्ति और महापुरुषों के जीवनादर्श तथा शूरवीरों की वीरता का स्तवन करने वाले गीतों की संख्या भी बेशुमार है।"[1]

सावन के गीतों में जहां एक ओर संयोग वियोग श्रृंगार जनित गीतों की छटा देखने को मिलती है वहां विभिन्न सम्बन्धों के पावनतम प्रेम से अनुस्यूत गीतों की छटा अपनी निराली आभा विकीर्ण करती है। इन में मनोवैज्ञानिक तथ्य, ऋतुविज्ञान सम्बन्धी उल्लेख एवम् वातावरण की अनुभूति मिलती है। फागुण के गीतों में विशेष उत्साह एवं मस्ती पूर्ण गीतों में श्रृंगार गीत भी मिलते हैं। जो लोकमानस की तरल भावना की स्वाभाविक अभिव्यंजना करते हैं। सावन केगीतों में जहां संगीत की प्रधानता है वहां फागुण और होली के गीतों में नृतय एवं नाटकीयता की गति प्रबल रहती है बारह मासियों में विरह व्यंग्य मल्हार गीतों में विरह की प्रधानता की अनुभूति है। आसोज और कार्तिक के गीतों में आध्यात्मिकता की प्रधानता के कारण उनमें जीवन दर्शन की स्पष्ट छाप झलकती है। कृषिगीतों में किसानों के सुख दुःख बालगीतों में बालकों की क्रिड़ायें, क्रिया गीतों में तर्क, अनुभूति, नृतयएवम् संवादों की प्रचुरता प्राप्त होती है। राजनीति सम्बन्धी गीतों में राजनीति पक्ष एवम् विविध गीतों में सोक्णा आदि गीतों को उभारा गया है।

यहां के कथात्मक गीतों में (आल्हा, पंवाड़े, साखे आदि) मिलते हैं यहां के कथात्मक गीतों के नायकों को अलौकिक पुरुष न मान कर लौकिक रूप में ही अभिहित कियाजाता है।" अतः कथात्मक गीतों के अनेक सुनहले संदर्भों को समेटने वाले गीतों का नाद यहां सुनाई देता है। निहालदे, गूगा-पीर, जैमल फत्ता, भूरा बादल, हरफूल जाट जुलाणी का इत्यादि पर आधारित प्रबन्ध शैली के कथा गीतों की परम्परा हरियाणा में दूर्वादल की श्रृंखलाओं की तरह लोक मानस में से फूटती चली आई है।

1- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृति मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ06

अभय भावना , निर्भयता, वीरता और सुरक्षा की भावना में हमारे प्राचीन जीवन का प्रथम प्रश्न निहित था सो आज भी और आगे भी रहेगा ।"[1]

यहां उपलब्ध लोक कथाओं की संख्या भी काफी है । इनमें जाति स्वभाव के चित्रणों में नाई, बनिया, ठाकुर आदि को क्रमशः चालाक, डरपोक, मूर्ख के रूप में चित्रित किया है । उसके साथ साथ प्रायः सभी जातियों के स्वभाव का मनोरंजनात्मक चित्रों का प्रस्तुतिकरण प्राप्त है । जहां पशु पक्षियों की मनुष्य की तरह बोलचाल, कार्य कलापों के दर्शन होते हैं वहां परियों एवम् दानवों की कथाओं में अलौकिकता पूर्ण एवम् अद्भुत कार्य-व्यापारों का चित्रण पाया जाता है । प्रत्येक वर्ग की लोक कथा में अलौकिक तत्वों का समावेश अवश्य पाया जाता है ।

"यहां के लोक साहित्य में संस्कृति और समाज शास्त्रीय सामग्री की अतुल निधि भरी पड़ी है जिसका संदोहन और जांच परख करने से हमें अतीत की झलकी और भी साथ साथ दिखाई देने लगती हैं । सांस्कृतिक इतिहास का जितना आकर्षण निरूपण इन लोक साहित्य की विधाओं में छानबीन द्वारा प्राप्त होता है उतना अन्यस्त्रोतों द्वारा शायद ही संभव हो ।"[2] बांगड़ लोक साहित्य का काव्यशास्त्रीय पक्ष भी काफी सशक्त एवंम् समृद्धि शाली बन पड़ा है । उसके साथ साथ इनमें स्वाभाविकता एवम् मार्मिकता जीवनदर्शन, भ्रमरता नारी चित्रण, राष्ट्रीयभावना प्रकृति चित्रण का वर्णन भी सबल साहित्यक आधार प्रदान करता है ।

1- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीमसिंह पृ० 7
2- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृति मूल्यांकन लेखक डा० भीमसिंह पृ० 9

प्रकीर्ण साहित्य के विविध अव्यव जिनमें- कहावतें, चुटकुले, मुहावरें, पहेलियां एवम् सूक्तियां आती है । ये यहां के व्यावहारिक जीवन में समाये हुए प्रतीत होतेहैं । इनका संचय भी समृद्ध है। बांगड़ में प्राप्त होने वाले लोक गीत, कथात्मक गीत एवम् लोक कथाओं में जहां भावना और कल्पना तत्व की उपलब्धि हैं वहां कहावतों एवम् पहेलियों में बुद्धि तत्व की प्रधानता विद्यमान है । मुहावरों में लक्षणा और अभिव्यंजना, चुटकुलों में मनोरंजकता तथा सूक्तियों में नीति तथा दर्शन का समावेश दृष्टिगोचर होता है ।

सांग परक गीतों में प्रेम तत्व की प्रधानता, गुरु भक्ति की प्राथमिकता जहां लक्षित हैं वहां इन पर सूफी प्रभाव भी है । इन्ही गीतों में अध्यात्मिक वाद का सार भी निहित है ।

बांगड़ लोक साहित्य भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धार्मिक आदि सभी रूपों में व्याप्त है जो इसके सबल पक्ष की झलकती प्रस्तुति करता है । और यहां उपलब्ध सामग्री इस तथ्य को प्रमाणित करती है ।

निसन्देह बांगड़ लोक साहित्य की परिधि जीवन और संस्कृति के हर पहलू का संस्पर्श करती है ।

0 ------0------0

"सहायक ग्रन्थ सूची"

1- **हिन्दी** :-

1- भाषा विज्ञान - डा0 भोला नाथ तिवारी
किताब महल, इलाहाबाद। 1969.

2- ग्रामीण हिन्दी बोलियां- डा0 हरदेव बाहरी
किताब महल, इलाहाबाद। 1966.

3- पश्चिमी हिन्दी बोलियों की व्याकरणिक कोटियां
लेखक डा0 कैलाश नाथ शुक्ल
प्रमोद पुस्तकालय, इलाहाबाद। 1973.

4- भारत कीभाषाएं और भाषा सम्बन्धी समस्यायें
डा0 सुनीति कुमार चटोपाध्याय
हिन्दी भवन, इलाहाबाद। 1951.

5- हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन
लेखक डा0 बदरी नाथ कपूर
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग। 1965

6- हिन्दी और उसकी विविध बोलियां
लेखक प्रो0 दीप चन्द जैन, डा0 कैलाश तिवारी
मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल। 1972

7- हरियाणवी भाषा का उद्गम एवम् विकास
लेखक डा0 नानक चन्द शर्मा
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थानम् होशियारपुर। 1968

8- बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन
लेखक डा0 शिव कुमार खण्डेलवाल,
वाणी प्रकाशन दिल्ली। 1980

- -

9- हरियाणा की उपभाषाएं
भाषा विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित ।

10- हिन्दी उद्भव, विकास और रूप
लेखक डा० हरदेव बाहरी
प्रथम संस्करण ।

11- हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास ।6वांभाग
राहुल सांकृत्यायन, डा० कृष्ण देव उपाध्याय

12- पालिसाहित्य का इतिहास
श्री भरतसिंह उपाध्याय सम्वत् 2008

13- हरियाणा का इतिहास
लेखक श्री राम शर्मा
हरियाणा सेवा आश्रम रोहतक । तृतीय संस्करण 1974

14- लोक साहित्य का अध्ययन
लेखक डा० एन.श्रीराम अनन्त
सरन प्रकाशन मन्दिर मेरठ ।

15- लोक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन
लेखक श्री जगदम्बा प्रसाद पाण्डेय
न्यू बिल्डिंग अमीनाबाद लखनऊ ।

16- हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य
लेखक डा० शंकर लाल यादव
हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद । 1960

17- ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन लेखक
लेखक डा० सत्येन्द्र
साहित्य रत्न भण्डार आगरा । सन् 1949

- -

18- कन्नौजी लोक साहित्य
लेखक डा० सन्तराम अनिल
अभिनव प्रकाशन 21-ए दरियागंज दिल्ली । 1975

19- कुल्लुई लोक साहित्य
लेखक पदम चन्द्र काश्यप
नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23, दरियागंज दिल्ली । 1972

20- लोक साहित्य और पावरी भाषा
लेखक डा० एन•बी•बाँहोरी
37/50 गिलिस बाजार कानपुर ।

21- भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन
लेखक डा० कृष्ण देव उपाध्याय
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय काशी ।

22- कश्मीर का लोक साहित्य
लेखक श्री मोहन कृष्णदर

23- खड़ी बोली का लोक साहित्य
लेखक डा० सत्या गुप्ता

24- निमाड़ी और उसका लोक साहित्य
डा० कृष्ण लाल हंस
हिन्दुस्तान एकादमी इलाहाबाद । 1960

25- छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन
लेखक दया शंकर शुक्ल
ज्योति प्रकाशन रायपुर (म•प्र•) 1969

26- भारतीय लोक साहित्य
लेखक डा० श्याम परमार ।

27- लोक साहित्य की भूमिका
लेखक श्री सत्यव्रत अवस्थी ।

- -

28- लोक साहित्य विज्ञान
लेखक डा० सत्येन्द्र

29- मध्ययुगीन लोक साहित्य का तात्विक अध्ययन
लेखक डा० सत्येन्द्र ।

30- साहित्य
लेखक रविन्द्र नाथ ठाकुर
3k प्रभात प्रकाशन दिल्ली ।

31- हरियाणा के लोकगीत
श्री एम•एस•रन्धावा- श्री देवी शंकर प्रभाकर
अतर चन्द कपूर चन्द एण्ड सन्स दिल्ली । 1953

32- हरियाणा के लोकगीत
सम्पादित डा० नानक चन्द शर्मा-श्री सोमदत्त बंसल
भाषा विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित ।

33- हरियाणा के लोकगीत : सांस्कृतिक मूल्यांकन
लेखक डा० भीम सिंह मलिक
आर्य बुक डिपो करोलबाग दिल्ली । 1981

34- हरियाणा के लोक गीतों का संग्रह
लेखक नादान हरियाणवी
देहाती पुस्तक भण्डार,दिल्ली ।

35- राजस्थान के लोकगीत
लेखक डा० सूर्यकरण पारीक
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग । सम्वत् 1999

36- बारह महीनों के व्रत और त्योहार
लेखिका चम्पादेवी राजगढ़िया ।

- -

37- 37- हंसतागाता पंजाब

लेखक श्री नरेन्द्र धीर
आशा प्रकाशन गृह करोल बाग नई दिल्ली ।

38- राजस्थान के रीति रिवाज

लेखक श्री सुखदेव सिंह गहलोत

हिन्दी साहित्य मन्दिर जोधपुर । 1976

39- हिन्दू संस्कार

लेखक राजबली पाण्डेय

40- पंजाब की संस्कृति और साहित्य

लेखक श्री सबरजीत सिंह
नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली ।

41- हरियाणवी लोकोक्तियां:- शास्त्रीय विश्लेषण

लेखक प्रो० जयनारायण वर्मा

आदर्श साहित्य प्रकाशन दिल्ली 1972

42- राजस्थानी कहावतें

लेखक डा० कन्हैया लाल सहल

बंगला हिन्दी मण्डल कलकत्ता । 1960

43- हरियाणा : एक सांस्कृति अध्ययन

लेखक श्री देवी शंकर प्रभाकर
उमेश प्रकाशन 5 नाथ मार्केट दिल्ली । 1974

44- हरियाणा : एक सांस्कृति अध्ययन

लेख भाषा विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित ।

45- ऋग्वैदिक आर्य : ऐतिहासिक एवं सांस्कृति अध्ययन

किताब महल इलाहाबाद । 1957

- -

46- मानव और संस्कृति
लेखक डा० श्याम चरण दुबे

47- लोक कथाओं के कुछ रूढ़ तन्तु
लेखक डा० सत्यन (आमुख)

48- लोक कथा विज्ञान

श्रीचन्द जैन
मंगल प्रकाशन गोविन्द राजियों का रास्ता जयपुर 1977 ।

49- छोल गढ़ की लोक कथाएं
लेखक श्री चन्द्र जैन

50- नाथ सम्प्रदाय
लेखक श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी ।

51- हरियाणा के कवि सूर्य पं० लखमीचन्द
लेखक श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा

52- झाड़ू फैरदी
लेखक राजा राम शास्त्री
हरियाणा लोक मंच प्रकाशन
74, यू.बी. जवाहर नगर, दिल्ली । प्रथम संस्करण सम्वत् 2023

53- माधव विनोद
लेखक डा० सोमनाथ गुप्त

54- पद्मावत
लेखक मलिक मोहम्मद जायसी

55 कबीर ग्रन्थावली

लेखक कबीर दास

- -

56- हास्यार्णव
लेखक श्री कुंवर जी अग्रवाल काशी द्वारा मुद्रित प्रति ।

57- सांगीत: एक लोक नाट्य परम्परा
लेखक श्री राम नारायण अग्रवाल
राज पाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली 1976 ।

58- हरियाणा लोकमंच की कहानियां
लेखक राजा राम शास्त्री
वाराणसी । 1958

59- हरियाणा के पंथ प्रवर्तक सन्त
भाषा विभाग हरियाणा, चण्डीगढ़ ।

60- हरियाणवी सन्तों की हिन्दी को देन
भाषा विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ ।

61- हरियाणवी सांगों का वस्तुपरक विश्लेषण
भाषा विभाग हरियाणा चण्डीगढ़ ।

62- मनोविज्ञान और जीवन के
लेखक लालजी रामशुक्ल
साहित्य-सेवक कार्यालय जलियादेवी वाराणसी । 1956

63- अशोक की धर्म लिपियां {प्रधान_शिलाभिलेख}
सं० गौरी शंकर हीराचन्द ओझा; श्याम सुन्दर दास

64- कविता कौमुदी {भाग 3,5}
लेखक पं० राम नरेश त्रिपाठी

65- विनय पत्रिका गोस्वामी तुलसीदास

66- राम चरित्र मानस गोस्वामी तुलसीदास

- -

67- हरियाणा लोकगीतों की धरती
लेखक श्री देवी शंकर प्रभाकर उमेश प्रकाशन दिल्ली। 1974

68- हरियाणा लोक कथाएं और कहावतें
लेखक देवी शंकर प्रभाकर
उमेश प्रकाशन नाथ मार्केट दिल्ली 1974

69- हरियाणा लोक नाट्य एवम् लोक मंच
लेखक श्री देवी शंकर प्रभाकर
उमेश प्रकाशन नाथ मार्केट दिल्ली 1974

70- हरियाणा लोक गाथाएं
लेखक श्री देवी शंकर प्रभाकर
उमेश प्रकाशन नाथ मार्केट नई दिल्ली 1974

71- हरियाणा की लोक कथाएं दिल्ली 1974

72- हरियाणा के मेले
लोक सम्पर्क विभाग हरियाणा।

73- लोक मानस और लोक गाथा
लेखक श्री डा० कृष्ण कुमार शर्मा

74- हरियाणा के नव रत्न
लेखक श्री राम शर्मा
हरियाणा सेवा आश्रम, रोहतक 1966

75- हिन्दुओं के व्रत और त्योहार
लेखक राम प्रताप शास्त्री, इलाहाबाद 1959

पंजाबी :-

76- पंजाबी दे लोक गीत
लेखक एम.एस.रन्धावा

हिन्दी पत्र पत्रिकाएं :-

77- जन साहित्य
लोक मानस विशेषांक परिषद
हरियाणा संवाद
नन्हेतारे
आजकल
सम्मेलन पत्रिका {लोक संस्कृति विशेषांक}
जनपद

लेख :-

78- हरियाणे की भाषा
लेखक स्थाणुदत्त शर्मा
भाषा विभाग पंजाब की 1958 की लेख गोष्ठी में पढ़ागया निबन्ध ।

79- बांगरू की ध्वनात्मक संरचना
लेखक डा० जगदेव सिंह
भाषा विभाग पंजाब की 1962-63 की लेख गोष्ठी में पढ़ागया लेख ।

80- पंजाबी ते हिन्दी
लेखक डा० हरदेव बाहरी
भाषा विभाग पंजाब 1958-59 की लेख गोष्ठी में पढ़ा गया लेख

81- लोक कथाएं और उनका संग्रह
लेखक डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का लोक कथा अंक मई 1954 ।

संस्कृत:-

82- अथर्व वेद

83- श्रीमद्‌ भगवद्गीता

84- मनुस्मृति

85- ऋग्वेद

86- ऐतरोपनिषद

87- शतपथ ब्राह्मण

88- यजुर्वेद

89- महाभारत_ व्यास

90- तांड्य ब्राह्मण

91- ऐतरेय ब्राह्मण

92- शाट्यायन ब्राह्मण

93- नाट्य शास्त्र- भरतमुनि

94- रघुवंश -कालिदास

95- जैमनीय उपनिषद ब्राह्मण

96- याज्ञवल्क्य स्मृति

97- शिवपुराण

98- वराहपुराण

99- मत्स्य पुराण

100- हरिवंश पुराण

101- भागवत पुराण

102- वायु पुराण

ENGLISH

103	Linguistic Survey of Punjab	George Grierson
104	History of the Tribes and Caste of the punjab and N.W.F.P.	H.L. Rose.
105.	Folk Songs of India	Mukerjee
106.	Introduction of Folk Lore	M.R. Cox
107	A Descriptive Grammer of Bangru.	Dr. Jagdev Singh
108.	A Folk Lterature of Bengal	By D.C. Sain
109	Ina Akbari X	Yadunath Sarkar
110	Encyclopedia Britania (1951 Edu.)	Vol.IX
111.	Imperial Gazetteer of India	Provincial Series Punjab 1980 edu.
112	Linguistic Survey of India	(1916 Edu) George Grierson
113.	Jattu Glossary	By E.Joeph.
114.	Settlement Report on the Revenue of Hissar District (1863-64)	By Munshi Amin Chand)
115.	The legends of the Punjab	Sir R.C. Temple
116.	Old Ballad	Frank Sidgwick
117.	Epigraphia Indica	C.V. Vaidya

---

118 Introduction of American Folklore — Botkin.

119. A Hand Book of Folklore

120. Cities of Ancient India — B.N. Puri

121. xxxxxxxx Standard Dictionery of Folk Lore Mythology and legend — Maria Leech, Ed. xxxxxxt

122. Ancient India — R.C. Majumdar.

123 The popular Religion and Floklore of an India — William Crooke.

124. Folk Dances of India — Altekar

125. The spirit of Ancient Hindu Culture — M.A. Buch

126. Haryana Through the Ages, — Parkash Budha

127. Glimpses of Haryana — —

128. Haryana General of Education — —

शिला लेख :-

129- दिल्ली के म्यूजियम बी-6 में रखा हुआ 600 वर्ष पुराना शिला लेख ।

130- पलन की बावड़ी में से मिला 47 वर्ष पुराना शिलालेख ।

131- गुरु कुल झज्जर (हरियाणा) में रखे हुये अनेक शिलालेख ।

132- गुरु कुल झज्जर (हरियाणा) में रखे हुये अनेक हरियाणा सम्बन्धी मुद्राये एवम् पुरातात्विक क्षेत्र सम्बन्धी प्रमाण ।

0 ================ 0 ===

अन्य पुस्तकें

133- धीरे बहो गंगा [हिन्दी] श्रीदेवेन्द्र सत्यार्थी

134- बेला फूले आधी रात [हिन्दी] श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

135- धरती गाती है [हिन्दी] श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

136- पृथ्वी पुत्र [हिन्दी] डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

137- हरियाणवी गीता [हरियाणवी] डा० नानकचन्द शर्मा

138- सुदामाचरित्र श्री नरोत्तम कवि

139- भाण पादताडितकम् [संस्कृत]

140- अष्टाध्यायी पाणिनि जी

141- रैलिक्स आव एंशियण्ट इंग्लिश पोयट्री [अंग्रेजी] विशप पर्सी

142- ओल्ड इंगलिश बैलेड " " एफ० बी० गुमेर

143- दी इंगलिश एण्ड स्काटिश पापुलर बैलेड्स " एफ० जे० चाइल्ड

144- इंगलिश बैलेड्स " राबर्ट ग्रेव्स

145- दी ले आफ आल्हा " वाटर फील्ड

146- इंगलिश एण्ड स्काटिस बैलेड " एफ० जे० चाइल्ड

147- दी फोकटेल " स्टिथ थामसन

148- फोक टेल्स आफ आल नेशन्स " एफ० एफ० ली०

149- दी मार्वल्स आफ फेरीज टेल्स " एडविन सिडनी हार्टलैण्ड

150 डिक्शनरी आफ फोल्क लोर

151 आपटे डिक्शनरी

152 नेपालीशब्द कोष

---इति---

भगवानदास केन्द्रीय पुस्तकालय
आगत क्रमांक R394
काशी विद्यापीठ, वाराणसी

बांगरू लोकसाहित्य

[काशी विद्यापीठ की पी-एच० डी० उपाधि के लिए प्रस्तुत]

शोध-प्रबन्ध

(हिन्दी)

काशी विद्या पीठ
विद्ययाऽमृतमश्नुते

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
3300
159

दिसम्बर

१९८२

DATABASE

शोध निर्देशक –

डा० रामजी शर्मा

एम ए पी एच डी

दैवज्ञवाचस्पति, साहित्य

न० व्याकरणाचार्य, साहित्यायुर्वेदरत्न,

प्राध्यापक-हिन्दी विभाग

काशी विद्या पीठ-वाराणसी

शोधकर्त्ता –

कैलाश चन्द शर्मा

नव कला मंदिर

बिचला बाजार भिवानी

(हरियाणा)

उपसंहार

परम्परा से अनुश्रुत जन जन में व्याप्त बांगेह लोक साहित्य सबल एवम् समृद्ध है। इसकी विभिन्न विधाओं में लोकगीत, कथात्मक गीत सांग परक गीत, प्रकीर्ण साहित्य- कहावतें, पहेलियां, चुटकुले, सूक्तियां आदि का समावेश है।

बांगेह लोकगीतों को आठ वर्गों में -संस्कारगीत, ऋतुगीत, देवीदेवता-व्रत एवम् त्योहारों के गीत, कृषिगीत, बालगीत, क्रियागीत राजनीति सम्बन्धी तथा विभिन्न विविध गीतों में विभक्त किया जा सकता है। अन्य अवसरों एवम् विषयों से सम्बन्ध गीतों की तुलना में यहां संस्कार गीतों की विपुल राशि विद्यमान है और काव्यत्व की दृष्टि से भी इनकी विशेष महत्ता है। बांगेह लोकगीतों में "जीवन के प्रमुख संस्कारों, पर्वोत्सवों धार्मिक अनुष्ठानों, ऋतुओं, व्यवसायों अथवा आजीविका के साधनों और उत्पन्न मानसिक भौतिक प्रतिक्रियाओं का चित्रण हुआ है। पारिवारिक सम्बन्धों का स्वरूप एवं दिशा बोध भी इनमें केन्द्रित हुआ है। प्रदेश-समाज के व्यवहार, आचार विचार, नीति-अनीति तथा जीवन दर्शन पर भी खरा प्रकाश डालने वाली सामग्री इनमें अन्वेषणीय है। पुरुष और नारी मनोविज्ञान के संकेतों की भी लोकगीतों में कमी नहीं है कहीं पर तो स्वच्छन्द प्रेम के वर्णन श्लीलता की सीमा का उल्लंघन करते प्रतीत होते हैं। मन के भावों के दुराव को यहां अश्लील माना जाता है। भीतर वाले अथवा अन्त:करण की बात कहने में संकोच क्या करना? स्पष्टोक्ति के द्वारा अश्लील भी श्लील हो जाता है। नारी श्रृंगार, मान विरह, आशा, आकांक्षा, चाव, भाव, राग द्वेष, वस्त्राभूषण प्रेम आदि का परिचय इन गीतों में सहज ही सुलभ हो जाता है। नीति,

- -

भक्ति और महापुरुषों के जीवनादर्श तथा शूरवीरों की वीरता का स्तवन करने वाले गीतों की संख्या भी बेशुमार है।"[1]

सावन के गीतों में जहां एक ओर संयोग वियोग श्रृंगार जनित गीतों की छटा देखने को मिलती है वहां विभिन्न सम्बन्धों के पावनतम प्रेम से अनुस्यूत गीतों की छटा अपनी निराली आभा विकीर्ण करती है। इन में मनोवैज्ञानिक तथ्य, ऋतुविज्ञान सम्बन्धी उल्लेख एवम् वातावरण की अनुभूति मिलती है। फागुण के गीतों में विशेष उत्साह एवं मस्ती पूर्ण गीतों में श्रृंगार गीत भी मिलते हैं। जो लोकमानस की तरल भावना की स्वाभाविक अभिव्यंजना करते हैं। सावन केगीतों में जहां संगीत की प्रधानता है वहां फागुण और होली के गीतों में नृतय एवं नाटकीयता की गति प्रबल रहती है बारह मासियों में विरह व्यंग्य मल्हार गीतों में विरह की प्रधानता की अनुभूति है। आसोज और कार्तिक के गीतों में आध्यात्मिकता की प्रधानता के कारण उनमें जीवन दर्शन की स्पष्ट छाप झलकती है। कृषिगीतों में किसानों के सुख दुःख बालगीतों में बालकों की क्रिड़ायें, क्रिया गीतों में तर्क, अनुभूति, नृतयएवम् संवादों की प्रचुरता प्राप्त होती है। राजनीति सम्बन्धी गीतों में राजनीति पक्ष एवम् विविध गीतो में सोरूपा आदि गीतों को उभारा गया है।

यहां के कथात्मक गीतों में (आल्हा, पंवाड़े, साखे आदि) मिलते हैं यहां के कथात्मक गीतों के नायकों को अलौकिक पुरुष न मान कर लौकिक रूप में ही अभिहित कियाजाता है।" अत: कथात्मक गीतों के अनेक सुनहले संदर्भों को समेटने वाले गीतों का नाद यहां सुनाई देता है। निहालदे, गूगा-पीर, जैमल फत्ता, भूरा बादल, हरफूल जाट जुलाणी का इत्यादि पर आधारित प्रबन्ध शैली के कथा गीतों की परम्परा हरियाणा में दूर्वादल की श्रृंखलाओं की तरह लोक मानस में से फूटती चली आई है।

1- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीम सिंह पृ06

अभय भावना , निर्भयता, वीरता और सुरक्षा की भावना में हमारे प्राचीन जीवन का प्रथम प्रश्न निहित था सो आज भी और आगे भी रहेगा ।"[1]

यहां उपलब्ध लोक कथाओं की संख्या भी काफी है । इनमें जाति स्वभाव के चित्रणों में नाई, बनिया, ठाकुर आदि को क्रमशः चालाक, डरपोक, मूर्ख के रूप में चित्रित किया है । उसके साथ साथ प्रायः सभी जातियों के स्वभाव का मनोरंजनात्मक चित्रों का प्रस्तुतिकरण प्राप्त है । जहां पशु पक्षियों की मनुष्य की तरह बोलचाल, कार्य कलापों के दर्शन होते हैं वहां परियों एवम् दानवों की कथाओं में अलौकिकता पूर्ण एवम् अद्भुत कार्य-व्यापारों का चित्रण पाया जाता है । प्रत्येक वर्ग की लोक कथा में अलौकिक तत्वों का समावेश अवश्य पाया जाता है ।

"यहां के लोक साहित्य में सांस्कृति और समाज शास्त्रीय सामग्री की अतुल निधि भरी पड़ी है जिसका संदोहन और जांच परख करने से हमें अतीत की झलकी और भी साथ साथ दिखाई देने लगती हैं । सांस्कृतिक इतिहास का जितना आकर्षण निरूपण इन लोक साहित्य की विधाओं में छानबीन द्वारा प्राप्त होता है उतना अन्यस्रोतों द्वारा शायद ही संभव हो ।"[2] बांगड़ लोक साहित्य का काव्यशास्त्रीयपक्ष भी काफी सशक्त एवंम् समृद्ध शाली बन पड़ा है । उसके साथ साथ इनमें स्वाभाविकता एवम् मार्मिकता जीवनदर्शन, श्रृंगार भावुकता नारी चित्रण, राष्ट्रीयभावना प्रकृति चित्रण का वर्णन भी सबल साहित्यक आधार प्रदान करता है ।

1- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृतिक मूल्यांकन लेखक डा० भीमसिंह पृ० 7
2- हरियाणा के लोकगीत सांस्कृति मूल्यांकन लेखक डा० भीमसिंह पृ० 9

प्रकीर्ण साहित्य के विविध अवयव जिनमें- कहावतें, चुटकुले, मुहावरे, पहेलियां एवम् सूक्तियां आती हैं । ये यहां के व्यावहारिक जीवन में समाये हुए प्रतीत होते हैं । इनका संचय भी समृद्ध है। बांगड़ में प्राप्त होने वाले लोक गीत, कथात्मक गीत एवम् लोक कथाओं में जहां भावना और कल्पना तत्व की उपलब्धि है वहां कहावतों एवम् पहेलियों में बुद्धि तत्व की प्रधानता विद्यमान है । मुहावरों में लक्षणा और अभिव्यंजना, चुटकुलों में मनोरंजकता तथा सूक्तियों में नीति तथा दर्शन का समावेश दृष्टिगोचर होता है ।

सांग परक गीतों में प्रेम तत्व की प्रधानता, गुरु भक्ति की प्राथमिकता जहां लक्षित हैं वहां इन पर सूफी प्रभाव भी है । इन्हीं गीतों में अध्यात्मिक वाद का सार भी निहित है ।

बांगड़ लोक साहित्य भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धार्मिक आदि सभी रूपों में व्याप्त है जो इसके सबल पक्ष की झलकती प्रस्तुति करता है । और यहां उपलब्ध सामग्री इस तथ्य को प्रमाणित करती है ।

निसन्देह बांगड़ लोक साहित्य की परिधि जीवन और संस्कृति के हर पहलू का संस्पर्श करती है ।

0 ----- -0- ----- -0